भारत में इस्लाम

आचार्य चतुरसेन



प्र भा त प्र का श न
२०५ चावडी बाजार, दिल्ली-६

दो शब्द

भारत म आर्यों की सभ्यता स्थापित हो जाने के बाद समय-समय पर अने
विदेशी आक्रान्ताओ ने भारत को आक्रान्त किया। उनम बहुत तो लूटमार क
अपने देश को लौट गये, बहुत यहीं बस गये। आर्यों न उन्हें अपने अन्दर विलीन
लिया। इस काय के लिए आर्यों न बडा साहस किया। जब शक तातार, हूण अ
यवन जातियों न भारत को आक्रान्त कर यहाँ बसने का इरादा किया तो आर्यों
उन्हें पराया या विदेशी नहीं रहने दिया। उन्होंने भारत के अनाय जनो और
समागत जनो का लकर एक नई जाति बना डाली। इस काम के करन म उन्हें अ
धम, जाति भाषा आचार विचार सभी का त्यागना पडा। सस्कृत भाषा के
पर लोक भाषा यज्ञ क स्थान पर मूर्तिपूजन और दशन तथा वेद के स्थान पर पुर
साहित्य को धम का प्रतीक बनाया। सूक्ष्म तत्त्व-दशक धम त्यागकर मोटा सव
सुलभ धम अपनाया और इस प्रकार उन्होंने अत्यन्त बुद्धिमानी से अपने पराये
भेद खोकर सबकी एक सम्मिलित हिन्दू जाति बना ली जिसकी एक ही सस्
और सभ्यता थी।

विद्वान् जानते हैं कि भारत के दो प्रतापी सम्राट हुए। एक कनिष्क दू
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य। यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि इन्हीं दोना सम्राटा
आज के सम्पूण सस्कृत साहित्य का शृगार किया। कनिष्क और विक्रमादित्य
सभा-पण्डिता की वाग्धारा ही आज का हमारा बहुमूल्य सस्कृत साहित्य है। क्या
आश्चय की बात नहीं है कि एक अनाय सम्राट भी हमारी सस्कृति का प्रतिष्ठाता हु

परन्तु भारत म इस्लाम का आगमन इन सब समागत जनो से नया निर
हुआ। मुस्लिम आक्रान्ताओ ने द्विमुखी युद्ध छेड दिया। एक धम युद्ध का दूसरा र
नतिक युद्ध। मुस्लिम आक्रान्ताओ ने इस द्विमुखी युद्ध म योरोप और मध्य एशि
म महान् सफलता प्राप्त की। मिस्र, ईरान, पलेस्टाइन, तुर्किस्तान और अफगानिस्
के आसपास के भूखण्ड के न कवल राज्य ही आक्रान्त किये, प्रत्युत् वहाँ के प्र
निवासी को मुसलमान बना लिया। यह उनकी अद्‌भुत और आश्चयजनक सफ
थी। परन्तु उन सबस अधिक आश्चयजनक वह असफलता थी जो भारत मे
विजेता आक्रान्ताओ को मिली। भारत की राजनतिक लडाई मे मुसलमानो
विजय पर विजय प्राप्त की, परन्तु धम युद्ध में उन्हें निरन्तर पराजित होना प
यद्यपि यह सत्य है कि कुछ प्रान्तो म नीच जाति के लोगो ने मुस्लिम धम अगी
किया, दक्षिण के समुद्र किनारे पर बसने वाले तथा पूर्वी बगाल के समुद्र तीर क

वाली जातियों ने इसलाम अंगीकार किया राजनतिक क्षेत्र में पद का तथा राज सत्ता के लालच में कुछ राजपूतों की जातियों भी बहीं नहीं मुसलमान बनीं परन्तु भारत की हिन्दू जाति ने मुसलमानों से धर्म युद्ध में निरन्तर आठ सौ वर्षों तक बिना शस्त्र के भारी मोर्चा लिया और पराजय स्वीकार नहीं की। यह हिन्दू धर्म की उस सगठित शक्ति का प्रभाव था जिसके मूल में आध्यात्म का सांस्कृतिक पुट था।

पठानों के राज्य काल में जायसी और उसके अनुवर्ती सूफी कवियों ने अवधी और ब्रजभाषा में प्रेम काव्य रचे थे। परन्तु उसमें और इस साहित्य में अन्तर था। उसमें भाषा ही लोक भाषा थी। उसमें न तो हिन्दू संस्कृति थी न हिन्दू मुस्लिम एक्य भावना थी। यह सूफी मुस्लिम फकीरों का हिन्दू जनता के पूज्य विश्वासपात्र और आध्यात्मिक गुरु बनने के लिए एक प्रयास था। उनकी कविता में हिन्दू चरित्र तो अवश्य थे, परन्तु उनमें न हिन्दू धर्म तत्त्व था न कविता की काव्य परिपाटी ही हिन्दू भावना से सश्लिष्ट थी। इन रचनाओं में प्रचलित हिन्दू चरित्र प्रधान इन कथाओं कहकर उनमें अपने सूफी तत्त्व की चिनगारी आरोपित की गई थी। इस प्रकार वे अक्षुण्ण मुस्लिम सन्त रहते हुए भी हिन्दू जनता के पीर बने रहना चाहते थे।

परन्तु सबसे पहिले रसखान के रूप में मुस्लिम हृदय ने हिन्दू धर्म तत्त्व और हिन्दू इष्ट देवता के आगे सिर झुकाया। आगे चलकर मुस्लिम कवियों में यह परम्परा बढ़ती ही गई। आलम और रसखान से यह हिन्दू धर्म तत्त्व के प्रति जो आकर्षण प्रारम्भ हुआ सो यह शताब्दियों तक आगरे के प्रसिद्ध कवि नजीर को भी लांघता हुआ चला ही गया।

परन्तु अकबर ने इतना ही नहीं किया। उसने ठोस काय में आगे हाथ बढ़ाया। जहाँ उसने सब हिन्दू राजाओं से घनिष्ठ और मित्रतापूर्ण राजनतिक सम्बन्ध स्थापित किये तथा हिन्दू मुस्लिम राजपुरुषों को बिना पक्षपात के अपनी राज्य-व्यवस्था में स्थान दिया, वहाँ उसने कट्टर मुस्लिम धर्म के स्थान पर स्वयं एक नवीन धर्म की स्थापना का भी साहस किया। इसके साथ ही उसने हिन्दू राजाओं से रिश्तेदारी करनी भी प्रारम्भ की। खेद है कि तत्कालीन हिन्दुओं ने महान् अकबर के इस मत्री निमन्त्रण को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने राजनतिक दबाव में पड़कर लड़कियाँ शाही परिवार को दीं—परन्तु लीं नहीं। छुआछूत का भूत उनका बाधक था। ब्राह्मणों का अनुशासन उनके सिर पर था। लड़की देने की मर्यादा भी शाही परिवार तक ही सीमित रही। सवसाधारण में रोटी बेटी का चलन हिन्दू मुस्लिमों में नहीं जारी हुआ। यह भारत के निवासियों का दुर्भाग्य था। फिर भी अकबर के बाद जहाँगीर और शाहजहाँ के काल तक सौ वर्षों में मुस्लिम संस्कृति ने भारतीयता का रूप धारण कर लिया। यह सौ वर्ष का समय दोनों जातियों को एक हो जाने के लिए बहुत था।

सांस्कृतिक, राजनतिक और सामाजिक भावनाओं में मुगल सम्राटों ने जितने प्रयत्न हिन्दू मुस्लिम ऐक्य भावना के किये, उसका न तो हिन्दू जनता ने स्वागत किया

न मुस्लिम जनता ने। मुल्ला और पण्डित पक्के रूढ़िवादी रहे। यद्यपि रामानन्द स्वामी ने बड़ा साहस किया, उन्होंने अकबर से प्रथम ही एक बीज एकता का आरोपित किया था और उन्होंने एक सन्त सम्प्रदाय के ऐसे रूप को जन्म दिया जो अति उदार था। उन्होंने कट्टरता को त्याग दिया। उन्हें इसके लिए सम्प्रदाय से बहिष्कृत होना पड़ा। परन्तु उन्होंने यह देख लिया था कि सच्चे भक्ति मार्ग में जाति वर्ग अथवा अन्य सामाजिक बन्धनों का कोई स्थान ही नहीं है। सबसे प्रथम उन्होंने छुआछूत को घता बताई और हर किसी का छुआ भोजन करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार रामानन्द स्वामी अपनी कृत्रिम ऊँचाई से प्रेम और भक्ति के स्वाभाविक धरातल पर उतर पड़े और बिना किसी वर्ण-जाति भेद के लोगों के बीच अपने नये सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने लगे। उन्होंने संस्कृत को त्याग लोक भाषा में प्रचार करना प्रारम्भ किया, जनता की भाषा में नानोपदेश देकर वे लोगों को आध्यात्मिक संस्कृति के स्वाभाविक क्षेत्र की ओर आकर्षित करने लगे। अब उन्होंने ग्यारह मुख्य शिष्य बनाये —रविदास या रैदास (चमार), कबीर (जुलाहा), धन्ना (जाट), सेन (नाई), पीपा (राजपूत) भवानन्द, सुखानन्द, आशानन्द, सुर सुरानन्द, महानन्द और श्री आनन्द। इसके सिवा कुछ स्त्रियों को भी उन्होंने शिष्य बनाया।

इस प्रकार उन्होंने प्रचलित परम्परा को छोड़कर निम्नस्तर से आम लोगों में उच्च भावनाओं का समावेश किया। आप देख सकते हैं कि इन सन्तों ने भारतीय संस्कृति में कितना हिस्सा लिया, और इन शिष्यों की शिष्य परम्परा में भारत के निम्नस्तर के लोगों में कितना जीवन संगठन और सांस्कृतिक प्रभाव पैदा किया। यह भूमि थी जिस पर अकबर और वल्लभाचार्य को चलने का सुअवसर मिला। परन्तु जैसा कि कहा गया है हिन्दुओं और मुस्लिम जनता ने इस प्रगति में पूर्ण सहयोग नहीं दिया। हिन्दुओं के मन में मुस्लिमों के प्रति घृणा और अस्पृश्यता के भाव वैसे ही कट्टर बने रहे। वे उन्हें म्लेच्छ समझकर उनसे दूर ही रहते रहे। मुसलमान चाहे बादशाह ही क्यों न हों एक साधारण हिन्दू के लिए भी वह इस प्रकार अस्पृश्य था कि वह उसके हाथ का छुआ जल भी नहीं पी सकता था। उसी प्रकार मुसलमान शासक भी हिन्दुओं को काफिर, गुलाम समझकर अपने राजपद के आश्रय से उन्हें अपमानित करने का कोई अवसर छोड़ते न थे। इस प्रकार कौ सनातनी ने औरंगजेब के काल में फिर वही कट्टरता और संघर्ष उत्पन्न कर दिया। परन्तु अब हिन्दू संगठित हो गये थे। तुलसी के राम ने हिमालय से सेतुबन्ध रामेश्वर तक शक्ति और संगठन की सामर्थ्य जनता में भर दी थी। तुलसी के प्रभाव से पचास वर्षों में भारत में भारी सांस्कृतिक विकास हुआ। इन पचास वर्षों में दो सौ चौहत्तर कवि उत्पन्न हुए जिन्होंने हिन्दू-जाति के संगठन में सहारा दिया। इस काल में भक्ति और साहित्य का ऐसा उज्ज्वल रूप प्रकट हुआ कि उसने भारत के इतिहास की धारा को ही पलट दिया।

इन्हीं तुलसी के राम का बल पाकर छत्रसाल ने केवल पाँच सवारों और पच्चीस

पैदलों की सेना लेकर प्रतापी औरंगजेब से लोहा लिया और विजय पर विजय प्राप्त करके दो करोड़ वार्षिक आय का विशाल राज्य बुन्देलखण्ड स्थापित कर लिया। इसी तुलसी के रामाश्रय होकर दक्षिण में बालाजी विश्वनाथ और बाजीराव पेशवा ने मुगल साम्राज्य को ध्वंस कर पाँच सौ वर्षों के खोये हिन्दू साम्राज्य की फिर से स्थापना की। यह तुलसीदास के महान् हिन्दू संगठन के महान परिणाम थे कि दो ही शताब्दियों के भीतर हिन्दू साम्राज्य भारत में स्थापित हो गया। यह हिन्दुओं का दुर्भाग्य कि था कि १४वीं शताब्दी में उसकी डोर सम्हालने वाला कोई प्रतापी संगठनकर्ता हिन्दुओं ने पैदा नहीं किया।

कांग्रेस ने राजनैतिक मंच पर उन्हें एक झंडे के नीचे से आने की चेष्टा की। परन्तु यह सफल न हुई और कांग्रेस ही को पाकिस्तान का विभाजन स्वीकार करना पड़ा जिससे देश के खण्ड खण्ड तो हो ही गये अव्यवस्था और रक्तपात में भी ऐसे दर्दनाक फल भोगने पड़े कि जिनकी समता मानव चरित्र के इतिहास में है ही नहीं।

आज भारतीय मुसलमान पाकिस्तान का प्राप्तव्य पा चुके हैं। वहाँ वे अपनी कट्टर अनुदार और साम्प्रदायिक भावना का जो उद्दीपन कर चुके हैं स्पष्ट ही ऐसी है कि जिसमें किसी भी हिन्दू का पाकिस्तान में प्रतिष्ठा और स्वतन्त्रता से रहना सम्भव ही नहीं है। परन्तु हमारी दिक्कतें तो अभी वैसी ही गम्भीर बनी हुई हैं। जो मुसलमान भारत में रह गये हैं उन्हें भारतीय भावना से ओतप्रोत करने का अभी तक कोई ठोस कार्यक्रम नहीं बनाया गया। आज वे भारत में अपने को खोया सा पराया सा समझ रहे हैं। उनमें विद्रोह की भावना भी है। दूसरी ओर भारतीय हिन्दू उन्हें क्रोध और विद्वेष की भावना से देखते हैं। चाहे जितनी भी यह भावना छिपाई जाय वह छिप नहीं रही है।

इन दोनों भावनाओं के लिये सरकारी कानून या शाब्दिक घोषणायें अपर्याप्त हैं। समय की आवश्यकता है कि मुस्लिम समाज के सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक नेताओं को प्रामाणिकता से भारतीय जीवन की मूल धारा को अंगीकार करना चाहिए और हिन्दू समाज को उदारता का परिचय देकर उन्हे स्वीकार कराना चाहिए। इसी में भारत का कल्याण है।

ज्ञानधाम
शाहदरा, दिल्ली। —लेखक

विषय सूची

१

भारतवर्ष

भारतवर्ष का भौगोलिक परिचय

भारतवर्ष एशिया महाद्वीप के तीन दक्षिणी प्राय द्वीपो मे से एक है। इसका क्षेत्रफल १२,२२,५३१ वर्गमील अर्थात २१,८२,३३३ वर्ग किलोमीटर है। १९४१ मे इसकी जनसंख्या ३८,३९,००,००० और १९६१ मे ४३,९२,३४,७७१ थी। उत्तर से दक्षिण तक इसका विस्तार ३२०० कि० मी० है और पूरब से पच्छिम की ओर लगभग ३,००० कि०मी० फैलाव है। इसके उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे हिन्द महासागर, पूर्व मे बर्मा और बंगाल की खाडी तथा पच्छिम मे सफेद कोह सुलेमान पहाड, बिलोचिस्तान और अरब का समुद्र है। है। हिमालय पहाड प्राय १,५०० मील लम्बा और २०० मील चौडा है। इसकी ऊँचाई २०,००० फीट के लगभग है। कही-कही अधिक हो गई है। सबसे ऊँची चोटी 'गौरीशंकर' २९,००० फीट ऊँची है। दूसरी बडी बडी चोटिया किंचिंगा, धौलागिरि, नन्दादेवी और नगा पर्वत है। हिमालय का बडा भाग लम्बाई मे बर्फ से ढका रहता है। इसकी जलवायु पाश्चात्य देशो के समान ठण्डी और स्वास्थ्यकर है। यहा के निवासी भी अधिक गोरे हैं। यहा केसर, कस्तूरी और पश्मीने का खास व्यापार होता है।

हिमालय के सिवा भारत मे विन्ध्याचल, पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट और नीलगिरि पहाड हैं। हिमालय पर एक छोटा-सा ज्वालामुखी भी है। सीताकुण्ड आदि कुछ गर्म जल के सोते हैं।

भारतीय नदिया बडी और लम्बी हैं। इनमे सिंधु, सतलज, व्यास, रावी, झेलम, सरस्वती, गंगा, जमुना, सरयू, गण्डक, धसान, चम्बल, केन,

सोन, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्ण, कावेरी, नर्वदा और ताप्ती मुख्य हैं। गगा, सि धु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्वदा, कावेरी, सरयू, गोमती, चर्मण्वती (चंबल), क्षिप्रा, वेत्रवती, महानदी और गण्डक पवित्र समझी जाती है।

भारतवर्ष की विशेषतायें

भारतवर्ष ससार भर के सार से सयुक्त है। इसमे सभी तरह की जलवायु है और दुनिया भर की प्राय सभी चीजें कही न कही यहाँ पाई जाती हैं। समुद्रों और पहाडो द्वारा यह देश सारी दुनिया स पृथक है। खैबर और बोलन की घटिया इसके प्राचीन प्रवेश द्वार रह हैं। इन्ही के द्वारा सीदियन, शक, कुशान, हूण और मुसलमान इस दश मे आये। इसमे से और सब जातिया आर्यो म मिलकर एक 'हिन्दू जाति' मे परिणत हो गयी, केवल मुसलमान जाति ही पृथक रही है। आसाम और तिब्बत की ओर से भी भारत म प्रवेश करने के माग हैं, पर इन मार्गों से कुछ मगोल जातियो को छोडकर कोई विजयिनी जाति भारत मे नही आई।

योरोप की जातिया भारत म समुद्र माग द्वारा आयी। इससे प्रथम की विजयिनी जातिया उत्तर से प्रविष्ट होकर दक्षिण की ओर फैलती रही थी, परन्तु योरोप की जातिया दक्षिण से उत्तर को ओर फली हैं।

हिमाचल पवत, जो शताब्दियो से हमारा रक्षक और मेघा का नियन्ता रहा है, कभी समुद्र तल रहा है। भूगर्भशास्त्रियो का कथन है कि पुरातन युग म दक्षिण भारत ही देश था, शेष समुद्र का पदा। दक्षिणी भारत से लेकर मेडागास्कर तथा पूर्वी अफ्रीका तक खुला भूभाग था। भारत मे तीन ऋतु प्रधान ह जाडा, गर्मी और बरसात। कितने ही देशी विदेशी सम्वत् प्रचलित हैं। इनमे विक्रम, ईस्वी और शालिवाहन शक सम्वत् का अधिक प्रचार है। अधिकाश निवासी हिन्दू है। द्वारिका, बदरीनाथ, जगन्नाथ और सेतुबन्धरामेश्वर उनके चार धाम है तथा अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काची, उज्जैन और द्वारिका सात पुरी ह, ये ग्यारहो स्थान पवित्र माने जाते है। हिन्दू १२ ज्योतिर्लिंग परम पवित्र मानते ह, जो विश्वनाथ, घृष्णेश्वर, बदरीनाथ, केदारनाथ, वद्यनाथ, श्रीनाथ, महाकालेश्वर, सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, त्र्यम्बकेश्वर, ओंकारेश्वर तथा रामेश्वर हैं।

पूर्वी भाग मे चावल अधिक खाया जाता है। शेप भारत मे गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा। अधिकाश मांस नही खाते। दाल और दूध का चलन अधिक है। धर्मो मे सनातनी, बौद्ध, जन, मुसलमान, ईसाई और सिक्ख प्रधान है।

भारतवर्ष मे ८ जातिया का मिश्रण है। आर्यों की सब मे प्रधानता है, उसी मे शक, सीदियन, हूण, कुशान मिल गये ह। अंग्रेजो के पूव सारा भारत कभी एक शासक के आधीन नही रहा था। बगालियो, पजाबिया, कोशलो, महाराष्ट्रो और मदरासियो मे परस्पर इतना अतर है कि उन्हे एक जाति नही कहा जा सकता। सबमे राजनैतिक और सास्कृतिक भिन्नता है। इनके इतिहास भी अलग-अलग है। प्रान्तो मे भी जमीन-आसमान का अतर है। परन्तु धार्मिक एक्य सबको मिलाये है। उसी के माध्यम से विचारो का साम्य भी है। विज्ञानेश्वर की मित्ताक्षरा सारे देश मे मानी जाती है। कुरुक्षेत्र के द्वैपायन, व्यास, ठेठ दक्षिण के शकराचाय, उत्तरीय गौतमबुद्ध और दक्षिणात्य आपस्तम्ब के कथन देश भर मे माने जाते रहे है। किसी ने इस बात की परवाह नही की कि कौन किस दश का वासी था। शेपनाग, काश्मीरी, मम्मट और कान्यकुब्जीय भरत समान भाव से काव्या-चाय माने गये है। वेद, ब्राह्मण, सूत्र, स्मृतियां और पुराण समभाव से देश मे पूजित हैं। इस प्रकार राजनैतिक सम्बध, भाषा और जलवायु यदि अखण्ड भारतवर्ष को पूरी एकता नही देते ता सभ्यता और विचार की समता यह काम करती है। उसी पर 'भारतीयता' निर्भर है। परन्तु सास्कृतिक और लाक्षणिक दृष्टि से भारत मे एक विचित्रता है। एक तरफ वह ससार का गुरु है, दूसरी ओर शिष्य। प्राचीन सभ्यता और दार्शनिक के आध्या-त्मवाद के कारण वह आज की उन्नत जातियो का गुर माना जाता है, परन्तु कला कौशल और व्यापार विज्ञान मे वह पश्चिम का सुयोग्य शिष्य रहा है।

भारतवष के इतिहास का महत्व

भारतीय इतिहास के चार आधार है। स्वदेशी साहित्य, विदेशी ग्रन्थ, पाषाण लेख, सिक्के और सम सामयिक ऐतिहासिक गवेषणाए। मोहनजोदडो और हडप्पा से प्राप्त साधन सबस अधिक बहुमूल्य है।

भारतीय साहित्य मे राजतरंगिणी, महाभारत, रामायण, जैनग्रन्थ, जातक और अन्य बौद्धग्रन्थ हैं। वेदो, ब्राह्मणो, सूत्रग्रन्थो और स्मृतियो से भी बहुत ऐतिहासिक मसाला प्राप्त होता है। विदेशी लेखो मे सबसे प्राचीन लेख फारस के बादशाह हिस्टस्पस के पुत्र डेरियस का है जो उसने 'परसे पुलिस' और 'नक्श रुस्तम' मे किया है। दूसरे ग्रन्थ का काल ईसापूर्व सन् ४८६ है। फिर हेरोडोटस का लेख है। सिकन्दर का आक्रमण ईसापूर्व सन् ३२५-२३ मे हुआ था और इसके कुछ काल ही बाद सीरिया और मिस्र के राजदूत पटने मे मौर्य सम्राट के दर्बार में रहने लगे थे। उनके विवरण महत्वपूर्ण है। मेगस्थनीज प्रमुख है। यूनान और इटली के राजसेवक ऐरियन का वर्णन भी महत्वपूर्ण है। ईस्वी प्रथम शताब्दी मे चीनी लेखक सोमाचीन ने भारत का अच्छा वर्णन किया है। सन ३६६ ईस्वी मे चीनी यात्री फाह्यान और सन ६२६ ईस्वी मे ह्यूनत्साग के अनमोल ग्रन्थ हैं। आठवी शताब्दी मे बौद्ध भिक्षु मंजुश्री ने और ग्यारहवी मे अरबी विद्वान अलबरूनी ने अच्छे वर्णन किये हैं। फारसी लेखक फरिश्ता, योरोपियन लेखक बर्नियर, मनूची, विलियम जोन्स, कोलब्रुक, विलसन, डा० मिलट पर्जिटर, प्रिंसप, डा० बरनल, डा० फ्लीट, कीलहान तथा रायल एशियाटिक सोसाइटी और सोसाइटी आफ बंगाल ने भारतीय इतिहास के सिलसिले मे महत्वपूर्ण कार्य किये है।

शिलालेखो, ताम्रपत्रो, सिक्को आदि से भी भारतीय इतिहास का बहुत भेद खुला है। अशोक, समुद्रगुप्त के काल पर उनसे भारी प्रभाव पडा है। इन सामग्रियो के अलावा अनेक प्राचीन ग्रन्थ पुराण, रासो आदि प्राप्त हुए हैं जिनसे भारतीय इतिहास पर बहुत प्रकाश पडता है।

बडे-बडे इतिहासकारो ने इस महत्वपूर्ण घटना की ओर विद्वानो का ध्यान आकर्षित किया है। भारतवर्ष के इतिहास मे यह एक उल्लेखनीय बात है कि बार बार बडे साम्राज्य कायम होकर टूटते रहे और फिर छोटी छोटी रियासते बन गई। सुदास, रामचन्द्र, जरासंध, युधिष्ठिर, अजातशत्रु, अशोक, समुद्रगुप्त, शकयमन, हर्षवर्धन, अलाउद्दीन, औरङ्गजेब, माधवराव अपने युग मे भारी सम्राट् थे, परन्तु हर बार देश की एकता छिन्न भिन्न हो गई और वह छोटी छोटी रियासतो मे बँटकर वहाँ माण्ड-लिक राज बन गये। एक बार नही बारह पन्द्रह बार ऐसा ही हुआ। इससे

हमे यह मानना होगा कि भारत मे समय के साथ सुविचारो की उन्नति नही हुई। खासकर बारहवी शताब्दी के बाद। एक बात हम यह देखते हैं कि लोगो में सदैव लोक प्रचलित आचारो पर चलने की प्रवृत्ति रही। धार्मिक सहनशीलता भी काफी रही। मुसलमानो को छोडकर और किसी ने भारत मे धार्मिक युद्ध नही किये। कानून बनाने का राजाओ ने कभी प्रयत्न नही किया। तपस्वी ब्राह्मणो के ग्रन्थ ही राजसभा मे कानून की भाँति माने जाते रहे। पेशवाओ के राज्य काल तक ऐसा ही रहा। यह बात स्वीकार करनी होगी कि जितनी उन्नति हिन्दू राज्य ने शासन पद्धति, प्रजा अधिकार आदि के विचारो मे की, उतनी तात्कालिक किसी साम्राज्य ने पृथ्वी भर मे नही की। यदि सुअवसर प्राप्त होता तो अब उन्नत देशो की भाँति भारत भी बारहवी शताब्दी के पीछे उन्नत होता, परन्तु हिन्दू-मुसलमानो की सामाजिक एव धार्मिक भिन्नता और संघर्ष के कारण प्रजा और राजा मे एकता का भाव मुसलमानी राज्यकाल मे नही रह गया। मुसलमान अपने को सदा विजयी समझते रहे और पाँचसौ वर्ष तक प्रजा के अधिकारो का समुचित विकास नही हो पाया। परन्तु यह बात केवल राजनैतिक अधिकारो एव विचारो के सम्बन्ध मे कही जाती है, अन्य विषयो मे भारत के पृष्ठ बहुत उज्ज्वल है। हम कह सकते हैं कि बहुत सी बातो मे भारत ने ससार की सभ्यता को वर्द्धमान किया है। कोमलता, दया, परदुःख कातरता जो भारत मे देखी जाती रही, वह पृथ्वी के किसी अन्य देश मे नही। शिल्प और स्थापत्य के उदाहरण भी साधारण नही हैं। दर्शन साहित्य और अध्यात्म चर्चा मे भारत ससार का गुरु रहा है।

२

मुहम्मद-रसूल अल्लाह

सन् ५७१ ईस्वी की गर्मी के दिनो मे शहर बसरा मे ऊँटो पर सवार एक काफिला आया। वह मक्का से आया था और अरब के दक्खिन प्रदेश मे पैदा हुई सूखी वस्तुओ से लदा हुआ था। इस काफिले का सरदार अबू तालिब और उसका बारह वर्ष का भतीजा था। बसरे के नेस्टर धर्मावलम्बी मठ की ओर से उनका आतिथ्य किया गया।

मठ के संन्यासियो को जब मालूम हुआ कि उनका बारह वर्ष का बालक अतिथि अरब के प्रसिद्ध पवित्र मंदिर काबा के रक्षक का भतीजा है, तो उन्होने अपने धर्म की प्रशंसा और मूर्ति पूजा की निन्दा उस बालक के हृदय में प्रवेश कराई। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि बालक असाधारण बुद्धिमान और नवीन ज्ञान का उत्सुक है। खास कर धर्म सम्बन्धी विवाद मे उस का मन बहुत लगता है।

इस बालक का नाम मुहम्मद था। मक्का मे उस समय एक काला पत्थर पूजा जाता था, जो उल्कोद्भव था। यह काबा मे रक्खा हुआ था और उसके साथ ३६० अन्य मूर्तियां थी, जो वर्ष भर के दिनों की सूचक थी। क्योंकि उस समय साल के दिन यों ही गिने जाते थे।

यह वह समय था, जबकि ईसाई धार्मिक समूह अपने पादरियों की दुष्टता और ऐश्वर्य तृष्णा के कारण अराजकता की दशा को पहुँच चुका था। पश्चिमी देशों के पोप लोग धन, विलास और शक्ति के ऐसे प्रलोभन देते थे कि विशप लोगों के चुनाव में भयंकर वध करने पड़ते थे। पूर्वीय देशों मे

कुस्तुन्तुनिया इन धर्मान्ध झगडो का केन्द्र था, जहाँ अनेक पन्थ और दल बन गये थे।

ये लोग परस्पर अत्यन्त घृणा भाव रखते थे। अरब उन दिनो स्वतन्त्रता की अपरिचित भूमि थी, जो भारत सागर से लेकर शाम देश के मरुस्थल तक फैली हुई थी। यह भगोडो और झगडालू ईसाइयो का आश्रय-स्थल हो रहा था। अरब के मरुस्थल ईसाई सन्यासियो से भर गये थे और वहा के बहुतेरे लोगो ने उनके पन्थ को स्वीकार कर लिया था। हबश देश के ईसाई राजे, जो नेस्टर धर्म को मानते थे, अरब के दक्षिणी प्रान्त यमन पर अधिकार रखते थे।

अरब एशिया के दक्षिण पश्चिम कोण पर एक मरुस्थल है। इसकी लम्बाई १,४०० मील और चौडाई ७०० मील है। जन-संख्या ५० लाख के लगभग है। देश भर मे पहाड, पहाडी, ऊजड जगल और रेत के टीले है। जल का भारी अभाव है। खजूर ही इस देश की न्यामत है। अधिकाश अरब-वासी, जिन्ह खानाबदोश कहते है, किसी पहाडी नाले के पास ठहर जाते है और जब चारापानी का सहारा नही रहता तो अन्यत्र चल देते हैं। इस देश मे गर्मी इतनी पडती है कि दोपहर के समय हिरन अन्धा हो जाता है। आधिया ऐसी आती है कि बालू के टीले के टीले इधर से उधर उड जाते हैं। यदि यात्रियो का कोई समूह इनके चपेट मे आगया तो उसकी खैर नही। कही कही सर्दी भी बडे कडाके की पडती है। सर्दी मे वर्षा भी होती है। यही वर्षा का जल नालो और गड्ढो मे सचित करके पिया जाता है।

अरब के घोडे ससार मे प्रख्यात हैं। यह पशु पथरीले स्थान पर बडा काम आता है, पर रेतीले भागो के काम की चीज तो ऊँट है। यह न केवल सवारी के काम आता है, प्रत्युत् इसका मास और दूध भी बहुतायत से काम मे लाया जाता है। लोग खजूर का गूदा स्वय खाते और गुठली ऊँटो को खिलाते हैं। अब उनकी दशा मे कुछ परिवर्तन हो गया है।

बसरा नगर के नेस्टर मठ के महन्त बहीरा ने मुहम्मद को नेस्टर मत के सिद्धान्त सिखाये। इस विद्वान् सन्यासी के सदुपदेश से मुहम्मद के मन मे मूर्ति पूजा से बहुत घृणा हो गई।

जब मुहम्मद मक्का लौटा, तो वह उन्ही ईसाई सन्यासियो की भाति जङ्गल मे कुटी बनाकर रहने को होरा नामक पहाडी की एक गुफा मे, जो

मक्का से कुछ मीलो के अ तर पर थी, चला गया और ध्यान तथा प्रार्थना मे लग गया। उस एका त विचार से उसने एक सिद्धा त निकाला, अर्थात् ईश्वर की अद्वैतता । एक खजूर के वक्ष की पीठ से टिककर उसने इस विषय के विचार अपने मित्रो और पडोसियो को सुनाये और यह भी कह दिया कि इसी सिद्धा त के प्रचार मे मैं अपना सारा जीवन लगा दू गा। उस समय से मृत्यु तक उसने अपनी उगली मे अँगूठी पहनी, जिस पर खुदा था—'मुहम्मद ईश्वर का दूत।' बहुत दिनो तक उपवास और एका तवास करने तथा मानसिक चि ता से अवश्य मति भ्रम हो जाता है, यह वैद्य लोग भली भाति जानते है। इसी हालत मे मुहम्मद को प्राय अ तरिक्ष वाणिया सुनाई पडती थी। फरिश्ते उसके सामने आते थे। एक दिन स्वप्न मे जिबराइल नाम का फरिश्ता उसे अपने साथ आकाश पर ले गया, जहाँ मुहम्मद निभय उस भयङ्कर घटा मे चला गया, जो सदैव सव शक्तिमान् ईश्वर को छिपाये रहती है। ईश्वर का ठण्डा हाथ उसके क धे पर छू जाने से उसका चित्त कापा।

शुरू मे उसके उपदेश का बहुत विरोध हुआ और उसे कुछ भी सफलता न हुई। मूर्ति पूजका ने उसे मक्का से निकाल दिया। तब उसने मदीने मे, जहाँ बहुत से यहूदी और नेस्टर प थ वाले रहते थे, शरण ली। नेस्टरप थी तुर त उसके मतवालम्बी हो गये। छ वर्षो म उसने केवल १,५०० चेले बनाये। पर तु तीन छोटी लडाइयो मे उसने जान लिया कि उसका अत्य त विश्वासप्रद तक उसकी तलवार है। ये तीनो छोटी लडाइया पीछे से बीडर, ओहूद और नश स के बडे युद्ध प्रख्यात किये गये। उसके बाद मुहम्मद बहुधा कहा करता था कि 'बहिश्त तलवार के साये के नीचे पाया जायगा।'

कई एक उत्तम आक्रमणा द्वारा उसने अपने शत्रुओ को पूण रूप से पराजित किया। अरब की मूर्ति पूजा जड से नष्ट हो गई और यह भी मान लिया गया कि वह ईश्वर का दूत है।

जब वह शक्ति और ख्याति को पराकाष्ठा को पहुँचा, तब वह अ तिम बार मदीने से मक्का की ओर गया। उसके साथ एक लाख चौदह हज़ार भक्त फूलो के गजरा से सजे हुए ऊँटो पर फहराते झण्डे लिये हुए चले। उसके साथ ७० ऊँट बलिदान के लिये थे। उस समय काबे के म दिर मे ३६० मूर्तियाँ थीं जो एक वप के दिना की चिह्न थीं। यह म दिर प्राचीन

भारत के ढग का और शाम देशीय देवालयो से मिलता-जुलता चोकोर खुली छत का भवन है। मुहम्मद की आज्ञा थी कि मक्का पहुँचते ही सब मूर्तियाँ ताड डाली जाय। उस समय अबूसुफियान मक्के का सरदार था जिसने प्राणभय से कलमा पढ लिया। जब वह नगर के निकट पहुँचा तब उसने यह शब्द कहे—"हे ईश्वर! मैं यहाँ तेरी सेवा के लिए हाजिर हूँ। तेरे बराबर कोई दूसरा नही, केवल तू ही पूजने योग्य है। केवल तू ही सबका राजा है, उसमे तेरा कोई साझी नही।"

अपने हाथो से उसने ऊटो का बलिदान किया, और मूर्त्तियो को छिन्न-भिन्न कर दिया। काबा के व्याख्यान पीठ से उच्च स्वर से कहा—"श्रोतागण, मैं केवल तुम्हारे समान एक मनुष्य हूँ।" एक मनुष्य से, जो डरते डरते उसके पास आया, कहा—"तुम किस बात से डरते हो, मैं कोई अलौकिक नही हूँ। मैं एक अरब निवासी स्त्री का पुत्र हूँ, जो धूप मे सुखाया हुआ मास खाती थी।"

मक्का और काबे के मन्दिर को अधिकार मे कर लेने पर अरब की बहुत सी जातिया मुहम्मद साहब के धर्म मे मिल गई। परन्तु कुछ कबीले अभी ऐसे थे जिन्होने इस्लाम को अभी स्वीकार नही किया था। यह कबीले बनो, हवाज़िन, सतीफ, जसर और साद वश के थे। कुछ पहाडी जातिया भी इनके साथ मिल गई थी। एक बार इनसे मुहम्मद साहब ने युद्ध कर इन्हें परास्त किया, यह हुनैन का युद्ध प्रसिद्ध है, इसमे मुहम्मद साहब के साथ १२०० सवार थे। इस युद्ध मे एक अद्भुत घटना घटी थी—जब लूट का माल इकट्ठा हो रहा था तब एक डोली जाती हुई देखी गई। रबिया इनेरबी ने उसके पीछे घोडा दौडाया। निकट जाकर देखा तो एक बुड्ढा बठा था। रबिया ने जाते ही बुड्ढे पर वार किया। पर उसकी तलवार टूट गई। बुड्ढे ने हँसकर कहा—'बेटे, अफसोस है तेरे मा-बाप ने तुझे अच्छी तलवार नही दी। जा मेरी काठी मे तलवार लटक रही है उसे ले आ और अपना काम कर।' रबिया ने तलवार निकाल ली और वार करने लगा। बुड्ढे ने कहा—'अपनी मा से यह जरूर कह देना कि मैं दुरैद इब्ने सुम्मा को मार आया हूँ।' रबिया ने कहा—'अच्छा कह दूँगा।' इसके बाद वह उसका सिर काटकर घर गया और मा से उक्त समाचार कहा। मा ने कहा—'अरे दुष्ट जिसे तूने मारा है उसने तीन बार मेरी और तेरी दादी की इज्जत बचाई थी।' रबिया ने मुँह फेरकर कहा—'इस्लाम काफिर के अहसान और गुण नही मानता।'

मुहम्मद साहब ने मक्का मे यह घोषणा कराई थी—"जिन लोगो ने अरब देश मे अब तक इस्लाम धर्म स्वीकार नही किया है उन्हे चाहिए कि चार मास के भीतर भीतर कलमा पढ लें या अरब को छोडकर चले जाय। चार महीने बाद यदि कोई काफिर अरब मे दिखाई देगा तो उसका सिर काट लिया जायगा। इसमे मुसलमानो के मित्रो, रिश्तेदारो और भाइयों का भी लिहाज नही किया जायगा।"

यमन का इलाका अभी मुसलमान नही हुआ था, वहाँ मुहम्मद साहब ने अली इब्ने अबितालिब को फौज लेकर भेजा। उन्होने अली से कुछ प्रश्न किए तो अली ने तलवार निकाल कर कहा—इस्लाम का जवाब यह तलवार है—और कई विद्वानो के सिर काट लिये। इससे भयभीत होकर सारा यमन मुसलमान हो गया।

वह मदीने मे मरा। मृत्यु के समय उसका सिर आयशा की गोद मे था। वह बार बार पानी के बर्तन मे अपने हाथ डुबोता था और अपने चेहरे को तर करता था। उसे तीव्र ज्वर और सन्निपात था। अन्त मे उसका दम टूटा। उसने आकाश की ओर टकटकी लगाये हुए टूटे फूटे शब्दो मे कहा—"हे ईश्वर, मेरा पाप क्षमा कर। एवमस्तु। मैं आता हूँ।"

मृत्यु के समय उसकी आयु तिरेसठ वर्ष की थी। उसने अपने अन्तिम दस वर्षों मे चौबीस युद्ध स्वय अपने सेनापतित्व मे तथा पाच छ दूसरो की आधीनता मे कराये तथा कुल एक लाख चौदह हजार स्त्री पुरुषो को मुसलमान बनाया। मृत्यु के समय उसके सम्बन्धियो मे चार पुत्रिया चार पुत्र, ८ बादियाँ, अठारह स्त्रिया, दो दाइया, पाच भाई दो बहिन छ फूफियाँ, बारह चचा, चालीस लेखक अठावन दास, सोलह सेविकाएँ, सत्ताईस सेवक, आठ द्वारपाल, आठ वकील, पद्रह बागी, चार कविता करने वाली स्त्रिया और एकसौ छियानवे कवि थे।

सम्पत्ति मे—एक सिंहासन, अनेक लाठिया, दो पताकाएँ छ धनुष, चार भाले, तीन किरीट, तीन ढालें, साठ कवच, दस तलवारें, अनेक वस्त्र, सत्तर भेडे, इक्कीस ऊँटनिया, तीन गधे, चार खच्चर, बीस उम्दा घोडे सात प्याले, एक सिंगार का डब्बा और एक तकिया था।

३

खलीफा-अबूबकर

मुहम्मद साहब ने मृत्यु के समय अपना कोई उत्तराधिकारी न चुना था। इस कारण उसकी मृत्यु होते ही सवत्र हलचल मच गई। इस पर असाम्म इब्नेजद ने इस्लाम का झडा आयशा के दर्वाजे पर खडा कर दिया और हथियारबन्द पहरेदार नियत कर दिये। अब यह विचार हुआ कि किसे उत्ताधिकारी चुना जाय।

अबूबकर, उमर, उस्मान और अली ये चार आदमी गद्दी के अधिकारी समझे गये। खानदान और योग्यता की दृष्टि से अली का हक था। पर कुछ लोग अबूबकर को, कुछ उमर को और कुछ उस्मान को चुनना चाहते थे। इसके निणय के लिए पचायत बुलाई गई। उसने यह निणय किया कि खलीफा मक्का के कुरेशो मे से बनाया जाय और मन्त्री अन्सारी बनाये जाया करें। इस निश्चय के अनुसार अबूबकर और उमर मे से कोई भी खलीफा हो सकता था। पर जब इस पर झगडे होने लगे तो उमर ने आगे बढकर अबूबकर का सलाम किया और उनका हाथ चूम कर कहा, "आप हम सबसे बडे, योग्य व बुद्धिमान् हैं, इसलिए आपके रहते कोई आदमी खलीफा नही बनाया जा सकता। इस प्रकार अबूबकर प्रथम खलीफा चुना गया।"

मृत्यु के समय मुहम्मद साहब का विचार सीरिया और फारस की विजय का था और वे इसकी तैयारी कर चुके थे। अबूबकर ने खलीफा होते ही ये आज्ञायें प्रचलित की —

"अत्यन्त कृपालु ईश्वर के नाम से प्रारम्भ करता हूँ। अबूबकर शेष सब मुसलमानो को तन्दुरुस्ती और खुशी की दुआ देता है। ईश्वर तुम पर

दया करे और तुम्हे आन द मे रखे। मैं ईश्वर की प्रशसा करता हूँ। इस राजाज्ञा द्वारा तुमको सूचना दी जाती है कि, मैं सच्चे मुसलमाना को सोरिया देश भेजना चाहता हूँ कि वे जाकर उसे काफिरा के हाथ से छीन लें और मैं जानना चाहता हूँ कि धम के वास्त लडना मानो ईश्वरीय आज्ञा मानना है।"

इसके बाद ही सेनापति वली इब्ने अबिसफायान ने शाम देश को घेर लिया। युद्ध हुआ। बादशाह की सेना हार गई उसके सेनापति तथा बारह हजार सैनिक काम मे आये। लूट का बहुत सा माल मुसलमाना के हाथ लगा जो खलीफा के पास भेज दिया।

सेनापति खलीद इब्न ने सोरिया को फतह किया। मूर्ति-पूजको के प्रति अति उग्र क्रोध उसके मन मे था। वह कहा करता था, "मैं उन ईश्वर-नि दक मूर्ति पूजको की खोपडी चीर डालूँगा, जो ऐसा कहते है कि अत्य त पवित्र सव शक्तिमान् ईश्वर ने पुत्र उत्पन्न किया है।"

उसने दस हजार योद्धाओ को साथ लेकर 'हीरा' नगर पर आक्रमण किया और वहा के ईसाई बादशाह को मार गिराया। बादशाह के मरन पर नगर वासियो ने सत्तर हजार मुहरें वार्षिक कर मुसलमाना का देना स्वीकार किया। इस नगर पर अधिकार कर, उसने फिरात नदी पर छावनी डाली और ईरान के बादशाह को लिखा कि या तो मुहम्मदी कलमा पढो या 'जजिया' दो, पर तु उसे तत्काल बसरे की चढाई म योग देने को बुलाया गया क्योंकि शाम देश को बादशाह हरक्यूलस ने मुकाबिले के लिये भारी सेना का सग्रह किया था। वह फौरन प द्रह हजार चुने हुए सवार लेकर पहुचा। उधर खलीफा ने कई हजार योद्धा और भेज दिये। बसरे पर धावा बोल दिया गया।

बसरा उन दिनो रोम साम्राज्य का एक भारी दुग था। इसी नगर के सामने मुसलमानी सेना ने छावनी डाली। किला बहुत मजबूत था और रक्षक सेना भी बलवान थी। उसका अध्यक्ष रामेनस विश्वासघात करके मुसलमानो से मिल गया और किले का फाटक खोल दिया। एक व्याख्यान मे अपने भाइयो से कहा —

'मैं तुम्हारा साथ छोडता हूँ। इस लोक के लिये और परलोक के लिए भी। मैं उसको नही मानता, जो सूली पर चढाया गया था और उनको

भी नही मानता, जो उसको पूजते है। मैं ईश्वर को अपना मालिक बनाता हूँ और इस्लाम को अपना धर्म, मक्का को अपना धर्म मन्दिर, मुसलमानो को अपना भाई और मुहम्मद को पैगम्बर मानता हूँ।"

यह रोमेनस उन हजारो विश्वासघातियो मे से एक था, जिन्होने फारस की विजयो मे अपना धर्म खो दिया था।

बसरा से सीरिया की राजधानी दमिश्क सत्तर मील थी। यह शहर बडा धनाढ्य, बडा गुलजार और व्यापार का केन्द्र था। यहा का रेशम और गुलाब का इत्र दुनिया भर मे प्रसिद्ध था। खलीद अपने पन्द्रह हजार सवारो को लेकर दमिश्क की तरफ चला। उसने शरजील तथा अबू अबीदा को, जिन्हे वह फरात नदी के निकट छोड आया था, चुपचाप लिखा कि वे तत्काल अपनी पूरी फौज लेकर दमिश्क को घेर ले। उन्होने तीन हजार सात सौ फौज लेकर कूच किया और नगर को घेर लिया। उन्होने नगरवासियो को सूचना दी कि तत्काल मुसलमान हो जाओ या धन दण्ड दो, अन्यथा युद्ध करो। बादशाह हरक्यूलस वहा से डेढ सौ मील दूर एण्टीऑक के महल मे था। उसने खलीद के पन्द्रह सौ सवारो का आक्रमण समझ कर पाच हजार सेना भेज दी। उसका सरदार जनरल केलूस था। उसका नगर शासक अजराईल से मतभेद था। जब उसने चालीस हजार सेना के प्रचण्ड बल को देखा, तो वह भयभीत हो गया और विश्वासघात करके खलीद से कहला भेजा कि अजराईल को मारते ही नगर पर कब्जा हो जायगा। अजराईल यद्यपि वृद्ध था, पर मैदान मे डट गया और वीरता से लडा। पर खलीद ने दोनो को पकड कर कैद कर लिया और मुसलमान होने को कहा। अन्त मे इन्कार करने पर उन्हे कत्ल कर दिया।

इस घटना से नगर मे हलचल मच गई। नगर के फाटक बन्द कर लिये गये। बादशाह ने खबर पाकर एक लाख सेना भेजी। परन्तु खलीद ने मार्ग ही मे छल बल से उसे छिन्न भिन्न करके परास्त कर दिया और सारी युद्ध सामग्री छीन ली। इस सेना के दो ईसाई नायक पीटर और पॉल वीरता से लडे और बहुत से मुहम्मदी सैनिको को काट डाला। पीछे पॉल गिरफ्तार कर लिया गया और पीटर भाले से छेद कर मार डाला गया। पॉल से मुसलमान होने को कहा गया तो उसने कहा कि मैं "लुटेरो और खूनियो के धर्म को स्वीकार न करूँगा।" इस पर इसका सिर काट लिया गया।

वादशाह ने फिर सत्तर हजार फौज भेजी, जो जनरल वाडन की अधीनता मे थी। पर ये सव नये रगरूट थे। जनरल वाडन ने खलीद के मारने का एक षड्य त्र रचा और एक पादरी को स घि चर्चा के लिये भेजा। पादरी ने भण्डाफोड कर दिया कि अमुक स्थान पर दस सिपाही तुम्हारे बध के लिये खडे रहेगे, और जो दरबान के भेष मे होगे। खलीद ने कौशल से दसा सिपाहियो को रात ही मे चुपचाप मरवा डाला और वेधडक स घि स्थल पर पहुँच गया। वाडन का कुछ पता न लगा। उसके निकट जाकर खलीद ने वाडन की गदन पकड ली और उसी समय उसका सिर काट कर उसकी सेना मे फेंक दिया। यह देख कर ईसाई लोग भयभीत हो गये। इसी बीच मे मुसलमान मेना ने धावा वोलकर सारी सेना को तहस नहस कर दिया और उनका सवस्व लूट लिया। इस लूट म वेतोल धन मिला और उसके लालच से असख्य अरवो ने युद्ध मे सम्मिलित होने की तयारी की।

इसके बाद दमिश्क वासी टॉमस को सेनापति वनाकर लडने लगे। यह वडा भारी तीरन्दाज था। वीर भी था। खूब लडा। अब्बास इब्ने जद उसके तीर से मारा गया। इस पर अब्बास की स्त्री ने मैदान मे आकर टॉमस की आख अपने तीर से फोड दी, फिर भी वह लडता रहा और सत्तर दिन तक दमिश्क पर कब्जा न होने दिया।

अन्त मे सत्तर दिन के वाद उसकी इच्छा के विपरीत नगर के एक सौ अस्सी प्रतिष्ठित आदमियो और पादरियो ने खलीद से सधि करली और नगर मुसलमानो को सौंप दिया। यह भी निश्चय हो गया कि जो नागरिक वाहर जाना चाहे, मय अपने सामान के जा सकते हैं, परन्तु जो रहगे उन्ह जजिया दना होगा और ईसाइयो की पूजा क लिये सात गिरजे न गिराये जायेंगे। एक पादरी ने विश्वासघात करके एक सौ अस्सी मुसलमानो को गुप्त माग से नगर मे बुला लिया। इन्होंने फाटक खोल दिये। सारी सेना नगर म घुस आई और कत्लेआम मच गया। अन्त मे खलीद ने अपना काले गिद्ध का झण्डा दमिश्क के किले पर फहरा दिया।

जिन लोगो ने इस्लाम धम न स्वीकार किया था, वे नगर छोडकर वाहर चले गये। टॉमस उनके साथ था। खलीद ने चार हजार सवार उनके पीछे लगा दिये और जव ये बेचारे आफत के मारे एक नदी के किनारे

विश्राम कर रहे थे, स्त्रियां भोजन बना रही थी, बच्चे खेल रहे थे, उन पर वे सनिक टूट पडे और लूटकर कत्ल कर डाला। इनमें से सिफ एक आदमी बचकर भाग सका। बादशाह की पुत्री भी इस झुण्ड मे थी, उसे खलीद ने यह कह कर छोड दिया कि जा और अपने बाप से कह कि मुसलमानी धम ग्रहण करे, वरना मैं शीघ्र ही उसका सिर उतारने आता हूँ।

इस तमाम लूट का पाचवा भाग खलीफा के पास भेजकर शेष उसने आपस मे बाँट लिया। परन्तु माल पहुँचने के पूव ही खलीफा की मृत्यु हो गई।

कुछ लोगो का कथन है कि उसे विष दिया गया। उसने अपना उत्तराधिकारी उमर इब्नेखत्ताब को नियत किया। वह तिरसठ वष की आयु मे मरा।

४

खलीफा-उमर

इसके बाद उमर इब्नेखत्ताब खलीफा हुआ। इस समय इसकी आयु तिरपन वर्ष की थी। यह वही व्यक्ति था, जो पचीस वर्ष की आयु में मुहम्मद साहब का सिर काटने को घर से निकला था, परन्तु अपनी बहिन के समझाने से कट्टर मुसलमान बन गया था। वह दाहिने हाथ से जितना काम कर सकता था, उतना ही बाएं से भी कर सकता था। धार्मिक तर्कों का उत्तर वह तलवार की धार से देता था और तर्क करने वाले का उसी दम सिर काट डालता था। उसका डील डौल भारी था। वह बैठा हुआ भी खड़े पुरुष की बराबर माप का था। शरीर काला, आंखें लाल और सिर बिलकुल सफाचट। सदैव एक चमड़े का चाबुक हाथ में रखता था और बदमाशों तथा मुहम्मद के निन्दक कवियों को उससे पिटवाता था। उसने खलीफा होने पर अपना नाम अमीरुल मोमनीन रक्खा। आगे चल कर पदवी के तौर पर यह नाम सभी खलीफाओं के नामों के साथ जोड़ा जाने लगा।

इतना होने पर भी वह लूट मार और जुल्म को नापसन्द करता था। उसने खलीद के अत्याचारों की अति निन्दा की, और उसे मुख्य सेनापति के पद से हटाकर उसकी जगह अबू अबीदा को मुख्य सेनापति बनाने का हुक्म भेज दिया। अबू अबीदा ने, जो खलीद के आधीन अफसर था, वह पत्र छिपा लिया। दुबारा हुक्म आने पर वह मुख्य सेनापति बना तथा खलीद उसके आधीन होकर काम करने लगा।

अब उसकी सेना जोरडन नदी के पूर्व की ओर बढ़ी और यह बात स्पष्ट थी कि एशियामाइनर पर हाथ लगाने से पहिले पलेस्टाइन के मजबूत

और बडे-बडे नगर विजय कर लिये जायँ। पहिले जेरुसलेम पर धावा बोला गया। वहा के निवासिया ने खूब तैयारी की थी। पर चार महीने के घेरे के बाद नगर के मुखिया ने कोट की दीवार पर खडे होकर आत्म समपण की शर्तें पूछी। उसने सब शर्तें स्वीकार करके एक यह शत्त पेश की कि आत्म-समपण खुद खलीफा के हाथ मे होगा।

खलीफा उमर इस काम के लिए मदीने से चला। उसने एक गठरी नाज, एक गठरी छुआरे, एक कठोती और एक मशक पानी, एक लाल ऊँट पर लाद कर यह यात्रा की। इस विजेता ने एक ईसाई मुखिया के साथ उस पवित्र नगर मे प्रवेश किया और बिना रक्तपात के वह नगर मुसलमानी धर्म का प्रतिनिधि नगर हो गया। सुलेमान के मन्दिर के स्थान पर एक मस्जिद बनवाने की आज्ञा देकर खलीफा मदीने को लौट गया। दमिश्क से अबू अबीदा मुस्लिम सेना की कमान लेकर लिपैनस की बर्फीली चोटियो को पार कर उरेटाज नदी के किनारे उत्तर की ओर बढा। खलीद को अग्र भाग का सेनापति बना दिया गया। रास्ते मे जायशा के हाकिम ने चार सौ मोहरें और बहुत से रेशमी थान देकर सधि कर ली। फिर उसने सीकिया की घाटी की राजधानी बालबक और मुख्य नगर एमीसा को घेर लिया। एमीसा का हाकिम तभी मरा था, अत नागरिको ने दस हजार मोहर और दो सौ रेशमी थान देकर अपना पिण्ड छुडाया। बालबक मे सुलेमान का बनवाया सूय का एक बहुत सुदर मन्दिर था, उसे तोड दिया गया और नगर पर अधिकार कर लिया गया।

बालबक और एमीसा के निकल जाने से क्षुब्ध होकर बादशाह हर-क्यूलस ने एक लाख चालीस हजार सेना मेनुअल की अधीनता मे भेजी। वहा थोडा युद्ध हुआ और मुसलमानी सेना का दक्षिण भाग टूट गया। पर सनिकगण अपनी स्त्रियो के धर्मोन्मत्त धिक्कारो से फिर रण भूमि को लौट चले। इधर एक देशद्रोही ईसाई मेनुअल को ऐसे स्थान पर ले गया, जहाँ कई मुसलमान ताक लगाये बैठे थे। वहा पहुँचते ही उन्होने मेनुअल को मार डाला। सेनापति के मरते ही सेना के पैर उखड गये और वह भाग खडी हुई। बहुत सी सेना नदी मे डूब गई और कुछ जङ्गल मे भटक गई। रोमन सेना पूण रीति से पराजित हुई। चालीस हजार मनुष्य कैद किये गये और

४

खलीफा-उमर

इसके बाद उमर इब्नेखत्ताव खलीफा हुआ। इस समय इसकी आयु तिरपन वष की थी। यह वही व्यक्ति था, जो पचीस वष की आयु मे मुहम्मद साहब का सिर काटने को घर से निकला था, परन्तु अपनी बहिन के समझाने से कट्टर मुसलमान बन गया था। वह दाहिने हाथ से जितना काम कर सकता था, उतना ही बाए स भी कर सकता था। धार्मिक तर्कों का उत्तर वह तलवार की धार से देता था और तक करने वाले का उसी दम सिर काट डालता था। उसका डील डौल भारी था। वह बठा हुआ भी खडे पुरुष की बराबर माप का था। शरीर काला, आखें लाल और सिर बिलकुल सफाचट। सदव एक चमडे का चाबुक हाथ मे रखता था और बदमाशो तथा मुहम्मद के निन्दक कवियो को उससे पिटवाता था। उसने खलीफा होने पर अपना नाम अमीरुल मोमनीन रक्खा। आगे चल कर पदवी के तौर पर यह नाम सभी खलीफाओ के नामो के साथ जोडा जाने लगा।

इतना होने पर भी वह लट मार और जुल्म को नापसन्द करता था। उसने खलीद के अत्याचारो की अति निन्दा की, और उसे मुख्य सेनापति के पद से हटाकर उसकी जगह अबू अबीदा का मुख्य सेनापति बनाने का हुक्म भेज दिया। अबू अबीदा ने, जो खलीद के आधीन अफसर था, वह पत्र छिपा लिया। दुबारा हुक्म आने पर वह मुख्य सेनापति बना तथा खलीद उसके आधीन होकर काम करने लगा।

अब उसकी सना जारडन नदी के पूव की ओर बढी और यह बात स्पष्ट थी कि एशियामाइनर पर हाथ लगाने से पहिले पलेस्टाइन के मजबूत

और बडे-बडे नगर विजय कर लिये जायँ। पहिले जेरुसलेम पर धावा बोला गया। वहा के निवासियो ने खूब तैयारी की थी। पर चार महीने के घेरे के बाद नगर के मुखिया ने कोट की दीवार पर खडे होकर आत्म समपण की शर्तें पूछी। उसने सब शर्तें स्वीकार करके एक यह शर्त्त पेश की कि आत्म-समपण खुद खलीफा के हाथ मे होगा।

खलीफा उमर इस काम के लिए मदीने से चला। उसने एक गठरी नाज, एक गठरी छुआरे, एक कठौती और एक मशक पानी, एक लाल ऊँट पर लाद कर यह यात्रा की। इस विजेता ने एक ईसाई मुखिया के साथ उस पवित्र नगर मे प्रवेश किया और बिना रक्तपात के वह नगर मुसलमानी धर्म का प्रतिनिधि नगर हो गया। सुलेमान के म दिर के स्थान पर एक मस्जिद बनवाने की आज्ञा देकर खलीफा मदीने को लौट गया। दमिश्क से अबू अबीदा मुस्लिम सेना की कमान लेकर लिबेनस की बर्फीली चोटियो को पार कर उरेटाज नदी के किनारे उत्तर की ओर बढा। खलीद को अग्र भाग का सेनापति बना दिया गया। रास्ते मे जायशा के हाकिम ने चार सौ मोहरें और बहुत से रेशमी थान देकर स धि कर ली। फिर उसने सीकिया की घाटी की राजधानी बालबक और मुख्य नगर एमीसा को घेर लिया। एमीसा का हाकिम तभी मरा था, अत नागरिको ने दस हजार मोहर और दो सौ रशमी थान दकर अपना पिण्ड छुडाया। बालबक मे सुलेमान का बनवाया सूय का एक बहुत सुन्दर मन्दिर था, उसे तोड दिया गया और नगर पर अधिकार कर लिया गया।

बालबक और एमीसा के निकल जाने स क्षुब्ध होकर बादशाह हर-क्यूलस ने एक लाख चालीस हजार सेना मेनुअल की अधीनता मे भेजी। वहा थोडा युद्ध हुआ और मुसलमानी सेना का दक्षिण भाग टूट गया। पर सनिकगण अपनी स्त्रियो के धर्मोन्मत्त धिक्कारो से फिर रण भूमि को लौट चले। इधर एक देशद्रोही ईसाई मेनुअल को ऐसे स्थान पर ले गया, जहाँ कई मुसलमान ताक लगाये बैठे थे। वहाँ पहुँचते ही उन्होने मेनुअल को मार डाला। सेनापति के मरते ही सेना के पैर उखड गये और वह भाग खडी हुई। बहुत सी सेना नदी मे डूब गई और कुछ जङ्गल मे भटक गई। रोमन सेना पूण रीति से पराजित हुई। चालीस हजार मनुष्य कैद किये गये और

वहुत से मार डाले गये। इसके वाद सारा देश विजयिनी मुसलमान सेना के आधीन हो गया। ईसाइयो को इन शर्तों पर रहने दिया गया —

१—ईसाई नये गिरजे न बनवाये।
२—गिरजो के दरवाज़े रात दिन मुसलमानो के लिए खुल रहा करें।
३—गिरजा पर घण्टे न वजाये जायें।
४—सलीव न गिरजो पर लगाई जाय, न वाजार म दिखाई जाय।
५—अपने बच्चा को कुरान न पढायें।
६—अपने धम का प्रचार न करे।
७—अपने किसी भाई को मुसलमान होने से न रोकें।
८—मुसलमानो के सामन कपडे, जूते और पगडी न पहनें।
९—कमर मे पटका वांधा करें।
१०—अरवी भाषा मे वोलें।
११—मुसलमानो के आने पर खडे हो जायँ और जब तक बठने की आज्ञा न मिले, खडे रह।
१२—तीन दिन तक मुसलमान मुसाफिर को अपने घर मे रक्खें।
१३—शराव न वेचें।
१४—घोडे पर काठी न कसें।
१५—शस्त्र न धारण करें।
१६—किसी आदमी को, जो मुसलमान के यहा नौकर रह चुका हो, नौकर न रक्खें।

इसके वाद अबू अवीदा ने हलव पर धावा वोल दिया। रास्त मे अरस्ता का किला पडता था, उसके सरदार ने मुसलमान वनने या कर दने से साफ इकार कर दिया, इसलिए उससे सुलह करके वीस स दूक बतौर अमानत के वहाँ रख दिये गये। उनमे सशस्त्र योद्धा थे। उ होने समय पाकर किले का फाटक खाल दिया और उस पर अधिकार जमा लिया।

हलव का किला सीरिया भर मे सवसे मजवूत था। यहाँ धन और व्यापार की प्रचुरता थी। पाच मास तक किल पर घेरा रहा। अ त मे एक ईसाई के विश्वासघात स मुसलमान किले मे घुस गये, और वहुत से आदमियो को काट डाला। वाकी लोगो ने डर कर कलमा पढ लिया। किले के

अधिपति का लडका युकला भी कलमा पढ कर अब्दुल्ला हो गया। उसने अपने चचा के बेटे थ्योडस को भी अपना साथी बनाना चाहा, जो एजाज के किले का स्वामी था। अब्दुल्ला सौ मुसलमानो को लेकर वहा पहुँचा। पर थ्योडस सावधान हो गया था। उसने इन सब को कद कर लिया। परन्तु थ्योडस का बेटा युकला की लडकी पर मोहित था। उसने कहा कि यदि आप अपनी लडकी की शादी मेरे साथ कर दें तो मैं आपको साथियो सहित छुडा दू और स्वय भी मुसलमान हो जाऊँ। युकला ने यह बात स्वीकार कर ली। अत उस पितृ द्रोही ने उन्हे छुडाकर हथियार भी दे दिये। किला अन्त मे मुसलमानो के हाथ आ गया और थ्योडस के पुत्र ने अपने पिता को भी कत्ल कर दिया।

अब सीरिया का राजधानी अन्ताकिया पर धावा बोलने का निश्चय हुआ और इसके लिए यह जाल रचा गया कि युकला अपने सौ साथियो समेत ईसाइयो के भेष मे अन्ताकिया जा पहुँचा और बादशाह हरक्यूलस से कहा कि मुसलमानो ने मुझे लूट लिया है, मैं जान बचाकर आपकी शरण आया हूँ। बादशाह ने कहा—"तुम तो मुसलमान हो गये थे?" उसने कहा—"यह सब जान बचाने के लिए झूठ-मूठ किया था।" बादशाह ने उस पर विश्वास कर सौ साथियो समेत उसे अपने पास रख लिया और अन्त मे अपना मन्त्री बना लिया। इसके बाद कुछ और मुसलमान कैद करके किले मे लाये गये। इस प्रकार जब काफी मुसलमान किले मे हो गये, तब अबू अबीदा ने हमला बोल दिया। बादशाह युकला की सम्मति से काम करता रहा। अन्त मे, अवसर पाकर उसके साथियो ने फाटक खोल दिया। मुसलमान 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाते भीतर घुस आये। बादशाह सिर धुनता जहाज पर सवार हो कुस्तुन्तुनिया भाग गया।

अब योहन्ना ईसाई वेश मे साथियो समेत त्रिपली जा पहुँचा। वहाँ के लोग उसके मुसलमान बनने और छल कपट की बात नही जानते थे। उन्हाने उसे बादशाह का सेनापति समझ कर बडा सत्कार किया। अवसर पाकर उसने फाटक खोल कर तथा मुसलमानो को बुलाकर किला फतह करा लिया। इसी प्रकार घोखे से उसने बाहर को भी फतह कराया।

इसी बीच मे देश मे भयानक महामारी फैली और उसमे देश भर

तवाह हो गया। सेनापति अबू अबीदा, इसके बडे बडे योद्धा तथा पचीस हज़ार सैनिक मारे गये।

ख़लीद ने एक कवि को अपनी प्रशसा करने के उपलक्ष मे तीस हज़ार रुपए इनाम दे डाले थे। इस कसूर मे उसे ख़लीफा ने उसी की पगडी से बाँधकर अपने सामने बुलवाया और उसे पद भ्रष्ट करके अपने घर चले जाने का हुक्म दिया। मरते वक्त उसके घर मे सिफ एक घोडा और कुछ शस्त्र निकले थे।

इस प्रकार मुसलमानो ने निर्भय होकर सारे एशिया माइनर को रौद डाला। वह सीरिया देश, जिसे सीज़र के समतुल्य महान पाम्पी ने सात सौ वष पहले रोमन राज्य मे मिलाया था, वह सीरिया, जो ईसाइयो का परम पवित्र स्थान था और जहा से सम्राट हरक्यूलस ने एक बार फारिस के आक्रमणकारी को परास्त किया था, मुसलमानो के हाथ आ गया। सम्राट हरक्यूलस जब कुस्तुतुनिया को भाग रहा था तब जहाज पर बैठ उसने बडे कष्ट से अदृष्ट होते हुए पहाडो पर उदास दृष्टि डाली और कहा—"सीरिया, मेरा प्रणाम ले, और यह प्रणाम सदैव के लिए है।"

इसके बाद टिपोली, टायर और कसरिया ले लिये गये। लेवेनस पहाड की लकडी और फुनेशिया के मल्लाहो से एक जबदस्त बेडा तयार किया गया, जिसने रोम के प्रतापी बेड को हलेस पाण्ट मे भगा दिया। साइप्रस, रोडस और साईक्लेडीज तवाह कर डाले गये। और वह पीतल की बडी मूर्ति, जो ससार के सात आश्चर्यों मे गिनी जाती थी, एक यहूदी को बेच दी गई, जिसने उसके पीतल नौ सौ ऊँटो पर लादा था। अब खलीफा की सेनाएँ कृष्णा समुद्र तक बढ गयी और कुस्तुतुनिया के मुकाबले म जा डटी।

इन विजयो ने मुसलमानो के राज्य को सिकन्दर और रोम के साम्राज्य से भी बडा बना दिया। टसीफान के घेरे जाने पर खजाना सिलहखाना और बहुत सा लूट का माल मुसलमानो के हाथ लगा और यही कारण है कि निहावन्द की विजय को वे लोग सब विजयो की विजय कहते हैं। एक ओर तो वे कस्पियन सागर तक बडे और दूसरी ओर हिंगारिस नदी के किनारे-किनारे परसो पोलीस तक दक्षिण की ओर फैले। केडोसिया की लडाई म फ़ारिस के भाग्य का भी निबटारा हो गया। फारिस नरेश उस नगर के

स्तूपो और मूर्तियो को छोड कर जो सिकन्दर के वडे भोज की रात्रि से अब तक उजाड पडा था, अपने प्राण वचाने को वसरे के रेगिस्तानो मे भाग गया। अन्त मे अक्सस नदी के किनारे वह पकड कर मार डाला गया। उस नदी के पार का देश भी अधीन कर लिया गया और उस देश से कर स्वरूप वार्षिक दो लाख अशर्फिया वहुत दिनो तक मिलती रही। चीन के सम्राट् ने मुसलमानो से मित्रता की और फल स्वरूप सिन्ध नदी के किनारे तक इस्लामी झण्डा फहराने लगा।

जिन सेनापतियो ने सीरिया विजय मे नाम पाया था, उनमे अमर, इब्ने आरु नाम का एक जनरल था, जिसके भाग्य मे मिस्र का विजेता होना लिखा था। वह पूर्व की विजयो से सन्तुष्ट न होकर पश्चिम को मुडा। उसके साथ पाच हजार सवारो का जत्था था। उसकी दृष्टि अफ्रीका महाद्वीप पर थी। मिस्र उसका द्वार था। उसने मिस्र मे पहुँचते ही वहाँ के ईसाइयो ने कहलाया कि हम यूनानियो के साथ इस लोक तथा परलोक का कोई सम्बन्ध रखना नही चाहते और सदैव के लिए रोम के अत्याचारी और उसकी कैल्सीडोन की सेवा को सौगन्ध खाकर त्यागते हैं। उन्होने खलीफा को सडकें और पुल वनवाने के लिए तथा सेना की रसद और खबरें पहुँचाने के लिये शीघ्र ही कर देना स्वीकार कर लिया।

मोम्फिस नगर, जो प्राचीन फरऊन के समय मे राजनगरो मे था, विश्वासघातियो की सहायता से शीघ्र जीत लिया गया, और सिकन्दरिया भी घेर लिया गया। बहुत से आक्रमण और धावे हुए। अन्त में २२ हजार सैनिको के कट जाने पर चौदह महीने के घेरे के बाद उस नगर का पतन हुआ। अमरू ने खलीफा को इस वडे नगर के विषय मे लिखा था—"इसमे चार हजार महल, पाच हजार स्नानागार, चार सौ नाट्यशालाएँ बारह हज़ार दुकानें केवल तरकारिया भाजियो की और चालीस हज़ार यहूदी साहूकार राज्य कर देने वाले हैं।'

हरक्यूलस ने अपने कुस्तुनुनिया के राजमहल मे यह दुखदायक खबर सुनी तो इतना मर्माहत हुआ कि सिकन्दरिया के पतन के एक मास बाद ही मर गया।

इसी सिकन्दरिया मे वह जगत्विख्यात पुस्तकालय था जिसमे पृथ्वी-भर के विद्वानो की हस्तलिखित दस लाख पुस्तकें थी। जब उमर ने खलीफा

से पूछा कि इन पुस्तकों का क्या किया जाय, तब खलीफा ने लिखा कि यदि उनका विषय कुरान के अनुकूल न हो तो उ ह रखने की कोई आवश्यकता नही। अतएव उ हे नष्ट कर दिया जाय। अमरू ने उ हे ई धन के तौर पर जलाने के लिये हम्मामो मे बाँट दिया और उनसे छ मास तक पाच हजार हम्माम गम होते रहे।

मिस्र दश रोम राज्य का अन्न भण्डार था, इसी कारण इसे लौटा लेने की वडी-वडी कोशिशें की गइ। अमरू को दो बार फिर चढाई करनी पडी। उसने जान लिया कि समुद्र की ओर से खुला रहने से उस पर बडी सुगमता से आक्रमण किये जा सकते हैं। उसने कहा—"खलीफा की सौग ध खाकर कहता हूँ कि यदि तीसरी बार आक्रमण किया जाय तो मैं सिक दरिया को ऐसा बना दूगा कि वह प्रत्येक मनुष्य के लिये वश्या के घर के समान हो जायेगी।" उसने अपने कथन स बढकर काम कर दिखाया और शहरपनाह ढहवा दी। इससे यह नगर बिलकुल उजाड हो गया।

वह बीस वष बाद अक्बानील नदी से एटलाण्टिक समुद्र तक बढ आया और अपने घाडे का सागर जल मे हिलाकर जोर से कहा कि—"हे सर्वोपरि ईश्वर, यदि यह समुद्र मेरा रास्ता न रोकता तो मैं पश्चिम के अज्ञात राज्यो म चला जाता और तेरे पवित्र नाम तथा अद्वतता का उपदेश दता, और उन विद्राही जातियो का, जो तरे सिवा अ य देवताओ को पूजती हैं, तलवार के हवाले करता।"

अब साद के पास ६० हजार सवार थे। वह उ ह लेकर मदाइन राजधानी की ओर बढा। बादशाह यज्दगुद घबरा गया। सरदारो मे फूट पड गई। वह अपने रत्न और परिवार सहित वहाँ से भागकर हल्दान पहुचा। राजधानी म मुसलमान घुस पड और उस लूट खसोट कर तहस नहस कर डाला।

जलूला नगर म फिर बादशाह की सेना से मुठभेड हुई। यह लडाई छ मास चली। अ त म जलूला और हल्दान मुसलमानो के हाथ मे आ गये और बादशाह रै नगर का भाग गया।

इस बीच मे साद से नाराज होकर खलीफा ने उसे पदच्युत कर दिया और उसका घर फूक दिया। इस बीच मे अवकाश पाकर ईरान के बादशाह ने डेढ लाख सना फिर एकत्रित की। उधर नेमान की अधीनता म एक

विशाल मुसलमानी सेना ने आकर नेहावन्द को घेरा। पारसी सेनापति बूढा और कमजोर था, फिर भी उसने नेमान को मार डाला। पर उसके मरने पर हफीज़सेनापति बना और उसने सेनापति फीरोजको मार डाला। पारसी सेना भाग गई। इस युद्ध मे एक लाख पारसी मारे गये। और लूट मे बादशाह यज्दगुद का एक जवाहरात से भरा हुआ डिब्बा मिला, जो खलीफा के पास भेज दिया गया। उसे उसने यह कहकर लौटा दिया कि ये कङ्कड पत्थर हमारे काम के नही, इन्हे बेचकर मुसलमानो को बाँट दो। हफीज ने उन्हे तीन अरब, बीस करोड रुपयो मे बेचा। उसके पास उस समय चालीस हज़ार सिपाही थे, अत प्रत्येक को अस्सी अस्सी हजार रुपये मिले। इसके बाद हमदान और रै को दखल करके लूट लिया गया और खून की नदी बहा दी। फिर वे आजुरबाद जा पहुचे और यहा का प्रसिद्ध मन्दिर ढा दिया। बादशाह की तीन बेटिया गिरफ्तार करके खलीफा के पास भेज दी गईं। जब वे खलीफा के सामने पहुँची तो उसने एक मुसलमान को हुक्म दिया कि इनके जेवर उतार लो। इस पर उन्होने डाटकर कहा—"खबरदार! हाथ न लगाना, जेवर हम उतारे देती हैं।" यह सुनकर खलीफा की आखो मे खून उतर आया और उसने उन्ह नगी करके कोडे मारने का हुक्म दिया। पीछे अली ने खलीफा को समझाकर ठण्डा किया और उन अबलाओ की जान बचाई। इनमे से एक लडकी से अली ने अपने बेटे हसन का विवाह किया, दूसरी बेटी अब्दुल रहमान इब्ने अबूबकर को और तीसरी अब्दुल्ला इब्ने उमर को दे दी गई।

ईरान मसीह के जन्म से कोई चार सौ वर्ष पूर्व बडा शक्तिशाली राज्य था। इसकी सीमा पश्चिम मे यूनान और पूर्व मे हिन्दुस्तान तक फैली हुई थी। विश्व विजयी सिकन्दर ने इस देश को मसीह से ३२८ वर्ष पूर्व छिन्न-भिन्न कर डाला था। रोमन्स ने भी इसकी शक्ति को क्षीण कर दिया था।

मुहम्मद साहब ने अपने जीवन काल मे ईरान के बादशाह खुशरू से कहलाया था कि हमारा धर्म ग्रहण कर लो। इस पर उसने हुरमुज के अपने हाकिम को कहला भेजा था कि या तो मुहम्मद को कत्ल कर दो या कैद कर लो, वह पागल है। मुहम्मद की मृत्यु के बाद खलीफा अबूबकर ने खलीद इब्नेवली को ईरान पर चढाई करने को तैयार किया, पर फिर उसे सीरिया भेज दिया। अब उमर ने अबू अबीदा को एक हज़ार सवार देकर ईरान

भेजा। उस वक्त वहा की गाडी पर खुशरू की दूसरी बेटी आरजम दुख्त थी। मुसलमानी सेना ने पहुँचते ही लूट मार मचा दी। रानी ने तीस हज़ार सवार रुस्तम इब्न फरुखजाद के साथ भेज दिये। पीछे से उसने मन सहदेव के साथ तीन हज़ार सवार और तीस जङ्गी हाथी रुस्तम की मदद को भेजे। जब अबू अबीदा अपनी सेना सहित फरात नदी पर पुल बाधकर पार हो रहा था, रुस्तम के धनुषधारियो ने बाण वर्षा आरम्भ कर दी। इससे बहुत से मुसलमान मारे गये। अबू अबीदा घोडे से गिर गया और हाथी से कुचला जाकर मर गया। इसके बाद सेना भाग निकली।

खलीफा उमर ने यह सुनकर फिर एक बडी सेना मस्ना की अधीनता मे भेजी। मस्ना ने ईरानी सेनापति को द्वन्द युद्ध मे परास्त करके मार डाला और ईरानी सेना छिन्न भिन्न हो गई। इसके बाद साद इब्ने अबि विकास छ हज़ार सवारो सहित मदीने से चला। और मार्ग मे ही लूट और स्त्रियो के लालच से उसके पास तीस हज़ार सवार मस्ना तक पहुँचते पहुँचते हो गये। इसी बीच म मस्ना मर गया और उसकी पत्नी को साद ने जो साठ वष का था, अपनी स्त्री बना लिया। इसके बाद रुस्तम से युद्ध हुआ, मुसलमानो को और भी सहायता मिल गई। भारी घमासान युद्ध हुआ और रुस्तम का सिर काट लिया गया। ईरानियो की पराजय हुई। उनकी तीस हज़ार सेना कट गई। इस युद्ध म मुसलमान भी सात हज़ार मारे गये। यह युद्ध कासादिया म हुआ था। इस विजय के उपलक्ष मे फरात और दजला नदी के सगम पर बसरा नगर खलीफा उमर की आज्ञा से बसाया गया, जो एक मुसलमान का गुलाम के तौर पर दिया गया था। एक दिन मज्दगुद की लडकी ने खिडकी से उसे देखकर कहा—"तुम पर लानत है कि अपने मुल्क, बादशाह और धम के लिए कुछ नही कर सकते।" फिरोज को शाहज़ादी की बात चुभ गई। वह मौका पाकर मसजिद मे घुस गया। खलीफा गदन झुकाये नमाज पढ रहा था। उसने उसकी गदन मे छुरी घुसेड दी। बहुत से मुसलमान दौड पडे। वह पाँच सात को मार कर स्वय भी मर गया। खलीफा उन्ही घावो से सातवें दिन मर गया। मृत्यु के समय उसकी आयु तिरसठ वष की थी। उसके समय म सीरिया, मिस्र, पैलेस्टाइन और ईरान मुसलमानो के हाथ म आये। छत्तीस हजार नगर और किले छीने गये, चालीस हज़ार मन्दिर और गिरजे ढाये गये और कई लाख गैर मुस्लिम कत्ल किये गये।

६

खलीफा उस्मान और अली

उमर की मृत्यु के बाद छ आदमियों की कमेटी खलीफा चुनने को बैठी। अली से पूछा गया कि तुम कुरान व हदीस को कानून मान कर अबूबकर और उमर के मार्ग पर चलोगे? उसने कहा—मैं कुरान व हदीस को तो स्वीकार करूँगा, पर अबूबकर और उमर की पाबन्दी नहीं। मैं अपनी बुद्धि से काम लूँगा। इस पर कमेटी ने उस्मान से पूछा। उस्मान ने स्वीकार किया।

इसलिए उस्मान इब्ने-अफान खलीफा हुए। इनकी उम्र सत्तर वर्ष की थी। गद्दी पर बैठते ही इन्होंने यज्दगुर्द को कत्ल करने को फौज ईरान भेजी। क्योंकि उमर मरती बार कह गये थे कि उसका नामोनिशान दुनिया से मिटा देना। बेचारा बादशाह इधर उधर मारा मारा और छिपता फिरता रहा। उसके साथियों ने उसे पकड़वा देने की सलाह की, पर उसे मालूम होगया और वह अपनी पगड़ी के सहारे मर्व के किले से उतर कर अँधेरी रात में भागा। रास्ते में एक नदी थी, उसे पार उतारने के लिये मल्लाह ने ४) रु० माँगे, पर उसके पास रुपये न थे। उसने लाखों रुपये मूल्य की कीमती अंगूठी देनी चाही, पर मल्लाह ने न ली। इतने में मुसलमान पहुँच गए और उसे टुकड़े-टुकड़े कर डाला। इस प्रकार चार हजार वर्ष से चमकता हुआ पारसियों का सितारा अस्त हो गया।

उस्मान ने अमरू इब्ने यास को मिस्र से बुला कर उसकी जगह अब्दुल्ला इब्ने साद को दे दी। अब्दुल्ला सैनिक या प्रबन्धक नहीं। इससे लोग नाराज़

होगए और मिस्र मे गदर मच गया। बादशाह कान्स्टेन्टाइन ने सिकन्दरिया को छीन लिया। मुसलमान वहा से मार भगाए गए। तब फिर उस्मान भेजा गया। इसने सिकन्दरिया को फिर छीना। पर खलीफा ने फिर अब्दुल्ला को भेज दिया। इस बार उसने उत्तर अफ्रीका पर धावा बोलने का निश्चय किया और चालीस हजार सेना लेकर त्रिपली पर छावनी डाल दी। उधर से जनरल ग्रेगरस एक लाख बीस हजार रोमन्स सेना लेकर मुकाबले मे आ डटा। कई दिनो तक घमासान युद्ध होता रहा। अन्त मे एक दिन धोखे से ग्रेगरस मार डाला गया और उसकी युवती कन्या कैद कर ली गई। सेना भाग गई और नगर पर अधिकार कर लिया।

मुहम्मद साहब पढे लिखे न थे। वे अपनी चादी की मुहर वाली अँगूठी को दस्तखत की भाति काम मे लाते थे जिस पर मुहम्मद रसूलल्लाह खुदा था। यही अँगूठी पूर्व के दोनो खलीफा काम मे लाते रहे परन्तु इस खलीफा ने उसे खो दी।

इस खलीफा ने कुरान की प्रतियो का मुहम्मद साहब की स्त्री हफसा की प्रति से मुकाबला कराया। जिनमे पाठ भेद था उन्हे जलवा दिया और हफसा वाली प्रति की कई नकलें कराकर सीरिया, मिस्र और फारस आदि देशो मे भेजी। वर्तमान कुरान यही है।

फिर यह उसी मम्बर की सीढी पर खडे होकर वाज करते थे जिस पर मुहम्मद साहब। इस खलीफा ने लाखो रुपये अपने सम्बन्धियो को और मुन्शी मरवान को बाट दिये थे, इससे मुसलमान इससे बहुत नाराज होगए। उनके छल कपट के भी कुछ भेद खुले। इस पर बहुत से मुसलमान मदीने मे आगए और उसे तोबा करने को कहा—पर उसने ऐसा नही किया। मिस्र के कुछ नागरिको ने शिकायत की कि अब्दुल्ला को वहा का हाकिम न रख कर मुहम्मद बिन अबूबकर को बना दें। इस पर उसने ऐसा ही किया पर एक दूत चुपचाप अब्दुल्ला के पास भेज कर कहला दिया कि मुहम्मद को मार डालो। इससे क्रुद्ध होकर मिस्र वाले मदीने पहुँचे और खिलाफत तलब की तथा गद्दी छोडने को कहा। उसने इन्कार किया। इस पर लोगो ने उसके घर मे घुस कर उसे कत्ल कर दिया। मृत्यु के समय वह बयासी वर्ष का था।

उसकी लाश तीन दिन तक वैसे ही पडी रही और जब सडने लगी तब बिना नहलाए और नए कपडे पहिनाए वैसे ही गाड दी गई।

इसके बाद अली इब्ने अबूतालिब खलीफा हुआ। यह व्यक्ति दयालू, न्याय प्रिय और शान्त था। परन्तु खलीफा पद के लिए कठोर स्वभाव पुरुष की आवश्यकता थी, इसलिए अली के खलीफा होते ही भीतरी विद्रोह फूट पडा। मुहम्मद साहब की प्यारी विधवा आयशा इसकी शत्रु थी। उधर तलहा, जबीर और मुआविया भी खिलाफत के उम्मीदवार थे। इन लोगो ने प्रसिद्ध कर दिया कि उस्मान के वध मे अली का षड्यन्त्र था। इससे लोग भडक गये। मुआविया ने दमिश्क की मस्जिद मे उस्मान का खून मे रँगा हुआ कुरता बास पर लटका कर खडा कर दिया, जिसे देखते ही सीरिया के लोग आपे से बाहर होगए। मुआविया ने छ हजार सेना देखते देखते एकत्र करली। उधर अली का दल भी काफी था। आयशा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि मैं खुदा और रसूल के नाम पर तलहा और जबीर के साथ बसरा जाती हूँ। जो मुसलमान मेरा साथ देना चाहे और उस्मान के खून का बदला लेना चाहें, वे मेरे पास चले आवें। मैं खाना, कपडा, घोडा और हथियार दूँगी। उसके साथ हजारो आदमी हो गए। पर जब वह बसरे पहुँची तो वहाँ के हाकिम उस्मान ने फाटक न खोला और उल्टे मुकाबिले को तयार होगया, खूब गाली गलौज हुई। अन्त मे कौशल से यह लोग शहर में घुस गए और उस्मान को कद कर लिया। बसरा पर आयशा का अधिकार हो गया। अली ने नौ सौ आदमी साथ लेकर बसरे पर चढाई कर दी। माग मे तीस हजार सेना उसे और मिल गई। युद्ध हुआ, आयशा के साथी मारे गएऔर वह कैद हुई। पर अली ने उसे आदर पूवक चालीस दासियो सहित मदीने भिजवा दिया।

अब अली का एक मात्र शत्रु—मुआविया बच गया था। उसने उस्मान के खून मे रँगा हुआ कुर्ता बास मे लटका कर दमिश्क की मस्जिद मे खडा किया, और अस्सी हजार सेना लिये साम की सीमा पर आ डटा। अली ने नव्वे हजार सेना लेकर उस पर धावा बोल दिया। युद्ध हुआ और पतालीस हजार आदमी मुआविया के तथा तीस हजार आदमी खलीफा के मारे गए। अन्त मे सन्धि चर्चा चली। फलत परस्पर दोनो दल गाली गलाज करने

लगे। गाली-गलौज का यह रिवाज जुमे की नमाज के पीछे अब तक चला आता है।

अब एक तीसरा और सम्प्रदाय खड़ा हुआ, जिसका नाम खार्जी था। अब्दुल्ला इन्ने वहब इसका सजीवक था। इस दल में पच्चीस हजार आदमी थे। इस पर अली ने एक झण्डा खड़ा करके घोषणा की कि जो अमुक समय तक इसके नीचे चला आयगा, क्षमा किया जावेगा। इस पर इक्कीस हजार आदमी चले आए। बाकी चार हजार अब्दुल्ला के पास बच रहे, जो वीरता से लड़ कर काम आये। सिर्फ ६ आदमी जिन्दा बचे।

उधर मुआविया ने मिस्र में विद्रोह फैला दिया। अली साठ हजार सेना लेकर मिस्र पर चला। वे जो नौ खार्जी बचे थे उन्होंने निश्चय किया कि अमर, अली और मुआविया, ये ही मुस्लिम विद्रोह की जड़ हैं इसलिए इन तीनों को एक साथ ही कत्ल कर देना चाहिए। तीन आदमियों ने यह काम अपने ऊपर लिया। अमर और मुआविया तो किसी भाँति बच गए, पर अली पर कोफा में अब्दुलरहमान ने नमाज पढ़ते वक्त वार किया, जिससे उसकी खोपड़ी फट गई और तीन दिन के बाद, तिरसठ वर्ष की आयु में वह मर गया। उसके पन्द्रह पुत्र और सोलह पुत्रियाँ थीं। अली के पक्ष वाले 'शीआ' कहलाते हैं और वे इसके पूर्व के तीनों खलीफाओं को मानने से इन्कार करते हैं। और मुहम्मद साहब के बाद अली ही को खलीफा मानते हैं। कहा जाता है कि अली का जन्म काबे में हुआ था।

७

तदनतर

इसके बाद हसन इब्ने अली खलीफा हुआ, इसकी आयु तीस वष की थी और यह शात, सुशील और साधु स्वभाव का था, पर इसका छोटा भाई हुसेन वीर था, उसने साठ हज़ार फौज लेकर मुआविया पर चढाई की, पर भीतरी कलह के कारण हार गया। खिलाफत छोड दी, अन्त मे हसन की एक स्त्री ने उसे विष देकर मार डाला। जिस यजीद ने यह प्रलोभन दिया था कि मैं तेरे साथ विवाह कर लूँगा पोछे उसे इसी अपराध पर कत्ल करवा दिया।

इसके बाद मुआविया खलीफा हुआ और उसने कुस्तु तुनिया पर फौज भेजी पर उसकी हार हुई। उसने कुस्तु तुनिया के ईसाई बादशाह को तीस हज़ार अशर्फी, पचास दास दासिया और पचास अरबी घोडे प्रति वष कर देना स्वीकार किया, और तीस वष के लिए स धि कर ली। इसके बाद उसने दस हजार सवार अफ्रीका पर भेजे और वहा जगल कटवा कर किरवान नामक एक शहर बसाया। वह बीस वष तक खलीफा रह कर मरा। इसके बाद इसका बेटा यजीद चौतीस वष तक की आयु मे खलीफा हुआ। मुआविया ने अपने मृत्यु काल मे अपने बेट यजीद से कहा था कि तुम्हे चार आदमियो से भय है--

१--हुसेन इब्ने अली से। पर तु यह न्यायी और तुम्हारे चचा का बेटा है, उसके साथ अच्छा वर्ताव करना।

२--अब्दुल्ला इब्ने उमर। यह सीधे मिजाज का है तुम्हे खलीफा स्वीकार कर लेगा।

२—अब्दुल रहमान। मूर्ख और कानो का कच्चा है, जुआरी भी है। वह तेरा कुछ न बिगाड सकेगा।

४—अब्दुल्ला इब्ने जबीर। धूर्त और वीर है। मुकाबिले आवे तो वीरता पूर्वक लडना। मेल चाहे तो सधि कर लेना और अधिकार मे लाकर कत्ल करवा देना।

गद्दी पर बैठते ही उसने मदीने के हाकिम वलीद को लिख भेजा कि हुसेन इब्ने अली और अब्दुल्ला इब्ने जबीर से हलफनामा लेकर भेजो। वजीद ने उन दोनो को बुलाकर कत्ल करने की सलाह की, पर वे दोना सचेत हो गये और मदीने से भाग गये और यजीद के विरुद्ध विद्रोह खडा कर दिया। कोफे के लोगो ने उन्हे सहायता देने का वचन दिया और डेढ लाख के लगभग मनुष्य हुसेन के साथ हो गये।

यह समाचार सुन यजीद ने बसरे के हाकिम को लिखा कि कोफा पहुँच कर वहाँ के हाकिम नेमान को निकाल दो और कोफा पर अधिकार कर लो। बसरे का हाकिम अब्दुल्ला बडा चालाक था। वह अकेला बीस आदमी लेकर काफे पहुँचा। काफे वाले उसे हुसेन समझे और किले मे ले गये जहाँ पहुँचते ही उसने वहा के हाकिम का सिर काट लिया। यह देख जो सेना हुसेन के पक्ष मे इकट्ठी हुई थी भाग खडी हुई। हुसेन को यह भेद मालूम न था। वह काफे मे तैयारियो की खबर पाकर अपने बाल बच्चो सहित कोफे को चल दिया था। सीमा प्रान्त पर सरदार हुर कुछ सवारो के साथ सामने आया, हुसेन समझा स्वागत को आया है। पर उसने कहा कि मुझे काफा के हाकिम अब्दुल्ला ने भेजा है कि मैं आपको अपने साथ कोफा ले चलू। हुसेन ने उसे मिलाने की कोशिश की पर वह नही माना।

इसके बाद इसका बेटा अब्दुल मलिक खलीफा हुआ। इसकी आयु चालीस साल की थी। अब्दुल्ला अब भी मक्का और मदीने मे खलीफा माना जाता था। इसलिए इसने बतुल मुकद्दस पलेसटाइन को हज की जगह नियत किया। उधर लोगो ने अली के कत्ल का बदला लेने की तैयारी की। मुख्तिम उनका खलीफा बना और उसने पचास हजार आदमियो का कत्ल किया। अब्दुल मलिक ने उसके सामने बडी भारी सेना भेजी। और वह युद्ध मे बासठ वर्ष की आयु मे मारा गया। इसके बाद मसअब हाकिम बना और

वह भी मारा गया। जब उसका सिर खलीफा के सामने लाया गया, उसके कातिल को एक हजार अशर्फी इनाम देने का हुक्म दिया, परन्तु कातिल ने इंकार करते हुए कहा—मेरी उम्र सत्तर साल की है, मैंने समय का खूब रग देखा है। इसी कोफे के किले मे हुसेन का सिर अब्दुल्ला इब्ने के सामने लाया गया। इब्ने जयाद का मुन्तकिम के सामने और मुतकिम का मसअब के सामने। और अब असअब का सिर आपके सामने लाया गया है। वुड्ढे की बात सुनकर खलीफा बहुत शर्माया और किले का मिसमार करने का हुक्म दिया।

अब्दुल्ला अब भी मक्का और मदीने का खलीफा बना बैठा था। उस पर चढाई करने को खलीफा ने हज्जाज को सेना देकर भेजा। अब्दुल्ला वीरता से लडकर मारा गया। इससे मक्का और मदीना भी अब्दुल मलिक के हाथ आ गया। अब सिफ खुरासान रह गया था। उसे भी हज्जाज ने फतह कर लिया, अत वह कासदिया की तरफ रवाना होगया। रास्ते म उमर अपने चार हजार सवार लिये मिला और कहा—कोफे के आदमी आप से फिर गये है। आप मक्के की तरफ चले जायँ। साथ ही उसने अब्दुल्ला को भी लिख भेजा कि हुसेन को मक्के की तरफ चले जाने दे। पर उसने स्वीकार न किया। और उमर को लिखा कि हुसेन को पानी मिलना बन्द कर दो। और यजीद की प्रभुता स्वीकार कराओ।

पानी बन्द होने से हुसेन और उसके परिवार के आदमी तडपने लगे। फिर भी हुसेन ने यजीद को खलीफा नहीं माना। अन्त मे अब्दुल्ला ने लिखा कि यदि वे नही मानते तो उनका सिर काट ला और शरीर को घोडो से रौंदवा दो। यह हुक्म पाकर उमर ने फिर हुसेन को समझाया पर उन्होने न माना। और अपने साथियो से कहा—मुझे मेरे भाग्य पर छोड कर आप लाग चले जायें। पर उन लोगो ने हुसेन के साथ मरना स्वीकार किया। हुसेन के साथ बत्तीस सवार और चालीस प्यादे थे। सबो ने स्नान करके कपडे पहने, इत्र लगाया और मरने को तयार हो गये। इतने मे तीस सवार शत्रु सेना से निकल कर हुसेन से आ मिले।

लडाई शुरू हो गई। थुमरशाक अफसर था। उसने हुसेन के डेरो मे आग लगाने का हुक्म दिया। इस पर हुसेन की स्त्री और बच्चे चिल्लाने

लगे। अन्त म उसका दिल भर आया और वह चला गया। एक एक आदमी जाता और मरता था। अन्त में हुसेन बहुत से घाव खाकर गिरा और एक सनिक ने उसका सिर काट लिया। यह लडाई कबला म हुई जिसमे हुसेन के सतत्तर और शत्रु के बयासी आदमी मारे गये। हुसन के मार जाने पर उसका सारा माल-असबाब लूट लिया गया। उमर हुसेन का सिर लिए रात को कोफा अपन घर म पहुँचे ता उसकी स्त्री ने कहा—पाजी कुत्ते मुझे मुँह न दिखा। यह कह कर घर से निकल गई और सारी उमर उसका मुँह न देखा। दूसरे दिन जब अब्दुल्ला क सामने हुसेन का सिर रखा गया तो उसन उस पर थूका और ठोकर मारकर एक तरफ को फेंक दिया।

इसके बाद उसने सब स्त्री बच्चा का कत्ल का हुक्म दे दिया। पर सरदारो के मना करने पर उन्हे हुसन क सिर क साथ यजीद के पास भेज दिया। यजीद ने उन्हे खातिर स रखा और कुछ दिन बाद मदीने पहुँचा दिया। इसी घटना का शोक मुसलमान दस दिन तक मुहर्रमो मे मनाते है।

अब इस शत्रु को नष्ट कर वह अब्दुल्ला इब्ने जबीर की तरफ मुडा। क्योंकि उसे मक्का और मदीने वालो न अपना खलीफा बना लिया था। यजीद के सम्बन्ध म इतने अपवाद फल गए थे कि सारा अरब उसका विरोधी होगया था। यह सब सुन कर यजीद ने मदीने पर सना भेजने की तयारी की पर कोई सनापति राजी न हुआ। अन्त म मुस्लिम इब्ने अक्बा ने मन्जूर किया और बारह हजार सवार और पाच हजार पदल लेकर मदीने की तरफ बढा। पहले तो उसने सबको समझाया। अन्त म युद्ध हुआ। मदीने वाले भाग निकल। और मुसलिम नगी तलवार लिए नगर म घुस गए। सबसे पहले अली इब्न हुसन को ऊँट पर सवार कुछ सिपाहियो सहित शहर से बाहर भेज दिया। फिर बनी उम्मा के एक हजार आदमियो को, जो मसान क घर म थे अपने पास बुलवा लिया। फिर शहर म लूटमार और कत्ले आम का हुक्म द दिया। हजारो मार गए, हजारो कैद हुए। मदीने को वह इस प्रकार ईट स ईट बजाकर वह मक्के की तरफ गया। पर माग मे ही मारा गया। तब हसीन इब्ने हमीर सनापति बना और जब यह मक्का पहुँचा तो अब्दुल्ला इब्ने जबीर मुकाबिले म आया और शीघ्र ही परास्त हुआ। हसीन ने नगर म घुसत ही काबे पर हाथ साफ किया और उस मिट्टी म मिला

दिया। इसी समय यजीद के मरने की खबर एक सवार ने दी। अब्दुल्ला ने यजीद के मरने की घोषणा मस्जिद मे कर दी और हसीन ने कहा कि अब किसलिए लड़ते हो सन्धि कर लो। हसीन ने सन्धि की और दमिश्क की ओर चला गया।

यजीद के बाद मुआविया दूसरा उसका बेटा गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। उसकी दृष्टि बहुत कमजोर थी। छ मास हुक्मत करके उसने गद्दी त्याग दी और मर गया। इसके बाद मरवान खलीफा बनाया गया। और यह शर्त तै रही कि इसके बाद खलीद इब्ने यजीद खलीफा बनाया जाय। उधर मक्का मदीने मे अब्दुल्ला इब्ने जबीर खलीफा बन गया था। साथ ही खलीफा इब्ने जयाद भी खिलाफत के लिये प्रयत्न कर रहा था। मरवान की नीयत अधिकार पाने पर बदल गई और अपने बेटे अब्दुल मलिक को उत्तराधिकारी बनाने का षड्यन्त्र रचने लगा। जब खलीफा को यह पता लगा तो उसने मरवान को अपनी माँ से जहर देकर मरवा डाला। वह बेचारा एक ही वर्ष खिलाफत कर सका।

वहा के हाकिम का सर काट लिया गया। अब खलीफा अब्दुल मलिक तमाम मुस्लिम साम्राज्य का एक छत्र स्वामी हो गया। इस समय भी रोम सम्राट भूमध्यसागर पर अधिकार रखते थे। अब खलीफा अब्दुल मलिक ने कारथेज नगर को जो उस समय सब नगरो से बडा था और उत्तर अफ्रीका का राज्य नगर था, ले लेने के लिये दृढ सकल्प किया। सेनापति हुसेन ने चालीस हजार सेना द्वारा उसे जोरता पूर्वक विजय किया और जलाकर भस्म कर दिया और असंख्य स्त्री पुरुषो को काट डाला। हुसेन के बाद मूसा अफ्रीका का हाकिम बना और सारा अफ्रीका बुरी तरह लूटा खसोटा गया। इसने तीन लाख स्त्री-बच्चो को भेड बकरी की तरह नाकाम कर दिया, कुछ को कत्ल कर दिया। और उसने लूट का माल और दास, दासी खलीफा के पास भेजे जिनके पहुँचने के पूर्व ही वह मर गया।

इस प्रकार ईसाई धर्म के पाच बडे राज्य नगर जिनमे जेरूसलम और सिकंदरिया भी थे, जला दिये गये। इसके बाद शीघ्र ही कुस्तुनतुनिया का भी पतन हो गया। इस समय मुसलमानो की तलवार ने अल्टाई पर्वत से लेकर अटलाण्टिक समुद्र तक और एशिया के मध्य से लेकर अफ्रीका के पश्चिमीय

किनारे तक अपना अधिकार जमा लिया था। ससार के इतिहास मे इतना शीघ्र कोई धम नही फैला। अ त मे यह खलीफा साठ वर्ष की आयु में मरा। उसके बाद उसका बेटा वलीद खलीफा हुआ। वह लम्बा, मोटा, काला और मजबूत आदमी था। उसकी तिरसठ स्त्रिया और बहुत सी दासिया थी।

गद्दी पर बैठते ही उसने दमिश्क मे मस्जिद बनाने के लिये ईसाइयो का एक प्रसिद्ध गिरजा से टजान जो बहुत प्राचीन और सु दर बना हुआ था, जबरदस्ती गिरवा दिया।

इसके बाद वह यूरोप पर टूट पडा। उसका भाई मुस्लिम एशिया माईनर को रौंदता हुआ यूरोप तक जा धमका और हजारो स्त्रियो को पकड कर दासी बनाकर बेच डाला। इधर मुस्लिम का बेटा तुर्किस्तान मे घुस गया और समरक द, बुखारा और ख्वारिज्म पर दखल जमा लिया। उसका सेनापति मूसा अण्डालूसिया पर चढ गया। स्पेन का सेनापति जुलियन उससे मिल गया। पादरियो ने भी विश्वासघात किया। इससे युद्ध मे स्पेन का राजकुमार मारा गया। तब बादशाह ने यह घोषणा की कि प द्रह से पचास वर्ष तक की आयु के सब लोग सेना म भरती हो जायें। इस प्रकार विशाल सेना लेकर वह डट गया पर विश्वासघातियो की मदद से उसे मुसलमानो ने परास्त कर दिया। जिरवस म भयानक युद्ध हुआ, स्पेन का बादशाह रोडरिक हार कर भाग गया और अ त म गाडस्लक्विर नदी मे डूब कर मर गया।

वलीद इस समय मर गया और उसका बेटा सुलेमान खलीफा हुआ। इसने सव प्रथम मूसा के परिवार को कत्ल करवा दिया और मूसा की जगह हुर को स्पेन का सूबेदार बनाया। उसने निश्चय किया कि सेना मे जितने सनिक हैं या तो इ ह मुसलमान बना लिया जाय या कत्ल कर दिया जाय। उसने जुलियन सेनापति को बुलाया जिसके विश्वासघात की सहायता से स्पेन को फतह किया गया था। पर वह हुर का अभिप्राय समझ गया और भाग गया। उसकी स्त्री और बच्चे घर म घेर लिये गये। उसने बच्चे को वस्त्र म छिपा दिया, पर वह ढढकर निकाल लिया गया। स्त्री ने हुर के पैरा पर गिर कर दया की प्रार्थना की पर उसन कहा कि काफिर के लिये रहम नही है। उसने काजी को हुक्म दिया कि बच्चे को किले के बुर्ज पर ले चलिये। यही किया गया। बच्चा डरकर काजी स चिपट गया, वह बहुत रोया

चिल्लाया पर उसे बुर्ज से नीचे फेक दिया गया। इसके बाद सब स्त्री-पुरुषो को बुलाकर एक खाई मे खडा किया गया। उनके बीच मे जूलियन की स्त्री भी थी। सबसे कलमा पढने को कहा गया, लेकिन इन्कार करने पर खाई मे मिट्टी डालकर सबको जिन्दा जमीदोज़ करा दिया। उधर एक दल सेनापति अब्दुल रहमान की अध्यक्षता मे फ्रास पर टट पडा और उसे कुचल डाला। वह लायर नदी तक पहुँच गया। तमाम गिरजा और शहरो को लूट लिया गया। चमत्कारी पादरियो की कुछ भी न चली।

अन्त मे सन् ७३२ मे चार्ल्स मारहेल ने इस आक्रमण से टक्कर ली। रात दिन की कडी लडाई के बाद अब्दुल रहमान मारा गया और मुसलमान पीछे लौट आए। इस लडाई के विषय मे इतिहासकार मि० गिबन कहते है कि जिबरालटर पहाडी से लायर नदी के किनारे तक अर्थात् एक हजार मील से अधिक दूर तक मुसलमानो की विजयी सेना बढती चली गई थी और यदि इतनी ही दूर वे और आगे बढ जाते तो पोलण्ड और स्काटलैण्ड के पहाडो तक पहुँच जाते।

अब इटली की बारी आई। सन् ८४६ मे रोम का जो अपमान धर्मान्ध मुसलमानो ने किया था वह बडा ही नीच भाव से किया था। एक छोटी सी मुसलमानी सेना टाईगर नदी पार करके नगर के कोट के सामने आ डटी। यह फाटक तोड कर नगर मे जाने योग्य शक्तिशाली न थी। सेण्ट पीटर और सेण्टपोल के समाधिस्थलो को इसने विध्वस करके लूट लिया। सेण्ट पीटर के गिरजा की चादी की वेदिका तोडकर उसकी चाँदी अफ्रीका भेज दी गई। यह पीटर की वेदी रोमन ईसाइयो के धर्म का मुख्य चिह्न थी।

इस प्रकार रोम नगर का सर्वाधिक अपमान हुआ। एशिया माईनर के गिरजे मिट चुके थे। बिना आज्ञा लिये कोई ईसाई जेरूसलम नगर मे पैर नही रख सकता था और सुलेमान के मन्दिर के सम्मुख खलीफा उमर की मस्जिद खडी थी। सिकन्दरिया नगर के भग्नावशिष्ट भाग मे से दया की मस्जिद उस स्थान का चिह्न बता रही थी जहा भयानक मारकाट के बाद कुछ मनुष्य दया करके छोड दिये गये थे। कारथज नगर मे सिवा काले खण्डहरो के कुछ न बचा था, सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न मुसलमानी राज्य का विस्तार अटलाटिक समुद्र से लेकर चीन की दीवार तक और कस्पियन समुद्र

किनारो से लेकर हिन्दमहासागर के किनारो तक फैला हुआ था। अब भी उसकी यह हविस बाकी थी कि वह सीजर के उत्तराधिकारियो को उनकी राजधानी से निकाल दे।

परन्तु अरब के आन्तरिक झगडो ने यूरोप की रक्षा कर ली। तीन समूहो के जो अपने भिन्न भिन्न रंग के झण्डे रखते थे खलीफा के राज्य के तीन टुकडे कर डाले। उमय्या वंश वालो का झण्डा सफेद रंग का था। फातिमा वंश वालो का हरा था और अब्बासियो का काला था। यह अन्तिम झण्डा मोहम्मद के चचा के समूह का था। इस झगडे का यह फल हुआ कि दसवी शताब्दी मे मुसलमानी राज्य तीन भागो मे विभक्त होकर बगदाद, काहिरा और कारडोबा के राज्य बन गये। मुसलमानो की राजनैतिक एकता का अन्त होगया और ईसाई संसार को दैवी सहायता से रक्षा मिली। अन्त मे अरबी धर्म धीमा पडा और तुर्की और बर्बर शक्तियाँ उठी।

मुसलमान बडे भारी मगरूर होगये थे और वे पूर्ण रीति से घरेलू झगडो मे फंस हुए थे। आक्ले ने लिखा है कि मुसलमानो का कोई ऐसा मामूली अफसर न था जो तमाम यूरोप की सम्मिलित सेनाओ से हारने पर भी अपनी भारी बेइज्जती न समझता रहा हो। इनकी घृणा के विषय मे यह उदाहरण काफी है कि रोमन सम्राट सेनीफरस ने खलीफा हारू रशीद के पास एक पत्र भेजा था जिसका उत्तर यह दिया गया था कि—अत्यन्त दयालु ईश्वर के नाम पर मुसलमानो का खलीफा हारू रशीद रोमिय कुत्ते सनीफरस के नाम पर लिखता है 'हे काफिर माता के पुत्र! मैंने तेरा पत्र पढा, उस का उत्तर तू सुनेगा नही, देखेगा।" और इस पत्र का उत्तर रक्त और अग्नि के अक्षरो मे रोमियो के मस्तको मे लिखा गया।

यह सम्भव है कि हारी हुई जाति अपने देश को फिर से जीतले परन्तु स्त्री हरण का प्रतिकार नहीं है। यह अमर पराजय है। जब अबूउबैदा ने एमेसा नगर लेने की खबर खलीफा उमर के पास भेजी थी, तब उमर ने उस को उत्तर में भर्त्सना दी थी कि तूने वहाँ की औरतो के साथ सिपाहियो को ब्याह क्यों नहीं करने दिया। वे शब्द अपने पत्र पर इस ढंग के थे कि यदि वे सिपाही सीरिया मे ब्याह करना चाहते हैं तो उन्हें कर लेने दो और जितनी लौंडियो की उन्हे आवश्यकता हो उतनी लौंडियाँ रख सकते हैं

वस यही वहु विवाह का कानून था कि पराजित देशो से स्त्रियाँ अपहरण की जायें। फिर यही बात सदैव के लिये मुसलमानी रीति मे समा गई। ऐसे दम्पत्तियो की सतान अपने विजेता पिताओ को सतान होने पर गव करती थी। इस नीति के प्रभाव का इससे अच्छा प्रमाण नही दिया जा सकता जो उत्तरीय अफ्रीका मे मिलता है। नवीन प्रबन्धो को करने मे इस वहु विवाह प्रथा का वे राक प्रभाव वहुत ही विचित्र हुआ। एक पीढी से कुछ ही अधिक समय मे खलीफा के अफसरो ने उसे सूचना दी कि राज्य कर ब द कर दिया जाय क्याकि इस देश मे पैदा हुए वालक सव मुसलमान है और सभी अरवी भाषा वोलते हैं।

८

खिलाफत का अत

मि० नौल्डेग्री के शब्दो मे खलीफा लाग—उनके इमाम, धमगुरु, अमीर, काडो कुमार और मजिस्ट्रेट थे। इस प्रकार मुस्लिम सत्ता मे शुरू ही से प्रादेशिक और धार्मिक अधिकार सयुक्त हो गये थे। और इसलिये इस्लाम 'धम' होने के साथ एक राष्ट्र भी हो गया है।

आठ जून सन् ६२५ मे हजरत की मृत्यु हुई। तब से सन् ६६१ तक चार खलीफा हुए। अबूबकर, उमर, उस्मान और अली। पाठको ने देखा हागा कि खिलाफत का यह अल्पकाल मुस्लिम इतिहास मे कितना महत्वपूण हुआ। इन दिनो धम की महत्ता थी, और खलीफा गरीबी से निर्लोभ भाव से विरक्त पुरुष की भाति रहते थे। अब सन ६६१ से १२५८ तक खिलाफत के इतिहास का दूसरा काल आता है। इसी समय मुसलमानो म शिया सुन्नी का भेद हुआ। इन दिनो तक अरबिया का दौरदौरा था और उन्होने खिलाफत को वशगत प्रादेशिक राज्य का रूप दे दिया था। खलीफा चुनने की प्रथा बन्द हो गई थी और पिछले खलीफा के पुत्रादि उत्तराधिकारी माने जाते थे। सबसे प्रथम मोआविया ने अपने सामने ही अपने पुत्र को नामजद किया था। इसके बाद खलीफाओ का जीवन ही बदल गया। अब तो उनमे न उमर की सी सादगी ही रह गई थी और न अली की सी साधुता। मुसलमानो मे भेद हो गये थे। विदेशो मे जो मुसलमान बनाये जाते थे उन्हे वे विशेषाधिकार नही प्राप्त होते थे जो अरबो को प्राप्त थे। शिया और सुन्नी दोना सम्प्रदाय परस्पर शत्रु थे। खास कर जबसे हुसन की मृत्यु का बदला

क्रूरतापूर्वक लिया गया। शियाओ का कहना था कि खलीफा का चुनाव हो। पर सुन्नी कहते थे—नही, खलीफा अपना उत्तराधिकारी नामजद कर सकता है यह मतभेद अभी तक चला आता है।

जब खिलाफत की बागडोर इनके हाथ से जाती रही तब अरबो का आधिपत्य भी नष्ट हो गया। कुछ दिन फारित वाले खलीफा रहे पीछे तुर्क ने यह स्थान लिया।

सन् १२६१ से १५१७ तक खिलाफत का तीसरा काल आता है। इस काल मे खिलाफत का प्रादेशिक अधिकार बहुत कुछ जाता रहा। इस्लाम धर्म की राज्य सत्ता इन दिनो मिस्र के सुलतान मामलूक और कुछ अन्य मुसलमान बादशाहो के हाथ मे रही। खलीफाओ का एक उत्तराधिकारी अहमद ताहिर सीरिया मे रहता था। मिस्र के बीवर वश के बादशाह ने उसे अपने यहा बुलाया और उसने एक खुतबा पढवाया। खलीफा ने उसे सम्राट् की पदवी दी और इस्लाम के प्रचारार्थ निरन्तर लडते रहने की सम्मति दी। यह खलीफा सन् १२६२ मे मगोलो से लडते हुए काम आया। इसके बाद बीवरो ने उसी के एक वशज को खलीफा बना लिया।

सन् १५१७ मे तुर्की के प्रथम सलीम ने मिस्र पर धावा किया और मामलूक सुलतान को पराजित करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। उसी समय उसने खलीफाओ के अन्तिम वशधर से खलीफा की पदवी प्राप्त की, तब से लेकर अब तक उसी वश के बादशाह खलीफा होते आये हैं। यह समय की बलिहारी है—एक समय था जब तुर्क ने इस्लामी सभ्यता को प्रबल टक्कर से छिन्न भिन्न कर दिया था। सन् १२६८ मे एक तुर्क बादशाह ने बगदाद पर चढाई करके उसे इस भयानक रीति से लूटा कि फिर आज तक इस्लाम का राजनैतिक या धार्मिक क्षेत्र वह नही बन सका। इस तुर्क आक्रमणकारी का नाम हलाकू था। उसके विषय मे लिखा है—"वह आया, आकर उसने नाश किया। आग लगाई, कत्ल किया और सब कुछ लूटकर चलता बना।" परन्तु जब से हलाकू के वशजो ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया तब से उन्होने इस्लाम धर्म की रक्षा और प्रसार करने मे कुछ उठा नही रक्खा।

सुल्तान सलीम अनेक कारणो से मुस्लिम धर्म का सरक्षक कहाया। अली के बाबा मुहम्मद ने अन्तिम रूप से पूर्वीय रोम के साम्राज्य को नष्ट

करके उसके स्थान पर इस्लाम का साम्राज्य स्थापित किया था। अपने समय मे वह सर्वाधिक शक्तिशाली मुसलमान बादशाह था और स्वयं खलीफा बगदाद ने उसे खलीफा की पदवी दी थी। जिस समय सलीम ने खलीफा की पदवी को ग्रहण किया, उस समय मुल्लाओ और मौलवियो मे भारी विवाद उठ खडा हुआ था। अन्त मे जब मक्का मे उसे खलीफा स्वीकार कर लिया गया तो यह विवाद मिट गया। अलबत्ता शिया लोगो ने उसे खलीफा न माना। क्योकि वे किसी भी नामजद व्यक्ति को खलीफा स्वीकार नही करते।

तुर्क का जब कोई बादशाह गद्दी पर बैठता तो करो मे मिस्र मे और अय्यूब की मस्जिद मे तुर्की के उलमा सभा करके उसे खलीफा करार देते। और खिलाफत की सनद देने की रस्म पूर्ण की जाती। सुल्तान को अय्यूब की मस्जिद मे उलमाओ की स्वीकृति और शेखुलइस्लाम के हाथ से अली की तलवार ग्रहण करनी पडती। तब से वह मक्का, मदीना, करबला, जेरुसलम आदि मुस्लिम तीर्थों का सरक्षक माना जाता था। वह पवित्र चिह्न जैसे हजरत मुहम्मद का लबादा, अली की तलवार और उनका झण्डा तथा अन्य वस्तुओ को पास रखता था। इस प्रकार तुर्क सुलतान अब तक खलीफा होते आये है।

जब योरोप मे महायुद्ध हुआ। और तुर्क के सुलतान ने जर्मनी का साथ दिया। तब ससार भर के मुसलमानो मे हलचल मच गई। परन्तु चतुर लायड जार्ज ने इस अशान्ति को दूर करने के लिये घोषणा कर दी कि हम युद्ध के बाद मुसलमानो के धार्मिक चिह्नो और काबे को कोई हानि नही पहुँचावेंगे। हम तुर्क के उन मन्त्रियो से लड रहे हैं जो हमारे शत्रु से मिल गये है। खलीफा से हमारा कोई झगडा नही है। परन्तु युद्ध के बाद विजयी मित्र राष्ट्रो ने तुर्क साम्राज्य को छिन्न भिन्न कर डाला। महायुद्ध से प्रथम तुर्क साम्राज्य का क्षेत्रफल सत्रह लाख दस हजार दो सौ चौबीस वर्ग मील था और आबादी दो करोड बारह लाख तिहत्तर हजार नौ सौ थी। पर सीवर की सन्धि के आधार पर तुर्की के अफ्रीका के प्रदेश छीन लिये गये और अरब, मक्का, मदीना आदि तीर्थो पर खलीफा का कोई अधिकार न रहा। मेसापोटामिया और पेलेस्टाइन को माण्डेट के बहाने से ब्रिटेन ने कब्जे मे कर लिया। जेरूसलम करबला पर भी खलीफा का अधिकार न रहा। इस

प्रकार जमन महायुद्ध ने खिलाफत का श्राद्ध कर दिया। खलीफा अपने महल मे लगभग नजरबन्द कर दिये गये और अठारह लाख वग मील मे फैला हुआ तुक साम्राज्य अब लगभग एक हज़ार वग मील ही रह गया।

सन् १६२० मे यह सन्धि हुई। उसी समय एक तुर्क युवक ने तुर्क राष्ट्र की रक्षा के लिये एशिया माइनर मे तलवार उठाई। उसने पूर्वी एशिया माइनर पर कब्जा कर लिया और बोलशेविको से सन्धि करके टर्की के बहुत प्रदेश वापस कर लिये। इसके बाद यूनानियो से बहुत से प्रदेश छीन लिये। दो वष मे उसने खासी ख्याति पैदा कर ली। प्रारम्भ मे उसे अग्रेजो ने एक विद्रोही डाकू समझा। पर अन्त मे उससे सन्धि करनी पडी और इससे तुक और कमालपाशा की प्रतिष्ठा बहुत ही बढ गई।

९

इस्लाम के धम सिद्धा त

हजरत मुहम्मद साहब के वचनानुसार एक लाख चौबीस हजार नबी ससार म हो चुके ह । एक सौ चार पुस्तकें ईश्वरीय ह । अठारह हजार योनि सृष्टि मे है । इस्लामी साहित्य म मुहम्मद साहब की छ लाख उक्ति हैं । *हजरत मुहम्मद साहब के वचनानुसार मुसलमानो के लिए नीचे लिखे बाईस* आदेश है :—

१—पाच वक्त नमाज पढना ।
२—मक्का की हज करना ।
३—चालीसवा हिस्सा खैरात करना ।
४—एक मास रोजा रखना ।
५—अल्लाह और रसूल को मानना ।
६—बहिश्त मे हूरो गिलमाओ को मानना ।
७—ईद मनाना ।
८—पक्ति बाँध कर नमाज पढना ।
९—मक्का की ओर मुह करके नमाज पढना
१०—चार स्त्रियो तक विवाह करना ।
११—आवागमन न मानना ।
१२—शराब न पीना ।
१३—कुरान की आज्ञा मानना ।
१४—काफिर को कत्ल करना ।

१५—काफिरो का धन छीन लेना।

१६—कपट युद्ध करना।

१७—मूर्ति खण्डन करना।

१८—सूअर को हराम समझना।

१९—शुक्रवार की खास नमाज पढना।

२०—अजान देना।

२१—कयामत के समय खुदा का न्याय होना।

२२—भला बुरा करने वाला खुदा है।

यद्यपि साधारणतया यह समझा जाता है कि मुसलमानो का धर्म ग्रंथ 'कुरानशरीफ' अरबी भाषा मे लिखा गया है। परन्तु अल्लाम जलालुद्दीन सूयूती अपनी पुस्तक 'तफसीरे इत्तेकान फी उलूमिल-कुर्आन' मे लिखते हैं कि कुर्आन मे चौहत्तर भाषाओ के शब्द पाए जाते हैं। अपने पक्ष के समर्थन मे वे अबूबक्रिब्ने अनसारी, इब्ने अबीवक्र अनसारी, सहदिदिब्ने मनसूर, अबू-वक्र वास्ति, मुल्ला जलालुद्दीन, सआलवी, इब्ने जोजीजर कशी अबूनुहम, अबू हातिम, किरमानी, काजी ताजुद्दीन इत्यादि की साक्षी उपस्थित करते हैं। उनके विचार से नीचे लिखी पचहत्तर भाषाएं कुर्आन मे हैं।

(१) कुरेशो, (२) किनानी, (३) हुजैली, (४) खश्अमी, (५) खजरजी, (६) अश्अरी, (७) नमीरी, (८) क्से गीलावी, (९) जरहमी, (१०) यमनी, (११) अजविशनोई, (१२) कन्दी, (१३) तमीमी, (१४) हमीरी, (१५) मधनी, (१६) लहमी, (१७) सादुल अशीरी, (१८) हजरमूती, (१९) सुदूसी, (२०) अमातकी, (२१) अनमारी, (२२) गस्सानी, (२३) मजहजी (२४) खुजाई, (२५) गतफानी, (२६) सबाई, (२७) अम्मानी, (२८) बनूहनीफिया, (२९) सालबी, (३०) तई, (३१) आमरिब्न, (३२) साहसी, (३३) औसी, (३४) मजीनी, (३५) सफीफी, (३६) जुजामी, (३७) बलाई, (३८) अज रही, (३९) हवजानी, (४०) अनमरी, (४१) यमानी, (४२) सलीमी, (४३) अम्मारी, (४४) अथ्एनी, (४५) नसरिब्ने मुआवीय्यी, (४६) अकी, (४७) हज्जाजी, (४८) नवई, (४९) ईसी, (५०) कुजाई, (५१) काबिब्ने उम्मी, (५२) काबिब्ने लवी, (५३) तहारीय्यी, (५४) रबीय्यी, (५५) जव्वती, (५६) तैमी, (५७) रवावी, (५८) आदिब्ने खुजैमी, (५९) सादिब्ने वक्री, (६०) हिन्दी, (६१)

इब्रानी, (६२) अजजी, (६०) जरामिब्ने वत्री, (६४) सरहत, (६५) हब्शी, (६६) फार्सी, (६७) रूमी, (६८) जगी, (६९) अजमी (७०) तुर्की, (७१) निब्ती, (७२) सुर्यानी, (७३) बरबरी, (७४) किन्ती, (७५) यूनानी।

कुर्आन मे समय समय पर परिवर्तन होने के भी प्रमाण पाये जाते हैं।

न०	किस के मत मे	कुरान की अक्षर-संख्या
१	सुयूती इब्ने अब्बास	२,२३,६७१
२	„ उम्रिब्नेसत्ताव	१०,२७,०००
३	सिराजुलकारी अब्दुल्लाहिब्नेमसऊद	३,२२,६७१
४	„ मुजाहिद	३,२१ १२१
५	उम्दतुलब्यान अब्दुलाहिब्ने मसऊद	२ २२,६७०
६	सिराजुलकारी ग्रंथकार	३२,०२,६७०
७	उम्दतुलब्यान „	३,५१,४८२
८	कसीदतुलकिराअत ग्रंथकार	३२,०२,६७०
९	दुआय मुतबरक „	४,४५,४८३
१०	रमूजुल कुर्आन मुहम्मद हसन अली	४०,२६५

इसी प्रकार का मतभेद शब्द संख्या मे भी है

न०	पुस्तक का नाम	किसके मत म	कुरान की शब्द संख्या
१	उम्दतुल ब्यान	हमीद आरज	७६२५०
२	„ „	अब्दुलअजीजिब्ने अब्दुल्लाह	७०४३६
३	सिराजुलकारी	हमीद आरज	७६४३०
४	„	मुजहिद	७६२५०
५	„	अब्दुलअजीजिब्ने अब्दुल्लाह	७०४३६
६	कसीदतुलकिराअत	ग्रंथकार	८६४३०
७	सिराजुलकारी	„	७६४२०
८	सुयूती का अनुवाद	मुहम्मद हलीम अनसारी	७७९३३
९	मुहम्मदहलीम के नोट	अनेकों के मत मे	७७४३७
१०	मुहम्मदहलीम के नोट	अनेको के मत मे	७७२७७
११	रमूजुल कुर्आन	मुहम्मद हसन अली	७६४२

इसी प्रकार कुर्आन की सूरतों की सख्या में भी मतभेद है। सिराजुलकारी, उम्दतुलवयान फी तफसीरिल कुरान, तफसीरे इत्तेकान, कसीदतुल किराअत, रमूजुल कुर्आन और दुआऐमुतर्वरिक मे इमाम अवूहनीफ, जैदिब्ने साहव अन्सारी और मुल्ला मुहम्मदहसन अली के मत मे कुर्आन मे एक सौ चौदह सूरतें थीं।

परन्तु मुल्ला जलालुद्दीन सुयूती अपनी तफ़सीरे-इत्तेकान फी उलमिल कुर्आन में लिखते हैं कि—कुर्आन इब्ने मसऊद मे एक सौ बारह सूरत थीं। तथा उवैयिब्ने काव के कुर्आन मे एक सौ सोलह सूरत थीं। जलालुद्दीन के उक्त लेख से सिद्ध होता है कि हजरत उस्मान के कुरान मे एक सौ ग्यारह सूरत थीं। उमिय्यतिब्ने अब्दुल्लाह ने खुरासान में एक कुरान पाया था जिसमे एक सौ सोलह सूरतें थी। इस प्रकार और भी बहुत से मतभेद हैं, परन्तु वतमान कुर्आन में एक सौ चौदह सूरतें हैं जो साधारणतया सभी मुसलमान स्वीकार करते हैं।

सूरतों की भांति आयतो मे भी मतभेद है। दुआएमुतर्रिक, कसीतुलकिराअत, उम्दतुलवयान फी तफसीरित कुरान, सिराजुलकारी तथा रमूजुल मे कुरान की छै हजार छै सौ सियासठ आयतें मानी हैं।

तफसीरे इत्तेकान फी उलमिल कुरान के मत से आयतो की सख्या इस प्रकार है।

मदोनियो के मत मे	६२१४
मक्कियो ,, ,, ,,	६२१२
शाम वालो ,, ,, ,,	६२५०
वस्रियो ,, ,, ,,	६२१६
ईराकियो ,, ,, ,,	५२१४
कूफियो ,, ,, ,,	६२३६
अ० इब्नेमसऊद के मत मे	६२१८
इब्ने अब्बास के मत मे	६६१६
अद्दानी के मत मे	६०००
भिन्न भिन्न मत से	६२१४ आदि।

कुर्आन की आयतो मे परस्पर मतभेद भी देखने को मिलता है। और

इस प्रकार जब कोई आयत किसी के विरुद्ध आती है तो पूर्व आयतें मन्सूख मानी जाती हैं। इस भांति कुर्आन की आयतों के 'नासिख' और 'मनसूख' दो भेद हैं। 'नस्ख' धातु से नासिख और मनसूख शब्द बना है जिसका अर्थ मिटाना, बदलना, स्नाना नाशित करना आदि हैं।

कुरान शरीफ तीन लाख तेईस हज़ार पतालीस फरिश्तों द्वारा उतरा माना जाता है और उसमे सत्तर हज़ार विद्याओ का समावेश बताया जाता है।

कुर्आन शरीफ मे कुछ ऐसी भी बातें हैं जो अन्य धर्म ग्रन्थो की दृष्टि से अनोखी सी प्रतीत होती हैं। सुनिए—

१—खुदा आदमी को बहका देता है।

२—खुदा सब से बडा कपटी है।

३—खुदा ने काफिरो के दिलो पर मोहर लगा रक्खी है।

४—अगर खुदा चाहता तो सबको सीधा रास्ता दिखा देता।

५—खुदा ने प्रत्येक शहर मे पापियो के सरदार छोड रखे हैं ताकि वे लोगो को बहकाते और धोखा देते रहें।

६—शैतान खुदा से कहता है कि जिस तरह तूने मुझे बहकाया उसी तरह मैं भी कयामत तक काफिरो को बहकाऊँगा।

७—खुदा ने कयामत तक के लिये काफिरो के दिलो मे दुश्मनी और द्रोह भर दिया है।

८—खुदा घात में लगा रहता है।

६—बहिश्त मे पीने को शराब और खाने को मास तथा सत्तर हूरें और लौंडे मौज करने को मिलेंगे।

१०—बहिश्त वाले भोजन तो करेंगे परन्तु पेशाब और पाखाना नहीं होगा।

११—बहिश्त वालो को सौ सौ आदमी की काम शक्ति भोग विलास के लिये दी जायगी।

इस्लाम के सम्बन्ध मे सर्वोपरि यह बात तो हमे स्वीकार ही करनी होगी कि इस धर्म ने एक ईश्वर की सत्ता को सर्वोपरि माना और मूर्तिपूजा तथा भांति भांति की उपासनाओं को बलपूर्वक रोका। इस्लाम धर्म की

दूसरी खूबी यह थी कि उसके नियम सरल, सुसाध्य और आकर्षक थे। फिर भी जैसा जातियों की जागृति के समय हुआ करता है मुहम्मद साहब की मृत्यु के थोड़े ही दिन बाद से इस्लाम की नई-नई शाखायें फूटने लगी थी। जिस प्रकार अरब के विजेताओं ने पूर्व और पश्चिम में अपने साम्राज्य का विस्तार किया उसी प्रकार अरब के विद्वानों और साधुओं ने ससार भर के दर्शन, विज्ञान और विद्याओं की खोज खोज कर अपने भण्डार को बढ़ाना प्रारम्भ किया। दर्जनों ईसाई धर्म ग्रन्थ अरबी में अनुवाद किये गये। सुकरात, अफलातून, अरस्तू के गम्भीर दर्शन शास्त्रों, भारत के विज्ञान, वैद्यक, ज्योतिष आदि के विषयों की सहस्रों पुस्तकों का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ। भारत के साथ अरबों का सम्बन्ध नया न था—करोड़ों रुपए का व्यापार होता था—उसी व्यापार के साथ भारतीय संस्कृति की भारी छाप अरबी समाज पर लग गई थी। प्रारम्भिक खलीफाओं के काल में बसरा में उच्च पदों पर हिन्दू नौकर थे। शाम कासगर में हिन्दू व्यापारियों की कोठियाँ थीं। खुरासन, अफगानिस्तान, सीसतान और बिलोचिस्तान इस्लाम मत स्वीकार करने से पहले बौद्ध थे। बलख में एक बहुत बड़ा बौद्ध विहार था, जिसके मठाधीश अब्बासी खलीफाओं के वजीर हुआ करते थे। अनेकों बौद्ध मत की किताबों के अनुवाद अरबी भाषा में हुए। किताबुलबुद, और बिल-वहर वा बुदसिफ सुश्रुत चरक, निदान, पचतन्त्र, हितोपदेश, चाणक्य आदि अनेक सस्कृत ग्रन्थ अरबी में अनुवाद किये गये। फलत बुद्ध की शिक्षाओं और विचारों का अरब के मुसलमानों पर भारी प्रभाव पड़ा। धीरे धीरे अरबों में स्वतन्त्र विचारों का नये नये दार्शनिक और धार्मिक भावनाओं का उदय हुआ।

उन्हीं दिनों मुसलमानों के 'शिया' सम्प्रदाय का जन्म हुआ। इसे 'गलात' के खलीफाओं ने प्रचलित किया और प्रचलित मुसलमान धर्म से इसमें यह विशेषता थी कि अवतार वाद (हुलूलतशबीह) आवागमन (तनासुख) को सिद्धान्तों में स्थान दिया गया और यह सिद्ध किया गया कि बढ़ते-बढ़ते मनुष्य खुदा के रुतबे पर पहुँच सकता है।

'अली इलाई' सम्प्रदाय में एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करना तथा तलाक की प्रथा को नाजाइज करार दिया। मसजिद में जाने तथा शारीरिक

शरई, पवित्रता को भी उन्होने अनावश्यक बतलाया। कुछ ऐसे सम्प्रदाय भी पदा हुए जिन्होने कुर्आन के अलकारिक अर्थ किये। अव्यक्त निर्गुण ब्रह्म और सगुण ईश्वर मे भेद किया जाने लगा। इन सभी सम्प्रदायों मे लोगो को खास 'दीक्षा' लेकर भरती किया जाता था। गुरु (पीर) को कही कही ईश्वर का रुतबा दिया जाने लगा।

इसके बाद एक मोतजली सम्प्रदाय का जन्म हुआ जिसका सिद्धान्त था कि कुर्आन सदा के लिये निर्भ्रान्त ईश्वर वाक्य नहीं—प्रत्युत् मनुष्य जाति और आत्मा की उन्नति के साथ साथ समय समय पर इलहाम होता रहता है। अलगिज़ाली सम्प्रदाय ने कुर्आन शरीयत, और सामान्य मुसलिम कर्म काण्ड से असन्तुष्ट होकर एकान्तवासी हो तप (रियाजत), अभ्यास (शगल) और ध्यान (जिक्र) शुरू किया और प्राचीन आर्यों के योगाभ्यास का अनुकरण किया। इस प्रकार सूफी सम्प्रदाय का जन्म हुआ। धीरे धीरे सूफियो के अनेक मठ (खानकाहें) स्थापित हुए जिनमे अद्वैत (वहृदतुलवजूद) का उपदेश दिया जाता था, सयम (नफ्स कुशी), भक्ति (इश्क), योग (शगल) को मुक्ति (निजात) का मार्ग बताया जाता था। धीरे धीरे ऐसे कवि और वैज्ञानिक भी अरब के अन्दर पदा होने लगे जो नबी, कुर्आन, बहिश्त, रोजे नमाज सबका मजाक उडाने लगे। साकार ईश्वर को अस्वीकार करने लगे। खलीफा यजीद को जिसकी मृत्यु सन ७४४ मे हुई ऐसे ही विचार वालो मे गिना जाता था।

अबुल अला अलम आका जो ग्यारहवी शताब्दी मे अरब के एक महान् विद्वान् और महात्मा थे, आवागमन मे विश्वास रखते थे। अत्यन्त निरामिषाहारी थे। दूध, शहद और चमडे का भी व्यवहार नही करते थे प्राणि मात्र पर दया का उपदेश करते और ब्रह्मचर्य को आत्मा के लिये जरूरी बताते थे। मसज़िद, नमाज रोजे और दिखावट के कडे विरोधी थे। वे वेदान्तियो की भाति ससार को माया मानते थे।

इसमे कोई सन्देह नही कि इस्लाम मे गम्भीर परिवर्तन का कारण अरब की विचार स्वतन्त्रता तथा ईसाईमत, जरदुस्त मत, और भारतीय हिन्दू तथा बौद्ध मतो की छाप साफ दिखाई देती है। विरक्ति (अलफिरारो-

रोमिनद्दुनिया) का सिद्धान्त भी इस्लाम मे भारत से गया—क्योकि मुहम्मद साहब तो इसके विरुद्ध थे।

प्राचीन मुल्ला मौलवी और सूफियो मे परस्पर विरोध बराबर चला आता रहा है। फिर भी लाखो मनुष्य इन सूफियो के खानकाहो मे जमा होते थे और उनके विचारो का उन पर भारी प्रभाव पडता था।

मंसूर एक प्रसिद्ध सूफी फकीर था और वह भारत मे कुछ दिन रहा था। उसका मुख्य सिद्धान्त 'अनल हक' अर्थात् 'सोऽहं'—था। यह आदमी अपने विचारो ही के कारण सन् ६२२ मे अनेक यातनाओ के बाद सूली पर चढा दिया गया। वह सबको खुदा मानता था और दुई को धोखा समझता था। इस्लाम मे इस भांति के प्रचारको ने इस्लाम की भावना मे दूसरे मत वालो के लिए एकता, उदारता और प्रेम के बीज बो दिए थे। यही कारण था कि इन साधुओ का भारत की जनता पर बहुत उत्तम प्रभाव पडा था। ये लोग सत्सग करते, भक्ति रस के गीत गाते, नाचते और मस्त हो जाते थे। शेख बदरद्दीन तेरहवी शताब्दी मे भारत मे था। वह इतना बुड्ढा हो गया था कि चल-फिर भी न सकता था। पर जब भगवत भजन होता तो वह अपने बिस्तर से उठकर नाचने लगता था—जब उससे कोई पूछता कि शेख इस कमजोरी की अवस्था मे कैसे नाचता है तो वह जवाब देता—शेख कहा, प्रेम नाच रहा है।

अब हम इस्लाम और मोहम्मद साहब के सम्बन्ध मे कुछ निष्पक्ष विद्वान् ग्रन्थकारो के कथन उद्धृत करते हैं—

मिस्टर ऐलफिसटन् साहब 'हिस्ट्री आफ इण्डिया' नामक पुस्तक मे लिखते हैं —

"जिस समय अरब वालो की ऐसी व्यवस्था थी। उसमे झूठे नबी (मोहम्मद) का जन्म हुआ। मोहम्मद के सिद्धान्त को मनुष्य जाति की एक भारी सख्या बहुत दिनो से धारण किए हुए है। मोहम्मद के उद्योग और सिद्धान्तो का वास्तविक रूप कुछ भी क्यो न हो, इसमे सन्देह नही कि जिस कठोरता, पक्षपात और रक्तपात से मोहम्मद के सिद्धान्तो का प्रचार हुआ उससे यही साबित होता है कि इन सिद्धान्तो का कर्त्ता मनुष्य जाति का अति भयानक शत्रु था।"

वाशिङ्गटन इरविन साहब 'मोहम्मद की जीवनी' मे लिखते हैं —

"मोहम्मद ने जो घोषणा-पत्र मदीने पहुँच कर मुसलमानो के लिए जारी किया था, उसमे उसने लिखा था कि—'जो मुसलमान मेरे धर्म का प्रचार करना चाहे उसको शास्त्रार्थ के झगड मे नही पडना चाहिये अपितु उसका कर्तव्य है कि जो आदमी इस्लाम धर्म को अङ्गीकार न करे उसको यमपुर भेज दे क्योंकि जो मुसलमान इस्लाम के निमित्त लडता है चाहे वह मारे चाहे मरे इसमे सन्देह नही कि उसके लिए बहुमूल्य इनाम तैयार है। तलवार ही स्वर्ग और नर्क की कुञ्जी है। जो मुसलमान धर्म के निमित्त तलवार चलाता है वह भारी इनाम पाने का अधिकारी हो जाता है। लडने वाले के रक्त का एक बिन्दु भी व्यर्थ नही जाता। जो दुख और कष्ट धर्म युद्ध मे मुसलमानो को उठाना पडता है, वह ईश्वर के यहाँ ज्यूँ का त्यूँ लिख लिया जाता है। इस्लाम के लिए मरना और कष्ट उठाना नमाज और रोजे से भी बढकर है। जो मुसलमान इस्लाम के निमित्त युद्ध मे मारा जाता है उसका सारा पाप क्षमा कर दिया जाता है। वह सदा के लिए मृगनयनी अप्सराओ के साथ आनन्द भोगता है। काफिरो को इस्लाम मे लाने के लिए तलवार से बढकर दूसरा उपदेश नही है। मुसलमानो को चाहिए कि काफिर मूर्ति-पूजको को जहा कही देखें मार डाले।' जिस समय मोहम्मद ने तलवार की धार पर इस्लाम को फैलाने की घोषणा की और जिस समय उसने अरब के लुटेरो को विदेशियो के लूटने का चसका दे दिया उसी समय से उसके जीवन चरित्र मे लूट मार का आरम्भ हो गया।"

सयद मोहम्मद लतीफ 'हिस्ट्री आफ दी पजाब' नामक पुस्तक मे लिखते हैं —

"अरब की लुटेरी जातियो को मोहम्मद का लोक और परलोक के सुख और धन दौलत का लालच दिलाना उनके जोश को भडकाने के लिए काफी था। इस लालच से उनकी युद्ध शक्ति और विषय-कामना भभक उठी। मोहम्मद ने अरबिया की बुझी हुई कामना मे बिजली भर दी। कुरान और तलवार को हाथ मे लेकर अपने अनुयायी मुसलमानो की शक्ति से उत्साहित होकर मोहम्मद ने ससार के शिष्टाचार और धर्मशीलता के

साथ युद्ध छेड दिया। नई नीति और नवीन विचारो का प्रचलित करके समाज और राजनीति की सभ्यता मे मोहम्मद ने क्रान्ति उत्पन करदी।"

डा० मिरचिल का कहना है —

"कुरान की अधिकाश बातें दशन, ज्ञान और बुद्धि से बाहर की हैं, उसकी शिक्षा सिफ अवैज्ञानिक ही नही है, अपितु बुराई भी उत्पन्न करती है।"

डा० फोरमैन लिखते है—"जो आदमी कुरान को पढकर उस पर चलेंगे अवश्य निदयी और कामी बन जावेगे।"

१०

भारत की ओर

हमे यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि मुसलमानी धम उत्पन होने के पूव से ही अरब का सम्बन्ध भारतवप से रहा है। मुहम्मद साहब के जन्म से लगभग पाचसौ वष पूव मसीह की प्रथम शताब्दी से ही अरब और ईरान के द्वारा ही भारतीय व्यापार का योरोप से तार-तम्य रहा है। भारत के पूर्वी एव पश्चिमी तट के बन्दरगाहो जैसे चाल कल्याण, सुपारा और मालाबार के आस-पास अरब सौदागरो की बडी-बडी बस्तिया बसी हुई थी। दक्षिण भारत और लका मे तो अरबो और ईरानिया की अनेक बस्तिया थी। यहा तक कहा जा सकता है कि रोम और यूनान के जो जहाज भारत आते थे उनके नाविक अरब होते थे। भारत और चीन के व्यापार भी इन्ही के हाथ मे थे। इसलिए पूर्वीय तटा पर भी अरबो की बडी बडी बस्तिया थी।

उस समय के अरब सीधे सादे, वीर साहसी विश्वास और अटल प्रकृति के होते थे। वे अपने खानदाना और कबीला के कुल-देवताओ की मूर्तियो को पूजते थे। भारतवासियो से उनका खूब मेल-जोल था और भारत मे उनकी बस्तिया खुशहाल थी।

भारत का अरब, फिलस्तीन, मिस्र, काबुल, असीरिया आदि देशो से सदव ही व्यापार-विनिमय होता रहा है। यहूदिया के प्रख्यात बादशाह सुलेमान ने जगद्विख्यात मन्दिर के निमाण कराने के समय भारत से बहुत सी चीजें, जसे स्वण, रत्न, मोरपख और हाथीदात आदि मँगाये थे। मिस्र के प्राचीन बादशाहो ने भारत से व्यापार करने के लिये ही लाल सागर के

किनारे कई बन्दरों की स्थापना की थी। ईरान के बादशाहों ने फारस की खाडी मे कई बन्दरगाह इसी इरादे से बनाये थे। राम और यूनान के विद्वानो को भारत के भूगोल का भलीभाँति परिचय था। प्यूटिंगोरियन टेबल्स नामक पुस्तक से पता लगता है कि मसीह की तीसरी शताब्दी मे करेगानोर मे रोमन लोगो की बस्ती थी और मिस्र के बन्दरगाह सिकन्दरिया मे हिन्दुओं की आबादी थी, जिन्हे रोमन सम्राट काशकरला ने तीसरी शताब्दी मे कत्ल करा दिया था।

ईरानियो ने दजला और फरात के दहाने पर, बसरे के निकट, ओबोला का बन्दरगाह बनाया था।

अरब और भारत का व्यापार बहुत घनिष्ट था। उनके देश मे पश्छिम तट पर बहुत से बन्दरगाह थे। दक्षिण मे ऊदन और पूर्व मे सेहुर प्रधान थे। अरबी मल्लाह बहुधा भारतीय नौकाओं पर नौकरी करते थे और इस समुद्र के दोनो तटो पर इनकी बस्तियाँ थी। रेनो के मत से चौदहवी शताब्दी तक अरबो का मालाबार तट पर वैसा ही आधिपत्य था जैसा कि बाद मे पुर्तगीजो का हो गया।

इस्लाम धर्म के प्रचार होने पर अर्थात् मुहम्मद साहब के जन्म होने पर भी अरबो का यातायात बराबर भारत मे बना रहा। परन्तु अब उनमे नई सभ्यता और नये आदर्शो का समावेश था।

यह बात हम सातवी शताब्दि के मध्य भाग की कह रहे हैं क्योंकि सन् ६२६ मे मक्का नगर ने मुहम्मद साहब की आधीनता स्वीकार की थी और सन् ६३२ मे दो वर्ष बाद समस्त अरब ने। इसी सन मे हजरत मुहम्मद मर गये। परन्तु सन् ६३६ मे ईराक (मेसोपोटामिया) शाम (सीरिया) को अरबो ने विजय किया। और ६३७ मे बैतुल मुकद्दस (जेरूसलम) पर कब्जा किया था। अन्तत सातवी शताब्दी के अन्त तक तमाम तातार और तुर्किस्तान तथा चीन की पूर्वी सरहद तक इस्लाम मे मिल गया था। इसी बीच मे पश्छिम मे मिस्र, कार्थेज तथा समस्त उत्तरीय अफरीका पर इस्लाम की फतह हो चुकी थी, और प्रबल रोमन साम्राज्य को चीर फाड डाला था और स्पेनो पर अपना अधिकार कर लिया था।

अरबो ने बडी तेजी से चारो ओर फैलना प्रारम्भ कर दिया तब उनकी

सेनाएँ जङ्गलों, मैदानो, पहाड़ो और नदियों को पार करती हुई भारत की सीमा तक पहुँच गई। उन्होंने ईरान के बेड़ो को सदव के लिए समुद्र मे समाधि दे दी थी और भारत महासागर पर अपना एकाधिपत्य जमा लिया था। साथ ही हिन्द महासागर के व्यापार को भी सवथा हथिया लिया था।

मुसलमानो का पहला बेडा सन् ६३० मे उमर की खिलाफत मे हिन्दुस्तान् में आया। उस समय उस्मान सकीफी बहरैन का सूबेदार था। और उसने एक सेना समुद्री रास्ते से थाने के बन्दर भेजी। खलीफा ने इस बात को पसन्द नही किया। और भविष्य मे ऐसा न करने की ताकीद करदी। पर उस्मान की खिलाफत मे भारत की ओर फिर कई फौजी दस्ते आये, पर विफल मनोरथ लौट गये।

सातवी शताब्दी के मध्य मे जबकि मध्य एशिया और योरोप मे मुसलिम सत्ता अपना प्रताप दिखा रही थी, भारत मे सम्राट हर्षवधन की सत्ता का अन्त हो रहा था। उत्तरीय भारत का साम्राज्य टुकडे-टुकडे हो रहा था। कुछ पुरानी कुछ नई जातियो ने नवीन राजपूत शक्ति बनाकर पश्चिम से चलकर उत्तर पूर्वीय तथा मध्यभारत मे अनेक छोटी-छोटी रियासतें कायम करली थी। और मुसलमानो के प्रथम आक्रमण के पूर्व ही वे पजाब से दक्षिण तक और बगाल से अरब सागर तक प्रदेश को अधिकृत कर चुके थे। परन्तु कोई प्रधान शक्ति इनको वश मे करने वाली न थी। और आये दिन इन के परस्पर सग्राम होते थे। पुराने साम्राज्यो की राजधानियाँ खण्डहर हो गई थी।

ऐसी दशा मे धर्म क्षेत्र मे भारत का पतन होना स्वाभाविक था, बौद्धो ने ब्राह्मण धर्म और उच्चजाति के विशेषाधिकारो को कुचल डाला था, उसके प्रतिफल स्वरूप ब्राह्मणो ने इन नवीन शासको की सहायता से फिर पुराने ब्राह्मण धर्म को नये रूप मे खडा किया। वेद के रुद्र देवता शिव की मूर्ति बन गये थे। और अब हिन्दू और बौद्ध प्रतिमा पूजन और कर्म-काण्ड के पचड़े मे फिर फँस गये थे। कनिष्क के प्रयत्न से उत्तरीय भारत मे महायान सम्प्रदाय की नीव जम गई थी, जिसमे बोधि सत्वो की पूजा होती तथा बौद्ध मन्दिरो का समस्त कर्म काण्ड हिन्दू मन्दिरो के ढग पर

ढल गया था। प्रारम्भ मे जो बौद्ध मत ने सस्कृत का स्थान छीन कर प्राकृत या पाली भाषा को दे दिया था—अब वह फिर सस्कृत को मिल गया था और ब्राह्मणो की अब बन आई थी।

धीरे-धीरे वैष्णव मत, शैव मत और तान्त्रिक समुदाय ने मिल कर धर्म को भारत से निकाल बाहर कर दिया। कुछ उच्च श्रेणी के लोग उपनिषद् और दर्शन शास्त्र का मनन करते थे। पर सवसाधारण का धर्म-पथ अधकारमय, अरक्षित और ऊजड था। जिस जाति भेद को बौद्ध धर्म ने नष्ट कर स्त्रियो और शूद्रो को मनुष्यत्व के अधिकार प्रदान करना चाहा था, वह फिर और भी अच भित्ती पर कायम होगया था। ब्राह्मणो के अब असाध्य अधिकार बढ गये थे। जनता को जाति पाति और ऊँच नीच की दलदल ने फाम लिया था और असख्य भयानक देवी देवता, शक्ति, जप, तप, यज्ञ, हवन, पूजा, पाठ, दान, मत्र, तन्त्र और जटिल कर्मकाण्ड के सिवाय कोई धर्म न रह गया था—इस बात का पता उस समय के साहित्य, चीनी तथा अरब के यात्रियो के वृत्तान्तो, सिक्को तथा शिला लेखो से लगता है।

पाचवी शताब्दि मे फाहियान ने उत्तर-पच्छिम मे पुरातन काबुल से मथुरा तक हीनयान सम्प्रदाय देखा था, पर उनके दो सौ वर्ष बाद ही जब ह्वेनसांग आया तो उसने महायान को उसके स्थान पर देखा। उसने शिव की पूजा को बडी तेजी से फैलते देखा, और अयोध्या के निकट दुर्ग के सामने मनुष्य बलि चढती देखी थी। और बुद्ध की मूर्तियो के स्थान पर शिवमूर्तियाँ स्थापित होते, तथा बौद्धो को यन्त्रणा देकर निकालते देखा था। उसने नरमुण्डो की माला पहिने कापालिको को भी देखा था। उसने ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक बौद्धो और शैवो को बराबर पाया था। परन्तु इसके बाद के अरब के यात्रियो ने बौद्धो के धर्म को लुप्त हुआ पाया। अलबरूनी ने ग्यारहवी शताब्दी मे शैव, वैष्णव, शाक्त, सूर्य, चद्र, ब्रह्मा, इद्र, अग्नि, स्कन्ध, गणेश, यम, कुबेर आदि असख्य मूर्तियो की पूजा देखी। बौद्धो और जैनो, शाक्तों और कापालिको का मद्यमास सघर्ष देखा—जो धर्म का अग बन गया था। इस प्रकार उस समय भारत

सैकडो उत्तरदायित्व शून्य छोटी-छोटी रिमासता, सैकडा मत मतान्तरा और अनगनित सदाचारहीन कुरीतियो और अन्धविश्वासा का घर था ।

पाठकों को स्मरण होगा कि खलीफा अब्दुल मलिक के शासन काल तक मुस्लिम शक्तियों में गृहयुद्ध खूब जोर पर था और वह खलीफा वलीद के काल तक भी जारी था । उस समय हज्जाज इब्ने यूसुफ कोफ का हाकिम था । उसके आधीन प्रदेशों के अल्लाफी जाति के कुछ विद्रोही मुसलमान हिन्दुस्तान मे भाग आये थे और सिन्ध के राजा दाहिर की शरण मे रहने लगे थे । इनका सरदार मुहम्मद वारिस अलाफी था । राजा ने उन्हे जागीर देकर अपनी सेना मे रख लिया था । हज्जाज ने इन्हे मागा पर दाहिर ने देने से इन्कार कर दिया । इसी बीच मे अरब का एक जहाज लङ्का से आरहा था उसे कच्छ के लुटेरा ने लूट लिया । हज्जाज ने दाहिर से इसका हरजाना माँगा । दाहिर ने कहा—वह स्थान जहा जहाज लुटा है हमारे राज्य की सीमा से बाहर है अत हम हरजाना नही दगे ।

इस पर हज्जाज ने सन् ७१२ ई० मे मुहम्मद बिन कासिम को सिन्ध पर भेजा । यह हज्जाज का भतीजा था । २० वप का साहसी मुसलमान बालक केवल छ हजार सैनिक लेकर बलोचिस्तान की विस्तत मरुभूमि को पार करता हुआ बिना किसी रोक टोक के सिन्ध पर चढ आया । दाहर के सेनापतियों और नारायण कोट के किलेदार (जो अब हैदराबाद कहाता है) को लालच देकर शरणागत मुसलमानो के सरदार मुहम्मद वारिस अल्लाफी ने प्रथम ही वश मे कर लिया था । समय पर वे स्वय भी युद्ध मे विपरीत होगये । राजा दस हजार सवार और बीस हजार पैदल ले कर सम्मुख गया । आठ दिन तक घोर युद्ध हुआ । कासिम भागने ही को था कि एक ब्राह्मण ने उससे कहा कि यदि मन्दिर का झण्डा गिरा दिया जाय तो हिन्दू सेना भाग जायगी—क्योंकि हिन्दुओ का यही विश्वास है । कासिम ने झण्डे पर निशान दाग कर गिरा दिया । उसके गिरते ही हिन्दू सेना भागने लगी । राजा दाहिर एक तीर से घायल होकर गिर गया और उसका सिर काट लिया गया जिसे भाले पर लगा कर दिखाया गया । उसे देख सेना भाग खड़ी हुई और मन्दिर ध्वस कर दिया गया । उसी ब्राह्मण ने दक्षिणा पाने के लालच मे एक गुप्त खजाने का पता कासिम को

दिया जिसमे से चालीस डेगें ताम्बे की मिली जिनमे सत्रह हजार दो सौ मन सोना भरा था जिसका मूल्य एक अरब बहत्तर करोड रु० होता था। इसके अतिरिक्त छ हजार मूर्तियाँ ठोस सोने की थी। जिनमे सबसे बडी का वजन ३० मन था। हीरा, पन्ना, मोती, लाल और मानिक इतना था कि कई ऊँटो पर लादा गया।

जब यह खजाना कासिम को मिल गया तब उसने ब्राह्मण को उसी दम कत्ल करा दिया। साथ ही जिन सेनापतियो ने राजा से विश्वासघात किया था उन्हे भी कत्ल करा दिया गया। इसके बाद उसने असंख्य मन्दिरो और मूर्तियो को विध्वस किया, हजारो हिन्दू स्त्री-पुरुषो को कत्ल किया और अनेक गाव लूट लिये। वह प्रत्येक गाव के द्वार पर जाता और वहा के निवासियो को मुसलमान होने तथा बहुत सामान देने का आदेश करता था। आज्ञा पालन मे तनिक भी देर होने पर वह कत्ल और लूट करा देता था।

यह धन जज़िया कहाता था। अरब की शरह के मुताबिक काफिरो मे धनवान को बारह रुपये साल, मध्यम श्रेणी वाले को छ रुपये साल और मजदूरो को तीन रुपये साल देना पडता था। बाद मे यह नियम हो गया कि जीवन निर्वाह होने पर जो धन काफिर के पास बचे वह सब छीन लिया जाय।

फरिश्ता लिखता है कि मृत्यु-तुल्य दण्ड देना ही जज़िया का उद्देश्य था। काफिर लोग इस दण्ड को देकर मृत्यु से बच सकते थे। कासिम ने अत्यन्त कडाई से वह कर वसूल करना शुरू किया। और आपस की फूट के कारण कितने ही हिन्दू राजाओ ने इस नवागत अत्याचारी का स्वागत किया।

जिस समय सिन्ध पर यह गुजर रही थी, उस समय भी अरब के व्यापारी मालाबार तट पर अपनी बस्तियाँ बसा रहे थे। वे शान्त थे और हिन्दुस्तानी स्त्रियो से विवाह करते थे तथा उनके रहने और घर बनाने मे कोई भी बाधा न थी। 'हिशाम' का कबीला भागकर भारत मे कोकडा और कन्याकुमारी के पूर्वी तट पर बस गया था। लब्बे और नवायत जातियाँ उन्ही के वश की हैं। हिन्दू राजाओ ने इन विदेशी व्यापारियो की

काफी आवभगत की। उन्हे मस्जिदें बनाने और जमीन खरीदने की आज्ञा देदी। इससे मालाबार मे बड़ी जल्दी आठवी शताब्दी मे मुसलमान फैल गये और उन्होंने अपने धर्म का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। यह झटपट फैला भी। इसके कारण थे। एक तो मुसलमानो मे पादरी या पुरोहित न थे—प्रत्येक व्यक्ति धर्म प्रचारक था। दूसरे उनके वैभव, धन और वीरता से मालाबार तट की दरिद्र जातियाँ प्रभावित हो गई थी। फिर उनके विचारो, स्वभावो, रीतियो और चालचलन मे एक नवीन कौतूहल था—और उनका धर्म सीधासादा और सुबोध था। उनकी उपासना हृदयग्राही थी। वे दिन भर मे अनेक बार ईश्वर का ध्यान करते थे। रेनान जसे कट्टर नास्तिक और विद्वान् फ्रेंच लेखक ने एक बार लिखा था कि "जब मैं मस्जिद जाता हूँ तब मेरा हृदय एक अकथनीय शक्तिशाली भाव से उद्विग्न हो जाता है और मेरे मन मे खेद उत्पन्न होता है कि मैं मुसलमान न हुआ।"

रेनान जसा के हृदय पर प्रभाव पडे तो औरो का तो कहना ही क्या है! उनमे नमाज की सफबन्दी, रोजो की सख्ती, खरात और उश्र के नियम, परस्पर समता का व्यवहार ऐसी बाते थी कि देखने वालो पर उनका असर पडता था।

यह वह समय था जबकि हिन्दू धर्म मे एक विप्लव मच रहा था। बौद्ध, जैनी वष्णव, शैव, शाक्त परस्पर भयानक सघर्षो, कुरीतियो और अन्धविश्वासो मे फँसे थे। ब्राह्मणो ने बौद्धो और जैनियो को नष्ट प्राय कर दिया और शैव और वष्णवो की प्रबलता हो रही थी। राजनैतिक व्यवस्था छिन्न भिन्न थी—प्राचीन राजघराने जजर हो गये थे और नये वश उठ रहे थे। हार्दिक दुबलता और अन्धविश्वासो का हाल राजवशो तक मे गिर गया था। जिसका एक उदाहरण सुनिए—मालाबार कोदगल्लूर के राजा पैरूमल ने स्वप्न देखा कि चाद के दो टुकडे हो गये है। सुबह उसने अपने दरबारी विद्वानो से उसका अर्थ पूछा—पर किसी का भी उत्तर न भाया। सयोग से एक मुसलमाना का काफिला लङ्का से लौट रहा था—उसके सर्दार तकीउद्दीन ने जो स्वप्न की व्याख्या की वह राजा को जँच गई। बस वह मुसलमान हो गया। उसका नाम अब्दुर रहमान

सानीनी रक्खा गया और अरब को चला गया, और वहाँ से उसने मलिक इब्ने दीनार, शर्फ इब्न मलिक, मलिक इब्न हबीब को मालाबार भेजा। इन्होंने ग्यारह स्थानो पर मस्जिदें बनाईं और इस्लाम का प्रचार किया।

राजा वहाँ से नही लौटा। चार साल बाद मर गया। पर आज भी जब ज़मोरिन सिंहासन पर बैठाया जाता है उसका सिर मूँडा जाता है और उसे मुसलमानी लिबास पहनाया जाता है। एक मोपला उसके सिर पर मुकुट रखता है। राज्याभिषेक के बाद वह जाति से बहिष्कृत हो जाता है। वह न तो अपने परिवार के साथ खा सकता है, न नायर लोग उसका छूआ खाते हैं। यह समझा जाता है कि ज़मोरिन अन्तिम चेरमन—पेरुमल का प्रतिनिधि है और उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा है। अब भी जब कालीकट और ट्रावनकोर महाराज अभिषेक के समय तलवार कमर मे बाधते है तब यह घोषणा करते हैं कि मैं इस तलवार को उस समय तक रखूँगा जब तक कि मेरा चाचा जो मक्के गया है, लौट न आयेगा।

दक्षिण के मोपले उन्ही मुसलमानो के वंशधर है। उस समय उनका बडा महत्व था। मोपला महा-पिल्ला का अपभ्रंश है। मोपला का अर्थ है "ज्येष्ठ पुत्र या दूल्हा"। उन्हे बडे अधिकार प्राप्त थे। मोपला नाम्बूदरी ब्राह्मणो के बराबर बैठ सकता था यद्यपि नायर ऐसा नही कर सकता था। मोपला का गुरु थंगल राजा के साथ पालकी पर सवारी कर सकता था।

ज़मोरिन की कृपा से बहुत से अरब के व्यापारी उसके राज्य में [illegible] गये। राज्य को उनके व्यापार मे अर्थ लाभ भी था, साथ ही वे [illegible] पराक्रम से आसपास के राजाओ को परास्त करके उनकी [illegible] राजा का अधिकार करा देते थे। जहा जहा राजा का अधि[illegible] [illegible], मुसलमान व्यापारियो की मण्डियाँ भी स्थापित हो जातीं। [illegible] बन्दरगाह की नीव इसी प्रकार पडी थी। राजा ने आज्ञा [illegible] कि मक्कवान जाति के प्रत्येक मल्लाह परिवार में [illegible] आदमी इस्लाम धर्म ग्रहण करें। इसका फल यह हुआ कि [illegible] दसवीं शताब्दी मे भारत की यात्रा की तब दस हजार [illegible] उसने चौल मे पाई थी। इब्न बतूता ने खभात मे [illegible] मुसलमानो की अच्छी आबादी देखी थी और [illegible]

उसने गोआ को मुसलमानो के अधिकार मे देखा था। हिनोर मे भी मुसलमानो का राज्य था। मगलौर मे चार हजार मुसलमान बसते थे। मद्रास की मुस्लिम जातियो का जीवन प्रारम्भ यहा से होता है।

नजद वली ने तेरहवी शताब्दी मे मदुरा और त्रिचनापल्ली मे बहुत से मनुष्यो को मुसलमान किया। यह शरस तुर्क शहजादा था। सय्यद इब्राहीम ने तेरहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे पाण्यो पर चढाई की और बारह वर्ष उसने पाण्यो पर राज्य किया। पर अन्त मे वह हारा और मारा गया।

बाबा फखरुद्दीन एक साधू था जो पेनुकोंडा मे रहता था। उसने वहा के राजा को मुसलमान बनाया और मस्जिद बनाई। ११६८ ई० मे मरा।

मदुरा प्रान्त मे मुसलमानो ने १०५० ई० मे प्रवेश किया। उनका नेता मालकुल मलूक था। इसके साथ एक बडा साधू अलियारशाह भी था, जो मदुरा की कचहरी मे दफन है। पालेयन गाव मे एक मस्जिद है जिसके लिये ग्यारहवी और बारहवी शताब्दियो मे छ गाव धर्मादे खाते कुण पाण्य ने लगा दिये थे। यह दान सोलहवी शताब्दी मे वीरप्पा नायक ने भी जारी रखा था।

चोल मण्डल के किनारे बहुत सी मण्डियाँ बन गइ थी और वहा के राजाओ ने जो सुभीते इन मुसलमान व्यापारियो को दे रखे थे—उससे उन्हे बहुत लाभ था। वस्साफ लिखता है कि —"मावर समुद्र के उस किनारे को कहते हैं जो कोलम से नल्लोर तक फला है। इसकी लम्बाई तीन सौ फरसङ्ग है। यहा के राजा को देव कहते हैं। जब यहा से बडे-बडे जहाज चीन, हिन्द और सिन्ध के मूल्यवान मालो से लदे गुजरते है तो ऐसा जान पडता है कि ऊँचे ऊचे पहाड बादवान लगाये पानी पर तर रहे है। फारिस की खाडी व द्वीपो से ईराक और खुरासान, रूम और योरोप की सुन्दर चीजे यहाँ आती हैं और यहा से चारो ओर जाती है—क्योकि यह व्यापार का केन्द्र है।" आगे चलकर वह लिखता है कि—

"कायल पट्टनम् मे, किश के हाकिम मलिकुल इस्लाम जमालुद्दीन ने

घोडो की आढत लगाई थी, प्रति वर्ष दस हजार घोडे फारस से मावर आते थे जिनकी कीमत बाईस लाख दीनार था।

रशीदुद्दीन के मतानुसार जमालुद्दीन १२६३ ई० मे कायल का अधिकारी हुआ था और उसका भाई तकीउद्दीन उसका नायक था—यही व्यक्ति सुन्दर पाण्य का मन्त्री रह चुका था। पाण्य राज ने जमालुद्दीन के पुत्र फखरुद्दीन अहमद को दूत बनाकर चीन के महाराज बुबुलेगा के साथ १२८६ ई० मे भेजा था।

इब्नबतूता का कहना है कि तामिल प्रांत मे जब कि मदुरा का हाकिम गयासुद्दीन अहमनानी था—राजा पीरवल्लाल की सेना मे बीस हजार मुसलमाना का एक दस्ता था। राजा के सूबेदार हरि अपफा ओडयार की आधीनता मे होनावर मुसलमान हाकिम थे।

पाठक देखेगे कि सातवी शताब्दी मे दक्षिण मे मुसलमान व्यापारी किस ढङ्ग पर आकर धीरे-धीरे सैनिक, सेनानायक, मन्त्री, बेडो के अधिपति दूत, अध्यक्ष और हाकिम तक बन गये।

परन्तु दक्षिण मे जिस प्रकार चुपचाप इस्लाम भारत मे जड जमा रहा था—उत्तर मे इसका रूप कुछ और ही था। मुलतान और सिंध को विजय कर कासिम लौट गया, तब लगभग तीन सौ वर्ष तक और कोई आक्रमण नही हुआ। इस समय पच्छिम प्रांत पर कुछ मुसलमान शासक थे—परन्तु काठियावाड गुजरात-कोंकण—दायबल-सोमनाथ भडोच, खबायत, सिहान, चोल मे इनकी बस्तियाँ बस रही थी। काबुल मे एक ब्राह्मण राजा राज्य करता था। परस्पर के झगडे खूब थे। परन्तु मुसलमानो से सभी को दिलचस्पी थी—यह अद्भुत बात है। सुलेमान सौदागर ने लिखा है—'बल्हार' (बल्लभिराय) के बराबर अरबो से हिंदुस्तान मे कोई राजा प्रेम नही करता।

आठवी शताब्दी के अंत मे अफगानिस्तान भी मुसलमानी तलवार के आधीन हो गया था। और अफगानो ने अब खैबर घाटी से छोटे-छोटे धावे मारने प्रारम्भ कर दिये थे।

अठारहवी शताब्दी मे एक तुर्की गुनाम सुबुक्तगीन जो खुरासान को आर गजनी दखल कर बैठा था, भारत मे घुस आया। उस समय पजाब

के राजा जयपाल थे। इन्होंने खैबर घाटी को सुरक्षित रखने की और उधर से किसी भी शत्रु को भारत मे न घुसने देने की शत पर शेख हमीद नामक एक मुसलमान को पेशावर और खबर का इलाका देकर नवाब बना दिया था।

सुबक्तगीन को आगे बढता देख महाराज जयपाल ने आगे बढ कर जलालाबाद पर छावनी डाल दी। यह स्थान खैबर घाटी के पश्चिमी मुहाने पर अफगानिस्तान की सीमा मे है। सुबुक्तगीन युद्ध का समय टालता रहा। महाराज जयपाल इस भेद को नही समझे। जब शीत पडने लगा और बर्फ गिरने लगी तब सुबुक्तगीन ने धावा बोल दिया। जयपाल की सेना सर्दी से निकम्मी हो गई थी, उससे युद्ध करते न बना। निदान वे लौटे। परन्तु शेख हमीद ने इधर से घाटी का मुहाना रोक दिया। महाराज जयपाल घाटी मे सेना सहित घिर गये। निरुपाय होकर उन्होने बहुत सा धन, हाथी-घोडे आदि देने का वचन देकर सन्धि करली आर सुबुक्तगीन के आदमियो को साथ लेकर लाहौर लौट आये। परन्तु देने लेने पर सुबुक्तगीन के आदमियो से महाराज का झगडा होगया। सुबुक्तगीन भारत मे घुस आया। पेशावर मे युद्ध हुआ और राजा की पराजय हुई। उनकी समस्त सम्पदा लूट ली गई। राजा ने अग्नि कुण्ड मे प्रवेश कर आत्मघात किया। यह शेख हमीद की नमक हरामी थी। पजाब पर मुसलमानो का अधिकार हो गया।

कासिम के आक्रमण के बाद बहुत से मुसलमान फकीर उत्तर भारत मे फिरने लगे थे। उनकी तरफ हिन्दू शासको का कुछ ध्यान भी न था। इनकी जियारत करने तुर्किस्तान, फारस, अफगानिस्तान और बिलोचिस्तान से बहुत से मुसलमान आते, जिनकी कोई रोक टोक और देख भाल नही होती थी। बहुत से मुसलमान साधू हिन्दू साधुओ का वेश धारण करके मदिरो और मठो म रह जाते थे। प्रसिद्ध कवि शेखशादी सोमनाथ के मन्दिर मे कुछ दिन हिन्दू साधु बनकर रह गया था—इस बात का जिक्र वह खुद अपनी 'बास्ता' नामक किताब मे करता है। ये सब लोग बहुधा जासूसी करते थे और भारत की खबर मुसलमान शक्तियो तक पहुँचाते थे तथा हिदू राजाओ की परिस्थिति का अध्ययन किया करते थे।

अली बिन उस्मान अलहुजवीरी जिसने कशफुल महजूब की रचना

की। यह गजनी का रहने वाला था। लाहौर मे आकर बसा और १०७२ ई० मे वहीं उसकी मृत्यु हुई। शेख इस्माइल बुखारी ग्यारहवीं शताब्दी मे आया। फरीदुद्दीन अत्तार जो तजकिरतुल औलिया और मन्त कुर्त र का रचयिता है, बारहवी शताब्दी मे आया। शेख मुईनुद्दीन चिश्ती ११६७ मे अजमेर मे आया। उस समय पृथ्वीराज जीवित थे। अजमेर के मन्दिर के महन्त रायदेव और योगीराज अजपाल ने इसके हाथो इस्लाम धर्म स्वीकार किया था। चिश्तिया मठ के बडे-बडे सूफियो मे कुतुबुद्दीन बख्तियार काफ, फरीदुद्दीन गजशकर निजामुद्दीन औलिया आदि थे। सुहरवर्दी सम्प्रदाय वालो मे जलालुद्दीन तब्रीजा, कादरियो मे जलालुद्दीन बुखारी, बाबा फरीद पाकपरनी थे। अब्दुल कदीम अलजीली जिन्होंने सूफी मजहब के विद्वान इब्नल अरबी की पुस्तकों की टीका लिखी है, और इन्साने कामिल की रचना की है, १३८८ मे यहा आया। इसी शताब्दी मे सैयद मुहम्मद नेसूदराज ने महाराष्ट्र मे बहुत कुछ इस्लाम का प्रचार किया। पीर सद्रुद्दीन ने खोजा जाति का जन्म दिया और सैयद यूसुफउद्दीन ने मोमना को। इन सूफियों के अतिरिक्त बहुत से फकीर जिनका सम्बन्ध किसी भी मजहब से न था, देश भर मे घूमते थे। इनमे शाह मदार, सखी सरवर और सतगुरु पीर प्रसिद्ध थे।

इन साधुओ ने छिन्न-भिन्न हिन्दुओ मे इस्लाम के प्रचार मे कितनी सहायता दी है—इस पर विचार करना चाहिये। इन लोगो ने बिना ही जोर जुल्म के और बिना ही तलवार की सत्ता के मुसलमान धर्म का प्रचार किया। और यह उस समय अति सरल था क्योंकि जैसा अलबरूनी लिखता है हिन्दू धर्म इस योग्य न रह गया था कि उसमे कोई भी ब्राह्मणोत्तर व्यक्ति आत्मसम्मान से रह सके। ब्राह्मण और क्षत्रिय माना उस काल मे हिन्दू समाज के सर्वेसर्वा थे। इनके सिवा ये सभी समाचार-विनिमय करते थे।

बारहवी शताब्दी मे एक फकीर सैयद इब्राहीम सहीद भारत मे आये और दक्षिण मे बहुत से लोगो को इस्लाम की दीक्षा दी। इनके बाद बाबा फखरुद्दीन ने भी बडा भारी इस्लाम का प्रचार किया और पेनुकोण्डा के हिन्दू राजा ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। उधर यह प्रचार भीतर ही भीतर बढ रहा था और इधर इनके द्वारा दक्षिण भारत का व्यापार

खूब उन्नत हो रहा था। मुसलमानों का इतना मान था कि उन्हें हिन्दू राजाओं की ओर से मुसलमान एलची और राजदूत दूर देशों तक के दर्बार में भेजे जाते थे। मन्त्री और महामन्त्री के पद पर ता बहुत से मुसलमान थे। हिन्दू राजाओं की ओर से प्रान्तों में शासक मुसलमान नियुक्त किये जाते थे और हिन्दू राजाओं के आधीन बड़ी-बड़ी मुसलमान सेनाएँ थी।

गुजरात के वल्लभी राजा बलहार ने अपने राज्य के अन्दर मुसलमानों का बड़े उत्साह से स्वागत किया था। काठियावाड़ गोवा और मध्य भारत के सभ्य हिन्दू राजाओं ने भी मुसलमान साधुओं का मागा सत्कार किया था और उन्हें अपने राज्य में इस्लाम प्रचार में काफी सहायता दी थी। हिन्दू राजा इन मुसलमानों का इतना लिहाज करते थे कि एक बार सम्भात में जब हिन्दुओं ने मुसलमानों की मसजिद गिरा दी थी। तब राजा ने हिन्दुओं को भारी दण्ड दिया और अपने खर्च से मसजिद फिर बनवा दी।

ग्यारहवीं शताब्दी में वोहरा के गुरु यमन से आकर गुजरात में बसे। ये शिया सम्प्रदाय के थे। इससे प्रथम ही वहाँ मुरद्दीन ने गुजरात के बहुत से कुनबियों खेरवाओं और नाडियों को इस्लाम में शामिल कर लिया था। अभिप्राय यह है कि आठवीं शताब्दी से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी तक बराबर समस्त भारत में मुसलमान साधु संत अपने धर्म का प्रचार करते रहे और लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। इस समय तक भारतीयों पर इस्लाम का कोई राजनैतिक प्रभाव नहीं पड़ा था।

भारत पर कासिम के लगभग तीन सौ वर्ष बाद महमूद ने लूट का लालच देकर असभ्य बर्बरों को इकट्ठा कर धावा बोल दिया। इसने निरन्तर तीस बरस तक भारत पर आक्रमण किये और सत्रह बार पश्चिमोत्तर भारत को तलवार और अग्नि से विध्वंस किया। इसने नगरकोट का मंदिर तोड़कर इसमें से सात सौ मन सोना चांदी के बर्तन, सात सौ चालीस मन सोना, दो हज़ार मन चांदी और बीस मन हीरा मोती जवाहरात लूटे थे। थानेश्वर के आक्रमण में यह दो लाख हिन्दुओं को कैदी बनाकर ले गया। फरिश्ता लिखता है कि उस समय गजनी शहर हिन्दुओं की सी नगरी मालूम देता था। मदुरा की लूट में उसने छः मूर्ति ठोस सोने की पाईं।

जिनके शरीर पर ग्यारह रत्न थे। मदुरा से वह इतने गुलाम बनाकर ले गया कि मुहम्मद अल उटवी ने लिखा है कि महमूद ने एक-एक गुलाम ढाई रुपये को बेचना चाहा पर खरीदार न मिले। मदुरा को देखकर महमूद ने खुद कहा था कि यहा हजारा महल विश्वासो के विश्वास की भाति दृढभाव से खडे ह जो सगममर के बने है। यहाँ अनगनित हिदू मन्दिर हैं। अनन्त धन खर्च किये विना नगरी इतनी सुन्दर नही वन सकती। दो सौ वष के यत्न और परिश्रम विना ऐसी नगरी का निर्माण भी नही हो मकता।

इसके वाद इमने गुजरात का प्रसिद्ध सोमनाथ का मन्दिर लूटा। यह विशाल मन्दिर छप्पन खम्भो पर आधारित था जिनमे अनगनित वहुमूल्य रत्न लगे थे। चालीस मन भारी सोने की जजीर से एक भारी घटा लटक रहा था। उसमे पाच गज ऊची शिवमूर्ति अधर थी। उसे अपने हाथो से तोडकर असख्य रत्नो का ढेर महमूद ने लूट लिया और उस मूर्ति को गजनी ले गया। उसके टुकडे-टुकडे करके एक टुकडा मस्जिद की सीढियो और एक अपने महल की सीढियो मे लगा दिया। और उस मन्दिर के स्थान पर एक मस्जिद बनवा दी जा अब तक बनी है।

सुदूर गजनी से सिधु नदी को पार करके उजाड रेगिस्तान मे होकर गुजरना और इस तरह गुजरात के दक्षिण तक भारी-भारी धावे मारना कम आश्चय की बात नही। परन्तु इससे भी अधिक आश्चय की बात यह है कि सिवाय दो चार राजाओ के और किसी ने उसे रोकने की चेष्टा तक नही की। इसका कारण तात्कालिक सामाजिक परिस्थिति की हीनता थी। जिसका वणन अलबरूनी—जो महमूद के आक्रमण मे उसके साथ था—इस प्रकार करता है—

"भारत बहुत छोटे-छोटे राज्यो मे विभक्त है। सब राज्य स्वतन्त्र है और परस्पर युद्ध मे प्रवृत्त रहते है। ब्राह्मण अपने अधिकारो की रक्षा के लिए इतने व्याकुल है, और जाति भेद का ऐसा द्वेष भाव फैल रहे है कि वैश्यो और शूद्रो को वेद पाठ करते देखकर ब्राह्मण उन पर तलवार लेकर टूट पडते है। और उन्ह राज कचहरी मे उपस्थित करते है जहाँ उनकी जिह्वा काट ली जाती है। ब्राह्मण सब प्रकार के राज कर से मुक्त हैं। हिन्दू वालाएँ सती हो जाती हैं। हिदू किसी देश को नही जाते, किसी जाति की

श्रद्धा नही करते—वे अपने को और अपनी जाति को सर्व-श्रेष्ठ समझते हैं।" हाय! मेगस्थनीज और हुएनसाग के काल का भारत यहा तक पतित हो गया था !!!

इस बीच मे गजनी और गौरिया से तलवार चल पडी—गौरियो ने महमूद का वश नष्ट कर दिया। महमूद के कोई एक सौ पचास वर्ष बाद मुहम्मद गौरी ने फिर भारत पर आक्रमण किया। पृथ्वीराज ने युद्ध क्षेत्र के मैदान मे उससे लोहा लिया और उसे परास्त करके बन्दी किया, फिर कुछ दण्ड लेकर छोड दिया। छ बार उसने आक्रमण किया और हार खाकर बन्दी हुआ तथा धन देकर छुटकारा पाया। यह तेरहवी शताब्दी की बात है। इस समय भारत मे चार प्रधान राजपूत वश राज करते थे १—दिल्ली और अजमेर मे चौहान। २—कन्नौज मे गहरवार। ३—गुजरात मे सोलकी और ४—चित्तौड मे सीसोदिया। ये चारो राजवश यद्यपि परस्पर सम्बन्धी थे पर थे कट्टर शत्रु।

गुजरात के कुछ सोलकी सरदार चौहानो की शरण मे अजमेर चले आये थे। उनमे से एक ने राज सभा मे अपनी मूँछो पर ताव दिया—यह देख कर पृथ्वीराज के चचा कान्ह ने कहा—चौहानो के सामने कोई मूँछो पर ताव नही दे सकता—और उन सरदारो का सिर काट लिया। पृथ्वीराज ने चचा की इस बात पर क्रुद्ध होकर आज्ञा दी कि कान्ह की आखो पर चमडे की पट्टी बाध दी जाय जो सिवा युद्ध काल के कभी न खोली जाय। सोलकी सरदारो के मारे जाने के समाचार जब गुजरात के राजा सोलकी मूलराज के पास पहुँचे तो वह सेना लेकर अजमेर पर चढ आया और सोमवती के युद्ध क्षेत्र मे पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर का सिर काट लिया। इसीलिये सोलकी और चौहान जन्म के शत्रु हो गये।

अनगपाल तोमर दिल्ली का राजा था। दिल्ली उस समय छोटी सी राजधानी थी। पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द गहरवार दोनो ही उसके धेवते थे। उसने निस्सन्तान होने के कारण पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य दे दिया था। इससे जयचन्द मन ही मन मे कुढ गया था। दूसरी बात यह थी कि देवगढ की यादवो की राजकुमारी की सगाई जयचन्द से हो गई थी। अभी विवाह न हो पाया था कि पृथ्वीराज बलपूर्वक राजकुमारी को

व्याह लाया । जयचन्द इसमे क्रोध मे जल भुन गया । उसने चिढकर राजसूय यज्ञ किया और उसी मे अपनी पुत्री का स्वयवर रचा । सभी आधीन राजाओ को बुलाकर सेना कम मे नियुक्त किया । पृथ्वीराज नही बुलाये गये थे । पर उनकी मूर्ति द्वारपाल के स्थान पर बनाकर खडी कर दी गई । पृथ्वीराज ने यह सुना, उसे यह भी मालूम था कि सयोगिता उसे चाहती है, वह भेप बदल कर अपने मित्र कवि चन्द बरदाई के साथ वहा पहुँच गया । सयोगिता ने उपस्थित राजाओ को अतिक्रमण करके पृथ्वीराज की मूर्ति के गले मे जयमाला डाल दी । यह देख जयचद क्रुद्ध होकर उसे मारने को झपटा, पर पृथ्वीराज ने सिंह की भाँति झपटकर उसे उठा लिया और घोडे पर चढाकर तलवार खीचकर गहरवारो को ललकार कर कहा कि पृथ्वीराज चौहान जयचद की कन्या का हरण करता है, जो क्षत्रिय हो रोक ले ।

तलवारे खटकी । भयानक मारकाट मची । पृथ्वीराज की सेना मे एक सौ आठ सेनापति थे, और वे दिल्ली से कन्नौज तक एक-एक कोस के अतर पर अपनी-अपनी सेना लिये सनद्ध खडे थे । जयचन्द के पुत्र ने ललकार कर कहा—क्षत्रिय होकर भागते क्यो हो, डोला रख दो और तलवारो से निबट लो, जो विजयी हो डोला ले जाय । सयोगिता पालकी मे बैठा दी गई, और घनघोर युद्ध हुआ । प्रतिदिन दिन भर युद्ध होता और सध्या समय डोला आगे बढता था ।

सोरो मे डट कर युद्ध हुआ । गगा का जल लाल हो गया । अन्त मे दिल्ली की सीमा आ गई और जयचन्द को हार कर लौटना पडा, इससे उसकी क्रोधाग्नि कुचले हुए सप की भाति भभक उठी ।

सोलकियो और गहरवारो ने मुहम्मद गोरी को लिखा कि यदि इस समय पृथ्वीराज पर आक्रमण किया जाय तो हम सहायता कर सकते हैं । मुहम्मद गोरी एक लाख बीस हजार सवार लेकर चढ दौडा । जयचद और सोलकियो की सेना भी सहायता के लिए पहुँच गई । पृथ्वीराज उस समय सयोगिता के प्रेम मे मतवाला हो रहा था । उसने झटपट सेना तैयार की, परन्तु उसके बांके वीर प्रथम ही काम आ चुके थे । घर के शत्रुओ और विश्वासघातियो की कमी न थी, केवल चित्तौर के अधिपति समरसिंह जो उसके बहनोई थे, अपनी सेना सहित उसके साथ थे । तला-

बड के मैदान मे दोनो सेनाएँ छावनी डालकर पड गईं, मुहम्मद गौरी ने छल करके कुछ अवकाश मागा और भयभीत होने का बहाना किया। फिर एक दिन रात को अचानक छापा मारा, चौहान झटपट तैयार होकर लडने लगे। मुसलमानो के पैर उखड गये वे भागने को ही थे कि सोलकियो ने और गहरवारो ने पीछे से धावा बोल दिया मुसलमान फिर लौट पडे। समरसिंह मारे गये। पृथ्वीराज पकडे गये और मुहम्मद गौरी ने इन्हे कत्ल करवा दिया। इस प्रकार दिल्ली के पतन के साथ भारत के हिन्दू साम्राज्य की तकदीर का फैसला हो गया। और सदा के लिये हिन्दुओ का दीप निर्वाण हो गया।

इसके दूसरे ही वष उसने कन्नौज पर धावा बोल दिया। उस समय जयचन्द की सेना मे पचास हजार सवार मुसलमान थे। वे ठीक युद्ध के समय उलट पडे और राजा की सेना को काटने लगे। राठौरा की सेना तितर बितर हो गई और जयचन्द कुतुबुद्दीन एवक का तीर खाकर घोडे समेत गगा मे गिर गया और डूब गया। कन्नौज पर उसका अधिकार हो गया। इसने कन्नौज मे एक हजार मन्दिर तुडवाये। लूट का सोना और चादी चार हजार ऊँटा पर लादकर अफगानिस्तान ले गया। वह सब लूट का माल और लाखा स्त्री पुरुषो को गुलाम बनाकर साथ ले गया तथा अपने सेनापति कुतुबुद्दीन को दिल्ली का राज्य दे गया। यह कुतुबुद्दीन शाहबुद्दीन का गुलाम था। वही गुलाम प्राचीन भारत की किस्मत का विधाता बना और भारत मे मुसलमानी राज्य की जड जमी।

११
पठान

इस प्रकार बारहवी शताब्दी मे दिल्ली के सिंहासन पर पठानो का साम्राज्य स्थापित हुआ जो तीन सौ तेतीस वष तक स्थिर रहा ।

पठानो के लोमहषण अत्याचार प्रसि हैं। पर उनमे भी आत्म-कलह का अ त न था । वे छल, बल, कौशल से हि दू राज्यो को हडपने लगे ।

क्लाकमैन साहब ने लिखा है कि—

"हिन्दुओ का धन ऐश्वय ही उनके नाश का कारण हुआ है । इसीसे पठान लोग उसे लूटने को अग्रसर हुए । हिन्दू धम उनके राजकीय कामो मे विघ्न डालता था । अनगनित तीथ पठानो ने विध्वस कर डाले । तीथ जाने की शाही आज्ञा बिना प्राप्त किये कोई तीथ यात्रा नही कर सकता था । चौदहवी शताब्दी के मध्यम भाग मे प्रत्येक हि दू परिवार के वयस्क मनुष्यो की गणना करके आज्ञा निकाली गई थी कि धनवान पुरुष से चालीस, मध्यम से बीस और दरिद्र से दस रुपया जजिया लिया जाय ।

कुतुबुद्दीन एवक ने हांसी, दिल्ली, मेरठ, कोयल, रणथम्भोर, अजमेर, ग्वालियर, कालिंजर और गुजरात की ईंट से ईंट बजा डाली । हजारो मन्दिर विध्वस कर दिये । लाखो नर-नारी काट डाले ।

कुतुबुद्दीन के गुलाम मोहम्मद इब्ने बख्तयार ने एक सेना लेकर बिहार और बगाल की ओर कूच किया । माग मे उसने काशी के हजारो मन्दिरो को विध्वस कर दिया । बिहार और बगाल मे पाल और सेनवशी राजा राज्य करते थे, उन्हे छल से मार डाला गया । बिहार मे उस समय बारह हजार बौद्ध भिक्षु रहते थे । यहाँ उनका एक बडा भारी पुस्तकालय

और विद्यापीठ थी। उन सब भिक्षुओं को कत्ल कर दिया गया और पुस्तकालय और विद्यापीठ को जलाकर खाक कर दिया। इसके बाद ही अलतमश ने उज्जैन पर आक्रमण किया और महाकाल के मन्दिर को विध्वंस कर वहा की करोडो रुपये की सम्पदा लूट ली।

इस गुलाम वश के कुल आठ बादशाह हुए और इन्होने लगभग सौ वर्ष दिल्ली मे राज्य किया।

इसके बाद खिलजी वश का राज्य हुआ जो तीस वर्ष तक रहा। इस वश के तीन बादशाह हुए। फिरोजशाह इस वश का प्रथम बादशाह था। उसने जैसलमेर पर आक्रमण किया। उस समय अपने सतीत्व की रक्षा के लिये निरुपाय हो वहाँ की दो हजार चार सौ स्त्रियाँ आग मे कूद कर जल मरी। इसका भतीजा अलाउद्दीन दक्षिण गया और देवगढ के राजा रामदेव से कहा कि मैं चचा से लडकर आया हूँ मुझे शरण दें। राजा ने शरण दे दी। पर अलाउद्दीन ने अवसर पाकर उत्सव के समय—जबकि राजा की सेना अन्यत्र गई थी, लूट-मार मचा दी। करोडो का धन लूटकर महल भस्म कर दिया, राजवश को कत्ल कर दिया। चित्तौर की पद्मिनी के लिये चढ गया और युद्ध के बाद वहा तेरह हजार राजपूत स्त्रियाँ प्रतिष्ठा बचाने को आग मे पद्मिनी के साथ जल मरी। गुजरात के राजा करण को मार उसकी रानी और बेटी को छीन लिया। रानी से स्वय विवाह किया और बेटी से अपने पुत्र का।

इसके शासन मे हिंदुओं की अति दयनीय दशा हो गई थी। एक बार काजी ने उससे कहा था—"आपके राज्य मे काफिरो की ऐसी दुर्दशा हो गई है कि उनके स्त्री बच्चे मुसलमानो के द्वार पर रोते और भीख मागते फिरते हैं। इस शुभ काम के लिये यदि खुदा आपको जन्नत न भेजे तो मैं जिम्मेदार हूँ।"

फिरोजशाह के शासन में यह विधान था कि "ज्यो ही कोई शाही नौकर हिंदुओं से कोई कर चाहे त्योंही वह अति विनीत भाव से सिर झुका कर दे दे। यदि कोई मुसलमान किसी हिन्दू के मुँह मे थूकना चाहे तो उसको चाहिये कि सीधा खडा रहकर मुँह को खोले रहे जिससे उस मुसलमान को अपना मतलब हल करने का पूरा सुभीता रहे। मुँह मे

थूकना किसी बुरी भावना से नही सिफ हिन्दुओ की राजभक्ति की परीक्षा के लिये है। केवल इस्लाम की महिमा प्रकट करना और हिन्दू धर्म मे अतुलनीय घृणा प्रदर्शन करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। जो किसी प्रकार भी अनुचित नही। क्योकि खुदा ने कहा है कि काफिरो को लूटो, उन्हे गुलाम बनाओ और उन्हे कत्ल कर दो। जो इस्लाम न कबूल करें उनसे जबरन कराओ। हिन्दुओ से निकृष्ट व्यवहार करना हमारा धर्म है, यह मुहम्मद साहब की आज्ञा है। जजिया लेकर काफिरो को छोड देना वाहियात है, यह सिफ अबूहनीफ की राय है, और सबने कत्ल का हुक्म दिया है।"

पाठक सोच सकते हैं कि यह मनोवृत्ति कितनी जबरदस्त थी, और इसने किस प्रकार हिन्दुओ को विचलित कर दिया होगा।

इसके बाद तुगलक वंश के छ बादशाहो ने लगभग सौ वर्ष राज्य किया। मुहम्मद तुगलक एक भयानक खूनी आदमी था। वह हजारो स्त्री-पुरुष बालको को एक जगह घिरवाकर उनमे शिकार के शौक से भीतर घुसता था और विविध प्रकार के खेलो से उन्हे कत्ल करता था। नाक कान काट लेना, आँखें निकलवा लेना, सिर मे लोहे की कील ठोकना, आग मे जलवाना, खाल खिचवाना, आरे से चिरवाना, हाथी से कुचलवाना, सिंह से फडवाना, साप से डसवाना और सूली पर चढवाना उसके दण्डो के प्रकार थे।

फिरोजशाह तुगलक ने जब नगरकोट को विजय किया तब गोमास के टुकडे तोबडा मे भरकर हिन्दुओ के गले मे लटकवा दिये और बाजारो मे फिराकर खाने की आज्ञा दी। जिसने इन्कार किया उसी का सिर काट लिया। उसने सुना कि एक ब्राह्मण मूर्तिपूजा करता है और हिन्दुओ को दर्शन के लिये बुलाता है। उसने ब्राह्मण और दर्शक सभी को जिन्दा फूँक देने का हुक्म दे दिया। इसने सैकडो मन्दिर विध्वस कर दिये। जब वह जम्बू गया और वहा का राजा भेंट लेकर मिलने आया तो फिरोजशाह ने उसके मुँह मे गोमास भरवा दिया।

एक पठान बादशाह ने एक हमले मे मेवाल के एक लाख मनुष्यो को मार डाला था। दूसरे पठान बादशाह ने एक हिन्दू राजा की जीती खाल

खिचवा ली थी। एक पठान बादशाह ने अपनी राजधानी दिल्ली से उठवाकर देवगिरि ले जाने का इरादा करके दिल्ली के सब निवासियो को वहाँ चल बसने का हुक्म दिया था, जिससे हजारो नरनारी मार्ग ही मे मर गये थे। एक पठान बादशाह ने कन्नौज के बालक, बुड्ढे, बच्चा सभी को कत्ल करवा दिया था। सैकडो नर मुण्ड उसने अपने नगर की प्राचीर पर कटवाकर लगा दिये थे। एक बादशाह ने दक्षिण मे सत्रह वर्ष मे पाँच लाख हिन्दू मरवा दिये थे। दक्षिण के एक मुसलमान राजा का यह स्वभाव था कि यदि सडक पर किसी की बारात जाती देखता तो दुलहिन को पकडवा मँगाता और उसका सतीत्व नष्ट करके वापस कर देता था। इन लोमहर्षण अत्याचारो से छिन्न भिन्न होकर सारे देश का रस सूख गया और समग्र देश में विषाद और शोक की हाय भर गई। जातीयता अतल पाताल में जा डूबी।

१२

मुगल और तैमूर लगडा

ईसा की तेरहवी शताब्दी के प्रारम्भ से 'चगेजखाँ' ने पूर्वीय एशिया से निकल कर उत्तरी चीन तथा तातार और अधिकाश एशिया को विजय कर लिया था। सन् १२२७ मे चगेज खाँ की मृत्यु हुई। दूसरे ६८ वष के अदर चगेज़ खाँ के उत्तराधिकारियो ने भारत को छोड कर लगभग शेष समस्त एशिया और योरोप के एक बडे भाग को मुगल साम्राज्य मे मिला लिया। योरोप पर यह हमला सन् १२३८ मे हुआ। योरोपियन इतिहास लेखको का कहना है कि इससे पूव ईसा की आठवी शताब्दी मे जब अरबो ने यूरोप पर आक्रमण किया था, उस समय से इस आक्रमण तक और कोई भयङ्कर आपत्ति यूरोप पर नही आई थी। कुछ ही वर्षो मे समस्त रूस, पोलैण्ड, बलकन, हगेरी, यहाँ तक कि बाल्टिक समुद्र और पश्चिम मे जमन तक आधे से अधिक योरोप मुगलो के आधीन हो गया। रूस पर दो सौ वष तक मुगलो का अधिकार रहा। ये मुगल बौद्ध धर्मानुयायी थे। स्वय चगेज़ खाँ बौद्ध था। और मगोलिया के प्राचीन मूर्ति-पूजक धम को भी मानता था। इन्ही बौद्ध मुगलो ने एशिया और योरोप को अधिकाश मे विजय किया। इन्होने मुस्लिम ईरान और मुस्लिम ईराक को फतह किया था। इसके बाद चगेज खाँ के पौत्र हलाकू ने पराजित ईरानियो और अरबो से इस्लाम मत ग्रहण किया।

तैमूर लगडा

इस नाम का चगताई खानदान और तातारी नस्ल का एक मुसलमान था जो कुछ गावो पर अधिकार रखता था और बहुत से रेवडो, ऊँटो और

घोडो का स्वामी था तथा अपने इलाके मे दबदबे वाला आदमी था। इस की एक अति सुन्दरी पुत्री थी जिसे बड़े-बड़े बादशाह मांगते थे। जिनमें तुर्किस्तान का बादशाह भी था। पर वह कहीं भी शादी करने को राजी न थी। इसे गुप-चुप गर्भ रह गया, यह जान कर पिता को अत्यन्त क्रोध हुआ, परन्तु कन्या ने कहा—पिता क्रोध न करो—यदि इस रहस्य को जानना है तो प्रातःकाल मेरे कमरे में आइये। पिता ने प्रातःकाल जाकर देखा तो सूर्य की एक किरण कमरे में खेलती पाई गई और देखते-देखते गायब हो गई, तब से पिता का निश्चय हो गया कि कन्या सूर्य से गर्भवती है और उस गर्भ से तैमूर का जन्म हुआ है। वह अपने को सूर्य का पुत्र कहता था और इसी कारण मुगल बादशाह और शहज़ादे अपने झण्डे पर सूर्य का चिह्न लगाते थे। उसके जन्म पर ज्योतिषियों ने कहा कि यह अनेक राजाओं का विजय करेगा।

बचपन से ही उसने सेना भर्ती की और आसपास के इलाकों पर कब्जा करना शुरू कर दिया। शीघ्र ही सुलतान मुहम्मद के सारे इलाके को कब्जे मे कर लिया और अन्त मे सुलतान को भी पकड़कर मार डाला। कुछ दिन बाद काबुल के बादशाह को कत्ल कर उस पर भी कब्जा कर लिया।

अब उसने भारत की ओर मुँह फेरा।

पहले उसने कुरआन शरीफ से शकुन लिया। उसको खोलकर नियत स्थान पर पढ़ा गया तो लिखा था "ऐ पैगम्बर काफिर और मूर्तिपूजकों के साथ युद्ध करके उन्हें कत्ल कर।" इसके बाद उसने दो हज़ार सवार अपने सामने बुलाये और कहा—आप जानते हैं कि हिन्दुस्तान के आदमी मूर्ति और सूर्य की पूजा करने वाले काफिर है। खुदा और रसूले खुदा का हुक्म है कि ऐसे काफिरो को कत्ल करें। मेरा इरादा हिन्दुस्तान पर जहाद की चढाई करने का है। इस पर सब लोग 'आमीन अल्ला' चिल्ला उठे। तब अवसर पा तैमूर ने सन् १३९८ ई० मे भारत की ओर बाग मोडी।

चौदहवीं शताब्दी पठानो के स्वच्छन्द अत्याचारो से भरपूर व्यतीत हुई थी, तभी मध्य एशिया का यह प्रसिद्ध लगड़ा तैमूर असंख्य तातारी भेडियो को लेकर भारत पर चढ आया। उसके साथ ९२ हजार सवार थे।

उस समय दिल्ली के तख्त पर मोहम्मद तुगलक था। तैमूर बिना रोक टोक सेना की सहायता से सिंघु महानद को उतर आया और तेजी से आगे बढने लगा। जिस प्रदेश और नगरी मे गुजरना उसी को लूटता हुआ, घरो को जलाता, निरपराध स्त्री-पुरुषो को कैद करता बढा चला आया। भटनेर मे उसने एक घण्टे मे दस हजार हिंदुओ को कत्ल किया। दिल्ली पहुँचते-पहुँचते एक लाख कैदी उसके साथ हो गये। उन्हे भोजन देना अब कठिन हो गया तब हुक्म दिया कि पन्द्रह वर्ष की अवस्था मे अधिक के स्त्री पुरुष कैदी कत्ल कर दिये जाय। लाशो का ढेर लग गया और खून की नदी बह गई। पठानो की कायर और आलसी सेना शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो गई। दिल्ली मे तैमूर ने प्रवेश किया। बादशाह गुजरात भाग गया। दिल्ली वालो ने अभय वचन लेकर द्वार खोल दिया और आत्मसमर्पण किया। भीतर घुसते ही पाच दिन तक तैमूर ने कत्ले-आम कराया। धाँय-धाँय, नगर भस्म होने लगा। लूट, हत्या, सतीत्व नाश और नरहत्या का अखण्ड राज्य पाँच दिन तक चला। तैमूरी सेना के एक एक आदमी ने सौ-सौ नागरिको को ध्वस किया और एक लाख आदमी कत्ल करके फिरोजशाही मस्जिद मे सोलहवी नमाज पढी। तैमूर ने अपने विजय उत्सव के ये दिन सुरा और सुन्दरी-सेवन मे व्यतीत किये। दिल्ली से उसने मेरठ पर धावा बोल दिया और पहुँचते ही हिन्दुओ का सिर काटना शुरू कर दिया। पचास हजार स्त्री पुरुष कत्ल कर दिये, और हजारो जवान स्त्री और बच्चे कैद कर लिये। प्रत्येक सिपाही के हिस्से मे बीस से लेकर सौ कैदी तक आये थे। यहाँ से वह हरद्वार गया—वहाँ गगा का पर्व था—बहुत भीड थी—उसने मेले मे कत्लेआम बोल दिया—गगा का जल खून से लाल हो गया। फरिश्ता लिखता है—

"मुगल सेना लूटने की लालसा से महा नगरी दिल्ली के भिन्न-भिन्न स्थानो पर पागल की भाति छूटी थी। लूट हुए द्रव्य को उठाना कठिन हो गया था। वे लोग जाति, आयु, धर्म किसी का भी खयाल न करके सबको कत्ल करते थे। मुर्दों से सडकें रुक गई थी। वह भयकर दृश्य वर्णन करना अशक्य है। अनुमानत एक लाख नर-नारी इन पाँच दिनो मे दिल्ली मे मारे गये थे। तैमूर अन्त मे महामारी, दुर्भिक्ष और अराजकता भारत मे छोडकर

अपरिमित धन और असख्य कैदी लेकर स्वदेश को लौट गया। उसके साथ ही पठानो की शक्ति भी धूल मे मिल गयी और शासन सैयदो के हाथ आया—परन्तु इनका शासन दिल्ली के आस-पास था। चारो ओर छोटे-छोटे मुस्लिम राज्य बन गये थे। इन्होने सतीस वर्ष राज्य किया। अब लोदी वश आया। परन्तु पठानो के जुल्म तो उसी भाति चल रहे थे। सिकन्दर लोदी मन्दिरो और मूर्तिया तोड़ने और हिन्दू तीर्थों और गगायात्रा को रोकने मे लगा हुआ था। एक ब्राह्मण को हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता का उपदेश देने के कारण पकड़वा मँगवाया गया और अपना उपदेश लौटाने को कहा गया, पर उसने जब स्वीकार न किया तो उसका सिर कटवा लिया गया।"

तुजक तैमूरी मे लिखा है कि प्रत्येक सिपाही के हिस्से मे पन्द्रह हिन्दू आये थे। जो कत्ल कर दिये गये। इस प्रकार दिल्ली मे तेरह लाख अस्सी हजार हिन्दू कत्ल किये गये।

इस कार्य को करके उसने जमीन मे गिरकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि जिस काम के लिये वह हिन्दुस्तान आया था वह काम पूरा हुआ।

इस विजय के बाद वह काबुल लौट गया। अब वह बेशुमार धन का स्वामी और महान् वैभव का अधिकारी था। इतिहासकार कहते हैं कि कोई आदमी इसकी वीरता और सम्पत्ति का अनुमान नही कर सकता था। यह आठ साल तक सेनाओ को पेशगी तनखाह देता रहा। और चौबीस साल दो मास दो दिन शासन करने के बाद मृत्यु को प्राप्त हुआ और काबुल मे दफना दिया गया।

तैमूर के बाद उसका पुत्र सुल्तान मीराशाह काबुल की गद्दी पर बैठा। इसकी सारी शक्तियाँ सुल्तान काशगर से युद्ध करने में खर्च होती रही। इसने उन्नीस वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद इसका पुत्र सुल्तान अबू सईद गद्दी पर बैठा। यह निष्ठुर और ऐयाश था—इससे नाराज होकर सरदारो ने इसे मार डालने का इरादा किया, पर यह भाग गया। तब उन्होंने इसके छोटे भाई को गद्दी पर बैठाया। उसने गद्दी पर बैठते ही अपने तमाम सरदारो का कत्ल करने का हुक्म दे दिया। इस पर सरदार बड़े घबराये और उसे गद्दी से उतार फिर बड़े भाई को गद्दी पर बैठाया। इसके बाद इसका बड़ा पुत्र सुल्तान

शेख उमर गद्दी पर बैठा—यह दयालु और न्यायी था, प्रजा इसे बहुत पसन्द करती थी। इसने लडाई-झगडे नही किये, अपनी प्रजा पालन मे ही सतुष्ट रहा। इसे कबूतर उडाने का बडा शौक था—एक बार वह कबूतर उडाते हुए महल की छत से पैर फिसल जाने से गिर गया और मर गया। इसने पाँच वर्ष दो मास सात दिन राज्य किया।

इस खानदान का पाँचवाँ बादशाह सुल्तान महमूद कट्टर मुसलमान था—इसने बारम्बार हिदुस्तान पर चढाई की। यह सदा अपने राज्य के बढाने की धुन मे रहता और दिन भर मे कई बार कुरान पढता। हिन्दुस्तान पर चढाइयाँ की और बहुत से मन्दिरो को ढाया और लूटा।

एक बार उसने एक पठान बादशाह पर चढाई की और विजय प्राप्त की। सायकाल को जब रणक्षेत्र मे हजारो लाशो को रोदता हुआ गव से फूला जा रहा था तब एक घायल ने तीर मारकर उसका काम तमाम कर दिया। इस प्रकार इस प्रसिद्ध योद्धा का अत हुआ।

इसके बाद बाबर ने हिदुस्तान पर आक्रमण किया। उस वक्त दिल्ली की गद्दी पर कमजोर पठान बादशाह इब्राहीम लोदी राज्य करता था।

इन्ही दिनो मे मेवाड मे महाराजा सग्रामसिंह जी चमके थे। इन्होन सम्मुख युद्ध मे अठारह बार दिल्लीश्वर को और मालवा के मुसलमान बादशाह को परास्त किया था। इस प्रकार सोलहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे ही पठानो की लीला समाप्त हुई थी और मुगलो की शक्ति सञ्चित होने के लिये समय की प्रतीक्षा करने लगी थी।

परन्तु इतना होने पर भी हिदू सगठित नही हो रहे थे। तैमूर के बाद से अकबर के समय तक एक सौ अट्ठावन वष का दीघ काल एक प्रकार से अराजक काल था। दिल्ली के तख्त मे न शक्ति थी, न दृढता थी। परस्पर के युद्ध जारी थे। पठानो की मुसलमानी सत्ता निमूल वृक्ष की भाति अधर मे काप रही थी। हिदू यदि उसे उस समय एक धक्का देने योग्य भी होते तो वह वह जाती।

कासिम ने जब सातवी शताब्दी मे आक्रमण किया था तब से और आठ सौ वष बीत जान पर सोलहवी शताब्दी मे बडा अन्तर था। कासिम से कडाई से मुठभेड की गई थी। किसी ने कासिम को आत्मसमपण नही

किया था। लाहौर का राजा जयपाल जब महमूद से पराजित हुआ तो उसने ग्लानि के मारे स्वेच्छा से अपने को अग्निकुण्ड मे डालकर यश स्थिर रखा था, वह हम पीछे लिख चुके हैं।

कासिम के आगमन काल मे प्राय सवत्र ही हिन्दू राज्य था। महमूद के आक्रमण तक भी इसमे कमी न हुई थी। महमूद ने चेष्टा करके पजाव का कुछ अश अधिकृत किया, पीछे मुहम्मद गौरी न अन्तिम आक्रमण के समय बारहवी शताब्दी के अन्त मे भी दिल्ली की हद को छोडकर सवत्र हिन्दू राज्य था। इसके बाद धीरे धीरे एक एक करके हिन्दू राज्य नष्ट होने लगे और मुसलमानी राज्य स्थापित होते गये। प्रथम विहार, फिर पश्चिमी बगाल, उसके बाद पूर्वी बगाल भी मुसलमानो के आधीन हो गये। मालवे और उज्जैन मे अभी तक हिन्दू राज्य थे—तेरहवी शताब्दी के अन्त तक गुजरात मे हिन्दू राज्य रहे। काश्मीर चौदहवी शताब्दी के आरम्भ मे मुसलमानो के हाथ पडा। अक्बर के समय तक उडीसा हिन्दू राज्य के आधीन था। बदाऊँनी ने लिखा है—उडीसा का राजा अन्य राजा की अपेक्षा सैन्य बल मे प्रसिद्ध था। अक्बर ने उससे मेल करने को दूत भेजे थे। सन् १५६० मे वह मुसलमानो के हाथ मे आया।

इसीके पाच वर्ष पीछे दक्षिण का हिन्दू राज्य विजयनगर मुसलमानो के हाथ लगा। उसके दक्षिणी भाग के हिन्दू राजाओ ने अठारहवी शताब्दी तक स्वाधीनता की रक्षा की।

सब से प्रथम अकबर ने दिल्ली मे बैठकर मध्य भारत के हिन्दू राज्यो को छीनना शुरू किया। सोलहवी शताब्दी के अन्तिम दिनो मे हिन्दू राजा हिमालय के उच्च प्रदेशो मे शक्तिशाली थे। उनके पास प्राय एक लाख पैदल और दस हजार सवार थे। राजपूताने ने यद्यपि सिर झुका लिया था, पर हिन्दू शक्ति वहा भी प्रभावशाली थी। बाबर ने लिखा है कि जिस समय मैंने दिल्ली अधिकृत की थी, उस समय दक्षिण मे विजयनगर और राजपूताना मे चित्तौड, ये दो प्रबल शक्तिया थी। अक्बर के समय तक जोधपुर के हिन्दू राजा के पास अस्सी हजार सवार थे। उस समय बुन्देलखण्ड का भी राजा महाशक्तिशाली था। आसाम, कूचविहार, टिपरा और अकरान प्रबल हिन्दू राजाओ के आधीन थे। और मुसलमानों

के भी अधिकृत प्रदेशो मे अधिक शक्तिशाली हिन्दू जमीदार और हिन्दू प्रजा थी।

वदाऊँनी ने लिखा है—

"हिदुओ के बराबर प्रबल प्रतापान्वित पठान और मुगलों में एक भी जाति विद्यमान न थी।" ब्लाकमैन साहेब भी कहते हैं कि—"भारत वर्ष एक दिन भी सम्पूर्ण रूप से मुसलमानो के आधीन न हुआ। भारत का सुविस्तृत क्षेत्रफल और असख्य हिन्दू अधिवासीगण आक्रमण करने वालो से कही अधिक थे।

परन्तु इतना होने पर भी हिन्दू सगठित न हो सके और इनकी राजनैतिक शक्ति छिन्न-भिन्न ही रही।

१३

मुगलो का साम्राज्य

बावर ही का आगमन भारत मे सच्चे मुगल साम्राज्य की नीव जमाने का कारण हुआ और मुगलो का आगमन भारत मे सच्ची मुस्लिम सत्ता की स्थापना का कारण हुआ। यद्यपि यह काल भी हिदूओ के विपरीत न था। इस समय देश मे कई हिन्दू और मुसलमान शासक थे—और देश भर मे अराजकता फैल रही थी, पर चित्तौर की गद्दी पर प्रवल पराक्रमी राणा सागा उपस्थित थे। यह हम पहले कह चुके है कि उसने अठारह बार दिल्ली के पठान बादशाहो को विजय किया था।

मुगलवश का सस्थापक बाबर एक उद्यमी साहसी योद्धा था। वह दयालु और उदार था। वह तैमूर की पीढी मे था—और इसलिए दिल्ली को अपनी सम्पत्ति समझता था। उसने सरहद और बुखारा प्राप्त करने की वडी चेष्टा की पर विफल रहा। तब उसने काबुल फतह किया और बाईस वर्ष वहा राज्य किया। इसके बाद उसने भारत पर धावा बोल दिया और अनायास ही दिल्ली व आगरा उसके हाथ आगये। गद्दी पर बैठते ही उसने अपने पुत्र हुमायूँ को आस पास के प्रान्त विजय करने को भेज दिया और शीघ्र ही बयाना, धौलपुर, ग्वालियर और जौनपुर उसके अधिकार मे आगये। उसकी इस सफलता मे उसके हिन्दू वजीर रेमीदास को भारी श्रेय है जो अत्यन्त बुद्धिमान, चतुर और दूरदर्शी आदमी था।

अन्त मे उसे राणा सागा के साथ युद्ध करना पडा। कनुवा के मैदान मे मुठभेड हुई और बावर को सागा से हार खानी पडी और सधि कर साँगा को कर देने का प्रण किया। परन्तु इसी बीच मे कुछ विश्वासघातियो के कारण सागा को हार खा कर भागना पडा और बावर विजयी होकर

लौट आया । इस विजय के उपलक्ष्य मे जो उत्सव मनाया गया था उस समय लाखो हिन्दू कत्ल किये गये थे और शाही तम्बू के सामने खून की नदी वह निकली थी । परन्तु बाबर को दिल्ली के तख्त पर बैठना नसीब न हुआ, वह शीघ्र ही मर गया । उसका पुत्र हुमायूँ भी जीवन भर युद्ध करता और इधर-उधर भागता फिरा ।

इस बीच मे एक बार पठान राजा शेरशाह और उसके एक हिन्दू सरदार हेमू ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया—हुमायूँ काबुल को भाग गया—पर यह चिरस्थाई न रहा । परस्पर की फूट और द्वेष ने सबका नाश किया । कुप्रबन्ध ने सुव्यवस्था न होने दी और सैनिक शासन ने सुप्रबन्ध न होने दिया । इस बादशाह ने बहुत सरायें बनवाईं, जिनमे एक विवाहित गुलाम रखा जाता था, जिसका यह काम था कि मुसाफिरो के लिए भोजन बनावे, पीने को ठण्डा पानी और नहाने को गर्म पानी का प्रबन्ध रखे । सराय मे प्रत्येक मुसाफिर के लिये एक एक चारपाई चादर सहित मिलती थी । इन सबका खर्च सरकारी खजाने से मिलता था । बहुत-सी सराय सेठो और साहूकारो ने बनवाई थी, जिनमे बाग, तालाब और आराम की बहुत सी चीजें थी ।

इसी बादशाह के राज्य मे तोल नियुक्त की गई । बाट बनाये गये । गज नियत किये गये और सिक्के ढाले गये । इससे पहले प्राय कपडा बालिश्तो से तथा जिन्स नजर से अन्दाज करके बिकती थी । यद्यपि यह प्रजाहित करने की चेष्टाएँ करता था पर एक बार इसने चित्तौर के राणा सग्रामसिंह पर धावा बोल दिया और भारी हार खा अन्तिम दिनो वह बगाल मे रहा और उधर ही मरा ।

उसके मरने पर देश भर मे क्रान्ति मच गई । उस समय एक फकीर शाहदोस्त रहते थे—उन्होंने अपने एक चेले को हुमायूँ के पास एक जूता और एक चाबुक लेकर भेजा । हुमायूँ ने फकीर का मतलब समझ लिया और उसने फिर से भारत पर चढाई की तैयारियाँ की । शाह फारिस से उसने सहायता माँगी । हुमायूँ ईरान, काबुल घूम फिर कर पन्द्रह हजार सेना इकट्ठी करके फिर भारत मे आया और दिल्ली व आगरे पर कब्जा कर लिया । परन्तु इसके छ मास बाद मर गया ।

उस समय अक्बर सिफ तेरह वप का था, और राज्य की परिस्थिति अनिश्चित थी। दिल्ली और आगरे को छोड कर उसके पास और कुछ न था। फिर सिकन्दरसूर और हेमू उसके विरुद्ध तैयार हो रहे थे। बाबर ने अपने मित्र बैरम खा के हाथ मे अक्बर को सौंपा। बैरमखां एक वीर सेनापति और उच्च वश का तुर्क था। अक्बर ने उसे प्रधान मन्त्री,और सरक्षक बनाया। बैरमखा ने पानीपत के मैदान मे सिकन्दर और हेमू की सयुक्त सेना को पराजित किया। हेमू कत्ल कर दिया गया और सिकन्दर को पजाब मे पराजय कर क्षमा दान दे बङ्गाल जाने दिया। दो वप बाद अक्बर ने स्वाधीन होकर राज्य सम्भाला और बैरमखां को मक्का भेज दिया, पर वह माग ही मे मार डाला गया।

उस समय अकबर की शक्ति डांवाडोल थी। पजाब, ग्वालियर, अजमेर, दिल्ली और आगरा तो उसके आधीन हो गये थे, पर बङ्गाल मे अफगानो की अभी शक्ति थी। उसकी फौज मे भी जो सिपाही थे अधिकाश तुर्की लुटेरे थे जो लूट मार के लालच मे ही सेना मे भरती हुए थे। और जो सेनापति थे—वे अपने-अपने अधिकारो को बढाने की चिन्ता मे ही रहते थे। जो सरदार जिस प्रान्त मे शासक बना कर भेजा गया वह वहाँ का सालम हाकिम बन बैठा। पर अक्बर बडा मुस्तैद सिपाही था। वह रात दिन कूच करके उनके सावधान होने से प्रथम ही उन्हे धर दबाता। इस प्रकार सात वप इसे अपने अनुयाइयो के दवाने मे लगे। अन्त मे काबुल के शासक ने पजाब पर धावा किया जो उसका भाई था, परन्तु वह हरा कर भगा दिया गया।

अब आन्तरिक विवादा को मिटा कर वह राजपूतो को दवान के लिये झपटा। उसकी नीति पूववर्ती मुसलमान शासको से भिन्न थी। वह सिफ यही चाहता था कि राजे अपने राज्य पर बने रह केवल उसकी आधीनता स्वीकार करलें।

आमेर का राजा उसका मित्र बन गया और अपनी पुत्री अकबर को दी। अक्बर ने उसके पुत्र को प्रधान सेनापति बना दिया। जोधपुर और अन्य राजपूत शक्तिया थोडा विरोध करके उसके आधीन हो गइ। ये सब लोग उसके सहायक और मित्र बन गये और अक्बर ने इन हिन्दू राजवशो

से अपने वश मे रिश्तेदारियाँ कर ली। केवल चित्तौर ही अकेला रह गया था, जिसने अन्त तक विरोध किया और अधीनता स्वीकार नही की।

अकबर ने स्वय चित्तौर को घेरा। राणा उदयसिंह पर्वतो मे चले गये और राठौर जयमल ने युद्ध किया। भयानक युद्ध के बाद चित्तौर का पतन हुआ। सहस्रो स्त्रिया जल गईं और बचे हुए योद्धा केसरिया बाना पहन कर जूझ मरे।

महाराणा प्रताप ने बाईस वर्ष अकबर से युद्ध किया और चित्तौर के अतिरिक्त सब प्रदेश छीन लिया और राजधानी उदयपुर बसाई।

बङ्गाल मे दाऊदखाँ अफगान की अमलदारी अब भी थी। समय पाकर अकबर ने आगमदल के युद्ध मे सदा के लिये उन्हे भी नाश कर दिया। राजा टोडरमल बङ्गाल के हाकिम बने। ये प्रथम श्रेणी के सेनापति और प्रबन्धक थे। मुसलमान बादशाह का यह पहला हिन्दू सरदार था। इसके बाद उसने काश्मीर, सिंधु और कंधार को फतह किया था—इन प्रान्तो को राजा बीरबल ने फतह किया और वे वही काम भी आये।

जिस समय दिल्ली मे बैठकर अकबर समस्त उत्तर भारत को अधिकृत कर रहा था—उस समय दक्षिण मे एक प्रबल हिंदू राज्य था जो विजयनगर का था। यहाँ के राजा के पास सात लाख सेना थी और वहाँ का वैभव अद्‌भुत था। उस प्रबल राज्य को पडौसी मुसलमान राज्यो ने मिलकर तालीकोट के मैदान मे विजय कर लिया, और बडी क्रूरता से हिंदुओ का विध्वस किया। फिर वे स्वय परस्पर लडने लगे। अवसर पाकर अकबर ने अपने पुत्र मुराद को सेना लेकर दक्षिण मे भेजा और शीघ्र ही अहमदनगर बरार और खानदेश अधिकृत कर लिये।

अकबर ने अपनी चतुराई और विलक्षण राजनीति से शक्तिशाली राजपूतो को मित्र बना लिया। उसने राजपूत सरदारो की आधीनता मे राजपूतो की सेनाएं भेजी और उन्हे परास्त किया। उसने गुजरात को विजय किया। फिर बुरहानपुर और दौलताबाद तक फतह करता चला गया और दक्षिण मे पूरा दबदबा पैदा कर लिया। इसके बाद उसने काश्मीर को फतह किया, जिसमे उसको कुछ भी कष्ट न उठाना पडा। उसके बाद उसने चित्ताड पर आक्रमण किया और बडी कठिन लडाई के बाद उसे विजय किया। इसके

बाद उसने बङ्गाल, ठठा या सिंध का इलाका फतह किया। इसी बीच मे बादशाह के पुत्र सलीम ने विद्रोह किया पर वह कैद कर लिया गया। इसके बाद उसने फतहपुर सीकरी और आगरा बसाया, क्योकि मथुरा साम्राज्य के विद्रोह का एक मजबूत अड्डा था। कहा जाता है उसने आगरे के महल और किला ताम्बे का बनाने का इरादा किया था परन्तु कारीगरो के सहमत न होने से लाल पत्थर के बनवाये। बादशाह को मस्त हाथियो की लडाई का बहुत शौक था, वह स्वयं बेधडक ऐसे हाथियो पर सवार होता जिसमे प्राणो का बडा भारी भय था। अकबर को छोटे छोटे विद्रोहो को दबाने मे बार-बार बहुत परिश्रम उठाना पडा। इन विद्रोहियो को पकड कर बहुधा इनके सर काट डाले जाते थे। 'मनूची' योरोपियन ग्रथकार लिखता है—

"ये सर चौबीस घण्टे शाही दालान मे रखे रहकर मार्ग मे दरख्तो या मीनारो मे लटका देने को भेज दिये जाते थे। मीनारें खास तौर पर इसी काम के लिये बनाई गई थी। हर एक मीनार मे सौ सर आ सकते थे। शहर के बाहर मैंने कई बार इनमे चोर देहातियो के सर देखे हैं जो अपनी बडी बडी मूछो, लाल रङ्ग और मुडे हुए सर से पहचाने जाते हैं। आगरे से देहली जाती बार रास्ते मे सडको पर वध किये डाकुओ के इतने सर लटके हुए थे कि बदबू के मारे सर फटा जाता था और मार्ग चलने वालो को नाक पर कपडा देकर रास्ता तै करना पडता था।"

अन्त मे उसने पठानो पर चढाई की। अस्सी हजार सेना प्रथम बार भेजी गई। पठान बडे लडाके और योद्धा होते हैं। पठानो ने ऐसा मोर्चा लिया कि एक भी सैनिक जीता बचकर न आया। पथ प्रदर्शक उन्हे खैबर की घाटी मे घुसाकर गलत मार्ग मे ले गये और नष्ट कर दिया। इस बादशाह ने तोप-खाने की उन्नति की और फिरङ्गी तोपची रक्खे। एक बार ऐसी घटना हुई कि उसने तोपो की चादमारी की ठानी। प्रधान तोपची जो ५००) वेतन पाता था बुलाया गया। जमना पर चादर तानी गई, पर तोपची ने जान बूझ कर गलत गोला चलाया। बादशाह ने क्रुद्ध होकर उसे सम्मुख बुलाया और कहा—

बादशाह—"क्या तुम ऐसे ही निशानेबाज हो? तुम्हारी तो बहुत तारीफ सुनी थी।"

तोपची—"खुदावन्द, वन्दा निशाने को देख नही सका, यदि शराव पी होती तो सम्भव था निशाना खाली न जाता।"

बादशाह ने शराब लाने का हुक्म दिया। तोपची ने सारी बोतल चढा ली और फिर मूँछे पूछता हुआ बोला, "हुजूर, चादर हटाली जाय और एक लकडी पर एक वर्तन रख दिया जाय।" यही किया गया। तोपची ने ऐसा गोला मारा कि लकडी और वर्तन के धुर्रे उड गये। बादशाह ने तबसे फिरङ्गियो को अपने पीने के लिये शराब खीचने की आज्ञा देदी। वह बहुधा कहा करता था—फिरङ्गी और शराब साथ ही साथ पैदा हुए है। और शराब के विना उनकी वही दशा होती है जो पानी के विना मछली की। अकबर के दर्बार मे सुनार, तोपची, डाक्टर आदि बहुत से फिरङ्गी नौकर थे। इन्होने अर्ज की कि हमे एक पादरी दिया जाय। तब अकबर ने गोआ से पादरी वुलवाया और आगरे मे गिरजा बनाने की आज्ञा देदी।

इस वादशाह ने यह कानून अपने वश के लिये बनाया कि शाही खानदान की लडकियो की शादिया न की जायें। यह काम इस प्रकार हुआ कि बादशाह ने अपनी पुत्री की शादी एक अमीर के साथ कर दी थी—कुछ दिन बाद वह विद्रोही हो गया और प्राण दण्ड दिया गया। उसी समय से यह कानून बनाया गया, जिसे औरङ्गजेब ने अपनी वेटी की शादी करके तोडा। शाहजादिया की शादी न होने से मुगल खानदान मे बहुत से भीतरी गुल खिलते रहे, यह बात सभी जानते हैं। बादशाह पठानो से सदा सतर्क रहता था और उसका हुक्म था कि किसी पठान को चार हजार रु० वार्षिक से अधिक वेतन न दिया जाय। न सूबे का अधिकारी बनाया जाय। बादशाह ने यह भी नियम बनाया था कि दर्बार मे सिवा शाहजादो और एलचियो के सब सर्दार खडे रहे। यह नियम मुगल दर्बार मे अन्त तक बना रहा। इसके बाद उसने 'दीने इलाही' नामक मजहब चलाया।

बादशाह को शिकार का बहुत शौक था। एक बार वह एक शेर के पीछे दौडते दौडते बीहड जङ्गल मे घुस गया। अन्त मे एक स्थान पर थक कर सुस्ताने लगा। उसने देखा कि एक अगरवानी रङ्ग का साप पेड से उनकी तरफ आ रहा है। बादशाह ने एक तीर से उसे बीध दिया। तीर सांप को मार कर बादशाह के पास आ गिरा। इतने ही मे एक हिरन चौकडी भरता

उधर से गुजरा। बादशाह ने वही तीर उठा कर हिरन पर छोड दिया। यद्यपि तीर ने हिरन को छुआ ही था कि हिरन मर गया। बादशाह यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया—इतने मे शिकारी लोग आ पहुँचे। बादशाह ने उन्हे हुक्म दिया कि हिरन का यहाँ घसीट लाओ। उन्होने हिरन को छुआ ही था कि उसके बन्द-बन्द अलग हो गये। यह देख शिकारी बोले--जहाँपनाह यहाँ से जल्दी भागिये वरना इस ज़हरीले साप की हवा से हम सब मर जायेंगे। हुजूर हवा के रुख के विरुद्ध बैठे हैं यही खैरियत हुई है।

बादशाह ने उस साप को एक बोतल मे बन्द करके रखने का हुक्म दिया और एक अफसर नियत किया कि जब बादशाह चाहे ज़हर तैयार करे। तब से एक महकमा इसी ज़हर का बन गया जो कई भाँति के विष तैयार रखते थे। यह विष तब काम मे लाये जाते थे जब बादशाह किसी सर्दार को गुप्त रीति से मारने के काम मे लाते। यह विष या तो वस्त्रा मे लगाकर उसको दर्बार मे पहना दिया जाता था या यदि वह दूर पर हो तो भेज दिया जाता था जिसे सम्मान प्रदशन करने के लिये उसे पहनना पडता था और उसके प्राण जाते थे। मुगल खानदान मे इस रीति से प्राण नाश करने का रिवाज़ पीछे तक जारी रहा।

इस महान् बादशाह की मृत्यु ऐसी ही एक दुघटना से हुई। बादशाह यदि अपने हाथ से किसी को पान देता था तो वह उसकी भारी प्रतिष्ठा समझी जाती थी। पर इस प्रतिष्ठा को पाकर कुछ ही मिनटो मे बहुत से सर्दार जीवन-लीला समाप्त कर चुके थे। बादशाह के पानदान मे तीन खाने थे, जिन मे एक मे पान, दूसरे मे सुगन्धित गोलियाँ रहती थी, जिन्हे बादशाह स्वय खाता था, तीसरे मे वैसी ही सुगन्धित गोलियाँ थी परन्तु वह हलाहल ज़हर होती थी। बादशाह प्रसन्न होने पर उसे पान देता—फिर एक खुशबूदार गोली देता—पर जिसे मारना होता ज़हर की गोली देता था। एक बार एक अमीर को ज़हर की गोली देते हुए भूल से वह स्वय ही गोली खा गया और इस प्रकार अजमेर में उसकी मृत्यु हुई। इसने उन्चास वष सात मास तीन दिन राज्य किया और अनेक मुल्क विजय किये तथा मुगल सन्तनत कायम की।

उसके अन्तिम दिन अशान्ति ही में कटे। उसके सभी पुत्र शराबी और लम्पट थे। शराब ही के कारण मुराद दायाल को मृत्यु हुई।

आमेर का मानसिंह चाहता था कि उत्तराधिकारी मे उसके भाजे खुशरू को तख्त पर बैठाया जाय। मगर अकबर सलीम को बादशाह बनाना चाहता था। उधर मानसिंह बडा प्रतापी था, उसकी शक्ति बहुत बढ गई थी, बादशाह ने उसे विष देना चाहा था, पर वह स्वय खा गया।

इस बादशाह ने आमेर से तीन फर्लाङ्ग के फासले पर एक विशाल मकबरा बनाया और एक भारी बाग लगाया जिसका नाम सिकन्दरा रखा। यह मकबरा बहुत ऊँचा और भारी गुम्मद वाला है। यह सगममर और बहुमूल्य जवाहरात से जडा हुआ था। तमाम छत पर गिलिट का काम बहुत कारीगरी से किया हुआ था, और भाँति-भाँति के रग से दीवारें रगी हुई थी। बाग बहुत बडा और सफीलो से घिरा था, जगह-जगह बैठने के स्थान बने थे। औरगजेब ने सब चित्रकारी पर सफेदी करा दी थी, क्यो कि वह चित्रकारी को इस्लाम धर्म के विपरीत समझता था।

वीनस निवासी 'मनूची' इस सम्बन्ध मे लिखते हैं—

"मेरी इच्छा थी कि औरगजेब की आज्ञा कार्यरूप मे परिणत होने से प्रथम ही एक बार इन चित्रो को देख लूँ। अतएव इस विचार से कई बार इस मकबरे को देखने के लिये बाग मे गया। बाग के बडे द्वार पर सलीब, कुवारी मरियम और स्नेर इगनेस के चित्र थे। मेरे मन मे उपरोक्त गुम्मद के अन्दर जाकर देखने की बडी इच्छा थी। चुनाचे एक अफसर ने जो मुझसे राजवैद्य होने के कारण कुछ काम लेना चाहता था, मुझे इस शत पर वहाँ ले जाना स्वीकार किया कि मैं बडे अदब और प्रतिष्ठा से इस प्रकार कबर को सलाम करूँ जिस तरह पर कि वह करे। गोया कि बादशाह जिन्दा हैं और उसे ही अभिनन्दन कर रहे हैं। उसने द्वार खोला और मैंने चुपचाप अदब से कबर को सलाम करके भीतर प्रवेश किया, जिसके पश्चात नगे पाँव चारो तरफ घूम फिरकर हर वस्तु को देखा। जैसा कि मैंने लिखा है, दीवार मे पवित्र सलीब खडी है, जिसके दायी ओर कुवारी मरियम और बाँई ओर इगनेस के चित्र थे। गुम्मद की छत पर फरिश्तो के, वलियो के और दूसरे कई एक प्रकार के चित्र थे एव कई एक ऊदसोज (वह पात्र

जिसमें ऊद रखकर जलाया जाता है) थे—जिनमें प्रति दिवस ऊद जलाया जाता था। इस कमरे मे चारो तरफ भिन्न भिन्न प्रकार के पत्थर लगे थे। मकबरे के बाहर बाग में बहुत से मुल्ला कुरान पढ रहे थे। गुंद गुम्मद के बाहर की तरफ सबसे ऊंची चोटी पर एक गुम्मद था और इसपर गिलट का बना हुआ दीनर था। मुझे एक सबसे बडा आश्चर्य इस बात पर था कि इन चित्रो के होने की तह मे क्या कारण था और बहुत सोचने के पश्चात् यही फल निकाल सका कि इसका मजहब नहीं था बल्कि चूँकि यह वस्तुएँ उन दिनों मे अद्भुत गिनी जाती थी इसीलिए ऐसा किया गया था। जिन दिनों मे औरंगजेब शिवाजी से लड रहा था तो सन् १६६१ ई० मे विद्रोही देहातियों ने मकबरे मे घुसकर तमाम मूल्यवान् पत्थर और गुलदरी काम चुरा लिया और बादशाह की हड्डियों को मकबरे मे से निकाल कर जला डाला।"

जहाँगीर

अकबर के पुत्र जहाँगीर ने बाईस वर्ष राज्य किया। वह शराबी, ऐयाश और निष्ठुर था, पर राज्य शासन उसने बडी ही चतुराई और तत्परता से किया। उसके काल मे राज्य मे कला कौशल, व्यवस्था और शान्ति रही। मलिका नूरजहाँ का भी इस शासन मे भारी हाथ रहा।

उसके गद्दी पर बैठने के बाद ही उसके पुत्र खुशरू ने विद्रोह किया, पर उसे कैद कर लिया गया और उसके साथी कत्ल करा दिये गये। इसने उदयपुर के राणा से सन्धि की और उसका पद दर्बार मे जहाँगीर से दूसरा नियत किया। इसी के शासनकाल मे इङ्गलैंड का दूत टामस रो भारत मे आया, और अपनी कम्पनी के लिये व्यापार का अधिकार प्राप्त किया। इस विदेशी यात्री ने अपने अनुभव से जो कुछ लिखा है उसका अर्थ यह है—

"राजसभा की विशालता और वैभव आश्चर्ययुक्त है, पर सरदार कर्जदार हैं। प्रबन्ध सदोष है, किसान दरिद्र हैं, कुशासन के चिह्न देश मे हैं, प्रजा का वैभव नष्ट हो रहा है। ठगो और डाकुओ के जुल्मों से गाँव और पब्लिक अरक्षित है। बहुत सी भूमि जङ्गल है, दक्षिण के नगर खण्डहर हो रहे हैं। जो प्रान्त राजधानी से दूर है उनकी हालत निकृष्ट है।"

वह एक अद्भुत ऐयाश और खुशमिजाज तबियत का आदमी था।

वह न रोजे रखता, न मुसलमानी धर्म की परवाह करता था, खूब शराब और अफीम का सेवन करता था। एक बार इसने पादरियो को बुलाकर पूछा—

"सुअर का मास स्वाद मे कैसा होता है ?"

इस पर पादरियो ने उसकी तारीफ की। बादशाह का जी ललचाया, और पादरियो के घर जाकर शराब पी और सुअर का मास खाया। इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला खाने लगा। 'मनूची' कहता है कि मौलवियो को चिढाने के लिये उसने सोने की सुअर की मूर्तिया बनवा कर महल मे रख छोडी थी और प्रात काल उन्हीं का मुँह देखकर उठता था और कहता था—'मैं मुसलमान का मुँह देखने के बजाय सुअर का मुँह देखना अधिक अच्छा समझता हूँ।' ये सोने के सुअर शाही महल मे शाहजहा के समय तक रहे, जिसने उन्हें लाहौर के किले मे शाही तख्त के सामने जमीन मे गढवा दिया था। रमजान के दिनो मे जहागीर प्रतिदिन दो दफा दरबार करता और सबके सामने खाता पीता तथा मुल्लाओ को तग करता था, और अपने हाथ से खाना देता जिसे दर्बारी कायदे के मुताबिक अदब से लेकर उन्हे खाना पडता था। बादशाह की इस प्रणाली की अवज्ञा करने से भय था कि वे आदमी शेरो से फडवा दिये जाय, जो दर्बार के नजदीक बंधे रहते थे।

बादशाह नश्तरो से भरे एक बतन को अपने पास रखता था। यदि कोई व्यक्ति उसके सामने वीरता की डींग हांकता तो नश्तर से उसकी नाक में छेद करा देता, इस पर यदि वह कष्ट प्रकट करता तो उसे मुक्को से पिटवाकर बाहर निकलवा देता और यदि सह जाता तो दूनी तनखा कर देता। एक दफा एक दर्बारी ने शेर मारा और उसकी खाल का कोट पहन कर दर्बार मे आया। यह देखकर बादशाह ने अपनी बन्दूक उठाई और अमीर को निशाना बनाया। वह बेचारा चिल्लाकर गिरा। गोली टागो मे लगी थी, बादशाह बोला—यदि मैं इस शेर को न मारता तो मेरा शेर जोश मे आ जाता। यदि कोई नवयुवक स्त्रियो या अत्यन्त प्रेमी होता तो बादशाह उसे पकडकर किसी नीच जाति की मैली और गन्दी स्त्री के साथ कई दिन तक बन्द रखता था।

जहागीर अपने हकीम से बहुत चिढता था। वह पक्का मुसलमान और धर्मात्मा आदमी था। एक बार वह उस समय दर्बार मे पहुँच गया जब बादशाह शराब पिये था। इसे देखते ही बादशाह ने कहा—मेरा तीर कमान लाओ, मैं इस खूसट को खतम करूँगा। नूरजहाँ पर्दे मे बैठी थी, उसने गुलामो को इशारा किया कि असली तीर न दिये जाय, बेत के तीर दिये जायँ। बस बादशाह ने तीर बरसाने शुरू किये। यह सब कुछ होने पर भी हकीम साहब झुक झुक कर सलाम किये जाते तथा आदाब बजाये जाते थे, अत मे मलका के इशारे पर गुलामो ने उसे सकेत किया कि 'अभागे लेट जा क्यो जान का दुश्मन बना है।' हकीम बेचारा लेट गया। बादशाह ने समझा कि मर गया। तब बोला, अच्छा हुआ—इसने भी बहुतो की जानें ली है।

बादशाह का नूरजहाँ को हथियाना इतिहास की प्रसिद्ध घटना है। कदाचित् ही कोई ऐसा प्रेम दीवाना पुरुष हो जो किसी एक स्त्री पर इस भाति मुग्ध हो जाय। नूरजहा का जीते दम तक बादशाह पर असाध्य अधिकार रहा। सारी सल्तनत नूरजहा के अधिकार मे थी, सब स्याह सफेद करने का उसे अधिकार था। नूरजहाँ ने एकबार उससे प्रतिज्ञा कराई कि वह शराब पीना कम कर देगा। और दिन भर मे नौ प्याला से ज्यादा न पीवेगा। कुछ दिन तो प्रतिज्ञा चली। एकबार ऐसा हुआ कि एक जलसा हुआ, बादशाह को मलका प्याले भर भर कर देती गई। जब नौ प्याले बादशाह पी चुका तो और मागा—पर मलका ने इकार कर दिया। बादशाह ने बहुत मिन्नत चापलूसी की पर बेकार। अन्त मे बादशाह को गुस्सा आगया और हाथा-पाई होने लगी। शीघ्र ही गुत्थम गुत्था हो गई। अब इन्हे अलग कौन करे?

बाहर भाँडो ने यह देख स्वयम् गुत्थमगुत्था होना, धमाचौकडी मचाना, चिल्लाना शुरू कर दिया। बाहर का शोर सुनकर बादशाह लडाई रोक बाहर निकले—और पूछा यह क्या शोर गुल है। भाडो ने दस्तबस्ता अर्ज की, हजूर की लडाई रोकने की यही तर्कीब समझ मे आई। इस पर मलका व बादशाह दोनो खूब हँसे और खूब इनाम दिया। परन्तु नूरजहा इस घटना से बहुत नाराज हुई और उसने बादशाह से बोलना भी छोड दिया। उसके तमाम तोहफे वापस भेज दिये, बादशाह, ने बहुत खुशामद की पर

उसने न माना। तब एक दिन बादशाह, जब मलका धूप मे टहल रही थी, इस भाँति उसके सामने जा खडा हुआ कि उसके सिर की परछाईं, मलका के पैरो पर पडी। तब बादशाह बोला—अब तो खुश हो जाओ, अब तो तुम्हारे पैरो पर मेरा सिर हाजिर है। इस पर नूरजहा प्रसन्न हो गई और इस सुलह की खुशी मे मलका ने आठ दिन भारी जल्सा किया जिसमे उसने बाग के सब तालाबो और फव्वारो को अर्क गुलाब से भरवा दिया और हुक्म दिया कि कोई इन्हे गन्दा न करे। दैवयोग से एक तालाब के पास ही मलका सो गई। प्रात काल उसने तालाब पर चिकनाई तैरती पाई। मलका ने समझा किसी ने गन्दगी डाल दी है, उसने बादी को हुक्म दिया, हाथ से देख यह चिकनाई कैसी है? जब उसने देखा तो अति उत्तम सुगन्ध पाई। और तब समझी कि यह गुलाब की चिकनाई ओस की भाँति जम गई है। उसने चिकनाई अपने हाथो मे लेकर कपडो मे मल ली, और दौडी हुई बादशाह के कमरे मे गई और बादशाह का आलिङ्गन किया। बादशाह सो रहे थे। उठे तो खुशबू से महक उठे। इस भाति गुलाब का इत्र ईजाद हुआ जो बाजार मे १००) तोला बिकने लगा। पीछे जब गुलाब की खेती बढी तो उसका भाव भी कम हो गया।

इस बादशाह ने मुलतान से इलाहाबाद तक शाही सडको पर पेड लगाने का हुक्म दिया। यह फासला पाँच सौ तेरह फरसंग का था। एक-एक फरसंग पर बुर्ज बनाये गये। प्रत्यक बुर्ज के निकट एक गाँव होता था जहाँ सब आवश्यक सामग्री मिल सके। इसके सिवा स्थान-स्थान पर सराय, बाग और कुएँ भी बनवाये थे।

इस बादशाह को एक सेनापति महाबत खा ने जो राजपूत से मुसलमान बना था और बडा वीर था, बादशाह की ऐयाशी से क्रुद्ध होकर एक बार अवसर पाकर बादशाह को कैद कर लिया और एक साल तक रखा—और उसे समझाया कि इस भाति शराब और औरत के फेर मे पडना बादशाहो के लिये उचित नही—फिर सम्मान पूर्वक छोड दिया।

जहाँगीर बडा दाता था। यदि किसी को कुछ देना तो उसकी तादाद एक लाख से कम न होती थी। इस बादशाह से इनाम पाने के लिये कुछ

चिकनी-चुपडी बाते काफी थीं, इसी पर खुश होकर वह जो चाहे दे डालता था।

वह बहुधा भेष बदल कर शहर मे घूमा करता था। एक बार का जिक्र है कि वह भेष बदल कर घूमता फिरता एक शराबखाने मे जा घुसा। वहाँ एक जुलाहा बठा मजे से ठर्रा जमा रहा था। जहागीर उसके पास बैठ गप्पें लडाने लगा। दोनो दोस्त हो गये और प्याले पर प्याले लगे उडाने। चलती बार बादशाह ने उसका नाम-पता पूछा। उसने कहा—सिकन्दर जुलाहे के नाम से मशहूर हूँ। तुम कल मेरे मकान पर आना, ऐसा खाना खिलाऊँ और शराब पिलाऊँ कि खुश हो जाओ। इस पर बादशाह ने आने का वादा किया, दोनो दोस्त हँसते हुए हाथ मिलाकर विदा हुए।

दूसरे दिन जब वह हथौडी से कीलें गाड कर ताना बुनने की तैयारी कर रहा था कि बादशाह की सवारी आती दिखाई दी। बादशाह हाथी पर था—सेवक गण दायें बायें चल रहे थे। जब उसके घर के निकट सवारी पहुँची, तब गुलाम ने आगे बढ कर पूछा—सिकन्दर जुलाहे का घर कौनसा है? बादशाह उसके घर दावत खाने आ रहे हैं। इस पर जुलाहे की आँखें खुली और रात के दोस्त का भेद पहचान गया। वह इतना घबराया कि जवाब ही न दे सका। इतने मे सवारी आ गई। जुलाहे ने बिना आँख उठाये पुकार कर कहा, 'जो शराबी की बात पर एतबार करे, इस हथौडी से पीटे जाने के लायक है।' बादशाह यह सुन कर ठहाका मार कर हँस दिया। और इतना रुपया उसे दिया कि वह अमीर बन गया।

एक बार बादशाह हाथी पर सवार हवाखोरी को जा रहा था। एक शराबी रास्ते मे मिला, बोला—ओ हाथी वाले हाथी बेचोगे?

बादशाह ने उसे पकड कर हवालात मे बन्द करने का हुक्म दिया। अगले रोज जब वह बादशाह के सामने पश किया गया तब बादशाह ने कहा—कहो क्या हाथी खरीदोगे?

शराबी ने कहा—हुजूर, हाथी खरीदने वाला निकल गया, मैं तो एक गरीब दलाल हूँ। इस जवाब से खुश होकर बादशाह ने उसे बहुत सा इनाम दिया।

बहुधा बादशाह हाथी पर सवार हो सैर-सपाटे को निकल जाता। सब सरजाम हाथियो ही पर होता था, किसी पर शराब की प्याली बोतल, किसी पर रोटिया पकती, किसी पर गोश्त पकता, किसी पर मेवो की डालिया होती, किसी पर गाने बजाने का सरजाम। बादशाह खाता-पीता मौज करता जाता था।

एक दिन बादशाह इसी प्रकार हाथी पर खाता-पीता जा रहा था कि चादनी चौक मे येवंद-फकीरो का एक गिरोह मिला। उन्होंने पुकार कर कहा, "अरे अकेले ही खाते हो—हमे न शरीक करोगे?"

यह सुन बादशाह हाथी से उतर पडा और फकीरो के बीच बैठ गया। सबने मिल कर खूब खाया पीया।

जहाँगीर की भाति इसके पुत्र खुरम ने भी विद्रोह किया, पर अन्त मे हारा। जहागीर ने भी लाहौर मे अपना मकबरा स्वय बनाया जो लाहौर मे शाहादरे के नाम से मशहूर है। इसमे बहुमूल्य पत्थर लगवाये थे जिन्हे औरङ्गजेब ने पीछे से उखडवा लिया था।

बादशाह अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे अगरेजो से क्रुद्ध होगये थे और उन्होंने सूरत बन्दर मे मक्का के कुछ यात्रियो के साथ अनुचित काम किया था। बादशाह ने प्रथम तो बहुत कुछ नर्मी मे काम लिया, पर जब काम न चला तो गिरफ्तारी का हुक्म दिया, जिसे उन्होंने मानने से इन्कार कर दिया। इस पर क्रुद्ध होकर बादशाह ने उनके कत्लेआम का हुक्म दे दिया, इस पर बहुत से अग्रेज काट डाले गये। यह सन् १६२२ ई० की घटना है। इस समय कधार फिर ईरानियो के हाथो मे चला गया। बगाल मे उसने पुर्तगालो को कोठियाँ बनाने की आज्ञा दे दी थी। वह ग्रीष्म ऋतु मे काश्मीर चला जाता और सर्दियो मे लाहौर लौट आता था। एक बार वह जब काश्मीर से लौट रहा था तो मार्ग ही मे दमे मे उसका शरीरान्त हो गया। उसने बाईस वर्ष सात मास ग्यारह दिन राज्य किया। उसकी आयु उस समय साठ वर्ष की थी।

जहाँगीर की मृत्यु के बाद उसका पोता सुलतान बुलाकी गद्दी पर बैठ गया। शहजादा खुरम उन दिनो बीजापुर राजा के यहाँ आश्रित था। बुलाकी ने राजा को कहला भेजा कि खुरम को नजरबन्द करलो—यदि

हुक्म की पाबन्दी मे ढील हुई तो बीजापुर की ईंट से ईंट बजा दूंगा। बीजापुर के राजा ने डर कर शाहजादे पर पहरे बठा दिये। शाहजादे के साथ उसके चारो पुत्र, तीनो लडकिया और बेगम थी। औरङ्गजेब अभी बच्चा था—पर उसे खुरम सफेद साप कहा करता था—किसी साधु ने उसे कहा था कि यह तुम्हारे राज्य को नष्ट करने वाला होगा। खुरम ने कई बार मार डालने का भी विचार किया, पर रोशनआरा ने सदैव उसकी रक्षा की। खुरम को यह उसके श्वसुर आसफखाँ की चिट्ठी मिली कि किसी तरह भाग कर बुरहानपुर के हाकिम महाबत खा से मिल जाओ और उसे ले यहा पहुँच जाओ तो राज तुम्हारा है। यह सुन युक्ति से शाहजादा यहाँ से भाग निकला। आगरे पहुँचने पर आसफ़खाँ बारह हजार सवार ले उससे जा मिला। खुरम ने धूम धाम से नगर मे प्रवेश किया। और अनायास ही तख्त पर अधिकार कर लिया और शाहजहाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शाहजहाँ

इस बादशाह के शासनकाल मे मुगल साम्राज्य का वैभव मध्याह्न के सूर्य की भाँति शिखर पर पहुँच चुका था। गद्दी पर बैठते ही उसने सुलतान ब्लाकी की तलाश करवाई। पर वह घर से भाग गया। उसके दो पुत्र लाहौर मे रहते थे। बादशाह ने हुक्म दिया, उन्ह मकान मे बन्द कर दर्वाजो मे दीवार चुन दी जाय। जब उनके पास यह हुक्म पहुँचा, वे जहांगीर के दीवानेखास के कमरे मे बैठे पढ रह थे। उन्ह उसी दालान मे तत्काल चुन दिया गया। इसके बाद उसने हुगली के पुर्तगीजो पर सेना भेजी। वे लोग प्रजा पर बडा अत्याचार कर रहे थे। जब बादशाह पिता से विद्रोही होकर भागा फिरता था, तब उन्होंने बादशाह की बेगम मुमताज महल की दो बाँदियां को पकड लिया था। पाँच हजार पुर्तगीज पकड कर लाये गये। पर उनके आगरे पहुँचते-पहुँचते मुमताज का स्वर्गवास हो गया। कुछ कैदी मारे गये। कुछ गुलाम के तौर पर बेच दिये गये। उनकी स्त्रियों को अमीरो मे बाँट दिया गया—कुछ को हरम मे रख लिया गया।

मन्त्री सादुल्लाखाँ के प्रबन्ध से आय बढ गई थी। देश मे शान्ति

का राज्य था। उसने साठ करोड़ की लागत का तख्ते ताऊस बनवाया जिस पर बैठना उसे नसीब न हुआ।

मुमताज की मृत्यु पर उसके लिये बादशाह ने ताजमहल बनवाया। जो मुगल काल का अनोखा रत्न है जिसे ससार के प्रमुख कारीगरो ने बनाया था। इसके बनाने मे कारीगरों ने आठ वर्ष लगाये और इस पर करोड़ो रुपया व्यय हुआ था। तैयार होने पर बादशाह ने प्रमुख कारीगरो के हाथ कटवा डाले थे जिससे कि वे ऐसी इमारत अन्यत्र न बना सकें। औरङ्गजेब के समय तक इसमे कोई जा नही सकता था—इस पर औरतो और ख्वाजा सराओ का पहरा रहता था। इसके बाद इस बादशाह ने वर्तमान दिल्ली की नीव डाली। इसमे बे-अन्दाज रुपया खर्च किया गया। इसकी नीव मे कुछ बंदियो के सिर काट कर बतौर कुर्बानी के डाल दिये गये। वह इन्द्र धनुष की शक्ल मे यमुना किनारे बनाया गया था। सफीलो के बारह दर्वाजे थे। चहार दीवारी आधी ईट और आधी पत्थर की बनवाई। हर सौ कदम पर एक बुर्ज बनाया गया था, पर तोपें नही चढाई गई थी, लाहौरी दर्वाजा और दिल्ली दर्वाजा बहुत प्रसिद्ध थे। बाजार खूब सजधज का था। उस दिल्ली का वर्णन 'मनूची' इस भाँति करता है—

देहली मे अमीरो के महल हैं और बहुत से घर हैं जिनकी छतें फूँस की हैं लेकिन अन्दर से बहुत सजे हुए सुन्दर और आरामदायक है। शहर के पूर्वी ओर जिधर यमुना बहती है उस तरफ दीवार नही है उत्तर की ओर एक कोने मे पूर्व सामना किला है जिसके सामने और दरिया के इस ओर हाथियो की लड़ाई के लिए मैदान छूटा हुआ था। बादशाह यह दृश्य देखने के लिये एक झरोके मे बैठ जाते हैं और औरतें भी झरोको मे होती हैं लेकिन पर्दो के पीछे। इसी जगह बैठ कर बादशाह राजाओ, अमीरो और नवाबो की परेड देखते थे, बादशाह के बैठने के स्थान के नीचे दिन रात एक मस्त हाथी नुमायश के तौर पर बँधा रहता है।

किले के चारो तरफ लाल पत्थर की बडी-बडी दीवारें हैं जिसमे एक बारह महराब का पुल है जिस पर से गुजर कर सलीमगढ के किले मे, जो

दरिया के बीच एक टापू पर है जा सकते हैं। उसे शाह सलीम पठान ने बनवाया था—और उसी के नाम से मशहूर है।

शाही किले के दो दरवाजे शहर को गये है, बीच म बहुत खुली जगह छोडी गई है। शाहजहाँ ने किले मे दो बडे भारी बाग लगवाये। एक तो उत्तर की तरफ, दूसरा दक्षिण की तरफ और चूकि दरिया यमुना का पानी इतना नही चढता कि इन बागा मे पानी मिल सके, इसलिये इससे बडा भारी खर्च करके सर हिन्द के पास एक गहरी नहर खुदवाई थी। जो देहली से सौ फरसग की दूरी पर है। यह नहर किले म बहती और पानी की हौजो को भरती है जिनमे शाहजहाँ के हुक्म से खूबसूरत मछलियाँ डाली गई है। जिनके सिरा पर सुनहरी कण्ठ थे और हर कण्ठे मे एक एक लाल और एक एक मोती जडा था। यह नहर जमना की तरफ के हिस्से के सिवाय तमाम किले मे इधर-उधर घूमी है। किले के सामने पश्चिम की ओर शाही मस्जिद है जिसमे बादशाह सप्ताह मे एक बार नमाज़ पढने जाते है।

देहली के बनियो का वणन मनूची ने वडे अद्भुत ढङ्ग से किया है, उसे हम यहा उद्धृत करते हैं—

बनिये हिन्दुओ की एक काम है। जो न मांस और न मछली खाते हैं। यह लोग प्राय अनाज, सब्जी, घी और दूध बहुत खाते हैं। यह गाय को घर मे रखते और उसकी पूजा के बहुत प्रेमी होते है। गउओ पर वह ऐसे मोहित होते है कि मृत्यु के समय भी गऊ की पूँछ को हाथ मे लेकर मरते हैं। उनका विचार है कि इससे पाप क्षमा हो जाते है। और गाय उन्हे आसमान पर उन अग्निमय स्थानो से छुए वगैर ले जाती है जिनके कि वह अपने पापमय जीवन के कारण योग्य होते है। इनकी इस श्रद्धा की बेवकूफी आश्चयजनक है कि यदि इत्तिफाक से गाय उस शख्स पर पेशाब कर दे जो मरते समय उसकी दुम को धोता होता है तो बजाय इसके कि उसे परे हटाये वह बहुत अच्छा समझते हैं और ख्याल करते है कि उसका शरीर पवित्र हो गया और बहुत खुशियाँ मनाते है।

पाठक समझ लें कि गाय को ऐसा समझना सिफ बनिये ही नही करते बल्कि तमाम के तमाम हिन्दू उसे पूजनीय समझते हैं। लेकिन इस

बारे में बहुत अन्धविश्वासी ह। यहां तक कि अगर किसी से कोई पाप हो जाय जैसे कि मूर्तियो का अपमान या धर्म च्युत होना इत्यादि, तो वह ब्राह्मणो के पास जाते हैं, जो उनके पुरोहित है। ब्राह्मण पापी को कुछ गाय का गोबर गाय के पेशाब मे घोलकर और कुछ मीठा-घी और दूध पिलाकर पीने को देते हैं जिससे वह पवित्र हो जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ प्रायश्चित भी कराया जाता है। मैंने उनमे से एक मनुष्य को देखा है, जो कई दिन तक प्रायश्चित के तौर पर अपने होठो पर ताला लटकाये फिरता था।

बनिये लोग बहुत डरपोक होते है और हथियार उठाने से बचते है। यह अपने घरो मे कोई शस्त्र तो एक तरफ चाकू या छुरी तक नही रखते जिससे किसी को कष्ट पहुँचने की सम्भावना हो। प्रश्नो का उत्तर देने मे यह बहुत कतराते है। जैसे कि उस किस्से से किस्से पढने वालो को पता लग गया होगा जिसका बयान मैं पीछे कर चुका हूँ। प्राय लोग कहते है कि यदि उनसे केवल यह पूछा जाय कि आज कौन दिन है तो इस पर भी वह बहुत झेंपते ह, और जवाब बडा भद्दा देते हैं। अगर कुछ पूछने वाला फिर जिद्द करे तो वह कह देते है कि हम नही जानते। अगर इस पर भी वह फिर पूछे तो कहेंगे क्या तुम्हे नही मालूम कि कल रविवार था। अगर वह फिर भी न माने तो जवाब देंगे तुम्हे पता नही कल शनीचर है। और अगर इसपर भी पूछने वाला पूछता चला जाय तो बहुत ठहर के और सोच के जवाब देंगे कि आज शुक्र (जुम्मा) है।

और यदि व्यापार के विषय मे कोई प्रश्न किया जाये तो उसका फौरन उत्तर देते है। और ऐसा अच्छा हिसाब जानने वाले होते हैं कि थोडे से थोडे समय मे बडे से बडे सवाल को हल कर देते है और हिन्दसे की भी भूल नही करते।

यह लोग किसी जीव को मारना बडा पाप समझते हैं और इस कारण यदि इनके शरीर पर कहीं कोई मच्छर, खटमल, जूँ, च्यूँटी या कोई दूसरा जीव चलता हुआ नजर आ जाय तो मारने के बजाय उसे आहिस्ता से उँगलियों के सिरो मे पकडकर दूर रक्षा के स्थान मे जा रखते हैं। उनके घरो मे खास-खास खाने बने होते हैं, जो इन जीवो से भरे होते हैं।

जिनकी खुराक का प्रबन्ध इस तरह से होता है कि यह लोग किसी जरूरत-मन्द कमबख्त को ढूँढकर और रुपया देकर सारी रात उस स्थान मे जो इन जीवो के लिये होता है ले जाकर चारपाई से बाँध देते हैं और इस तरह से वह जीव इनके खून पर गुजारा करते हैं। क्योंकि यह बनिये लोग मनुष्य से ज्यादा जीवो पर दयालु होते हैं। इसी तरह से यह शख्स अपने घरो की दीवारो पर सूराख रख छोडते हैं। जहाँ कई प्रकार के परन्दे घोसले बना लेते हैं। इन परन्दो को यह लोग नित्य प्रति खाने को देते हैं। गुजरात मे कम्बे नामी शहर मे इन लोगो ने बीमार परन्दो के लिये एक अस्पताल खोल रखा है। जहाँ पर एक जर्राह को इनकी चिकित्सा के लिये इनाम व इकराम मिल जाते हैं। यहाँ एक बार एक जख्मी शाही आ गया। जिसे दूसरे परन्दो के बीच रखा गया। इस कम्बख्त ने यहाँ इन्हें मारना और खाना शुरू कर दिया अतएव उन्होंने उसे यह कह कर निकाल दिया कि यह अवश्य फिरङ्गी नस्ल का होगा।

यह बनिये दरिया गङ्गा को बडा मानते है और कहते है कि इसमे स्नान करने से पाप दूर हो जाते हैं। और यदि मुरदे की राख इसमे डाली जावे तो भी उसके पापो का नाश हो जाता है। चुनांचे बड-बडे अमीरो की राख बडी शान और बाजे गाजे के साथ बडी बडी दूर से यहा लाकर डाली जाती है। बहुत से हिन्दू राजा इस दरिया का जल पीना अपना धर्म समझते हैं। और इसी अभिप्राय के लिये हर रोज ऊँट भेजते है चाहे दो तीन मास का रास्ता क्यो न हो। वह लोग एक मूर्खता भी करते हैं और वह यह कि जब कोई शख्स मरने के करीब हो तो उसे इस दरिया के किनारे ले जाते हैं और पानी पिला-पिला कर ही मार डालते हैं।

प्राय ऐसा होता है कि भक्तिभाव से ही कुछ मनुष्य इस दरिया के किनारे पर आ मरते हैं। और मने स्वय देखा है कि आने जाने वाले हिन्दू इनकी लाशो को दरिया में ढकेल देते है—मेरे विचार मे उन लोगो के विषय मे जिन्हें मनुष्य कहता मनुष्य नाम मे अपमान करता है, और जो मुगलिया सल्तनत मे बहुत बडी तादाद मे हैं।"

'मनूची' दिल्ली के फकीरो का भी मजेदार वर्णन लिखता है वह भी सुनिये—

"उनके दो गिरोह हैं। एक तो बेकैद अर्थात् स्वतन्त्र और दूसरे बेतरस अर्थात् नियम। बेकैद फकीर बहुत अक्खड होते हैं और बातचीत मे बहुत आजादी बरतते है। इच्छा हो तो गाली भी सुना बैठते हैं कि तौबा ही भली। ये बडी निर्भीकता से लोगो के घरो मे घुस जाते हैं, और अगर दरबान इन्हे रोकने की चेष्टा करे तो उसके स्वामी और बच्चो को ऐसी-ऐसी अनुचित गालियाँ सुनाते है कि कुछ न पूछिये। तिस पर भी कोई इनकी बातो पर नाराज नही होता और खुशामद व चापलूसी से इनके क्रोध को कम करते, क्षमा मागते हैं और भिक्षा देकर टालते हैं। यदि इन लोगो को दरवाजे पर न रोका जाय तो यह सीधे मालिक के पास जाकर बिना सलाम बन्दगी किये उन्ही फटे पुराने कपडो और मिट्टी मे भरे हुए हाथ पाँव के साथ उसके पास जा बैठते है और उसके मुँह से हुक्का छीनकर खुद पीने लग जाते है। घर का स्वामी इसे बडी भारी प्रतिष्ठा समझता है और उसके लिये उन्हे धन्यवाद देते हुए उन्हे रुपया इत्यादि देकर खुश करते है। किसी दिन यह लोग ऐसी जिद करते हैं कि जो मुँह से माँगे, लेकर छोडते है। यह लोग कभी परमेश्वर के नाम पर भिक्षा नही माँगते। क्योकि कहते हैं कि उसके नाम पर कुछ मागना उसका अपमान करना है। हर मनुष्य शक्ति के अनुसार इन्हे कुछ न कुछ अवश्य देते हैं क्योकि एक तो यह लोग ईश्वर के बडे विश्वासी हैं और दूसरे प्राकृतिक ही बडे दयालु होते हैं।

"बेतरस फकीर वह हैं जो अपने हाथो मे तेज छुरी लिये हुए भीख माँगते हैं। उनके भिक्षा माँगने का कायदा यह है कि वह दूकान के सामने खडे हो जाते हैं और जिस वस्तु की आवश्यकता होती है उसकी तरफ इशारा कर देते हैं। ये जो मागते है वह अगर दूकान वाला दे दे तब तो खैर वरना अपने हाथ की छुरी से हाथ पाव सर इत्यादि मे जख्म करके खून दूकान के भीतर फेंक देते है। ये लोग प्राय बनियो की दूकान पर जाकर मागते हैं क्योकि वह डरपोक होने के कारण खून का दृश्य नही देख सकते और शीघ्र ही उनकी इच्छानुसार वस्तु देकर छुटकारा पाते हैं।"

बादशाह अपने छोटे पुत्र औरङ्गजेब से बहुत सतर्क रहता और उससे घृणा करता था। चारो शाहजादो मे अल्पावस्था से ही द्वेषाग्नि भडकने लगी थी। अत उसने चारो को अलग-अलग करने की सोची। शुजा को बङ्गाल

का हाकिम नियत किया, औरङ्गजेब को मुलतान और मुराद को गुजरात का हाकिम बनाया। दारा को दरबार में रहने दिया। औरंगजेब पिता के मन को जानता था—पर ऊपर से मीठा बना रहता था—वह दारा को भी लल्लोचप्पो में ही रखता था और दारा भोला भाला व सीधा-सादा पुरुष था वह उसकी बातों में आ जाता था। उसे भरे पर रख कर औरङ्गजेब ने दक्षिण की अपनी बदली करा ली। इस काम में उसका गूढ़ उद्देश्य गोलकुण्डा और बीजापुर की सैनिक शक्तियों का अध्ययन करना था। वहाँ पहुँचते ही उसने नया शहर औरंगाबाद बसाया। बादशाह बहुधा दारा से कहा करता था कि तुम साँप को पाल रहे हो जो तुम्हें अन्त में कष्ट देगा।

यह बादशाह गाने बजाने का शौकीन, काम का प्रेमी और इमारतों के बनाने का बड़ा इच्छुक था। इसे स्त्रियों से भी विशेष रुचि थी, वह अपने महल ही की स्त्रियों पर सन्तुष्ट न था, बल्कि उमराओं की स्त्रियों पर भी हाथ साफ करता था। अन्त में यही दोष उसके पतन का कारण बना। उसने जफरखाँ की स्त्री के प्रेम में अन्धा होकर जफरखाँ को मारने का इरादा कर लिया। पर उसने प्रार्थना की कि उसकी जान बख्श दी जाय और उसे पटने का हाकिम बना कर भेज दिया जाय। यही किया भी गया। इसी प्रकार खलीलउद्दीन के साथ उसने किया। जिसने औरङ्गजेब के युद्ध में दारा से बदला लिया। एक बार किसी ने बादशाह से कहा कि खलीलउद्दीन की स्त्री के पैर में जूता है वह बीस लाख रु० मूल्य का है। बादशाह यह सुन कर क्रुद्ध हो गया और अगले दिन भर दरबार में खलीलउद्दीन से पूछा—

"हम सुनते हैं कि तुम्हारी औरत इस कदर कीमती जूते पहनती है, इससे मालूम होता है तुम्हारे पास बहुत धन है जिसका अधिक भाग चोरी से अवश्य एकत्र किया गया है इसलिये अपना हिसाब हमें समझा दो।"

खलीलुल्लाह चुप ही रहा। इस पर इसका एक दोस्त बोला—"जहाँपनाह हुक्म हो तो बन्दा इसके जवाब में अर्ज करे।"

बादशाह—"अच्छा कहो।'

दोस्त—"खुदावन्द, खलीलखाँ की सारी सम्पत्ति इन्हीं जूतों में सुर-

क्षित है। क्योंकि इसकी स्त्री नित्य इसके मुँह पर वे जूते मारती है। इस प्रकार सारी सम्पत्ति उसे दे देती है।"

वादशाह यह जवाब सुन मुस्कराये और खलीलउद्दीन लज्जित हो दरबार से चले आये।

वादशाह ने अपने साले नवाब शाइस्ताखाँ की स्त्री पर भी हाथ साफ करके छोडा। वह राजी न होती थी - इस पर वादशाह ने चालाकी से काम लिया। इसमे उसे इतना रंज हुआ कि उसने खाना कपडा त्याग दिया और जान दे दी। शाइस्ताखाँ ने उस समय तो चुप साध ली पीछे बदला लिया। जफरखाँ और खलीलखा की स्त्रियो का शाह मे सम्बन्ध इतना प्रसिद्ध हो गया था कि रास्ते मे जब वे गुजरती तो फकीर कहते—ऐ नाश्ते शहन्शाह! हमे भी याद रखना, या-लुकमे शाहजहाँ, हमे भी कुछ दिलवा।

वादशाह ने अपने ऐश के लिये चौबीस हाथ लम्बा और आठ हाथ चौडा एक कमरा वनवाया था। जिसमे चारो ओर बडे-बडे शीशे लगे थे। इसकी सजावट मे जो सोना खर्च हुआ था वह डेढ करोड की लागत का था। जवाहरात की कीमत का कहना क्या! इसकी छत में दो शीशो के बीच मे सोने की क्यारिया जडी थी जिनमें जवाहरात जडे थे। शीशो के गोशो मे मोतियो के गुच्छे लटकते थे। इस कमरे की दीवार संगेयशब की थी। इसी मे वह अमीरो की स्त्रियो के साथ विहार करता था।

यह वादशाह किले मे मीना बाजार भी लगाता था जो आठ दिन तक लगा रहता था। इन आठ दिनो मे कोई मर्द किले मे नही आ सकता था—फाटक वन्द रहता था। किले के भीतर खूब नाच-रङ्ग तमाशे होते थे। सब काम स्त्रियाँ करती थी। वहाँ नीच-ऊँच सब जाति की स्त्रियाँ जाती और वस्तुऐं बेचा करती थी। जाने वालियो का उद्देश्य वादशाह की दृष्टि मे पड जाना होता था—इसी कारण कोई प्रतिष्ठित स्त्री वहा नही जाती थी। फिर भी इन जाने वाली स्त्रियो की संख्या तीन हजार तक पहुँच जाती थी।

वादशाह नित्य बाजार मे जाता। वह एक सुन्दर छोटे तख्त पर सवार होता, जिसे कुछ तातारी बाँदियाँ उठाये होती थीं। आस-पास कई स्त्रियाँ हाथो मे स्वर्ण के आसा लिये और कई ख्वाजासरा रहते थे जो

चीजो की खरीद-फरोख्त मे बडे निपुण होते थे। बादशाह इस रूप सागरको बारी-बारी से निरखता जाता था—ज्योही कोई सूरत उसे पसन्द आती कि वह उधर रख करता और उससे कुछ खरीद लेता। मुँह-माँगा दाम देता, फिर एक इशारा करता और आगे चल देता था। साथ वाली कुटनियो का यह काम होता कि वह उस स्त्री को नियत समय पर उस कमरे मे पहुँचा दें और बादशाह के सामने पेश करें। वहाँ से बहुत सी स्त्रियाँ तो माला-माल हो-होकर लौटती, परन्तु बहुत-सी हरम मे ही दाखिल करली जाती थीं। नाचने वाली स्त्रियाँ जिन्ह कचनी कहते थे उनकी भी दरबार मे भारी कद्र थी। ऐसी पाँच सौ स्त्रिया दरबार से तनखा पाती थी।

इतना होने पर भी बादशाह न्याय और राजकाज के मामलो मे बडा चाक चौबन्द था। उसने एक अफसर रख छोडा था जो बहुत से साँप पिटारो मे बन्द रखता था—बादशाह ज्योही किसी अफसर से नाराज़ हुआ कि साँप से डसवा दिया। एक बार एक कोतवाल ने जिसका नाम मुहम्मद शहीद था रिश्वत लेकर मुकदमो का गलत फैसला किया था—बादशाह ने उसे साप से अपने सम्मुख कटवाने की आज्ञा दी। जब साँप ने उसे डस लिया तो बादशाह ने पूछा कि यह कितनी देर मे मर जायेगा? अफसर ने कहा—एक घण्ट मे।

बादशाह तब तक बैठा रहा जब तक उसने दम न तोड दिया। इस के बाद दो दिन तक उसके शरीर को वही पडे रहने की आज्ञा दी। वह मस्त हाथियो मे भी अपराधिया को कुचलवा दिया करता था। पर कोई ऐसे उस्ताद ओहदेदार थे कि बादशाह को पूरा चकमा दे देते थे। एक मुकदमे मे एक काजी साहब ने बीस हजार मुद्दई से और तीस हजार मुद्दा-यले से वसूल कर लिये। मुद्दायला झूठा था—अत काजी न बादशाह के सम्मुख तीस हजार रु० रख कर कहा—हुजूर, यह आदमी मुझे तीस हजार रु० रिश्वत देकर इन्साफ से हटाना चाहता है। बादशाह ने काजी की पीठ ठोकी और वह निहायत मजे से बीस हजार रु० पचा गया।

गुजरात का हाकिम नाम खाँ बडा दुष्ट था। वहाँ की प्रजा ने तग होकर कुछ नक्काला को इस काम के लिये ठीक किया कि वे बादशाह तक उसकी अरजी पहुँचावें। इनमे कुछ प्रतिष्ठित व्यापारी भी नक्काल बनकर

मिल गये । बादशाह ने जब सुना कि मशहूर नक्काल आये हैं तो तमाशा करने का हुक्म दिया । उन्होंने उन सब जुल्मो की नकल की जो उन पर हुए थे । यह देख बादशाह ने हुक्म दिया—क्या ऐसा भी जुल्म किसी बादशाह की प्रजा पर होना मुमकिन है ? तब सौदागरो ने कोशिश करके सब भेद खोल दिया । बादशाह ने जाच की और हाकिम को गिरफ्तार कर रोहतास-गढ के किले मे बंद करा दिया । जहाँ से बंदी का जीवित निकलना अस-म्भव था । उसकी सब सम्पत्ति भी जब्त कर ली ।

एक और न्याय का नमूना सुनिये । एक बदमाश ने एक स्त्री को खूब तङ्ग किया कि मुझसे शादी करले । पर वह राजी नही हुई । उसने एक बुढिया से साठ-गाँठ की जो उसे नहलाती थी और उसके शरीर के गुप्त चिह्न मालूम कर लिये । तब दावा कर दिया कि यह स्त्री मुझसे विवाह का वादा करके वादे मे हटती है । स्त्री ने इन्कार किया तो युवक ने कहा कि मैं इसके गुप्त अङ्गो के भेद को जानता हूँ । अब परीक्षा से युवक की बात सच हुई । तो काजी ने हुक्म दिया कि यह झूठी है इसे शादी करनी पडेगी । स्त्री ने मोहलत माँगी और समझ गई कि बुढिया ने पते दिये हैं । एक दिन वह दो मजबूत दासियो को सग लेकर उसके घर जा पहुँची और कहा—तू चोर है, मेरा कङ्गन उतार लाया है, ला । उसके इन्कार करने पर वह उसे जबर्दस्ती पकडकर हाकिम के पास ले आई और अपना आरोप कह सुनाया । पुरुष ने कहा—मैं इसे जानता भी नही । तब उसने कहा—उस दिन तुमने कहा था कि तुम मेरे साथ मुद्दत तक रहे हो, अब यह कहते हो कि जानता तक नही—यह क्या बात है ? फिर वह बादशाह के पास गई और सब कारगुजारी कह सुनाई । बादशाह ने सुनकर बुढिया और युवक को कमर तक जमीन मे गढवाकर तीरो से छिदवा दिया ।

बादशाह अपने भारी अमीरो को भी ऐसी भयानक सजायें दिया करता था । एक अमीर ने अपने नौकर की तनखा कई महीने तक नही दी, अवसर पाकर शिकार के समय उसने बादशाह से शिकायत कर दी । उसने उसी समय अमीर को बुलाकर पूछा । जब उसने अपराध स्वीकार कर लिया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि वह घोडे से उतर जाय और नौकर सवार हो अमीर उसके साथ-साथ पैदल चले । यही किया गया । अमीर

जब दौडते दौडते बेदम होकर गिर गया, तब बादशाह नें कहा—जब मैं तुम्हे ठीक समय पर तनखा देता हूँ तब तुम क्यो नही देते ?

एक अमीर जिसे दो हज़ारी मनसब प्राप्त था और पचास हजार रु० प्रतिमास की आय थी और उस पर बादशाह अत्यंत प्रसन्न था। यहाँ तक कि उसे एक पुर्तगीज औरत भी बाट दी गई थी। उसकी शाही पान देने की नौकरी थी। शाही पान के लिए बादशाह का हुक्म था कि किसी को न दिया जाये। परन्तु वह गुप्त रूप से उमरा को पान दे दिया करता था। एक दिन बादशाह ने उसे पान देते देख लिया। उस समय तो वह चुप रहा और जब वह शाम को बाग मे पहुँचा तो बुलाकर हुक्म दिया—इसे इतना पीटो कि इसकी जान निकल जाय क्योंकि यह शाही हुक्म की परवाह नहीं करता। इसके मरने पर इसकी सब सम्पत्ति उसकी स्त्री को दे दी गई। यद्यपि शाही कानून से उसका अधिकारी बादशाह होता था। एक बार एक हिन्दू मुंशी की दासी को एक मुसलमान सिपाही ने जबरदस्ती छीन लिया। मुंशी ने बादशाह से अर्ज की। सिपाही ने कहा—दासी मेरी है। दासी ने भी यही कहा। बादशाह ने हुक्म दिया कि दासी को महल मे बुलाया जाय। रात को जब बादशाह लिखने बैठे तो दासी से दवात मे पानी डालने को कहा। उसने ठीक अन्दाज से पानी डाला। जिससे बादशाह को निश्चय हो गया कि यह अवश्य मुंशी की दासी है और उसे मुंशी को दिला दिया, तथा सिपाही को दण्ड दिया। बादशाह चोरों को कडा दण्ड देता है। वह बहुधा उन्हें सरहदी पठानो के पास भिजवा देता और पठानों कुत्ता से बदलवा लेता था। यदि अफसर चोर को न पकड पाते तो चोरी का धन उन्हें गाँठ से देना पडता था।

कुछ लोग ऐसे जीवट वाले भी दुनिया मे होते हैं जो बडे-बडे बादशाहो को हेय समझते हैं। ऐसे ही एक धृष्ट सेनापति का मजेदार किस्सा यहाँ हम लिखते हैं।

पाठकों को मालूम है कि बादशाह के सामने कोई बैठ नही सकता था। एक सेनापति पर बादशाह बडे क्रुद्ध हुए और उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया। वह जान की परवाह न कर बादशाह के सामने पालथी मार कर बैठ गया और बोला—अब तो मैं हुजूर का नौकर न सेवक, अब कम से

बस इतना तो हुआ कि आराम से बैठ तो सकूँगा ! बादशाह उसकी दयनता पर दया होगया और फिर उसे बहाल कर दिया। यह हुक्म सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ और कोर्निश बजा लाया। एक बार शाह गोलकुण्डा का एक मन्त्री दरबार मे हाजिर था, बादशाह ने उससे मजाक किया और अपने पीछे खड़े खास बरदार की ओर इशारा करके पूँछा—क्या तुम्हारे आका का कद इस आदमी के बराबर है ? उसने कहा—जहाँपनाह मेरा आका कद मे हुजूर से चार अंगुल ऊँचा है ! बादशाह बहुत खुश हुआ, और दरबार में उसकी स्वामि-भक्ति की बहुत तारीफ की। तथा शाहे गोल-कुण्डा के जुम्मे तीन साल का कर जो नौ लाख रु० के लगभग था छोड दिया और उसे पान तथा एक घोडा इनाम दिया।

हम यह पीछे कह चुके हैं कि बादशाह अपने सरदारो और सेवको की सम्पत्ति के मालिक होते थे। एक सिपहसालार बडा धनवान् समझा जाता था। पर वह अपने पीछे बादशाह को कुछ सम्पत्ति छोड जाना नही चाहता था। जब वह मर गया तो राज-कर्मचारी उसकी सम्पत्ति पर कब्जा करने को गये, तो देखा नौ बडे-बडे भारी और मजबूत सन्दूकों मे सोने की मेखो के ताले लगे हैं और सब तालो पर सोल मोहर लगी हैं। उस पर एक-एक चिट भी चिपकी हुई है कि यह सब बादशाह को समर्पित है। जब वे भरे दरबार मे खोले गये तो किसी मे सीग और किसी मे पुराने जूते थे। बादशाह यह देख अत्यन्त लज्जित हुआ और कहा—मालूम होता है इसका बाप कसाई और माँ चमारिन थी, इन्हे ले जाकर उसके साथ दफन करदा।

इस प्रकार जो हक मिलता था। उसे बादशाह खजाने मे नही भेजता था। किन्तु इसके लिये दो पृथक खजाने थे। एक सोने के लिये व दूसरा चादी के लिये। दो बडे-बडे हौज थे। जिनकी लम्बाई सत्तर फुट और गहराई तीस फुट थी। बीच बीच मे सुन्दर सगमरमर के स्तून थे। इनमे सोने वाले को खजीरा और चाँदी वाले को भौरा कहा जाता था। उनको चोर दरवाजा से बन्द किया जाता था। इन हौजा पर बडे-बडे कमरे थे जो खर्च होने वाले खजाने के तौर पर काम मे लाये जाते थे। यह जबरदस्त खजाना

और नूरजहाँ का भारी खजाना औरङ्गजेब के जमाने में मालगुजारी की कमी से खर्च हो गये।

इन खजानों में से उच्च अधिकारी असाधारण चोरियाँ भी करते थे। एक बार बादशाह प्रातःकाल बागीचे में घूमने और अपने हाथों से फल तोड़ने लगे। फिदाईखाँ अमीर साथ था। बादशाह उसे फल देता जाता था। महल में जाकर जब बादशाह ने फल माँगे तो उसने कहा—हुजूर मेरे पास फल कहाँ हैं? वह इधर-उधर तलाश करने के बहाने करने लगा। बादशाह ने नाराज होकर कहा—यह तुम मेरे सामने झूँठ बोल रहे हो? इस पर फिदाईखाँ ने कहा—जहाँपनाह। इन मामूली फलों की चोरी भी हुजूर ने मुझे नहीं करने दी। परन्तु जहाँपनाह वजीर की चोरियों से किस प्रकार आँखें बन्द किये हैं, जो रोजाना तीस हजार रुपये जेब में डाल लेता है। बादशाह ने धीरे से कहा—हमको सब मालूम है। मगर मसलहतन चश्मपोशी करनी पड़ती है।

अमरसिंह राठौर की प्रसिद्ध घटना इसी बादशाह के भरे दरबार में हुई। अमरसिंह के मरने पर उनका दर्जा उनके छोटे भाई जसवन्तसिंह को दिया गया। बुन्देलखण्ड के राजा चम्पतराय ने भी इसी बादशाह के जमाने में साठ हजार सेना लेकर विद्रोह खड़ा कर दिया और कर देने से इन्कार कर दिया। कई किले भी लूटकर कब्जे में कर लिये। इस पर बादशाह ने स्वयं उस पर चढ़ाई की और मन्त्री सईदुल्लाखाँ की चतुराई से उस पर विजय पा सका। परन्तु काश्मीर पर चढ़ाई करने में असफल रहा।

शाहजहाँ ने अपने केवल चार पुत्र और पुत्रियाँ जीवित रहने दीं और जब कभी उनकी संख्या अधिक होने लगती थी, तो वह अपनी स्त्रियों के हमल गिरवा दिया करता था। यह बुरा काम औरङ्गजेब ने भी किया था और इसके उपरान्त उसके लड़कों ने भी। शाहजहाँ की सबसे बड़ी लड़की बड़ी बेगमसाहबा (जहाँआरा) जिसको वह सबसे अधिक प्रेम करता था, बड़ी सुन्दर, चतुर, दाना और दयावाली थी। सब लोग उसे प्रेम की निगाहों से देखते थे और वह बड़ी सज-धज से रहती थी। इस शहजादी को बन्दरगाह सूरत के सिवाय जो इसे पान के खर्च के लिये दे रखा था, और भी वार्षिक तीस लाख रुपये खर्च के लिए मिलते थे। इसके अतिरिक्त इसके

पास पिता के दिये हुये बहुमूल्य जवाहरात थे। यह दारा को चाहती थी और उसे सदा इस बात की चिन्ता रहती थी कि दरबार के सब उमरा उसके विपक्षियो से न मिल जायें।

इसने इस बात की बड़ी कोशिश की कि राजगद्दी का मालिक दारा हो। क्योकि वह विवाह की बडी इच्छा रखती थी और दारा ने प्रतिज्ञा की थी कि सिंहासन पर बैठते ही तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। इस बात को मन मे रखते हुए उसने अपनी सारी चतुराई बादशाह को प्रसन्न करने में लगा दी। वह सदा बड़े प्रेम और मन से शाहजहाँ की सेवा करती थी। और यही कारण था कि साधारण पुरुष कहते थे कि बादशाह का इसके साथ अनुचित सम्बन्ध है। दारा चाहता था और उसने बादशाह मे विनोद भी किया कि शहजादी का विवाह नजाबतखाँ नामी सिपहसालार से कर दिया जाये, जो बलख के शाही खानदान से सम्बन्ध रखता था। वह पुरुष वीर और सुन्दर था। परन्तु शाहजहाँ के साले शाईस्ताखाँ ने इस समाचार को जानकर शाहजहाँ को समझाया कि ऐसा न करना। क्योकि यदि उसकी शादी शहजादी से हो गई तो उसे अवश्य ही शहजादो की पदवी देनी होगी। इसके अतिरिक्त नजाबतखाँ शाहे बलख का सम्बन्धी है। जिसके साथ कभी न कभी आपको लडना पडेगा, और दूसरे अकबर का भी यह फरमान है कि लडकियो की शादी नही होनी चाहिए। यही कारण था कि यद्यपि शाहजहाँ की इच्छा थी तो भी उसने अपनी लडकी की शादी नही की।

यह शहजादी गाने बजाने और नाच-रग मे बडी चतुर थी। एक दिन नाच मे लीन हो रही थी कि नाचने वाली की एक बारीक पोशाक मे जो इतर मे बसी हुई थी आग लग गई। शहजादी इसे बहुत प्रेम करती थी इसलिये इसे बचाने दौडी और आग बुझाते-बुझाते छाती जला बैठी, इसलिये दरबार मे चर्चा हुई। परन्तु शहजादी को बडा दुःख हुआ जब उसे पता मिला कि वह स्त्री जिसके लिये इसने इतना कष्ट उठाया था बच नही सकी। इन खेल-तमाशो के अतिरिक्त शहजादी अगूरी शराब को बहुत चाहती थी जो फारिस, काश्मीर और काबुल से मँगाई जाती थी। परन्तु इसके पीने की अच्छी शराब वह थी, जो उसके अपने घर मे बनाई जाती थी। यह शराब बडी स्वादिष्ट होती थी और अगूर मे गुलाब और बहुत से

पदार्थ डालकर बनाई जाती थी। मैंने इसके हरम के कई मनुष्यों को स्वस्थ किया था। इसलिये बहुधा कृतज्ञता प्रकट करने के लिये उस शराब की बोतलें मेरे पास भेज दिया करती थी। इससे मुझे बहुत लाभ होता था। बेगम साहबा रात को उस समय शराब पिया करती थी, जब गाना बजाना इत्यादि होता था और कभी-कभी इस दशा को पहुँच जाती थी कि वह खड़ी भी नहीं रह सकती थी। इसलिये उठाकर बिस्तर पर ले जाना पड़ता था। जिस समय बेगम साहबा महल से दरबार को चलती थी तो बड़ी सज-धज कर और बहुत से सवार और प्यादे तथा ख्वाजासरा जलूस में लिये चलती थी। ख्वाजासरा जो इसके चारों ओर घेरा डाले होते थे—जिस किसी को सामने खेते, धकेल कर एक तरफ कर देते थे और किसी का कोई मान नहीं रखते। बल्कि चलते हुए हटो बचो के नारे लगाये जाते थे। इसी प्रकार सब शाहजादियाँ आती और इसीलिये जो इन्हे आते देखता शीघ्रता से रास्ता छोड़ कर एक ओर हो जाता था।

इनकी सवारी बड़ी धीरे-धीरे चलती है। आगे-आगे सक्के सड़कों पर पानी छिड़कते थे जिससे कि धूल न उड़े। शाहजादियाँ पालकी में सवार होती है, जिसके ऊपर एक बहुमूल्य वस्त्र या सुनहरी जाली होती है जिसमें बहुधा कीमती पत्थर और जवाहरात लगे रहते थे। पालकी के गिर्द ख्वाजासरा मोर के परो के गुच्छों से मक्खियां उड़ाते, जिनके दस्ते जवाहरात से जटित और ऊपर सुनहरी काम होता था। सेवक सुनहरी या रुपहली झण्डे लिये हुए हटो बचो पुकारते थे। पालकी के साथ नाना प्रकार की सुगन्ध रहती है।

यदि मार्ग में कोई अमीर अपने आदमियों सहित मिल जाय तो वह आदर भाव से सड़क से हट और घोड़े से उतर कर दोनों हाथ जोड़े हुए दो सौ कदम के फासले पर खड़ा हो जाता था। इस जगह वह उस समय तक खड़ा रहता जब तक कि शाहजादी समीप न आ जाय और फिर उसे बड़ा गहरा सलाम करता।

शाहजहाँ का सबसे बड़ा लड़का दारा था। यह रोबदार, सुन्दर, स्वच्छ दिल, अच्छे आचार, मधुर भाषी, दयालु और निस्सहायों पर दया करने वाला था। परन्तु अपनी धुन का इतना पक्का था कि सदा यह सम-

ज्ञता था कि मुझे किसी अन्य पुरुष की अनुमति लेने की आवश्यक्ता नही। वह सदा अनुमति देने वालो से घृणा करता था और यही कारण था कि उसके प्रिय मित्र भी आवश्यकीय घटनाओ मे इसको कुछ राय देने का साहस नही करते थे। उसके सकल्प से परिचित होना कठिन था। वह सदा यह विचार करता था कि उसका भाग्य बडा प्रबल है और प्रत्येक मनुष्य उसे प्रेम की दृष्टि से देखता है। वह राग-रग और नाच-कूद को बहुत चाहता था। दारा फिरङ्गी लोगो को बहुत चाहता था, इसके अतिरिक्त जसे कि हर मनुष्य जानता था, इसका कोई दीन नही था।

यही कारण था कि औरङ्गजेब ने इसे काफिर के नाम से पुकारा। दारा पादरियो के साथ धार्मिक विषयो पर बातचीत करने और मुसलमान मौलवियो से उनका मुकाबला कराने मे बडा आनन्द लेता था। इस दशा मे वह कमरे के चारो ओर एक परदा लगा लेता था। शाहजादा पादरियो को उन लोगो की दलीलो के सामने हारता हुआ देखकर खुश होता था।

दारा को ज्योतिषियो पर पूरा विश्वास था। और बहुत से ज्योतिषी उसके दरबार मे रहते थे। जिनमे सबसे बडा मेरा मित्र था। जिसका नाम भवानीदास था। क्योकि वह मेरे पास कई बार शराब पी जाया करता था। इस शाहजादे के दो लडके थे। बडा सुलेमान शिकोह और छोटा शहर शिकोह। ये दोनो बडी बेगम के पट मे हुए थे जो शाही खानदान से थी। जिस समय शाहजहा ने प्रत्येक शहजादे को पृथक-पृथक देश बाट दिये तो उसने दारा को काश्मीर लाहौर और काबुल का देश देकर अपने पास रख लिया। उसे इससे इतना प्रेम हो गया था कि इसे उसने बहुत से हकूक दे दिये जसे हाथियो का लडाना, अपने सामने सोने चादी के गुज रखवाना। जो केवल बादशाह के सामने ही रखे जाते हैं। अपने प्रेम को प्रकट करने के लिये उसने आज्ञा दी कि उसके राजसिंहासन के पास एक और छोटा सा सिंहासन रखा जाय, जिसपर शाहजादा बैठा करे। यद्यपि दारा पिता का मान करना हुआ उस पर कभी बैठना नही चाहता था।

इसके अतिरिक्त शाहजहाँ ने अपने सब उमरा को आज्ञा दी कि सबेरे का सलाम दारा को देकर फिर शाही हुजूर मे आये। कई अवसरा

पर उसने कहा कि मैं दारा को अपना युवराज बनाना चाहता हूँ और जहाँ तक भी होगा इसको अपना युवराज बनाऊँगा।

यह भी किम्वदन्ती थी कि दारा ने महाप्रसिद्ध और चतुर अमीर सईदउद्दौला के प्राण जहर से लिये थे क्योंकि वह औरङ्गजेब का पक्षपाती था। बादशाह और सारा दरबार इसमे प्रेम करता था। इसी प्रकार उसने एक हिन्दू राजा जयसिंह को भी अप्रसन्न कर लिया। यह पुरुष चालीस हजार सवार और एक लाख पचास हजार सेना रखने का अधिराज था। दारा ने एक बार कहा कि जयसिंह मिरासी प्रतीत होता है। राजा दिखावटी रूप में तो उस कटाक्ष को हजम कर गया, परन्तु जिस समय दारा को उसकी आवश्यकता पड़ी तो उसने अपना बदला लेकर ही छोड़ा।

उसने उमरा को भी अपने प्रतिकूल बना कर महावीर मीरजुमला से भी मखौल किया और जब बादशाह के दरबार में आया तो अपने चलते पुर्जों के द्वारा उसकी तलवार चुरा ली और समय-समय पर अपने मसखरों से उसकी चाल-ढाल पर नकल कराता रहा।

शाहजहाँ का तीसरा बेटा औरंगजेब अपने सब भाइयों से स्वभाव में निराला, सजीदा और कार्य गुप्त रूप से निकालने का आदी था। इसका चित्त कुछ रोगी सा था और सदा कुछ-न-कुछ करता रहता था। इसका उद्देश्य यह रहता था कि बात की तह को पहुँचकर पूरा न्याय करे। उसे यह बड़ी चाह थी कि दुनिया उसे बुद्धिमान, चतुर और न्यायरक्षक समझे। दान-पुण्य करने में भी वह अच्छा था, और केवल वही पारितोषिक और दान देता था जहाँ पूरी आवश्यकता हो।

परन्तु चिरकाल तक उसने यह प्रसिद्ध कर छोड़ा कि उसने दुनिया को त्यागकर राजसिंहासन के सब हक छोड़कर अपनी आयु खुदा की पूजा में व्यतीत करने का निश्चय कर लिया है।

फिर भी दक्षिण में होते हुये वह अपनी बहन रोशनआरा के द्वारा सिंहासन के लिये पूरा उद्योग करता रहा परन्तु जो कुछ होता था वह गुप्त रूप से और ऐसी चतुराई से होता था कि किसी को भेद न लगे। इसके अतिरिक्त उसे भय था कि उसे दक्षिण से बुला न लिया जाय। इसीलिये वह सदा इस उद्योग में था कि शाहजहाँ के दिल पर घर करे।

शाहजहाँ का सबसे छोटा और चौथा लडका मुरादबख्श था। यह पुरुष बहुत कम बुद्धि वाला था। खाने-पीने और आनन्द भोगने की रुचि थी, परन्तु बहादुर, पुरुषार्थी और सदा शस्त्र चलाने मे लगा रहता था। बाण-विद्या मे तो अपने फन का उस्ताद ही था। कई बार बडे-बडे भेडियो और रीछो को अपने हाथ से भाला मारने के शौक मे अपने प्राण सकट मे डाल चुका था। इसका कोई भाई शूरवीर इतना नही था। जब कभी लडाई का वणन आता तो उसे बडी प्रसन्नता होती और अपने हाथो और तलवार पर भरोसा रखता हुआ वह सदा दरबार की बातो को घृणा की दृष्टि से देखता था। और किसी को अपने सामने कुछ हस्ती नही समझता था।

अपने अन्तिम दिनो मे बादशाह अपने पुत्रो से भयभीत रहने लगा। वे सब बालिग और बाल-बच्चेदार थे। पर परस्पर उनमे प्रेम न था। दरबार मे भी प्रत्येक शाहजादे के पृथक्-पृथक् पक्षपातियो के दल थे। वह बहुधा उन्हे ग्वालियर के किले मे कैद करने की सोचा करता था, पर उसे हिम्मत न होती थी। उसे ऐसा खयाल हो गया था कि या तो वे राजधानी मे ही मारकाट मचावेंगे या पथक् राज्य कायम करेंगे। उसने तीनो को दूर दूर प्रदेशो का सूबेदार बनाकर भेज दिया था। केवल दारा उसके पास था। तीनो शाहजादे पृथक्-पृथक् अपने अपने प्रान्तो मे स्वतन्त्र बादशाह की भाति रहते थे। वे सारी आमदनी स्वय खच करते और सेना सग्रह करते थे।

औरगजेब के विषय मे लिखा जा चुका है कि यह बडा तत्पर, ढोगी, दूरदर्शी एव मुस्तैद आदमी था। इसे एक ऐसा मित्र मिल गया जिसने इसके भाग्य का सितारा चमका दिया। इस आदमी का नाम मीर जुमला था। यह मनुष्य ईरानी था, और अत्यन्त साधारण व्यक्ति था। वह एक सौदागर के साथ उसके घोडो पर नौकर होकर गोलकुण्डे आया था। इसके बाद उसने जूते बेचने का काम किया। पर शीघ्र ही उसका भाग्य चमका और वह भारी व्यापारी सिद्ध हो गया। उसने धन भी बहुत इकट्ठा कर लिया और समुद्र मे उसके अपने कई जहाज चलने लगे। अपनी बुद्धिमत्ता से दरबार मे भी प्रसिद्ध हो गया था। उसने शाह गोलकुण्डे को चीन से मँगवाकर कुछ सौगातें दी और कुछ अन्य बहुमूल्य भेंट देकर उन्हे प्रसन्न कर लिया और कर्नाटक का हाकिम बना दिया गया। जहाँ उसने वहाँ के मन्दिरो के

अटूट खजाने लूटकर बेतोल सम्पदा इकट्ठी की । इस प्रान्त में इसने 'लाल' की खान भी ढूँढ निकाली और यहाँ एक स्वतन्त्र सशक्त फौज संगठित करली जिसमे फिरङ्गी तोपची थे । इन सब बातो से शाह इस आदमी से चौकन्ना हो गया उसे ऐसा भी सन्देह हुआ कि शाही बेगमो से इस व्यक्ति का गुप्त सम्बन्ध है । एक बार उसने भरे दरबार में उसे दुर्वचन कहे । मीर जुमला शाह का रुख समझ गया, उसने औरंगजेब को एक खत—जो उस समय दक्षिण का सूबेदार था और औरंगाबाद में रहता था । उस खत का मजमून यह था—

साहेब आलम,

मैंने शाह गोलकुण्डा की वह बड़ी-बड़ी खिदमत की है कि जिन्हे तमाम ज़माना जानता है और जिनके लिये उन्हें मेरा बहुत मशकूर होना चाहिए । मगर इतने पर भी वह मेरी और मेरे खानदान की बर्बादी की फिक्र में हैं । इसलिये मैं आपकी पनाह लेना और आपके हुजूर में हाजिर होना चाहता हूँ । और इस दरख्वास्त कबूलियत के शुकराने में जिसकी आपकी जानिब से पूरी उम्मीद है एक मनसूबा अर्ज करता हूँ । जिसके ज़रिये आप आसानी से बादशाह को गिरफ्तार करके मुल्क पर कब्जा कर सकते हैं । आप मेरे वाद की सच्चाई पर एतबार और भरोसा फर्माए । इन्शाअल्ला यह युक्ति न तो कुछ मुश्किल ही होगी और न कुछ खतरनाक ही । यानी आप पाँच हज़ार चुने हुये सवारों के साथ बहुत जल्द बिना तकल्लुफ कूच करते हुए गोलकुण्डा की तरफ चले आवें जिसमें सिर्फ सोलह दिन लगेंगे । और यह मशहूर कर दें कि शाहजहाँ का सफीर शाहे गोलकुण्डा से जरूरी बातें तय करने आया है । यह फौज उसकी अरदली में है । वह शख्स जिसकी मार्फत हमेशा उमूर की इत्तला बादशाह को होती है मेरा करीबी रिश्तेदार है और उस पर मुझे कामिल भरोसा है । इसलिए मैं वादा करता हूँ कि एक ऐसा हुक्म जारी हो जायगा कि जिसकी बदौलत आप बिना सन्देह के भागकर-नगर के दरवाजे तक पहुँच जायगे । परन्तु जब बादशाह मामूल के मुआफिक फर्मान के इस्तकबाल के लिये जो सफीर के पास हुआ करता है आये, तब उसे बाआसानी गिरफ्तार करके जो मुनासिब समझें उसके लिए तजवीज कर

सकते हैं। इस मुहिम का कुल खर्चा मैं आपको दूँगा और इसके इखतताम तक पचास हज़ार रूपये रोज देता रहूँगा।

औरङ्गजेब इस स्वण सुयोग को कब छोडता। वह तत्काल चल पडा पर ठीक वक्त पर बादशाह पर भेद खुल गया और वह भाग कर गोलकुण्डा के किले मे चला गया। इस किले को औरङ्गजेब ने घेर लिया। दो महीने बीत गये। औरङ्गजेब के पास तोपे न थी वह लाचार था पर उधर किले मे पानी और रसद चुक गई। पर इसी बीच मे शाहजहाँ ने उसे तत्काल आने का हुक्म भेज दिया जिससे वह पछताकर लौट गया। पर इतनी सन्धि करता गया—

१—चढाई का कुल खच शाह से वसूल किया जाय।

२—मीर जुमला मय कुटुम्ब और सम्पत्ति के राज्य से बाहर चला जाने दिया जाय।

३—बडी शहजादी की अपने वडे पुत्र महमूद से शादी कर दी जाय और उसका पुत्र ही गोलकुण्डा का उत्तराधिकारी समझा जाय। दहेज मे रामगढ का किला मय सामान दिया जाय।

४—सिक्को पर शाहजहाँ के शस्त्र की छाप रहे।

औरगजेब के इस काम मे दारा और बेगम साहेब (शाहजहाँ की बडी पुत्री) ने विघ्न डाला था। औरगजेब मीरजुमला के साथ वहा से चला। रास्ते में उन्होने बीजापुर मे बीदर का किला फतह कर लिया और दौलताबाद मे रहने लगे। वहाँ औरगजेब ने उसे चिकनी-चुपडी बातो से अपना सहायक वना लिया। मीर ने भी प्रतिज्ञा की कि मैं आपके लिये तन मन धन न्यौछावर कर दूँगा। औरगजेब भी समझ गया कि यही पुरुष तख्ते हिंदुस्तान पर वैठाने की ताक्त रखता है।

शाहजहाँ तक भी उसकी वीरता और योग्यता की सूचनाएँ पहुँची और उसने उसे बुलाने के वार-वार निमन्त्रण भेजने प्रारम्भ किये। अन्त मे वह दिल्ली आया। शाही हुक्म से माग मे उसका सरदारो ने भारी सत्कार किया। जब वह आगरे पहुँचा तो वडे-वडे सेनापति उसके स्वागत को आये और तमाम बाजार सजाये गये जिस प्रकार बादशाह के लिये सजाये

जाते हैं। उसने बादशाह को भारी कीमत की भेंट दी, जिनमें जगत प्रसिद्ध कोहनूर हीरा भी था और बादशाह को गोलकुण्डा के शाह के विरुद्ध खूब उभारा। वह राजी हो गया और एक भारी सेना मीर जुमला की आधीनता में भेजी, जिसे लेकर उसने बीजापुर का कल्याण का किला जा घेरा। इस काम में दारा और शाहजहाँ ने दो चालाकी के काम किये—एक तो यह कि मीर जुमला के स्त्री बच्चों को बतौर जमानत अपने पास रख लिया, दूसरे उससे वादा करा लिया कि उस काम में औरंगजेब का कोई सरोकार न होगा।

इस वक्त बादशाह सत्तर वर्ष से ऊपर आयु को पहुँच चुका था और उसे एक भयङ्कर बीमारी लग गई थी। उसने इस अवस्था में अपनी शक्ति का विचार न कर बहुत सी कामोत्तेजक दवाइयाँ खाई थी। इसका परिणाम यह हुआ कि तीन दिन तक बादशाह का पेशाब बन्द रहा। इस खबर ने देश भर में हलचल मचा दी। बादशाह ने यह देख किले के सब दरवाजे बन्द कराकर केवल दो दरवाजे खुले रखने की आज्ञा दी। एक पर जसवन्तसिंह राठौर को और दूसरे पर रामसिंह को तीस-तीस हजार सैनिकों सहित नियत कर दिया और हुक्म दिया कि सिवा दारा के किसी को भीतर न आने दें। उसे भी सिर्फ दस आदमी लेकर भीतर आने की आज्ञा थी मगर वह रात भर किले में नहीं रह सकता था। सिर्फ बादशाह की बड़ी बेटी बेगम साहेब ने जिद की और कुरान उठाकर कसम खाई कि दगा न करेगी।

यह सब अवसर देख दारा ने दिल्ली, आगरा और लाहौर में तत्काल सेना संग्रह प्रारम्भ कर दिया। बाजार बन्द हो गया। कहीं-कहीं बादशाह के मरने की भी खबर पहुँच गई। शाहशुजा को बंगाल में खबर लगते ही वह सेना लेकर कूच दर कूच करता दिल्ली की ओर बढ़ा। उसके साथ चालीस हजार सवार और अनगिनत प्यादे थे। इसके सिवा उसने पुर्तगीजों की आधीनता में एक बड़ा भी तैयार करा लिया था। वह यह प्रचार करता आ रहा था कि दारा ने बादशाह को विष दिया है और मैं उसे दण्ड देने जाता हूँ। बादशाह ने उसे लौट जाने का हुक्म भेजा, पर उसने न माना। तब बादशाह ने हारकर उसी रोग की हालत में दिल्ली से आगरे तक की यात्रा की और दारा के बेटे सुलेमान शिकोह को राजा जयसिंह और

सेनापति दिलेरखाँ के साथ शुजा पर एक भारी सेना लेकर भेजा, जिन्होंने उसे बगाल की ओर खदेड दिया।

अब बादशाह ने देहली कूच की तैयारी की। उसका इरादा देहली राजधानी ले आने का था। कई दिन तक सडकें लश्करो से भरी चलती रही पर ज्योंही बादशाह चलने को हुआ कि खबर मिली कि औरगजेब ने विद्रोह किया है। यह सुनकर बादशाह ने यात्रा रोक दी और औरगजेब को लौट जाने का हुक्म भेजा। मगर उसने इसकी परवाह न की। रास्ते मे उसे पता लगा कि मुरादबख्श भी सेना सजा चुका है, अत उसने उसे पत्र लिखा। उसका आशय यह था—

बहादुर भाई! मैंने सुना है कि दारा ने जहर देकर हमारे पिता बुजुगवार को मरवा डाला है। मैं इस पत्र द्वारा आप पर प्रकट करना चाहता हूँ कि आप के सिवा कोई भी शाहजादा गद्दी का हकदार नही। दारा काफिर है, शुजा अली का पेरोकार है, मेरी सल्तनत कुरान है और इरादा कर चुका हूँ कि जीवन के शेप दिन मक्के मे व्यतीत करूँगा। मैंने इरादा किया है कि जी जान से कोशिश करके आपको तख्त पर बैठा दूँगा। मेरी सारी चतुराई, धन, फौज आपकी है। मेरी यही अर्ज है कि जब आप बादशाह हो जायँ मेरे बाल बच्चो पर महरबानी की नजर रखें। एक लाख रुपये मैं आपको बतौर नजराने के भेज रहा हूँ। आप फौरन सूरत के किले पर कब्जा कर लीजिये, जहा बहुत सी दौलत सुरक्षित है।

आपका प्यारा भाई—औरगजेब।

पत्र पाकर मुराद फूलकर कुप्पा होगया। उसने फौरन फौज भर्ती करना शुरू कर दिया और औरगजेब को शीघ्र लश्कर समेत आ मिलने को लिख भेजा। उसने महाजनो को भी यह पत्र दिखा कर बहुत सा रुपया कर्ज ले लिया।

औरगजेब ने अब अपने पुत्र सुलतान मुहम्मद को मीर जुमला को लेने भेजा जो कल्याण के किले का मुहासरा किये पडा था और लिखा कि आपकी सम्मति की बडी आवश्यकता है। क्योंकि कई कठिन काम आ पडे हैं। आप मुझे तुरन्त औरङ्गाबाद मे आकर मिलें। उसने जवाब में लिखा—

कल्याण का मुहासरा छोड और फौज से अलहदा होकर मैं

औरगाबाद नही आ सकता। इसके अलावा आप विश्वास करें कि मैंने ठीक खबर पाई है कि बादशाह सलामत अभी जिन्दा हैं। फिर यह भी बात है कि जब तक मेरे बाल बच्चे दारा के क़ब्जे मे है, मैं आपके साथ शरीक नही हो सकता।

यह जवाब पाकर औरगजेब ने अपने दूसरे पुत्र मुअज्जम को उसके निकट भेजा। जो समझा-बुझाकर उसे ले आया। वहा दोनो दोस्तो ने सलाह की और फर्जी तौर से मीर जुमला कैद होकर दौलतावाद के किले मे रख दिया गया। उसने औरगजेब को रुपया भी बहुत दिया जिससे उसने फौज भर्ती कर डाली। उसने दक्खिन के सब किलेदारो और फौज-दारो को अपना साथ देने को तैयार कर लिया। नबदा पर एक किला था जहा होकर दक्खिन का रास्ता था। वहा के किलेदार मिर्जा अबदुल्ला को उसने कहला दिया कि यदि कोई कासिद इधर से गुजरे और उसके पास ऐसी चिट्ठियाँ हो जिनमे बादशाह के जिन्दा होने की बात हो तो वे चिट्ठियाँ जला दी जायें और उस आदमी का सिर काट लिया जाय। इस प्रकार उसने दक्खिन मे असली खबर पहुँचने न दी और सब सरदार अपनी-अपनी फौज लेकर उसके साथ हो लिये।

मुराद को वह बराबर चिकनी-चुपडी चिट्ठिया लिख रहा था। माडो के जगला मे दोना सेनाएँ मिली। औरगजेब हाथ बाँधे मुराद के सामने गया। उसे बादशाह कहा और बडे-बडे सब्ज़ बाग दिखाये। मुराद ने भी बडे-बडे वादे किये। अब दोनो लश्कर साथ साथ चले।

यह भयानक समाचार आगरे पहुँचा तो दरबार मे हलचल मच गई। शाहजहाँ ने दोना शाहजादो को वापस जाने को लिख भेजा। उत्तर मे औरगजेब ने लिखा—

'मुझे खुदावन्द बाला की सलामती की खबर पर यकीन नही आता। और बिलफर्ज अगर वे जिन्दा और सलामत हैं तो कदमबोसी हासिल करने और इर्शाद अहकाम से सरफराज होने की मुझे बडी तमन्ना है।'

लाचार बादशाह ने अपने सरदारो से सम्मति ली और कासिमखाँ तथा जसवन्तसिंह को एक टुकडी सेना देकर उन्हे रोकने को भेजा गया।

उन्हें आज्ञा थी जहाँ तक बने औरंगजेब को वापस लौटा दें और उज्जैन मे क्षिप्रा नदी पार न करने दें।

गर्मी की ऋतु थी और नदी का जल बहुत कुछ सूख गया था। राजा और कासिम नदी के इस पार थे कि टीले पर औरङ्गजेब की फौज दिखाई दी। यदि राजा साहेब उसी वक्त हमला बोल देते तो औरंगजेब की थकी हुई सेना के पाव उखड जाते, परन्तु उन्हे तो आज्ञा ही यह थी कि नदी के इस पार रहे और औरङ्गजेब को इस पार आने से रोकें। औरङ्गजेब तीन दिन तक नदी के उस पार पडा रहा। तीसरे दिन उसने एक ऊँचे टीले पर तोपखाना जमाया और राजा साहेब की सेना पर गोले बरसाने की आज्ञा दी। साथ ही अपनी सेना को पार उतरने की भी। राजा साहेब ने वीरता से युद्ध किया पर कासिम खाँ पहले ही औरङ्गजेब से मिल गया था। उसने रातो-रात गोला बारूद नदी मे फिकवा दिया था। शीघ्र ही उनका गोला बारूद चुक गया। औरङ्गजेब इस पार उतर आया और कासिमखाँ घोर सकट मे जसवन्तसिंह को छोडकर भाग खडा हुआ। राजा जसवन्तसिंह खूब लडे। उनके अठारह हजार राजपूतो मे सिर्फ छ सौ बचे। तब जसवन्तसिंह आगरे न जाकर सीधे जोधपुर चले आये। वहा पहुँचते-पहुँचते सिर्फ पन्द्रह योद्धा उनके साथ बचे थे।

इस विषय से औरंगजेब का साहस बढ गया और इसने प्रसिद्ध किया कि शाही फौज मे ऐसे तीन हजार सिपाही हैं जो हमारी सेना मे आने को तैयार हैं।

औरंगजेब ने उस स्थान पर एक सराय बनवाई और बाग लगाया और उसका नाम फतहपुर रखा। उसके हाथ बहुत सा सामान गोला बारूद लगा, जो कासिमखा ने जमीन मे गडवा दिया था।

शाहजहा ने यह सुना तो दु ख और बेचैनी से बेहोश होगया। दारा का भी बुरा हाल था। उधर सुलेमान शिकोह शुजा के पीछे लगा था, उसे बादशाह बार बार लौट आने का सन्देश भेज रहा था।

दारा ने एक लाख सवार, बीस हजार पैदल, अस्सी तोपें एकत्र की और युद्ध की तैयारी की। औरङ्गजेब के पास चालीस हजार सवार थे। वे थके हुए भी थे, पर दारा को चैन न था, अब वह बादशाह का हुक्म नहीं

मानता था, वल्कि हुक्म चलाता था। बादशाह हर तरह उससे लाचार हो गया था। विश्वासी सरदार सुलेमान शिकोह के साथ थे, दरबार में जो सरदार थे, उनके ऊपर विश्वास नही किया जा सकता था। क्योंकि दारा ने बहुतों का अपमान किया था।

बादशाह स्वयं इस युद्ध मे सेनापति बनना चाहता था। यदि ऐसा होता तो युद्ध टल जाता, पर दारा को गर्व था कि विजय का सेहरा मैं अपने सिर बाँधूँगा। दारा को यह भी समझाया कि सुलेमान शिकोह के आने तक ठहरो जो तेजी से बढ़ा आ रहा है—पर उसने न माना। वह जब कूच करके पिता से मिलने गया तो बादशाह ने कहा—तुमने अपनी मर्जी का काम किया, खुदा तुम्हे सुखरू बनाये। दारा चल दिया और आगरे से साठ मील दूर चम्बल नदी का घाट रोक पड़ाव डाल दिया।

औरङ्गजेब ने भेदिये लगा रखे थे और उसे दारा की गतिविधि मालूम थी। इतने पर भी उसने अपने डेरे उस पार लगा दिये और जान-बूझ कर इतने पास लगाये कि जिन पर दारा की दृष्टि पड सके। इसके बाद उसने चम्पतराय से सन्धि कर वहा से बारह फर्लांग की दूरी पर दुर्गम वन मे होकर सेना इस पार उतार ली। जब वह चुपचाप जमना किनारे तक पहुँच गया तब दारा को इस बात का पता चला और उसने उसका पीछा किया। अब आगरा निकट आ गया था। औरङ्गजेब यहाँ सेना को विश्राम की आज्ञा देकर सामग्री और मार्चेबन्दी की तयारी करने लगा।

उधर दारा ने सबसे आगे तोपें लगा कर ऐसी जकड़ दी कि शत्रु के सवार पंक्ति भंग न कर सकें। उनके पीछे उसने ऊँटो पर छोटी तोपें सजाई। इसके पीछे पैदल सेना पंक्ति बांध बन्दूक दागने को तैयार होगई। शेष सेना सवारो की थी जिनमे राजपूतो पर तलवारें या बर्छियां थी और मुगलो पर तलवारें, तीर और धनुष। इस सेना के दाहिनी ओर खलीलुल्लाहखां था जिसके आधीन तीस हजार सवार थे। बाँई ओर रुस्तमखां दक्षिणी, राव छत्रसाल और सरदार रामसिंह थे। औरंगजेब की सेना की भी यही व्यवस्था थी। अन्तर यह था कि कुछ छोटी तोपें उसने दायें बायें भी छिपा दी थी। यह युक्ति मीर जुमला ने बताई थी जो बहुत उपयुक्त निकली।

ज्यो ही युद्ध प्रारम्भ हुआ कि तोपो ने आग बरसानी शुरू करदी और तीरो की इतनी वर्षा हुई कि बादल छागया। पर इतने मे जोर से वर्षा होने लगी। थोडी देर के लिये युद्ध रुक गया। पर पानी बन्द होते ही तोपे फिर चलने लगी। इस समय दारा शिकोह एक सुन्दर सिंहलद्वीपी हाथी पर सवार होकर सेनाओ का उत्साह बढाता शत्रु की तोपें छीनने को आगे बढा। उधर शत्रु ने इतने गोले बरसाये कि मृतको के ढेर लग गये। फिर भी दारा साहसपूर्वक बढता ही गया। उसने बहुत चेष्टा की पर औरगजेब के पास तक न पहुँच सका क्योंकि उधर के तोपखाने ने इनके सिपाहियो के छक्के छुडा दिये। परन्तु दारा ने साहस करके उनकी तोपो पर आक्रमण कर ही दिया। उनकी साकल खोल डाली और खेमो मे घुस तोपचियो और पैदलो को रौद डाला। इस अवसर पर इतना घमासान युद्ध हुआ कि लाशो के ढेर लग गये और तीरो से आसमान छा गया। परन्तु ये तीर व्यर्थ जाते थे। दस मे नौ बेनिशाने पडते थे। जब तरकश खाली होगये तो तलवार खटकी। अन्त मे शत्रुओ के सवार भाग खडे हुए।

औरगजेब भी निकट ही था। वह हाथी पर बैठा सेना को साहस दे रहा था। पर कोई सुनता न था। उसके एक हजार सवार बच रहे थे जो तेजी से काटे जा रहे थे। यह देख उसने सरदारो से कहा भाईयो ! दक्खिन दूर है। उसने अपने हाथी के पैरो मे साँकल डाल दी। यह देख सैनिक फिरे। दारा ने औरगजेब पर छापा मारना चाहा, पर उसके सवार पक्ति-बद्ध नही थे, धरती भी ऊबड-खाबड थी अत वह सफल नही होता था। इस समय औरगजेब के सिर पर सकट आया। इतने ही मे उसने देखा कि सेना के बायें भाग मे बडी हलचल मची है। कुछ क्षण बाद ही समाचार मिला कि रुस्तमखा मारे गये और रामसिंह शत्रु-सेना मे घिर गये।

अतएव वह औरगजेब पर छापा मारने का विचार छोड बाई ओर को भागा। उसके पहुँचने पर वहा लडाई का रग बदल गया। शत्रु पीछे हटने लगे। वहा रामसिंह ने बडी वीरता प्रकट की थी। उसने मुरादबख्श को घायल कर दिया था और उसकी अमारी का रस्सा काट हौदे मे गिराने की चेष्टा कर रहा था। पर वह भी वीरता से बचाव कर रहा था। वह फुर्ती से अपने आठ वर्ष के बच्चे को ढाल से बचा रहा था। अन्त मे एक

तीर से उसने रामसिंह को मार गिराया। रामसिंह के मरते ही राजपूत जोश मे आकर भिड गये। उन्होंने मुराद को घेर लिया। अब दारा भी इसमे पिल पडा। ऐसा करने से, औरगजेब बचा जाना था, पर वह मुराद को भी छोड न सकता था। इस समय सरदार खलीलुल्ला ने विश्वासघात किया। वह दाहिने पक्ष का सरदार था, और उसके आधीन तीस हज़ार शिक्षित सवार थे। अकेला यही औरगजेब के लिये काफी था—पर उसने कुछ भी नही किया। उसने सैनिकों से कहा—हमें एक तीर भी छोडने की आवश्यकता नही। हम खास मौके पर काम आवगे। इस सरदार का एक बार दारा ने अपमान किया था, जिसका इस प्रकार बदला लिया।

परतु दारा ने उसकी सहायता के बिना ही विजय प्राप्त करली थी। परन्तु ऐन मौके पर उसने दारा को पुकार कर कहा—'मुबारिकबाद हज़रत-सलामत, अलहम्दुलिल्लाह, हुजूर की बर्ख़ त व सलामती बादशाही-फतह मुबारिक हो। अब हुज़र इतने बडे हाथी पर क्यो सवार हैं, जबकि कई गोलियाँ व तीर अमारी के सायबान से पार हो चुके हैं। अगर खुदा-ना-ख्वास्त कोई गोली या तीर जिस्मे मुबारिक से छू जाय तो हम गुलामों का कहाँ ठिकाना रहेगा। खुदा के वास्ते जल्द उतरिये और घोडे पर सवार हो लीजिये। अब क्या रह गया है सिर्फ चन्द भगोडो को रस्सी से बाँध करके पकडना है।'

अगर दारा यह समझ लेता कि इस बडे हाथी ही की बदौलत उसे विजय प्राप्त हुई है, क्योंकि सैनिक उसे देखते रहे और हिम्मत बाध रहे हैं तो वह विशाल साम्राज्य का स्वामी होता। पर घोडे पर सवार होने पर उसे अपनी यह भूल मालूम हुई। वह बहुत बका झका और कहने लगा कि मैं उसे जीता न छोडूँगा। पर अब कुछ नही हो सकता था। सिपाही हाथी को खाली देख कर समझ बैठे कि दारा मारा गया और उनमे खलबली मच गई। क्षण भर मे माया उलट गई। दारा की फौज मे भगदड मच गई। सिर्फ पाव घण्टे हाथी पर चढकर औरङ्गजेब ने सल्तनत पाई और क्षण भर हाथी से उतर कर दारा ने पाई हुई विजय-लक्ष्मी को खो दिया।

खलीलुल्लाह वहाँ से हटकर औरङ्गजेब से जा मिला जो ईश्वरीय दत्त विजय को देखकर आश्चय कर रहा था। उसने खलीलुल्लाह को बहुत

से सब्ज बाग दिखाये और मुराद के पास ले जाकर उसे पेश किया और मुराद ही बादशाह है, यह भी प्रकट कर दिया।

अब औरंगजेब ने सब अमीरो को मीठे-मीठे पत्र लिखकर अपने आधीन किया। उसका मामा शाइस्ताखा इस काम मे उसका मददगार था। दारा ने एक बार इसका अपमान किया था उसका बदला उसने अब इस भाँति लिया। औरंगजेब सब काम मुराद के नाम से करता और प्रकट करता कि वह बिलकुल बेलौस है।

दारा आगरे लौट गया। मगर वह बादशाह को मुँह न दिखा सका। पर बादशाह ने खबर सुन कर दारा को बहुत आश्वासन दिला भेजा और अपना प्रेम प्रकट किया, और यह भी कहा कि निराश न हो। सुलेमान शिकोह की सेना सगठित और व्यूहबद्ध है तुम तत्काल दिल्ली चले आओ। वहाँ के हाकिम को लिख दिया गया है। वह तुम्हे एक हजार हाथी, घोडे देगा, कुछ धन भी देगा। तुम आगरे से दूर न जाना, बल्कि ऐसी जगह ठहरना जहाँ हमारे पत्र तुम्हे मिल सकें।

पर दारा इतना शोकाकुल था कि उसने कुछ उत्तर न दिया। उसने अपनी बहिन के पास कुछ सूचनाएँ भेजी और आधी रात के समय अपनी स्त्री और बच्चा के तथा छोटे पुत्र सिफरशिकोह के साथ तीन चार सौ आदमी लेकर देहली को चल दिया।

अब औरंगजेब ने सुलेमान शिकोह की सेना मे फूट के बीज बोये। उसने एक पत्र राजा जयसिंह और दिलेरखा को लिखा, इसका आशय यह था—

"दारा तो बिल्कुल तबाह हो गया। वह बडा लश्कर जिसका उसे भरोसा था शिकस्त खाकर हमारे कब्जे मे आगया। अब वह ऐसी बे सरो-सामानी से भागा जारहा है कि सवारो का एक रिसाला भी साथ नही। हम उसे जल्द गिरफ्तार कर लेगे। हजरत बादशाह इस कदर अलील हैं कि अब सिर्फ चन्द रोज के मेहमान हैं। इसलिये इस हालत मे अगर तुम हमारा मुकाबला करोगे तो नतीजा बजुज़ खराबी और हलाकत के कुछ न होगा। इसके सिवा इस अबतर हालत मे दारा की तरफदारी करना महज़ नादानी है। तुम्हारे हक मे यही बेहतर है कि हमारे पास हाजिर हो जाओ और सुलेमान शिकोह को गिरफ्तार करके अपने साथ लेते आओ।"

जयसिंह यह पत्र पाकर चिंता में पड गये। वे राज परिवार के व्यक्ति पर हाथ उठाना ठीक न समझते थे। उन्होंने दिलेरखाँ से सलाह की और औरंगजेब के पत्र को लेकर सुलेमान के खेमे मे गये। और पत्र दिखाकर कहा—

"जिस खतरनाक हालत मे आप पड गये हैं मैं उसे आप से छिपाना मुनासिब नही समझता। स्थिति बदल गई। इस समय आपको न दिलेरखाँ पर भरोसा करना चाहिये न दाऊदखा पर और न फौज ही पर। आप यदि इस वक्त अपने पिता की मदद को आगे बढेंगे तो आप भी दुर्दशा मे पड़ेंगे। अत मुनासिब है कि श्रीनगर के पहाडो मे चले जायें। वहाँ के राजा के यहा आपको आश्रय मिलेगा और वहा औरंगजेब भी न पहुँच सकेगा। वहाँ जाकर यहा के हालातो पर नज़र रखें और जब मौका देखें चले आवे।"

यह सुनते ही शाहज़ादा समझ गया कि अब कोई मित्र नही रह गया। लाचार वह फौज को वहीं छोड कर कुछ हितपियो को साथ लेकर चल दिया। सेना जयसिंह और दिलेरखा के साथ रही। उसका बहुत सा कीमती सामान और मुहरो से लदा एक हाथी भी इन्होने ले लिया। रास्ते मे भी उसे देहात के लोगो ने बहुत कुछ दिया। ज्यो त्या करके वह श्रीनगर पहुँचा। वहाँ के राजा ने उसका सत्कार किया और आश्रय दिया। और कहा—जब तक आप यहा है मैं प्राण पण से आपके लिये हाजिर हूँ।

इधर सब झगडो से निपट कर औरंगजेब ने आगरे से तीन मील दूर एक बाग मे मुकाम किया और बादशाह को एक पत्र लिख कर एक अत्यन्त धूत और चालाक आदमी के हाथ भेजा। पत्र का विषय यह था—

"दारा शिकोह की कजराई और बेजा ख्यालात के बाइस से जो वाकआत पेश आये हैं, उनके लिये औरंगजेब को बहुत ही रज और अफसोस है। हुज़ूर की तबियत अब अच्छी होती जाती है इसलिये हुज़ूर की खिदमत मे मुबारिकबाद अर्ज़ करने और महज़ इस गरज़ से कि जो कुछ इर्शाद हो उसकी तामील की जाय, वह आगरे मे आया है।"

शाहजहा भी भारी राजनीतिज्ञ था। उसने सिर्फ यह जवाब ज़ुबानी

दिया "उसकी सआदतमन्दी और फर्मादतमन्दी से हम निहायत खुश हैं।" इसके बाद उसने पत्र मे लिखा—

"दारा ने जो कुछ किया बेसमझी और नालायकी से पुर था। तुम पर तो हम इब्तदा ही से सफक्कत रखते हैं बस तुमको जल्द हमारे पास आना चाहिये ताकि तुम्हारे मशिवरे से उन उमूर का इन्तजाम किया जाय जो इस गडबड की बाइस खराब और अबतर पडे हैं।"

पर औरगजेब एक ही काइयाँ था, उसने किले मे जाने का साहस न किया। उसे भय था कि वह अवश्य कैद कर दिया जायगा। अत वह बार-बार आने के वादे करता रहा। उधर बडे बडे सरदारो से बातचीत करता रहा। एक दिन उसके बडे पुत्र मुहम्मद सुलतान ने सहसा किले पर अधिकार कर लिया। इससे सब लोग हक्के-बक्के होगये। यह काम बडी चालाकी से किया गया। बादशाह इस प्रकार कैद होकर मर्माहत हो गया और उसने मुहम्मद सुलतान को खत लिखा—

"मैं तख्त और कुरान मजीद की कसम खाकर कहता हूँ कि अगर तुम इस वक्त ईमानदारी मे बरतोगे तो तुम्ही को बादशाह बना दूगा। इस मौके को गनीमत जानो और दादा जान को कैद से छुडा लो। याद रखो कि इस सबाबे आखिरत के आलावा दुनिया मे भी तुम्हे एक दायमी नेकनामी हासिल होगी।"

यदि मुहम्मद सुलतान जरा साहस करके बादशाह की बात मान लेता तो सब कुछ हो जाता। क्योकि अब भी बादशाह पर लोगो की श्रद्धा थी, दारा के पतन के बाद यदि बादशाह स्वय युद्ध को कमर कसता तो न तो औरगजेब ही उसके मुकाबले का साहस करता और न सरदार उसकी बात टालते। पर वह चतुराई के दाव पेच खेलना चाहता था और उसकी बडी बेटी का उसमे भारी हाथ था। अत वह कुछ भी न कर सका। मुहम्मद सुलतान के भाग्य मे भी ग्वालियर के किले मे दिन काटने बदे थे।

अस्तु मुहम्मद सुलतान ने जवाब दिया, "मुझे हुजूर मे हाजिर होने का हुक्म नही है। बल्कि ताकीदी हुक्म है कि यहा से जल्द किले के कुल दरवाजो की कुजियाँ खुद अपनी सुपुर्दगी मे लेकर जल्द वापस आऊँ क्योकि वे हुजूर की कदम बोसी के निहायत मुश्ताक हो रहे हैं।"

बादशाह दो दिन तक आगा पीछा सोचता रहा। धीरे-धीरे सब लोग उसे छोड छोड कर चले जा रहे थे। जब उसके निज के सरक्षको ने भी उसे छोड दिया तो उसने चाबिया देदी और कहला भेजा—

"अब समझदारी इसी मे है कि औरगजेब हम से आकर मिले। क्योकि सल्तनत के बाज बहुत जरूरी इसरार हम उसे समझाना चाहते हैं।"

पर वह धूत अब भी न आया और तुरत एतबार खा नामक एक विश्वासी व्यक्ति को किलेदार नियुक्त करके भेज दिया, जिसने यहा पहुँचकर सब बेगमो, बडी राजकुमारी बेगम साहिबा और स्वय बादशाह को भी कैद कर लिया और किले के कई दरवाजे एक दम बन्द करा दिये। शाह जहाँ के शुभचिन्तको का आना जाना और पत्र-व्यवहार कतई बन्द हो गया। और वह बिना किलेदार को सूचना भेजे कमरे से भी बाहर नही निकल सकता था।

अब औरगजेब ने पर निकाले। उसने बादशाह को खत लिखा और सब को सुनाया। खत यह था—

"यह बेअदबी मुझसे इसलिये सरजद हुई है कि हुजूर जाहिरा मेरी निस्बत इजहारे-उल्फत व मिहरबानी फरमाते थे, और यह इर्शाद होता था कि दारा के तौर व तरीको से हम सख्त नाराज हैं। मगर मुझे पुख्ता खबर मिली है कि हुजूर ने अशर्फियो से लदे हुए दो हाथी उसके पास भेजे हैं कि जिनसे वह नई फौज भर्ती करके खूँरेज लडाई को तवालत देगा। बस हुजूर ही गौर फर्माएँ कि मुझसे इन हरकतो के—जो फर्जन्दी के मामूली तरीके के खिलाफ और सख्त मालूम होते हैं—सरजद हो जाने का बाइस क्या दारा शिकोह की खुदसरी नही है? इन बातो का सबब कि हुजूर कद किये गये और मैं फर्जन्दाना खिदमत बजा लाने के लिये हुजूर की खिदमत मे हाजिर न हो सका, क्या काफी नहीं है? मैं हुजूर से इल्तजा करता हूँ कि मेरी इस हरकत की जाहिरी सूरत पर ख्याल न फर्माकर सिर्फ चन्द रोज बर्दाश्त करें। ज्योही दारा हुजूर को और मुझे तकलीफ देने के काबिल न रहेगा, मैं खुद खिदमत की तरफ दौडा आऊँगा, और हुजूर के कैदखाने का दर्वाजा अपने हाथो खोल, हाथ जोडकर अर्ज करूँगा कि अब कुछ रोक-टोक नहीं है।'

इस प्रकार कठोरतापूर्वक जब बादशाह कैद हो गया तो सब अमीर औरंगजेब को सलाम करने उसके दरबार मे जा हाजिर हुए। किसी ने बेचारे वृद्ध बादशाह की नमकहलाली का ख्याल नही किया। इनमे बहुत से ऐसे थे, जो बादशाह के धन से प्रतिष्ठित और धनी हुए थे। कुछ को बादशाह ने ग़ुलामी से मुक्त करके उच्च पद दिये थे।

इस प्रकार दोनो भाई पिता का बन्दोबस्त कर, और अपने मामा शाइस्ताखा को आगरे की सूबेदारी सौप, खजाने से खर्च का इन्तजाम कर, दारा की खोज मे आगरे से रवाना हुए।

इस यात्रा का असल उद्देश्य कुछ और ही था। वह था मुराद का भुगतान करना। मुराद के हितैषी यह भेद पा गये थे, और उन्होंने मुराद से कहा भी कि अपने लश्कर-सहित आगरा-दिल्ली से दूर न जाइये। औरंगजेब दगा करेगा, जब वह खुद कहता है कि बादशाह आप है, तो फिर आपको क्यो राजधानी से दूर ले जाता है? उसी को दारा के पीछे जाने दे। पर वह कुरान की कसमो और प्रतिज्ञाओ के ऐसे फेर मे पडा था कि उसकी बुद्धि मे यह बात नही जमी।

दोनो ने कूच किया। जब मथुरा के पास पहुँचे तो औरंगजेब ने उसे अपने यहा भोजन का न्यौता दिया। मित्रो ने समझाया कि बीमारी का बहाना करके टाल जाय, पर उसने न माना। रात्रि को भोजन का सरजाम था। औरंगजेब ने मीरखा आदि को ठीक-ठाक कर रखा था।

जब मुराद पहुँचा तो औरंगजेब ने बडी आवभगत की। अपने हाथ से उसके मुँह की गर्द-पसीना पोछा। जब तक भोजन होता रहा, हँसी-मजाक की बातें होती रही। इसके बाद जब शराब के दौर चले, तो औरंगजेब ने उठते हुए मुस्कराकर कहा—

"हजरत को मालूम है कि मैं अपने मज़हबी खयालात के बाइस इस ऐशो निशात की सोहबत मे मौजूद नही रह सकता, ताहम ये लोग जो इस पुर-लुत्फ जलसे मे शरीक हैं, मीर साहब और दीगर मुसाहिब आपकी खिदमत गुज़ारी के लिये हाजिर रहगे।"

निदान, मुराद को इतनी शराब पिलाई गई कि वह बेहोश हो गया। तब उसके नौकर लोग भी विदा कर दिये गये और कह दिया गया कि अब

इन्हे यहा आराम करने दें। जब वह चले गये, तब उसके हथियार खोलकर कब्जे में कर लिये गये। इतने मे औरंगजेब भी वहाँ आ गया, और सारा अदब-कायदा ताक मे रख पाच सात ठोकर लगाईं और कहा—"तुम्हे शर्म नही आती—बादशाह होकर इतनी शराब पीते हो! लोग मुझे भी क्या कहेंगे, जो तुम्हे बादशाह बनाने में मदद देता है।" इसके बाद उसने अपने आदमियो से कहा—

"इस बदबख्त के हाथ पाँव बाध कर खिलवतखाने मे ले जाओ, ताकि यह नशा उतरने तक वही बेशर्मी का सोना सोए।"

तुरन्त आदमी टूट पडे। उस समय मुराद बहुत चीखा चिल्लाया, मगर पुख्ता हथकडी बेडिया से जकड दिया गया, और बन्द कर दिया। चीखना चिल्लाना सुन, उसके सेवक दौडे, पर उनको एक नमकहराम सरदार मीर आतिशअली खाँ ने रोक दिया, जिसे लालच देकर औरंगजेब ने पहले ही वश मे कर लिया था।

यह घटना तत्काल ही लश्कर मे फैल गई। औरंगजेब ने सब बडे-बडे सरदारो को बड-बडे लालच देकर राजी कर लिया और मुराद को एक बन्द जनाना अम्बारी मे दिल्ली भेजकर सलीमगढ मे कैद कर दिया, जो उस समय जमना के बीचो-बीच टापू मे था।

यह कर, वह दारा के पीछे दौडा, जो लाहौर को तेजी से जा रहा था और वहाँ किलेबन्दी कर सैन्य-सग्रह करना चाहता था। पर औरंगजेब इतनी तेजी से पीछे दौडा कि दारा को वहाँ किलेबन्दी का अवकाश न मिला, और वह मुल्तान की ओर भाग गया। यद्यपि भयानक गर्मी पड रही थी, पर औरंगजेब की सेना रात दिन कूच कर रही थी। वह स्वय पाँच-छः कोस आगे चलता, सूखे टुकडे खाता और जमीन पर लेटता था।

दारा ने यहाँ भी भूल की। यदि वह काबुल चला जाता, तो उसे बहुत-कुछ आशा थी। वहाँ प्राचीन सरदार महाबतखाँ था, जो औरंगजेब का दोस्त भी न था। उसके आधीन दस हजार जबरदस्त सेना थी। दारा के पास अब भी धन रत्न की कमी न थी। वहाँ से ईरान और उजबक देश भी निकट थे, जहाँ से उसे बहुत सहायता मिल सकती थी। उसे इस ऐतिहासिक बात का ख्याल करना उचित था कि जब शेरशाह ने हुमायूँ को

हराया था, तब ईरान के शाह ने ही उसकी सहायता की थी, जिससे राज्य-प्राप्ति हुई थी।

पर भाग्यवश उसने वहाँ न जाकर ठट्ठ के किले मे आश्रय लिया। औरगजेब ने जब देखा कि वह काबुल नही जा रहा है, तब उसका खटका मिट गया और वह मीर बाबा नामक धाय के बेटे के सुपुर्द आठ हजार सेना छोडकर आगरे की ओर लौटा। उसे भय था जयसिंह या जसवन्तसिंह या सुलेमान शिकोह ही स्वय आकर बादशाह को छुडा न ले, या शुजा ही न चढाई कर बैठे।

अस्तु, ठट्ठ के दुग मे जा, दारा ने एक ख्वाजासरा को वहाँ का किलेदार नियत किया, और अपना सब खजाना वहाँ रखा, जो बहुत था। फिर वह तीन हजार सेना को साथ लेकर सिधु नदी के किनारे-किनारे कच्छ होता हुआ गुजरात पहुँचा और अहमदाबाद के बाहर डेरा डाल दिया। यहा शाहनेवाजखा ने, जो औरङ्गजेब का श्वसुर था और किलेदार था—वह कोई योद्धा न था—किले के द्वार खोल दिये और सम्मान से दारा का सत्कार किया। दारा ने उसकी सरलता पर मुग्ध हो अपने सब गुप्त भेद उस पर प्रकट कर दिये।

औरगजेब ने यह सुना, तो उसे चिता हुई, क्योकि अभी उसके बहुत शत्रु थे, और अहमदाबाद जैसी मजबूत जगह मे उसके पाव जमने उसे स्वीकार न थे। उसे भय था कि जयसिंह और जसवन्तसिंह भी उससे मिल जायेंगे। उधर उसने यह भी सुना कि भारी सेना लिये सुलतान शुजा दौडा चला आरहा है, और इलाहाबाद तक आ चुका है। उसे यह भी खबर मिली कि श्रीनगर के राजा की मदद से सुलेमान शिकोह भी तैयारी कर रहा है। सब विपत्तियो पर विचार कर, दारा का ध्यान छोड, वह आगरे की राह छोड शुजा पर लपका, जो इलाहाबाद मे गगा के इस पार तक आ गया था। खजुआ नामक गाव मे दोनो सेनाएँ मिली। यहा मीर जुमला भी उससे बहुत सी सेना-सहित आ मिला। युद्ध हुआ। इस युद्ध में जसवन्तसिंह ने जो औरगजेब से आ मिले थे, सहसा पीछे से आक्रमण कर, उसका सारा खजाना और माल लूट लिया। इससे औरगजेब की कठिनाई बढ गई। सेना विचलित हो गई, पर वह विचलित नही हुआ। पर शुजा

ने उधर से भारी आक्रमण किया। एक तीर महावत की आँख में आ लगने से औरंगजेब का हाथी बेकाबू हो गया। वह हाथी से उतरने ही को था कि मीर जुमला ने कहा—"हजरत, यह वक्त नही है क्या गजब करते हैं।" मीर जुमला के रण-कौशल का क्या ठिकाना था। सन्ध्या हो चली थी, लक्षण बुरे थे, पर मीर जुमला ने औरंगजेब को हाथी से न उतरने दिया।

औरंगजेब प्रतिक्षण शत्रु के चंगुल में फँसने की सोच रहा था। उधर शुजा शीघ्र उसे गिरफ्तार करने को हाथी से उतरा। बस, उसकी वही दशा हुई, जो दारा की हुई थी। उसके हाथी को खाली देख सैनिकों ने उसके मरने का सन्देह किया और वे भाग निकले।

औरंगजेब की विजय देख, जसवन्तसिंह आगरे लौट आये। वहाँ यह खबर उड़ी कि औरंगजेब और मीर जुमला पकड़े गये, तथा शुजा आगरे की ओर बढ़ रहा है। शाइस्ताखाँ इन बातो से इतना घबराया कि विष पीने लगा, पर स्त्रियो ने प्याला उसके हाथ से छीन लिया। इस बीच मे जसवन्तसिंह चेष्टा करते तो शाहजहा को कैद से छुड़ा सकते थे, पर वे स्थिति समझ और आगरे मे ठहरना ठीक न समझ, मारवाड को लौट आये

उधर औरंगजेब सोच रहा था कि न जाने आगरे मे जसवन्तसिंह ने क्या किया होगा। वह तेजी से लौट रहा था। पर उसने सुना—शुजा अब भी इलाहाबाद मे पाँव जमा रहा है उसके पास बहुत धन है, और वहाँ के राजा उसके सहायक हैं।

अब औरंगजेब को सिर्फ दो आदमियो पर भरोसा था। एक अपने पुत्र मुहम्मद सुलतान, दूसरे मीर जुमला पर। पर वह दोनो ही से भय खाता और सन्देह करता था। उसने दोनो को दूर करने का उपाय कर लिया। मीर जुमला को बडी सेना देकर शुजा पर भेजा और कहा—"बंगाल के जरखेज सूबे की हुकूमत आप और आपके खानदान मे रहेगी, और जब आप शुजा पर फतह पा लेंगे, तब अमीरुल उमरा का सब से बडा खिताब भी आपको दिया जायगा।"

इसके बाद उसने मुहम्मद सुलतान से कहा—"बेटे, तुम मेरे सब से बडे पुत्र हो, और अपने ही काम पर जाते हो। तुमने बडे-बडे काम किये हैं,

पर याद रखो, हमारे भारी वैरी शुजा को पकडकर जब तक न ले आओ, सब काम अधूरे हैं।"

इसके बाद उसने दोनो को बहुत सी-भेटे दी। फिर उसने चालाकी से मुहम्मद सुल्तान की बेगमो और मीर जुमला के पुत्र मुहम्मद अमीन को रोक लिया।

हम कह चुके हैं कि मीर जुमला एक ही अद्भुत प्रतिभा का आदमी था। शुजा उसे रोकने की बडी-बडी मोरचेबन्दी कर रहा था। वह गगा के घाटो को सावधानी से रोके हुए बैठा था। सहसा उसे समाचार मिला कि जो सेना आ रही है, वह तो दिखावा है—मीर जुमला तो आस-पास के राजाओ से सधि कर, राजमहल पहुँच भी गया और अब बगाल की ओर इसके लौटने का माग बन्द है। यह सुनकर शुजा हतबुद्धि रह गया। वह बडी कठिनाइयो से मुगेर और राजमहल के बीच पेचीले चक्कर की गगा को उतर राजमहल पहुँचा और मीर जुमला से लोहा लिया, तथा पाच दिन के युद्ध के बाद भाग खडा हुआ। वर्षा आ लगी थी। मीर जुमला वर्षा ऋतु राजमहल मे काटने को ठहर गया। मुहम्मद सुलतान भी उसके साथ था। शीघ्र ही दोनो मे झगडा हो गया। मुहम्मद सुलतान अपने को समस्त सेना का स्वामी और मीर जुमला को तुच्छ समझने लगा। यह खबर जब औरगजेब को लगी तो बहुत नाराज़ हुआ। इस पर वह भय-भीत होकर चुपचाप यहा से चलकर शुजा मे जा मिला। पर शुजा ने उस पर विश्वास ही न किया। तब वह बिगड कर वहा से भी चला और इधर-उधर घूमकर मीर जुमला से आ मिला। मीर जुमला ने उसे क्षमा करके रख लिया। पर बादशाह ने उसे दिल्ली आने का हुक्म दिया, और ज्यो ही वह गगा के पार उतरा कि एक सैनिक टुकडी ने उसे गिरफ्तार कर लिया और एक बन्द अमारी मे रखकर ग्वालियर दुग मे कैद कर दिया, जहाँ उसकी समस्त आयु व्यतीत हुई।

उधर जसवन्तसिंह ने लूट के धन से एक भारी सेना सग्रह कर, दारा को लिखा कि आप आगरे को कूच कर द, मैं राह मे आपसे आ मिलूँगा। दारा ने भी भारी सेना सग्रह कर ली थी, और कूच कर दिया। पर राजा जयसिंह ने समझा-बुझाकर जसवन्तसिंह को इस झमेले मे पडने से रोक

दिया। उधर औरगजेब ने दारा को अजमेर ही मे जा राका। फिर युद्ध हुआ। परन्तु फिर विश्वासघातियो और मूखताआ के कारण अन्त मे उसे सब सामग्री छोड, बाल-बच्चो सहित भागना पडा। इस युद्ध मे दारा के साथ यहाँ तक दगा की गई कि तोपो मे गोला के स्थान पर बारूद की थैलिया भरकर छोडी गई।

वह फिर अहमदाबाद को लौटा। अब खेमे तक उसके पास न थे। माग मे सब राजा उसके विपक्षी थे। भयानक गर्मी थी। भील लोग रात दिन उसके पीछे लगे रहते और मौका पाकर लूट लेते थे। किसी तरह वह अहमदाबाद के निकट पहुँचा तो उसी के नियुक्त किये किलेदार ने उसे लिख भेजा—"किले के निकट न आइये, फाटक बन्द है और सेना शस्त्र सहित मुस्तैद खडी है।"

दारा की दुरवस्था का वणन प्रसिद्ध फ्रेंच डॉक्टर बरनियर इस भाति करता है—

"इस समय मैं तीन दिन से दारा शिकोह के साथ था। मैं उसे अचानक माग मे मिल गया था। उसके साथ कोई वैद्य न था, इसलिये उसने मुझे जबदस्ती अपने साथ ले लिया था। अहमदाबाद के गवनर का पत्र पहुँचने से एक दिन पहले की बात है कि दारा ने मुझसे कहा कि 'कदाचित् आपको गोली मार डाले।' यह कहकर वह आग्रहपूवक मुझे अपने साथ उस कारवा मे ले गया, जहा वह स्वय ठहरा था। अब उसकी यह दशा थी कि एक खेमा तक उसके पास नही था। उसकी बेगम और स्त्रियाँ केवल एक कनात की आड मे थीं। कनात की रस्सियाँ मेरी सवारी की बहली के पहियो से, जिसमे मैं सोया करता था, बाधी गई थी। जो लोग इस बात को जानते है कि भारतवष के अमीर लोग अपनी स्त्रियो के पर्दे के विषय मे कितनी अत्युक्ति करते है, वे मेरे इस कथन पर विश्वास न करेंगे। परन्तु मैंने इस घटना का हाल उस दु खद अवस्था के प्रमाण मे लिखा है, जिसमे दारा उस समय पडा हुआ था। अस्तु, उसी रात की पौ फटने के समय जब अहमदाबाद के हाकिम का उक्त सन्देश आया, तब औरतो के रोने-चिल्लाने ने हम सब को रुला दिया। उस समय एक विलक्षण प्रकार की हैरानी और निराशा छा रही थी। सभी डर के मारे चुपचाप एक-दूसरे

के मुँह देखते थे , कोई उपाय नही सूझता था , कुछ नही मालूम था कि क्षण भर मे क्या हो जायगा । जव दारा शिकोह स्त्रियो से मिलकर कनात के वाहर आया, तब मैंने देखा कि उसके मुख पर मुदनी-सी छा रही है । वह कभी इससे कुछ कहता है, कभी इससे कुछ बात करता है । एक साधारण सिपाही से भी पूछता है कि अब क्या करना चाहिए । जब उसने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति डरा और घबराया हुआ मालूम होता है, तब उसे विश्वास हो गया कि सम्भवत अब इनमे से एक भी मेरा साथ न देगा । वह बडा ही हैरान था कि अब क्या होगा, किधर जाना चाहिए, यहाँ ठहरने से तो खराबी ही खराबी दीखती है ।

"इस तीन दिन की अवधि मे जब कि मैं दारा के साथ था, हम लोगो को रात दिन बिना कही ठहरे हुए जाना पडा । गर्मी ऐसी प्रचण्ड थी, और धूल इतनी उडती थी कि दम घुटा जाता था । मेरी वहली के तीन बहुत सुन्दर और गुजराती बैलो मे से एक मर चुका था, दूसरा मरने की दशा को पहुँच चुका था, और तीसरा इतना थक चुका था कि चल नही सकता था । यद्यपि दारा बहुत चाहता था कि म उसके साथ रहूँ, विशेषकर इस कारण से कि उसकी एक बेगम के पैर मे बहुत बुरा घाव था, पर वह इस दुदशा को पहुँच गया था कि धमकाने और अनुनय-विनय करने पर भी किसी ने उसको मेरी मवारी के लिये कोई घोडा या बैल या ऊँट नही दिया । जब कोई सवारी नही मिली, तव लाचार होकर मैं पीछे रह गया । दारा को चार पाच सौ सवारो के साथ जाते देखकर (क्योकि घटते-घटते अब उसके साथ इतने ही सवार रह गये थे) मैं एकदम रो पडा । परन्तु अब तक भी दो हाथी उसके साथ थे, जिन पर लोग कहते थे कि रुपये और अशर्फिया लदी हुई हैं । उस समय मैं समझा था कि दारा ठट्ठ की ओर जायगा । वत्त मान अवस्थाओ को देखते हुए यह उपाय कदाचित् बुरा नही था, पर वास्तविक बात तो ऐसी है कि इधर भी विपत्ति का सामना था और उधर भी । मुझे कदापि ऐसी आशा नही थी कि वह उस मरुस्थल से जो अहमदाबाद और ठट्ठा के बीच मे है, कुशलपूवक वचकर निकल जायगा । हुआ भी ऐसा ही । उसके साथियो मे मे बहुत-सी स्त्रिया मर गई, और पुरुषो पर तो ऐसी आपत्ति आई कि कुछ तो भूख-प्यास और थकावट से मर गये,

और अधिकाश को निदय कोलियो ने मार डाला। यदि ऐसी आपदाओ से भरी यात्रा मे स्वय दारा शिकोह मर जाता तो मैं उसे बडा ही भाग्यवान् समझता। पर सब प्रकार के कष्ट और विपत्ति सहता हुआ अन्त मे वह कच्छ प्रान्त मे पहुँच गया।

"यहा के राजा ने, जैसा कि चाहिये, बडी उत्तम रीति से उसका स्वागत किया और अपने यहा उसे स्थान दिया। पश्चात उसने दारा से कहा कि यदि आप अपनी कन्या का विवाह मेरे पुत्र से करदे तो मैं अपनी सब सेना आपकी सहायता के लिये उपस्थित कर दूँ। परन्तु पीछे जिस प्रकार यशवन्तसिह पर जयसिह का जादू चल गया था, उसी प्रकार यहाँ भी हुआ। शीघ्र ही उसके भाव बदने हुए दिखाई दिये। जब कई बातोसे दारा शिकोह ने देख लिया कि यह दुष्ट तो मेरे प्राण ही लेना चाहता है, तब वह तुरन्त वहा से ठट्ठ की ओर चल दिया।

"जिस समय दारा ठट्ठ की आपदापूण यात्रा मे लगा हुआ था, उस समय बगाल मे लडाई पहले की तरह हो रही थी। दारा शिकोह ठटठ के निकट पहुँच चुका था, और केवल दो ही तीन दिन का माग बाकी था। मुझको उन फ्रासीसियो और कई दूसरे यूरोपियना से जो उस दुग की सेना मे थे, मालूम हुआ कि यहा पहुँचकर दारा को यह समाचार मिला कि मीर बाबा ने, जो बहुत दिनो से दुर्ग को घेरे हुए था, भीतरवालो को यहा तक तग कर दिया है कि आध सेर मास या चावन २॥) रुपये का मिलता है और दूसरी वस्तुएँ भी बहुत महँगी है, तो भी बहादुर किलेदार अब तक उसी प्रकार साहस किये हुए है, और वह प्राय दुग के बाहर निकलकर शत्रुओ पर आक्रमण करता है, और हर प्रकार की सचाई, वीरता और स्वामि-भक्ति से मीर बाबा के आक्रमणो को रोकना है। उसके इस प्रशसनीय काय के विषय मे वे योरोपियन भी, जो उसकी सेवा मे थे, कहते थे कि सब मच है। उन्होने मुझसे यह भी कहा कि जब उसको दारा के निकट आने का सम्वाद मिला, तब उसने और भी उत्साह दिखलाया और इस प्रकार सिपाहियो को अपने वश मे कर लिया कि दुगवाले मीर बाबा का घिराव तोडकर दारा को दुग मे जाने देने लिये वे अपने प्राण दे देने को तैयार हो गये।

"इसके अतिरिक्त उस साहसी सरदार ने और भी कई अच्छे उपायो से युक्ति निपुण जासूसो को मीर बाबा की सेना मे भेजकर घेरा करने वालो के मन मे इस बात का विश्वास उत्पन्न कर दिया कि दारा एक बहुत बडी सेना के साथ घेरा तोड देने के लिये यहाँ आ रहा है, और अब शीघ्र पहुँचना चाहता है। उसने यहाँ तक कह डाला कि हम दारा और उसकी सेना को अपनी आखो से देख आये है। यह युक्ति इतनी सफल हुई कि घेरे वालो के छक्के छूट गये। इसमे सन्देह नही कि यदि दारा उस समय जा पहुँचता तो मीर बाबा के लोग अवश्य तितर-बितर हो जाते। यह समझकर कि थोडे से आदमियो के साथ घेरे का तोडना असम्भव है, पहले तो उसका यह विचार हुआ कि सिन्धु नदी पार करके ईरान को चला जाय, परन्तु उसकी बेगम ने एक निबल और वाहियात सी बात कहकर उसका यह विचार भग कर दिया। उसने कहा—'यदि आप ईरान जाने का विचार करेंगे तो खूब समझ लीजिए कि मुझको और मेरी बेटी दोनो को शाह ईरान की लौंडिया बनना पडेगा, जो ऐसी बेइज्जती है कि हमारे खानदान मे किसी को गवारा न होगी।' इस बात को दारा शिकोह और बेगम दोना भूल गये कि हुमायू जब ऐसी ही आपदाओ मे पड कर ईरान गया था, और उसकी बेगम भी उसके साथ थी, जब उन दोनो के साथ कोई अनुचित व्यवहार नही हुआ था, बल्कि बहुत ही सम्मान और शिष्टाचार से वहाँ उनका स्वागत हुआ था। अस्तु इसी प्रकार विचार करते करते दारा ने सोचा कि जीवनखाँ पठान के यहा जाना उचित होगा। वह एक प्रसिद्ध और बलवान सरदार है, और उसका स्थान भी कुछ बहुत दूर नही है। दारा के मन में जीवनखा की सहायता का ध्यान आने का कारण यह था कि उसके विद्रोह मचाने और दुष्टता करने के कारण शाहजहा ने दो बार उसे हाथी के पावो के नीचे कुचलवा डालने की आज्ञा दी थी। पर दोनो ही बार दारा के कहने-सुनने से वह छूट गया था। दारा का इस समय उसके पास जाने का मतलब यह था कि उससे कुछ सैनिक सहायता लेकर वह मीर बाबा को ठट्ठ के दुग से हटा सके, और वह खजाने जो वहा के किलेदार के पास हैं, लेकर कधार चला जाय और वहाँ से सहज ही मे काबुल पहुँच जाय। उसे विश्वास था कि उसके वहा पहुँच जाने पर

काबुल का सूबेदार महाबतखाँ, जो एक बड़ा भारी अमीर था और जिसे काबुल वाले बहुत मानते थे, बिना कुछ आगा-पीछा किये बड़े प्रेम से उसकी सहायता करने को तैयार होगा, क्योंकि काबुल की सूबेदारी उसे इसी की मदद से मिली थी। दारा का यह विचार किसी प्रकार भी बुरा नहीं था, परन्तु उसकी स्त्रियाँ यह विचार सुनकर बहुत ही घबराईं। उन्होंने कहा कि जीवनखाँ के यहाँ जाना उचित नहीं है। बेगम और उसकी पुत्री सिफर शिकोह उसके पैरो मे पड गईं और प्रार्थना करने लगीं कि आप उधर का विचार छोड दें। यह पठान एक प्रसिद्ध डाकू और लुटेरा है, ऐसे आदमी पर भरोसा करना अपनी मृत्यु को आप बुलाना है। उन्होंने यह भी समझाया कि ठटठ का घिराव उठा देने की कुछ ऐसी आवश्यकता भी नहीं है। इस लडाई-झगडे मे हाथ डाले बिना भी आप काबुल का मार्ग अवलम्बन कर सकते हैं। मीर बाबा भी ठटठ का घेरा छोडकर आपका रास्ता नहीं रोकेगा। परन्तु दारा की उल्टी समझ सदा उसको सीधे मार्ग से भडका देती थी। उसे उनकी बात बिल्कुल नहीं जँची। उसने कहा कि काबुल की यात्रा बहुत ही कठिन और भयानक है, और जिस व्यक्ति के मैंने प्राण बचाये हैं, वह इस समय मेरी सहायता अवश्य करेगा। आखिर बहुत समझाने और प्रार्थना किये जाने पर भी वह काबुल न जाकर जीवनखाँ पठान के यहाँ चला गया। जीवनखाँ यह समझता रहा कि दारा के साथ बहुत बडी सेना आती होगी। यही समझकर उसने उसके साथ बडे सम्मान का बर्ताव किया, उसके साथी सिपाहियो को सादर स्थान दिया, और उनके आराम के प्रबन्ध कर देने की अपने आदमियो को आज्ञा दी, परन्तु जब उसे मालूम हो गया कि दारा के साथ दो-तीन सौ आदमियो से अधिक नहीं हैं, तब तुरन्त ही उसके भाव बदल गये। यह पता ही नहीं लगता कि औरङ्गजेब के कहने से अथवा स्वयं अपनी इच्छा से उसने ऐसा विश्वासघात किया, पर जान पडता है कि अशर्फियो के लदे हुए उन कई खच्चरो को देखकर उसे लालच आगया। उसने एक रात को बहुत से लडने-भिडने वाले आदमी इकट्ठा करके पहले तो दारा के सब रुपये-पैसे और स्त्रियो के आभूषण छीनकर अपने अधिकार मे कर लिये, पीछे दारा शिकोह और सिफर शिकोह पर आक्रमण किया, और जिन लोगो ने उनको बचाना

चाहा, उन्हे मार डाला। इसके बाद दारा को बाधकर उसने एक हाथी पर बठाया, और एक वधिक को इसलिये पीछे बैठा दिया कि यदि वह अथवा उसका कोई और आदमी कुछ भी हाथ-पाँव हिलावे, तो वधिक उसी क्षण उसकी समाप्ति कर दे। इस प्रकार अप्रतिष्ठा के साथ उसने दारा को लाकर ठट्ठे मे मीर बाबा के सुपुर्द कर दिया। मीर बाबा ने आज्ञा दी कि इसे लाहौर होते हुए देहली ले जाओ।

"जब भाग्यहीन दारा देहली के निकट पहुँचा, तब औरङ्गजेब ने अपने दरबारियो से इस बात की राय ली कि ग्वालियर के दुग मे कैद करने से पहले उसे देहली मे घुमाना चाहिए या नही? इस पर कुछ लोगो ने तो यह उत्तर दिया कि ऐसा करना उचित नही, क्योकि प्रथम तो यह बात राज-कुटुम्ब की प्रतिष्ठा के विपरीत है, दूसरे इसमें बलवा हो जाने का डर है, और कुछ आश्चर्य नही कि लोग उसे छुडा लें। पर प्राय लोगो की यह राय हुई कि उसे अवश्य एक बार नगर मे घुमाया जाय—ताकि लोगो को भय हो, उन पर बादशाह का रोब छा जाय, तथा जिन लोगो को अभी तक उसके पकडे जाने मे सन्देह बना हुआ है, उनका सन्देह मिट जाय और उसके छिपे पक्षपातियो की आशायें भग हो जायँ। अन्त मे औरङ्गजेब ने भी इसी राय को उचित समझा और दारा को नगर मे घुमाने की आज्ञा दी। अभागा दारा और उसका पुत्र सिफर शिकोह दोनो एक ही हाथी पर बठाये गये और बधिक की जगह बहादुरखा को बैठाकर नगर-पयटन कराया गया। परन्तु वह सिंहल द्वीप का पेरू का हाथी नही था, जिस पर दारा बहुत बढिया सामग्रियो से सजकर बैठा करता था, और बहुमूल्य झूल तथा सनिक आभूषणो से ढका रहता था, यह एक बहुत सडियल और गन्दा जानवर था। स्वय उसके गले मे भी वह बडे-बडे मोतियो की माला, शरीर पर वह जरबफ्त का कबा और सिर पर वह पगडी नही थी, जो भारतवर्ष के बादशाह और उनके कुमार पहना करते हैं। इन वस्तुओ के स्थान मे पिता पुत्र बहुत ही मोटे वस्त्र पहने थे। इसी दशा मे दोनो शहर-भर के बाजारो मे फिराये गये। उनकी दशा देखकर मुझे भय होता था कि कही खून-खराबी न हो जाय। आश्चय है कि ऐसे राजकुमार के साथ, जो लोगो का प्रिय था, ऐसा बर्ताव करने का दरबारियो को कैसे साहस

हुआ ? यह और भी आश्चर्य की बात है कि बचाव के लिये कुछ सेना भी साथ मे नही भेजी गई थी, विशेषकर ऐसी अवस्था मे जबकि औरङ्गजेब के अनुचित काम देखकर सब लोग कुछ दिनो मे उससे रुष्ट हो रहे थे।

"इस अविचार या तमाशा देखने को बड़ी भीड़ जमा थी। स्थान स्थान पर खड़े होकर लोग दारा के दुर्भाग्य पर हाथ मल रहे थे। मैं भी नगर के सबसे बड़े बाजार मे एक अच्छे स्थान पर अपने दो मित्रो तथा सेवको के साथ बढ़िया घोड़े पर चढ़ा खड़ा था। सब ओर से रोने चिल्लाने के शब्द सुन पड़ते थे। स्त्री, पुरुष और बच्चे इस प्रकार चिल्लाते थे, मानो उन पर बहुत ही भयानक विपत्ति पड़ी हो। दुष्ट जीवनखाँ घोड़े पर दारा के साथ था। चारो ओर से उस पर गालियो की बौछार पड़ रही थी, बल्कि कई एक फकीरो और गरीब आदमियो ने उस पाजी पठान पर पत्थर भी फेंके। परन्तु राजकुमार के छुड़ाने का साहस किसी को न हुआ।

"जब सवारी देहली के नगर मे सर्वत्र घूम चुकी, तब अभागा कैदी अपने आप ही एक बाग मे, जिसका नाम हैदराबाद था कैद कर दिया गया। परन्तु उसके नगर मे घुमाये जाने का सब-साधारण पर कैसा बुरा असर पड़ा, लोग जीवनखाँ पर कैसे क्रुद्ध हुए, किस प्रकार पत्थर मार-मारकर कुछ लोगो ने उसे मार डालना चाहा, और किस रीति से विद्रोह मच जाने के लक्षण दिखाई दिये, यह सब औरङ्गजेब ने शीघ्र सुन लिया। एक सभा की गयी—और राय ली गयी कि पहले सोचे हुए उपाय के अनुसार, कैदी को ग्वालियर भेज देना चाहिये या वध कर डालना चाहिये। इस पर किसी-किसी की तो यह सम्मति हुई कि वध कर डालने की इस समय कुछ विशेष आवश्यकता नही है। यदि पहरे और रक्षा का यथेष्ट प्रबन्ध हो सके तो उसे ग्वालियर भेज दिया जाय। दानिशमन्दखाँ ने भी यही सलाह दी कि वह ग्वालियर भेजा जाय। परन्तु अन्त मे अधिक लोगो की राय से यही निश्चित हुआ कि उसका वध किया जाय और उसके पुत्र सिफर शिकोह को ग्वालियर भेज दिया जाय। इस अवसर पर रोशनआरा बेगम ने भी अपना हार्दिक वैर अच्छी तरह प्रकट किया। वह बराबर दानिशमन्दखाँ की राय को रोकती, और औरङ्गजेब को यह अमानुषिक कार्य करने के लिये

उभारती रही। खलीलुल्लाखाँ और शाइस्ताखाँ भी, जो दारा के पुराने शत्रु थे, इसी बात पर विशेष जोर देते थे और तकरुवखाँ नामक ईरानी ने भी, जिसका नाम पहले हकीम दाऊद था, जो किसी कारण विशेष से भारतवर्ष मे भागकर चला आया था, जो बडा खुशामदी था, और अभी थोडे दिनो मे साधारण अवस्था से उच्च अवस्था को प्राप्त हुआ था, इन दोनो का विकट पक्षपात किया। उसने इन सब से बढकर कडी बातें कही और कठोर शब्दो मे कडककर कहा कि—'दारा शिकोह् को जिन्दा छोडना हरगिज मुनासिब नही है। सल्तनत की सलामती और हिफाजत इसी मे है कि फौरन उसकी गर्दन मारी जाये। मुझे तो उसके कत्ल की सलाह देने में जरा भी ताम्मुल नही होता, क्योकि वह बेदीन और काफिर है। और अगर ऐसे शख्श के कत्ल से कुछ गुनाह आयद होता हो तो वह मेरी गर्दन पर हो।' ईश्वरेच्छा देखिये कि जैसा उसके मुँह मे निकाला था, हुआ भी वैसा ही, अर्थात् इस अविचार के रक्तपात का फल उसी को मिला, बहुत शीघ्र बहुत दुर्दशा के साथ मारा गया।

"निदान, इस अन्याय और निर्दयतापूर्ण रक्तपात के लिये नजीर नामक एक गुलाम, जो शाहजहा के यहा पला था और किसी कारण से दारा से असन्तुष्ट था, चुना गया। एक दिन विष खिलाये जाने के भय से दारा और सिफर शिकोह बैठे अपने हाथ से दाल बना रहे थे, कि सहसा नजीरखा चार दूसरे दुष्टो को लिये हुए उन दोनो के निकट जा पहुँचा। उसे देखते ही दारा ने सिफर शिकोह से कहा कि 'लो बेटा, हमारे कातिल आ गये।' यह कहकर उसने रसोई घर की एक छोटी छुरी उठा ली, क्योकि वहाँ और कोई अस्त्र-शस्त्र नही था, परन्तु उन वधिको मे से एक ने तो सिफर शिकोह को पकड लिया और शेष सब उस पर टूट पडे। उन्होंने उसको भूमि पर पटक दिया और नजीर उसका सिर काटकर तुरन्त औरङ्ग-जेब के पास ले गया।

"औरङ्गजेब ने वह कटा हुआ सिर एक बर्तन मे रखकर उसके मुख पर का रक्त धुलवाया। जब उसे निश्चय हो गया कि यह दारा ही का सिर है, तब उसके आँसू निकल पडे और एक बार "ऐ बदबख्त !" कहकर वह बोला—'अच्छा, इस बदङ्गेज सूरत को मेरे सामने से ले जाकर हुमायूँ के

मकबरे मे दफन कर दो।' अब दारा के कुटुम्ब का हाल सुनिये। उसकी पुत्री तो उसी रात महल मे भेज दी गयी, जो कुछ दिन बाद शाहजहाँ और बेगम साहब (जहाँनारा बेगम) की प्रार्थना से उनके सुपुर्द की गई और उसकी बेगम ने पहले ही यह सोचकर कि हमको दुख का पहाड़ उठाना पडेगा, मार्ग ही मे लाहौर में विष खाकर अपने प्राणो का अन्त कर दिया। रहा सिफर शिकोह—वह ग्वालियर के दुर्ग म भेज दिया गया, जहाँ कैद किया गया। (दारा शिकोह का सिर २२ वी अक्तूबर १६५६ को काटा गया था।)

"इस लोमहर्षक घटना के बाद जीवनखाँ तुरन्त दरबार मे बुलाया गया और कुछ इनाम आदि देकर विदा कर दिया गया। परन्तु यह दुष्ट भी अपनी क्रूरता का फल पाये बिना न रहा। अर्थात् जिस समय यह देहली से लौटकर ऐसे स्थान मे पहुँच गया था—जहाँ से उसका देश उससे दस बारह कोस ही रह गया था, कि कुछ मनुष्यो ने जो पहले से घात लगाये जगल मे बैठे थे—उसे घेर कर मार डाला।

"दारा का पुत्र सुलेमान शिकोह श्रीनगर के राजा के यहाँ छिप गया। था। परन्तु राजा को जब बहुत धमकाया गया, तो वह भयभीत हो गया। वह बलपूर्वक पकडकर दिल्ली लाया गया। जब बादशाह के सामने सुनहरी हथकडी पहनाकर लाया गया तो उसके सुन्दर शरीर को घायल और बेबस देखकर दरबारी रोने लगे। औरङ्गजेब ने दुख और सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा—

'खुदा पर नजर और इत्मीनान रखो कि तुम्हे कुछ जरर न पहुँचाया जायगा। बल्कि तुम्हारे साथ मेहरबानी की जायगी। तुम्हारा बाप तो सिर्फ इसलिये कत्ल किया गया था कि वह काफिर था।' इस पर सुलेमान ने हाथ ऊँचाकर और झुककर बादशाह को सलाम किया और कहा—'अगर हुजूर की मंशा है कि मुझे पोस्त पिलाया जाया करे, बहतर है कि मै अभी कत्ल कर दिया जाऊँ।' इस पर बादशाह ने पोस्त न पिलाने की प्रतिज्ञा की और फिर उसे ग्वालियर के किले मे कैद कर दिया गया।"

मुराद अभी कैद मे था, पर उसके प्रशसक अभी बहुत थे। बादशाह उस काँटे को भी एक दम काट डालना चाहता था। एक दिन एक सैयद

के पुत्रो ने आकर नालिश की कि मुराद ने उनके पिता को कत्ल करा डाला है, सो उसका सिर मिलना चाहिए। इसका किसी ने विरोध न किया, और मुराद के सिर काट लेने की आज्ञा दे दी गई।

अब शुजा रह गया। उसे मीर जुमला ने किसी योग्य न छोडा था। औरङ्गजेब बराबर उसकी मदद मे सेना भेज रहा था। अन्त मे वह ढाके की ओर भाग गया, जो समुद्र के किनारे बगाल का अन्तिम नगर है। अब कहाँ जाय? सो उसने अराकान के राजा की शरण ली। राजा ने उसे आश्रय दिया, पर जहाज न दिया। अब भी उसके पास बहुत धन था। शुजा को भय हुआ कि कही मैं लूटा न जाऊँ। राजा ने उससे प्रस्ताव भी किया कि वह अपनी लडकी उसे ब्याह दे, पर शुजा ने न स्वीकार किया। उल्टे उसने एक षड्यन्त्र रचा, जिसमे बहुत-से पुर्तगीज लुटेरे और राजा के रिश्तेदार भी सम्मिलित थे। इसका अभिप्राय यह था कि महल पर आक्रमण करके राजा और उसके परिवार को कत्ल कर दिया जाय। पर भेद खुल गया और उसने पेगू को भाग जाना चाहा, पर रास्ता ऐसा विकट था कि यह सम्भव न हो सका। अत वह परिवार सहित पकडा गया और मार डाला गया। उसकी लडकी से राजा ने विवाह कर लिया। शेष परिवार के लोग कैद कर दिये गये। पर उसके पुत्र सुलतान बाकी ने फिर षड्यन्त्र रचा और फिर भण्डा-फोड हुआ। इस बार शुजा का परिवार-भर कत्ल कर दिया गया, जिसमे वह लडकी भी थी, जिसे राजा ने विवाहा था, तथा जो गर्भवती थी। सब के सिर कुल्हाडे से काटे गये।

इस प्रकार छ वर्ष के अन्दर यह मुगल-परिवार की आग बुझी और अब अकेला औरङ्गजेब बिना प्रतिद्वन्दी के महान् साम्राज्य और सत्ता का स्वामी था।

बादशाह की तख्तनशीनी का वर्णन बर्नियर इस भाँति करता है—

"उस दिन बादशाह दीवान-ए-खास मे तख्त-ताऊस पर बैठा था। उसके कपडे बहुत ही सुन्दर और फूलदार रेशम के बने हुए थे और उन पर बहुत अच्छा जरी का काम किया हुआ था। सिर पर जरी का एक मंदील था जिस पर बडे-बडे बहुमूल्य हीरो का तुर्रा लगा हुआ था। उसमें एक पुखराज ऐसा था, जो बेजोड कहा जा सकता है। वह सूर्य के समान चमक

था। उसके गले मे बडे-बडे मोतियो का एक कण्ठा था, जो हिन्दुओ की माला की तरह पेट पर लटकता था। छ सोने के पायो पर यह तख्त बना है। कहते हैं कि यह बिल्कुल ठोस है और इसमे याकूत और कई प्रकार के हीरे जडे हुए हैं। मैं उनकी गिनती और मूल्य निश्चित नही कर सकता, क्योकि इसके निकट जाने की किसी को आज्ञा नही है। इससे कोई कीमत आदि का पता नही लगा सकता, पर विश्वास किया जाय कि इसमे हीरे और जवाहरात बहुत है।

"मुझे याद है कि इसका मूल्य चार करोड रुपया आका गया था। यह तख्त शाहजहाँ ने इसलिये बनाया था कि खजाने मे पुराने राजाओ और पठानो से लूटे हुए और अमीर उमरा से नजर मे आये हुये जो जवाहरात इकट्ठे हो गये थे, उन्हे लगा देखे। उसकी बनावट और कारीगरी भी उसके जवाहरातो के समान ही है। दो मोर तो मोतियो और जवाहरात से बिल्कुल जडे हुए है। इसको एक फ्रासीसी कारीगर ने आश्चर्यजनक रीति से बनाया था।

"तख्त के नीचे की चौकी पर चाँदी का कटहरा लगा था। ऊपर जरी की झालर का एक बडा चँदुआ टँगा था। उमरा बहुमूल्य वस्त्र पहने खडे थे, और रेशमी चँदुए, जिनमे रेशम और जरी के फुँदने लगे हुये थे, इतने थे कि गिनती नही। बहुत बढिया रेशमी कालीन बिछे हुये थे। बाहर एक बडा भारी खम्भा था, जो सहन मे आधी दूर तक फला था और चादी की पत्तियो म मँढे हुए कटहरा से घिरा था।

"इस खेमे के बाहर की ओर लाल रग का कपडा लगा था और भीतर मछलीपट्टम की सुन्दर छीट थी, जो अति उत्तम तथा प्राकृतिक मालूम देती थी। अमीरो को आज्ञा थी कि वे आमखास के चारो ओर की महरावें अपने-अपने खर्च से सजावें। इसके फलस्वरूप सादी दीवारें कमखाब और जरी से ढक गई थी और जमीन बहुमूल्य कालीनो से भर गई थी।"

१४

औरङ्गजेब

सब तरफ से निष्कटक होकर यह व्यक्ति सन् १६६५ मे गद्दी पर बैठा। इस समय आठ दिन तक प्रत्येक प्रसिद्ध नागरिक और सब अमीर-उमराओ ने नजर गुजारी। वह यह जानता था कि उसके पारिवारिक अत्याचार के कारण सब लोग उससे बदजन हैं, इसलिए उसने अमन-अमान कायम करने की चेष्टा की। जिन्होने उसकी मदद की थी, उन्हे भारी इनाम दिये गये। राजा जयसिंह को साभर का इलाका दिया गया। अन्य उमराओ को भी इलाके दिये गये। खास-खास व्यक्तियो की तनख्वाहे बढाई गईं। अमीरो को जवाहरात की जडी तलवारें, एक-एक हाथी और एक-एक घोडा दिया गया। इससे बहुत लोग उसकी वाह-वाही करने लगे।

जश्न के अन्त मे उसने पाँच सौ कैदियो का, जो जेल मे थे, सिर कटवा लिया, जिसमे सब डरें। यह रस्म कदम-रसूल नामक मस्जिद के सामने अदा की गई जो लाहौरी दरवाजे से कोई डेढ मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे थी।

चिरागदेहली मे इसका दरबार था। उसने पुराने हाकिमो को बदल कर नये ओहदेदार बनाये। बहुत-से हुक्म मतलब के भी दिये गये। इस प्रकार आस-पास उसने सब प्रबन्ध ठीक कर लिया।

तख्त पर बैठते ही इसने शराब के विरुद्ध क्रूर आन्दोलन किया। वह जानता था कि देश मे शराब की खूब बिक्री थी—जहाँगीर के जमाने से ही इसका प्रचार बढ गया था। शाहजहाँ के जमाने मे भी दारा की देखा देखी लोग उसे खूब पीने लगे थे। शाहजहाँ ने प्रजा के आनन्द मे विघ्न डालना

नही दिया। इसने एक बार जोश मे आकर कहा—"तमाम हिंदुस्तान मे सिर्फ दो व्यक्ति है, जो शराब नही पीते—एक मैं, दूसरे काजी अब्दुल-वहाव," परन्तु सच कहा जाय, तो दोनो ही चुपचाप शराब पीते थे। इसने हुक्म दिया कि तमाम ईसाई डॉक्टर शहर को छोडकर तोपखाने के कान के पास चले जायें, जो शहर से एक फर्लांग के फासले पर था। वहा उन्ह शराब खीचने और पीने की आज्ञा थी, परन्तु अन्या को बेचने की मनाही थी। फिर इसने कोतवाल को हुक्म दिया कि शराब बेचने वालो का एक-एक हाथ और एक एक कान काट लिया जाय। कोतवाल यद्यपि पूरा शराबी था, पर वह मुस्तैदी से इस हुक्म की तामील मे लग गया।

थोडे ही दिन मे शराब-फरोशी बन्द हो गई। परन्तु धीरे-धीरे वह फिर जारी होने लगी, और अमीर लोग चुपचाप शराब खीचने लगे।

इसी तरह उसने भग और अफीम के विरुद्ध भी खूब सख्ती की। इसके लिये खास अफसर नियुक्त किया। उसे हुक्म था कि वह इन सब नशो का रिवाज उठा दे। पर यह सख्ती भी धीरे-धीरे कम हो गई।

इसके बाद उसने हुक्म दिया कि कोई मुसलमान चार अँगुल से ज्यादा दाढी न रक्खे। इसके लिए एक अफसर नियुक्त किया, जो अपने सिपाहियो के साथ लोगो की दाढी नापे, और जिसकी दाढी बडी देखे उसे काट दे, तथा मूँछो को काटकर साफ कर दे। यह अफसर भी बडी मुस्तदी से कैंची-पैमाना लिये फिरा करता था। इस अफसर को देखते ही मजा यह होता था कि बहुत-से लोग अपने-अपने मुँह ढाँप लेते थे कि वह उनकी दाढ़ी न काटले।

उसने गाने-बजाने के विरुद्ध भी हुक्म दिया कि जहाँ गाने-बजाने की आवाज आवे, घुसकर बाजो को तोड डालो। इस पर कुछ गवैयो ने मिल-कर एक तरकीब की। जब बादशाह जुमे की नमाज को जा रहा था, तब कोई पाँच हजार आदमी बीस-पच्चीस जनाजे बनाकर खूब रोते-पीटते-चिल्लाते उधर से निकले। बादशाह ने देखकर पूछा—"यह क्या है ?" तब उन्होंने हाजिर होकर कहा—"हुजूर, मौसीकी मर गई है, उसी का यह जनाजा है।" बादशाह ने हुक्म दिया—"उसे इतना गहरा गाडो कि फिर न निकल सके।'

अब उसने रंडियो की शादी करने का हुक्म दिया। शाहजहाँ के जमाने मे इनकी बडी वृद्धि होगई थी। जो रडी शादी न करती थी, उसे देश-निकाले की सजा थी। इससे शीघ्र ही रडियो के मुहल्ले उजाड होगये।

महावत लोग मुगल-दरवार के नियम के अनुसार हाथियो को दरबार मे सलामी के लिये लाते थे। तब वे यह शरारत किया करते थे कि बाजार में उन्हे भडका देते थे, जिससे वे दुकानो को तोडते फोडते तथा आदमियो को कुचलते चलते थे, खासकर उन लोगो से, जिनसे उन्हे द्वेष हो, वे खूब बदला लेते थे। बादशाह ने पूछा—"हाथी खुद दीवाना हो जाता है, या दीवाना कर दिया जाना भी मुमकिन है ?"

महावतो ने उसका मतलब न समझा, और जवाब दिया—"जहाँपनाह, हाथी को जब चाहे, कुछ दवाइया खिलाकर मस्त बनाया जा सकता है।" इस पर बादशाह ने हुक्म दिया कि महावतो से लिखवा लिया जाय कि यदि कोई हाथी किसी का नुकसान करेगा, तो उसका हरजाना महावत से लिया जायगा।

हम पहले कह चुके हैं कि मुगल-सल्तनत मे फकीरो की दुष्टता का बडा ज़ोर था। ये लोग दुष्ट, जिद्दी तथा गुस्ताख होते थे। सब लोग इनसे डरते थे। ये लोगो को अन्धविश्वासो मे खूब फँसाते थे। जब लोग इनके पास जाते, कुछ-न-कुछ चढावा साथ मे ले जाते थे। गडे-तावीज़ देते तथा औरतो को मौका पाकर फुसलाते थे। इनके पास सकडो दासियाँ और कुटनिया होती थी, जो बडे घर की स्त्रियो को फुसलाया करती थी, और इधर-उधर की खबरें उन्हे देती थी, जिन्हे बताकर ये पाखडी औलिया बन जाते थे। इस बादशाह ने यद्यपि इनका कुछ भी प्रबन्ध नही किया, पर उन बारह औलियाओ को सजा दी, जिन्होंने दारा के बादशाह होने की भविष्य-वाणी की थी। उन्हे बुलाकर उसने कहा—"कोई करामात दिखाओ। इसके लिए मैं तीन दिन की मुहलत देता हूँ।" यह सुनकर वे घबराये। वे जानते थे कि यह मखौल नही है, इनमे से दो ने तो फौरन कह दिया कि हम बलख के निवासी है, हम खुदा को छोडकर और कुछ नही जानते। बाकी बेचारो ने बहुत से जिन्नात को जगाया, कुर्बानियाँ की, पर उन्हे बादशाह ने बुलवाया और कहा कि या तो कोई करामात दिखलाओ, वर्ना कोडे लगवाये जायँगे,

तो वे चुप रहे। परिणाम यह हुआ कि कुछ को भिन्न भिन्न किलो मे कैद कर दिया गया, और कुछ को देश से निकाल दिया। इनमे से एक प्रसिद्ध औलिया की गदन भी काटी गई। इसका नाम शाह सैयद सरमद था। ये एक ईश्वरवादी साधु थे। एक जौहरी के पुत्र अमीचन्द से उन्हे प्रेम होगया था। उसी आवेश मे ये उसे खुदा कहा करते थे। ये बहुधा नगे रहते थे। उस जमाने मे कवी नाम का दिल्ली का काज़ी था। उसने औरङ्गजेब से शिकायत की कि सरमद नाम का एक शख्स शहर मे नगा फिरता है, वह कलमा नही पढता, और अमीचन्द को खुदा कहता है। औरङ्गजेब ने तुरत सिपाहियो द्वारा उसे गिरफ्तार कराया और अपने दरबार मे बुलाया। उनकी जो बातें हुईं, वह 'मुन्तखेबुल नफाइस' नामक फारसी की किताब मे इस तरह दज है—

औरङ्गजेब—खुदायत कीस्त ऐ सरमद दरी दहर (तेरा खुदा कौन है ऐ सरमद इस आलम मे)?

सरमद—नमी दानम अमीचन्दस्त या गर (मैं नही जानता कि अमीचन्द के सिवा कोई और है)।

औ०—सरमद! जामा चिरा नम पोशी (ए सरमद! कपडे क्या नही पहनता)?

सरमद—आँकस कि तुरा मुल्को जहाँदानी दाद।
मारा हमाँ अस्बाबे परेशानी दाद॥
पोशा लिबास-हर किरा-ऐबे दीद।
बे एबाराँ लिबासे उरियानी दाद॥

(जिस शख्स ने तुझे मुल्क और बादशाहत दी और मुझको तमाम सामान परेशानी के दिये उसी शख्स ने उसको लिबास पहिनाया, जिसमे कि ऐब देखा और बऐबो को नगेपन का लिबास दिया)।

औ०—सरमद, कल्मा चिरा न मे खादी (सरमद, कल्मा क्या नही पढ़ता)?

सरमद—चुनूनाँ मुआनम के वर मन पर्शोम्न शर्तां (किस तरह पढ़ूँ, क्योंकि मेरा शैतान जबरदस्त है)।

बादशाह इस बातचीत से बहुत नाराज हुआ। उसने हुक्म दिया कि यदि वह अपने विचार न बदले तो इसकी गर्दन काट ली जाय। तमाम दरबारियो ने समझाया कि वह इन तीन बातो से तौबा करले। लेकिन सरमद ने साफ कह दिया कि मैं अपने मे कोई ऐब या चोरी-कपट नही देखता कि तौबा करूँ। मेरा आत्मविश्वास मेरे साथ है, और वह पवित्र है, जो किसी के माग मे बाधा नही डालता। मैं तौबा नही करूँगा।

उसके बाद जल्लाद को बुलाया गया। उस जमाने मे जल्लाद सुर्ख पोशाक मे आया करते थे। सरमद ने जल्लाद को सुर्ख कपडो मे आते देखा तो बहुत हँसा और मौज मे आकर उसने यह शेर पढा—

बहर रगे के ख्वाही जामा मे पोश।
मन अज अंदाए कद्दत मे शनासम।

(जिस रग के तेरा जी चाहे कपडे पहन ले, मैं तो तेरे कद की खूबसूरती से तुझे पहचानता हूँ।)

निदान, जल्लाद ने बढकर एक हाथ मारा और उसकी गर्दन से सिर अलग होगया। कहते हैं गर्दन बजाय जमीन पर गिरने के एक नेजा ऊँची हो गई और उस वक्त भी एक शेर उसके मुँह से निकला—

सर जुदा कर्द अज तनम् शोखे कि बामा यार बूद।
किस्सा कोताह गश्त वरना दर्द-सर मे बिसियार बूद।

(सर मेरा उस माशूक ने जुदा किया, जो मेरा बहुत दोस्त था। चलो, किस्सा खतम हुआ, वरना बडी सिर-दर्दी थी।)

मुसलमानी किताबो मे आलिमो ने इस काम को अच्छी नजर से नही देखा। मुसलमान अब तक सैयद सरमद के औलिया होने के कायल हैं। उनका मजार दिल्ली मे पूर्वी दरवाजे की तरफ जामा-मस्जिद के सामने हरे-भरे पीर के पास ही है, जहाँ आज तक हिंदू-मुसलमान उनकी जियारत करते है। किसी मुसलमान शायर ने यह शेर भी लिखा है—

सर कटा है जब से सरमद का।
तख्त नाराज हो गया है हिंदू का।

अक्वर ने एक नियम वनाया था, और अब तक जारी था—कि जब कोई आदमी शाही दण्ड से डरकर भाग आता था, और मुगल-राज्य मे आश्रय ढूंढता था, तो उस पर निगरानी की जाती थी। इसके लिये गुप्तचर नियुक्त होते थे, जो भिन्न भिन्न पशे वाले होते थे। ये लोग भी वहुत-सी खबरें देते थे। इनकी वदौलत वादशाह सव वातो का पता लगाते थे। औरङ्गजेब ने इस विभाग को खूब उन्नत किया था।

औरङ्गजेब ने इस वात की चेष्टा की कि लोगो के दिल मे शाहजहां की प्रतिष्ठा नष्ट हो जाय, और इसकी इज्जत वढ जाय। वह वहुधा शाहजहा के प्रयत्नो पर नुकता-चीनी किया करता था। इसमे कुछ वातें खास थीं—जैसे मीनाबाजार खोलना, नौकर-चाकरो को विगाडना, वजीरो को मुंह लगाना आदि।

जो हिंदू राजा उसके दरवार मे आते, उनके साथ वादशाह ऊपर से अच्छा सुलूक करता था, और उन्हे यथा-शक्ति कुछ देता था। पर जव जरा भी उसे शका होती कि इनसे हानि होगी, वह चुपचाप उनका सिर कटवा लेता था।

बादशाह के गद्दी पर बैठते ही भिन्न भिन्न देशो के वादशाहो ने उसके पास भेंटें और दूत भेजने शुरू कर दिये। सवसे प्रथम उजवक-जाति के तातारी वादशाह ने मुवारिकबादी देने को एलची भेजे। वे जब दरबार मे आये, तब शाही दर्बारी रीति से तीन बार कोर्निश करके आदाब बजाया और खरीता पेश किया, जिसे बादशाह ने एक अमीर के द्वारा लिया। उसे पढकर उसने उन्हे खिलअत दी, और फिर नजर पेश करने का हुक्म दिया। इनमे थे लाजवद के बने हुए कई उम्दा सन्दूक, लम्बे-लम्बे वालो वाले कई ऊँट, कुछ सुंदर तुर्की घोडे, कई ऊँट ताजे फलो—जैसे अंगूर, सेव, नाशपातियो से लदे हुए, कई ऊँट सूखे मेवो—जैसे आलूबुखारा, खुबानी, काले-सफेद अत्यन्त स्वादिष्ट अंगूर, किशमिश आदि से लदे हुए, आदि आदि।

वादशाह इन्हे देखकर वहुत प्रसन्न हुआ, और तोहफे की वहुत-वहुत तारीफें की। ये एलची चार महीने दिल्ली मे रहे। सवका खर्च वादशाह ने दिया। अन्त मे सवको सिरोपाह आठ आठ हजार रुपये नकद,

और उनके मालिका के लिये बहुमूल्य कारचोवी के थान, तनजेब और मलमल के इलाहचिये, कालीन, जडाऊ मूठ के खञ्जर आदि भेजे।

इसके वाद डचा ने भी अपना एलची भेजा। उसने प्रथम शाही ढग पर आदावगाह पर तसलीमात अर्ज की, और फिर नज़दीक आकर अपने देश के ढग पर सलाम किया। बादशाह ने खरीता अमीर-द्वारा लेकर पढा और नजरो को देखा। उनमे कुछ तो लाल और हरे रङ्ग की वानात के वढिया थान थे, कुछ वडे-वडे आईने थे, कुछ चीन और जापान की बनी हुई चीजें थी, जिनमे एक पालकीनुमा सिंहासन बहुत सुन्दर था। इसे कुछ दिन दरबार मे रख, बहुत-कुछ इनाम-इकरार दे विदा किया गया।

इसके बाद एक ही साथ पाँच एलची आये। एक मक्के से आया था, जो कई अरबी घोडे और एक झाड़ लाया था, जो काबे मे झाडने के काम आ चुकी थी। दूसरा यमन के बादशाह का था, तीसरा बसरे के हाकिम का। ये लोग भी भेंट मे अरबी घोडे लाये थे। दो एलची अन्य दो देशो के बादशाहो ने भेजे थे, इनके सामान बहुत सामान्य थे, और इनका सत्कार भी साधारण ही हुआ।

इसके बाद ईरान के बादशाह का एलची आया और इसका स्वागत बडी धूम-धाम मे हुआ। तमाम बाज़ार सजाये गये, और तीस मील तक पंक्तिबद्ध सवार खडे किये गये। उसकी तोपखाने से सलामी उतारी गई। उसने ईरानी रीति पर बादशाह को सलाम किया, तथा बादशाह ने उसके हाथ से खरीता अमीर के द्वारा न लेकर अपने हाथो मे आदर से लिया, और पढा। फिर सिरोपाव दिये। भेंट की वस्तुओ मे पच्चीस ऐसे सुन्दर घोडे थे, जैसे हिन्दुस्तान मे कभी न देखे गये थे। हाथी के बराबर बडे-बडे बीस ऊँट थे। गुलाव और वेदमुश्क के जल से भरे हुए बहुत-से सन्दूक, पाच-छ बडे-बडे कालीन, कई बहुत ही वढिया कारचावी के थान, जडाऊ मूठ के दमिश्क के बने चार खञ्जर, चार जडाऊ तलवारे, पाच-छ घोडो के बहुत ही सुन्दर और बहुमूल्य साज, जिन पर मोतिया और फीरोजो का बहुत वढिया काम हो रहा था।

बादशाह इन भेंटो से बहुत प्रसन्न हुआ, और एलची को चार-पाच महीने दरबार मे रखा, उसे उमरा मे स्थान दिया, और बहुत सम्मान से

विदा किया। इस बादशाह के पास अपना खास एलची भेजकर भेंट भेजने का बादशाह ने मसूबा ज़ाहिर किया।

यद्यपि उसने शाहजहाँ को बडी मुस्तैदी से कद कर रखा था, और जरा भी इसकी तरफ से बेखबर न था, पर ऊपर से उससे बहुत अदब और सम्मान का बर्ताव करता था। उसे उन शाही महलो मे रहने की आज्ञा दे दी गई थी, जिनमे वह पहले रहा करता था। उसकी पुत्री जहाँआरा उसके पास रहती थी। महल की और औरत भी, जसे नाचने-गानेवाली, खाना बनानेवाली भी उसके पास रहती थी।

अब शाहजहा को ईश्वर-भक्ति की भी चाट लगी थी। कई मुल्ला भी उसके पास जाकर धम पुस्तके सुनाया करते थे। घोडे, बाघ आदि कई प्रकार के शिकारी जानवरो के मँगाने और हिरनो तथा मेढो की लडाई की भी परवानगी मिल गई थी। इस प्रकार वह हर तरह स बूढे बादशाह की दिलजोई करता था। वह अधिकता से उसके पास भट की चीज भेजता रहता था, और राजनीति के विषय मे उसकी सलाह लेता रहता था। उसके पत्रो से जो वह समय समय पर लिखता रहता था, श्रद्धा और आज्ञाकारिता टपकती थी। इन बातो से शाहजहाँ का क्रोध ठण्डा पड गया, और वह औरगजेब से पत्र-व्यवहार करने लगा। दाराशिकोह की पुत्री को भी उसके पास भेज दिया गया था। शाहजहाँ न उन रत्नो को भी स्वय उसके पास पहुँचा दिया, जिनके विषय मे पहले उसन कहा था कि यदि माँगोगे, तो इनको कूटकर चूर-चूर कर दूँगा। अन्त मे उसने विद्रोही पुत्र को क्षमा कर दिया और उसके लिय ईश्वर स प्रार्थना करने लगा।

परन्तु वास्तव मे औरङ्गजेब के मन मे चोर तो बना ही था और वह भीतर से चाक-चौबन्द बना रहता था।

इसी बीच औरङ्गजेब बीमार पडा। उसे बार बार ज्वर चढता था, और वह बहोश होजाता था। वैद्य-हकीम निराश हो गये, और दरबार मे घबराहट फैल गई। यह अफवाह फैल गई कि बादशाह मर गया है। यह भी अफवाह जोर कर गई कि महाराज जसवन्तसिंह और महावतखाँ शाहजहाँ को कद से छुडाने की चिन्ता कर रहे हैं।

यह घटना घटते ही सुलतान मुअज्जम ने अमीरो को घूँस दे-देकर

अपने पक्ष मे कर लिया। यहाँ तक कि एक दिन उसने रात को राजा जयसिंह के पास जाकर बहुत-कुछ खशामद-दरामद की। इधर रोशनआरा बेगम ने भी बहुत से अमीरो को मिला लिया, जिनमे तोपखाने का प्रधान अधिकारी फिदाअली मीर आतिश भी था। उसकी चेष्टा अकबर को गद्दी पर बैठाने की थी, जिसकी अवस्था सात आठ वर्ष ही की थी।

पर सब लोग जानते थे कि शाहजहा को कैद से बाहर निकालना क्रुद्ध शेर को बाहर निकालना है। सब दरबारी उसके छूटने की चिन्ता से घबरा रहे थे। सबसे अधिक भय एतबारखाँ को था, जो अकारण कैदी बादशाह से निर्दयता का व्यवहार करता था।

औरङ्गजेब बीमारी की हालत मे भी इधर से बेखबर नही था। होश मे आते ही वह शहजादा मुअज्जम को कहता कि यदि मैं मर जाऊँ तो बादशाह को कैद से छुडा लेना, पर एतबारखाँ को बार-बार लिखता था कि खबरदार, अपने काम मे मुस्तैद रहना। बीमारी के पाचवें दिन बादशाह ने साहस करके कहा—"हमको दर्बार ले चलो।" इसका अभिप्राय यह था कि उसके मरने की जो अफवाह फैली हुई है, वह मिट जाय। इस प्रकार वह उसी दशा मे, सातवें, नवें और दसवें दिन भी दरबार मे गया, और कुछ बडे-बडे अमीरो को पास बुला भेजा। इसके बाद वह स्वस्थ होने लगा। स्वस्थ होने पर उसने दारा की पुत्री को शाहजहाँ के यहाँ से मँगाकर अपने बेटे अकबर से उसकी शादी करने की इच्छा प्रकट की, पर शाहजहा और शहजादी ने घृणापूर्वक इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

आरोग्य लाभ होने पर हकीमो ने उसे जलवायु बदलने काश्मीर जाने की सलाह दी। पर वह डरता था कि कही बुड्ढा शाहजहाँ फिर गद्दी पर न बैठ जाय। उसने कैद की सख्तिया बढा दी। उसने वह खिडकी भी बद करवा दी, जो जमना की तरफ थी और जिसमे शाहजहा बाहर का नज़ारा देखता और हवा खाता था। उसने खिडकी के नीचे बन्दूकची नियत कर दिये थे कि यदि शाहजहा उधर को झुके तो गोली मार दें। यहाँ का सब सामान भी उठा लिया गया। पर शाहजहाँ चुपचाप सब सह गया। वह खूब नाच-रग और गाने-बजाने मे मस्त रहने का ढोग करने लगा। औरङ्गजेब ने यह सुनकर उसे जहर देने का इरादा किया और मुकरमखाँ

को इस काम के लिये लिखा, जो शाहजहाँ का हकीम और भक्त था। उसे बादशाह ने लिख दिया कि जो चीज ख्वाजासरा फहीम आपको देगा, वह शाहजहाँ को खिला दें, वरना जिन्दगी से हाथ धो लीजिये। उसने जवाब दिया—बादशाह ने जो हुक्म दिया है मैं उससे ज्यादा अच्छा काम करूँगा। मेरे लिये यह उचित नहीं कि जिसने विश्वास करके अपना शरीर मुझे सुपुर्द किया है उसीसे दगा करूँ। यह सोच, उसने स्वयं जहर खा लिया, और मर गया। औरङ्गजेब ने यह सुना तो लज्जित हुआ, और बादशाह को मारने के दूसरे उपाय सोचने लगा। पर गर्मी निकट आगई थी, और उसे काश्मीर जाना जरूरी था।

अन्त में बादशाह ने काश्मीर की यात्रा की। इस यात्रा में दो लाख आदमी उसके साथ थे। पाठक इस यात्रा के व्यय का अनुमान कर सकते हैं। दो वर्ष में बादशाह इस यात्रा से लौटा। परन्तु एक दिन के लिये भी बादशाह के नित्य-नियमित दरबार आदि में अन्तर नहीं आया।

आठ वर्ष कैद में रहकर शाहजहाँ की मृत्यु हुई। पिता के मरने का ढोंगी औरंगजेब ने बड़ा शोक किया। वह तुरन्त आगरे आया। वहाँ पहुँचने पर उसकी बहन जहाँआरा ने उसका बड़ी धूम धाम से स्वागत किया। कमख्वाब के थान लटकाकर बादशाही मस्जिद सजाई गई—और इसी प्रकार वह मकान भी, जहाँ औरङ्गजेब का इरादा ठहरने का था। औरङ्गजेब महल में पहुँचा तो शाहजादी ने एक बड़ा-सा सोने का थाल जवाहरात से भर कर बादशाह की नजर किया। उसका यह सत्कार देखकर औरङ्गजेब का मन भी पसीज गया और उसने बहन की सब पुरानी बातें भुलादीं, और कृपा तथा उदारता का व्यवहार उसके साथ किया।

शाहजहाँ के मरते ही उसने जेहाद की तलवार उठाई। सर्वप्रथम उसने सब हिन्दू अफसरों को पदच्युत कर दिया, जिससे प्रबंध में एक अंधेरगर्दी मच गई। इसके बाद उसने काशी पहुँचकर पण्डितों को हुक्म

मन्दिर ढहा दिये जायँ, मूर्तिया तोड दी जायँ, और सब प्रकार के हिंदुओ की पाठशाला बन्द कर दी जायँ ।

फिर वह कुरुक्षेत्र के मेले मे पहुँचा, और लाखो मनुष्यो को अकारण कत्ल करा डाला। इन सब बातो से राज्य भर मे अशान्ति और विद्रोह फैल गया । प्रबन्ध तो प्रथम ही गडबड हो गया था । नारनौल मे सत्यनामी साधुओ ने विद्रोह खडा कर दिया, जो एक वर्ष मे दबाया जा सका, और उसमे बहुत सी मुगल-सेना नष्ट हुई ।

इन सब बातो से चिढकर और राज्य कोष के खाली हो जाने के कारण उसने प्रजा पर 'जजिया' का टैक्स लगा दिया, और देशी राज्यो के राजाओ को भी वह टैक्स वसूल करने की आज्ञाएँ भेजी ।

जब जब बादशाह जुम्मे की नमाज पढने आता, प्रजा बार-बार एकत्र होकर उससे कुछ अर्ज करने के लिये उपस्थित हुई । सामने आने पर औरङ्गजेब ने उसे हाथियों से कुचलवा देने का हुक्म दे दिया, जिससे भीतर ही भीतर प्रजा दहकने लगी ।

जहा औरङ्गजेब ने इतने प्रबल शत्रु चारो तरफ पैदा कर लिये थे, वहाँ वह अपने मित्रो और सहायको को भी सन्देह और भय की दृष्टि से देखता रहा । उसने जिस प्रकार अपने वंश का मूलोच्छेद किया, यह पाठक देख चुके हैं । फिर उसने अपने खास वीर पुत्र को आजम ग्वालियर के दुर्ग मे कैद कर दिया, यह भी पाठक देख चुके है । अपने वीर और प्रबल सामन्त जयसिंह और जसवन्तसिंह को भी उसने जहर खिलाया ।

उसे मीरजुमला का भय सदा बना रहता था । वह बंगाल मे निष्कंटक राज्य कर रहा था । पर उसने उसे खाली न बैठने दिया और आसाम पर चढाई करने की आज्ञा दी । उसका मतलब यही था कि वह दूरस्थ और अपरिचित देश मे जाकर मरे। उसके बाल-बच्चे उसने अब तक भी अपने काबू मे रख छोडे थे । इस मुहिम से वह बहुत-सी जान-माल की हानि कराकर लौटा और उसका स्वास्थ्य इतना गिर गया कि वह बंगाल लौटने के कुछ दिन बाद ही मर गया । उसके मरने की सूचना पाकर उसने मीरजुमला के पुत्र से कहा—"तुम अपने स्नेही पिता के लिये शोक करते हो, और मैं अपने शक्तिशाली और अति भयानक मित्र के लिये दु खित हूँ ।"

राणा से सन्धि होने के बाद बादशाह ने अपनी समस्त शक्ति दक्षिण-विजय पर लगादी। वह अन्त में स्वयं भारी सेना लेकर दक्षिण पर चढ़ गया, और चौबीस वर्ष तक मरहठों से टक्कर लेता रहा। उसे फिर दिल्ली देखनी नसीब न हुई। मरहठों ने समस्त दक्षिण पर अधिकार कर लिया। साथ ही मुगलों के भी बहुत से प्रान्त जीत लिये। इससे इसका दिल टूट गया, और वह वहीं मृत्यु को प्राप्त हुआ।

शाइस्ताखाँ ने इस समय बादशाह की बहुत सहायता की थी। उसी की बदौलत वह उच्च-पद पर पहुँचा था। उसे खगुआ के युद्ध से प्रथम आगरे का सूबेदार नियत किया गया। फिर वह दक्षिण का सूबेदार बनाया गया। फिर मीरजुमला की मृत्यु के बाद उसे बंगाल का हाकिम बना दिया गया। अमीर-उमरा की पदवी उसे प्रदान की गई और अराकान के मघ नव डाकू राजा से निरन्तर लड़ने और उद्दण्ड पुर्तगीज लुटेरों से टक्कर लेने को छोड़ दिया गया। शाइस्ताखाँ ने बड़ी हिम्मत मुस्तैदी और वीरता से इन डाकुओं को वश में किया, और बंगाल के निचले प्रदेशों को निष्कंटक कर दिया।

बादशाह ने अपने बड़े पुत्र को तो ग्वालियर के किले में घुल-घुलकर मरने को डाल दिया था। एक बार छोटे बेटे मुअज्जम को भी शिकार के बहाने ऐसे खतरे में भेज दिया, जहाँ से वह बड़ी ही बहादुरी से जान बचाकर आया। इस पर औरङ्गजेब ने उसे दक्षिण का सूबेदार बनाकर वहाँ भेज दिया।

महावतखाँ जो प्राचीन योद्धा था और जिसने शाहजहाँ पर बड़े-बड़े एहसान किये थे, काबुल से बुला लिया गया। उसने बहुत-सी कीमती भेंट शाहजादी रोशनआरा को तथा सोलह हजार अशर्फियाँ और बहुत-से ईरानी ऊँट तथा घोड़े बादशाह को भेंट किये। इस पर बादशाह कुछ सन्तुष्ट हुआ, और उसे दक्षिण भेज दिया। इसके सिवा अमीरखाँ को काबुल, खलीलुल्लाह को लाहौर, मीरबाबा का इलाहाबाद, जुल्फिकारखाँ को खगुआ भेज दिया। फाजिलखाँ, जिसकी योग्य सलाहों से बादशाह को बहुत लाभ हुआ था, प्रधान खानसामाँ बनाया गया। देहली की सूबेदारी दानिशमन्दखाँ को दी गयी। दयानतखाँ को काश्मीर की सूबेदारी दी गई।

इस प्रकार समस्त हिन्दू-सरदार बेदखल हो गये थे। इन सब कारणो से इस बादशाह के समय मे हिन्दुस्तान मे तीन प्रबल विजयिनी हिन्दू-शक्तिया उदय हो गई। दक्षिण मे मराठे, जिनका नायक शिवाजी था, पच्छिम मे सिक्ख, जिसके नायक गुरु गोविंदसिंह थे, और राजपूताने मे राजपूत, जिनके नायक मेवाड के अधिपति थे।

जिस समय औरङ्गजेब तख्त पर बैठा, उस समय मुगल-साम्राज्य का आदि अत न था। यदि यह कहें कि उस समय ससार भर मे ऐसा प्रबल साम्राज्य न था, तो अत्युक्ति नही। पर यह साम्राज्य औरङ्गजेब के पूर्वजो ने हिंदू राजाओ के सहयोग से और हिन्दू प्रजा को प्रसन्न करके सगठित किया था। वे जानते थे कि कोई भी जाति बल या घृणा से कभी कब्जे मे नही आ सकती। औरङ्गजेब के पूर्वजो ने पठानो को सैकडो वर्ष की विफल और अथक चेष्टा का परिणाम देख लिया था और वे समझ गये थे कि साम्राज्य की स्थापना मे प्रजा का कितना हाथ रहना आवश्यक है। औरङ्ग-जेब एक तत्पर, तीव्र-बुद्धि, चौकन्ना और भयानक परिश्रमी बादशाह था। किसी खुशामदी का उसके सामने मुँह खोलने का साहस न होता था। उसने शुरू से ही इस्लाम की आड लेने की नीति पर काम किया था। यदि वह ऐसा न करता तो जो कुकर्म उसने राज्य-प्राप्ति के लिये किये उनमे वह सफल न होता। पर इस सफलता का कुछ भी महत्व न रहा, क्योंकि, उसके राज्य के स्तम्भ—वे राजपूत और हिन्दू शीघ्र ही उसके विरोधी हो गये, और उन्ही ने स्वतन्त्र शक्ति का सगठन करना प्रारम्भ कर दिया।

यद्यपि भारतीय तेज मर गया था, वीरत्व सो गया था और समाज पराधीनता की कीचड मे डूबा पडा था, पृथ्वीराज की-सी अजेय सत्ता नही रही थी, समरसिंह से जूझ मरने वाले मर चुके थे, प्रताप-जैसे नर-केशरी भी समाप्त हो चुके थे, परन्तु अवसर ने फिर वीरत्व को उदय किया।

शिवाजी दक्षिण मे एक अवतार होकर जन्मे। वे एक वीर, साहसी, निष्ठावान और प्रकृत-योद्धा थे। सोलह वर्ष की अवस्था मे ही उन्होंने कुछ मित्रो को सग ले, घोडे पर सवार हो, आस-पास के गाँवो को लूटना आरम्भ कर दिया। ये गाँव बीजापुर के शाह के थे। शाह ने अफजलखाँ को भेजा।

यह एक विकरालकाय योद्धा था और छल से शिवाजी को कत्ल किया चाहता था, पर शिवाजी ने ही उसे मार डाला।

यह उस समय की घटना है, जब औरङ्गजेब दक्षिण का सूबेदार था। शिवाजी को उस समय औरङ्गजेब ने उत्तेजना दी, क्योंकि वह बीजापुर की हानि मे प्रसन्न था। शिवाजी ने शीघ्र ही कोकण प्रदेश जीत लिया।

जब औरङ्गजेब पिता के विरुद्ध आगरे पर चढने लगा तो उसने शिवाजी से भी सहायता चाही। पर शिवाजी ने उसके इस नीच काम का खूब तिरस्कार किया, और उसके पुत्र की कुत्ते की पूँछ से बँधवा दिया। बस, वही से औरङ्गजेब के हृदय मे वैर का बीज बैठ गया। उधर औरङ्गजेब गद्दी पर बैठा और इधर चतुर शिवाजी ने बीजापुर वालो मे सधि कर ली।

अब उसने मुगल प्रान्तो पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये। उन दिनो दक्षिण मे मुगल सूबेदार नवाब शाइस्तखाँ था। औरङ्गजेब ने उसे शिवाजी का दमन करने का हुक्म भेज दिया।

शाइस्ताखा एक बडी सेना लेकर शिवाजी पर टूट पडा। उसने कोकण प्रदेश के सभी किले कब्जे मे कर लिये। फिर उसने पूना पहुँचकर उस भवन को भी अधिकार मे ले लिया जिसमे शिवाजी का जन्म हुआ था। शिवाजी चुपचाप तमाशा देखते और अवसर ताकते रहे। एक दिन अकस्मात शिवाजी रात को शाइस्ताखाँ के घर मे जा धमके। जब वे जनानखाने मे पहुँचकर तलवार चलाने लगे, तब स्त्रियो ने नवाब को जगाया। वह हक्का-बक्का हो गया, और खिडकी से कूदकर भागा। फिर भी उसकी उँगलियाँ कट गइ, और पुत्र मारा गया। सेवक भी काट डाले गये। इस घटना से शाइस्ताखाँ ऐसा भयभीत हुआ कि सीधा दिल्ली चला आया। इसके बाद शिवाजी ने सूरत नगर को लूट लिया, जो दक्षिण में मुग़लो का समृद्धिशाली बन्दरगाह था। यहाँ शिवाजी को अटूट सम्पदा मिली, जिससे कोषण की सारी कसर निकल गई।

इसके बाद रायगढ लौटकर उन्होंने राजा की उपाधि ग्रहण की। इस उत्सव मे शिवाजा ने लगभग पाँच करोड रुपया व्यय किया। अब उनके नाम का सिक्का चलने लगा।

इस प्रकार मुगलों के प्रवल प्रताप के बीच यह छत्रपति उभरने लगा।

इन समाचारो को पाकर औरङ्गजेब ने महाराज जयसिंह और सेनापति दिलेरखा को एक वडी सेना लेकर भेजा। जयसिंह ने बहुत समझा-बुझाकर शिवाजी को सन्धि पर राजी कर लिया। सन्धि की शर्तें दिल्ली भेजी गई। बादशाह ने भी उन्हे स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने बादशाह की तरफ से बीजापुर से युद्ध किया, और बादशाह का निमन्त्रण पाकर अपने पुत्र शम्भाजी, पाच सौ सवार और एक हजार मालवी सैन्य के साथ दिल्ली को प्रस्थान किया।

परन्तु औरङ्गजेब ने इस प्रतापी पुरुष का दरबार मे सम्मानन ही किया, इससे रुष्ट होकर वे वहा से लौट आये। इस पर बादशाह ने इन्हे कैद कर लिया। पर शिवाजी वहाँ से कौशल से निकल भागे। औरङ्गजेब ने उनकी राजा की उपाधि स्वीकार कर ली, और जागीर भी दे दी। अब उन्होंने दक्षिण लौटकर बीजापुर और गोलकुण्डा के नवाबो से युद्ध करके विजय प्राप्त की, और कर ग्रहण किया। उन्होंने दक्षिण मे खूब राज्य-विस्तार किया। विवश बादशाह ने महाबतखाँ को चालीस हजार सैन्य लेकर दक्षिण को भेजा। पर इस सैन्य ने पूरी हार खाई। इसमे बाईस सेनापति मारे गये, शेष कैद कर लिये गये। यह शिवाजी का प्रथम सम्मुख-युद्ध था।

इसके बाद शिवाजी ने विजयोत्सव किया, और राज्य-विधान मे सशोधन किये। उपाधियाँ फारसी-सस्कृत मे नियत की, सिक्को मे सुधार किया। नर्वदा से कृष्णा नदी पर्यन्त का सारा दक्षिण-भारत उन्ही के आधीन था। यह महावीर सतालीस वर्ष की अवस्था मे मृत्यु को प्राप्त हुआ। उस की मृत्यु की खबर सुनकर बादशाह ने कहा—"वह एक महान् सेनापति था। जिस समय मैंने प्राचीन राज्यो को नष्ट करने की चेष्टा की, उस समय सिर्फ इसी व्यक्ति ने एक नया राज्य स्थापन कर लिया। मेरी सेना ने उन्नीस वर्ष युद्ध किया, तो भी उसके राज्य की कोई हानि नही हुई।"

अब राजपूतो का भी विवरण सुनिये। जहाँगीर और उदयपुर के राणा के बीच यह सन्धि हुई थी कि वह स्वय तथा उसके उत्तराधिकारी राणा होने पर शाही दरबार में उपस्थित न होगे। प्रत्येक राजा सिंहासना-

रूढ होने पर शाही फर्मान राजधानी से बाहर जाकर स्वीकार करेगा
से मुगल दरबार मे मेवाड के युवराज हाजिर होते रहे थे।

अमरसिंह की मृत्यु पर राणा कर्ण गद्दी पर बैठे। उन्होने सि
शान्ति से लाभ उठाकर देश को हरा-भरा कर दिया। कर्ण के छोटे
का मुगल-दरबार मे इतना पद बढा कि वे मुगल-सेना के प्रधान सेन
बनाये गये और सुल्तान खुरम के मन्त्री बनाये गये। उन्हे राजा व
दिया गया था।

आठ वर्ष राज्य करके राणा कर्ण स्वर्गवासी हुए। उस समय र
मेवाड मे शरणागत थे। राणा ने उन्हे सम्राट् स्वीकार किया और शाह
की पदवी दी। इस अवसर पर जगतसिंह से शाहजहा ने पगडी बदर
भाईचारा स्वीकार किया था। उस मैत्री को शाहजहा ने जन्म-भर निबा
जगतसिंह ने छब्बीस वर्ष मेवाड पर राज्य किया और मुगल आक्रमण
सब चिन्हो को मिटा देने की चेष्टा की। वह बहुत उदार, मिलनसार
सभ्य व्यक्ति थे। इन्होने मेवाड को खूब सुन्दर समृद्ध बना दिया।

इनकी मृत्यु पर राजसिंह गद्दी पर बैठे। ये सिंह के समान पराक्र
योद्धा थे। औरङ्गजेब के पिता विद्रोह के युद्ध मे इन्होने बादशाह का
लिया था। परन्तु भाग्यवश औरङ्गजेब ही बादशाह हुआ।

हम कह चुके हैं कि अकबर से लेकर शाहजहा तक मुगल बादशा
ने इन हिन्दू राजाओ से उदार नीति बरती थी। पर औरङ्गजेब ने वह नीा
त्याग दी। अकबर ने राजपूता से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके प्रेम आ
विश्वास एव ऐक्य की जडे जमाली थी, तथा राजपूता को मित्र एव सम्बन्ध
बना लिया था, और उन्होने पीढिया तक मुगल-साम्राज्य के विस्तार कर
मे अपने जीवन व्यतीत किये। पर औरङ्गजेब ने उस मुगल साम्राज्य व
जडें हिलादी—स्तम्भो को उखाड-उखाडकर फेंकना शुरू कर दिया।

जिस समय औरङ्गजेब गद्दी पर बैठा, राजपूताने मे एक से एक बढ
कर शक्तिशाली पुरुष उत्पन्न हो गये। अम्बराधिपति जयसिंह, मारवाडा
धीश्वर जसवन्तसिंह, बूदी और कोटा के हाडा सरदार, बीकानेर के राठौर,
ओरछा और दतिया के बुन्देले, एक-से एक बढकर शूर थे—जो सभी औरङ्गजेब से अप्रसन्न हो गये।

औरंगजेब के पूर्वजो ने तीन पीढी तक जिस भाँति प्रजा का शासन किया—तथा देश मे कला-कौशल, साहित्य, विज्ञान और व्यापार की वृद्धि की, वह सब औरङ्गजेब के जेहाद के अत्याचार प्रारम्भ होते ही छिन्न भिन्न होगई। फलत राज्य-कोष खाली होने लगा, और तीन पीढी का सचित खजाना समाप्त होगया। तब बादशाह ने 'जजिया'-कर लगाया, जो नितान्त अन्यायमूलक एव क्रूर था—इससे हिन्दुओ के कलेजे मे आग धधक उठी।

जिस समय राजसिंह गद्दी पर बैठे, तो उन्होने तिलकोत्सव किया। तब तक शाहजहाँ गद्दी पर था। इस अवसर पर यह रस्म होती थी कि शत्रु का कोई इलाका छीन लिया जाय। राजसिंह ने अजमेर के सीमाप्रान्त का मालपुरा लूट लिया। जब बादशाह के पास शिकायत गई तो उसने कहा—"यह मेरे भतीजे की केवल मूर्खता है।"

पर औरङ्गजेब ने गद्दी पर बैठने पर रूपनगर की राजकुमारी का डोला जबरन मँगवाया। रूपकुमारी ने राजसिंह की शरण चाही। उन्हे यह सूचना जगल मे शिकार खेलते समय मिली, जबकि उनके साथ सिर्फ सौ राजपूत थे। अधिक समय नही था। वे उन्ही सौ वीरो को लेकर चल दिये और रास्ते मे पाँच हजार मुगलो से बलपूर्वक कुमारी का डोला छीन लाये।

इससे राजसिंह के शौर्य का शोर मच गया, और औरङ्गजेब क्रोध से थरथर कापने लगा। उधर राजसिंह भी भावी महायुद्ध की तैयारी करने लगे। पर औरङ्गजेब ने राजसिंह को तब तक छेडने का साहस न किया, जब तक जयसिंह और जसवन्तसिंह जीवित रहे। उधर वह शिवाजी द्वारा भी बहुत तग किया जा रहा था। अन्त मे उसने इन दोनो वीरो को विष देकर मरवा डाला। साथ ही 'जजिया'-कर लगा दिया। फिर जसवन्तसिंह की विधवा और पुत्र को कैद करना चाहा। बडे पुत्र को भी विष देकर मरवा डाला। इस प्रकार तमाम राजपूताना क्षुब्ध होगया, और वीर राठौर दुर्गादास ने राजसिंह से मिलकर इस दुर्दान्त मुगल के नाश का उपाय ठीक किया।

राणा ने एक प्रभावशाली पत्र औरङ्गजेब को जजिया के सम्बन्ध मे लिखा, जो इस प्रकार था—

"सर्व प्रकार की स्तुति, सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर को उचित है, और आपकी महिमा भी स्तुति करने योग्य है। आपकी उदारता और समदृष्टि चन्द्र और सूर्य की भांति चमकती है। यद्यपि मैंने आजकल अपने को आपके साथ से अलग कर लिया है, किन्तु आपकी जो सेवा हो सके, उसको मैं सदा चित्त से करने को उद्यत हूँ। मेरी सदा इच्छा रहती है कि हिन्दुस्तान के बादशाह, रईस, मिर्जा-राजे और राय लोग, तथा ईरान, तूरान और शाम के सरदार लोग, और सातो बादशाहत के निवासी और व सब यात्री, जो जल या थल के मार्ग से यात्रा करते हैं, मेरी अभेद बुद्धि-सेवा से उपकार लाभ करें।

"वह इच्छा मेरी ऐसी उत्तम है कि जिसमे आप कोई दोष नही देख सकते। मेरे पूर्वजों ने पूर्व काल मे जो कुछ आपकी सेवा की है, उस पर ध्यान करके मुझको अति उचित जान पड़ता है कि मैं नीचे लिखी हुई बातों पर आपका ध्यान दिलाऊँ, जिसमे राजा और प्रजा की भलाई है। मुझको यह समाचार मिला है कि आपने मुझ शुभ-चिन्तक के विरुद्ध एक सेना नियत की है, और मैंने यह भी सुना है कि ऐसी सेनाओं के नियत होने से आपका खजाना जो खाली हो गया है, उसको पूरा करने को नाना प्रकार के कर भी लगाये हैं।

"आपके परदादा मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर ने जिनका सिंहासन अब स्वर्ग में है, इस बड़े राज्य को बावन वर्ष तक ऐसी सावधानी और उत्तमता से चलाया कि सब जाति के लोगों ने उससे सुख और आनन्द उठाया। क्या ईसाई, क्या मूसाई, क्या दाऊदी, क्या मुसलमान, क्या ब्राह्मण, क्या नास्तिक—सबने उनके राज्य में समान भाग से राज्य का न्याय और राज्य का सुख भोग किया और यही कारण है कि सब लोगों ने एक मुँह होकर उनको जगत्-गुरु की पदवी दी थी। शहंशाह मुहम्मद नूरुद्दीन जहाँगीर ने, जो अब नन्दन-वन में विहार करते हैं—उसी प्रकार बाईस वर्ष राज्य किया, और अपनी रक्षा की छाया से सब प्रजा को शीतल रखा, तथा अपने आश्रित या सीमास्थित राजन्य-वर्ग को भी प्रसन्न रखा, अपने बाहु-बल से शत्रुओं का दमन किया। वैसे ही उनके शाहजादे और

आपके बडे परम प्रतापी पिता शाहजहाँ ने बत्तीस वर्ष राज्य करके अपना शुभ नाम अपने शुद्ध गुणो से विख्यात किया।

"आपके पूर्वज पुरुषो की यह कीर्ति है। उनके विचार ऐसे उदार और महत् थे कि जहा उन्होने चरण रखा, वहाँ विजय-लक्ष्मी को हाथ जोडे सामने पाया और बहुत-से देश और द्रव्य को अपने अधिकार मे किया। किन्तु आपके राज्य मे वे देश अब अधिकार से बाहर होते जाते हैं, और जो लक्षण दिखलाई पडते हैं, उनमे निश्चय होता है कि दिन-दिन राज्य का क्षय ही होगा। आपकी प्रजा अत्याचार मे अति दुखी है, और सब दुर्बल पड गये हैं, चारो ओर से बस्तियो के ऊजड पड जाने की और अनेक प्रकार की दुख की ही बातें सुनने मे आती हैं। राजमहल मे दरिद्रता छाई हुई है। जब बादशाह और शाहजादो के देश की यह दशा है, तब और रईसो की कौन कहे? शूरता तो केवल जिह्वा मे आ रही है। व्यापारी लोग चारो ओर रोते हैं, मुसलमान अव्यवस्थित हो रहे हैं, हिंदू महादुखी है,—यहाँ तक कि प्रजा को सन्ध्या-काल के समय खाने को भी नही मिलता और दिन को सब दुख के मारे अपना सिर पीटा करते हैं।

"ऐसे बादशाह का राज्य कितने दिन स्थिर रह सकता है—जिसने भारी कर से अपनी प्रजा की ऐसी दुर्दशा कर डाली है? पूर्व पश्चिम तक सब लोग यही कहते है कि हिंदुस्तान का बादशाह हिन्दुओ का ऐसा द्वेषी है कि वह रक ब्राह्मण से लेकर योगी, वैरागी और सन्यासी तक पर कर लगाता है, और अपने उत्तम तैमूरी वश को, इन धनहीन और निरुपद्रवी, उदासीन लोगो को दुख देकर कलकित करता है। अगर आपको उस किताब पर विश्वास है, जिसको आप ईश्वर का वाक्य कहते है, तो उसमे देखिये कि ईश्वर को मनुष्य-मात्र का स्वामी लिखा है, केवल मुसलमानो का नही। उसके सामने हिंदू और मुसलमान दोनो समान है। मनुष्य-मात्र को उसी ने जीवन-दान दिया है। नाना रग के मनुष्य अपनी इच्छा से पैदा किये हैं। आपकी मसजिदो मे भी उसी का नाम लेकर चिल्लाते है, और हिंदुओ के यहाँ देव-मन्दिरो मे भी उसी के निमित्त घण्टा बजाते हैं। किन्तु सब उसी एक को स्मरण करते है। इससे किसी जाति को दुख देना परमेश्वर को अप्रसन्न करना है। हम लोग जब कोई चित्र देखते है, तो उसके चितेर को

स्मरण करते हैं। यदि हम उस चित्र को बिगाड़ें, तो चितेरे को अप्रसन्नता होगी, और कवि की उक्ति के अनुसार जब कोई फूल सूँघते है, तो उसके बनानेवाले को ध्यान करते हैं उसका बिगाड़ना उचित नहीं समझते।

साराश यह कि हिन्दुओ पर आपने जो कर लगाना चाहा है, वह न्याय के परम विरुद्ध है—राज्य के प्रबन्ध को नाश करने वाला है। ऐसा करना अच्छे राज्याधीश्वरो का लक्षण नही है, और बल को शिथिल करने वाला है, हिन्दुस्तान की नीति के अति विरुद्ध है। यदि आपको अपने मत का ऐसा आग्रह हो कि आप इस बात मे बाज न आयगे, तो पहिले राजसिंह से, जो हिन्दुओ मे मुख्य है, यह कर लीजिये और फिर इस शुभ-चिन्तक को बुलाइये। किन्तु यों प्रजा-पीडन करना वीर-धर्म और उदार चित्त के विरुद्ध है। बड़े आश्चर्य की बात है कि आपके मन्त्रियो ने आपको ऐसे हानिकारक विषय मे कोई उत्तम मन्त्र नही दिया।'

टॉड राजस्थान,
४८७-४४८ प्रथम खण्ड

पत्र पढ़कर बादशाह तिलमिला उठा। उसने राजपूत की इस दुर्घर्ष शक्ति को कुचलने की भारी तैयारी प्रारम्भ कर दी। बगाल से अपने पुत्र अकबर को, काबुल से अजीम को, दक्षिण से दिलेरखां को बुलवाया और शाही सैन्य लेकर उसने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी।

यह सुन, राणा अपने समस्त योद्धाओ और नागरिको को लेकर दुर्गम पर्वत-उपत्यकाओ में चले गये। देश भर उजाड़ कर दिया गया। औरङ्गजेब चित्तौर, मण्डलगढ़ मन्दसौर, जीरन और अन्य किनो को अनायास ही अधिकृत करता हुआ, बढ़ा चला गया।

राणा ने अपनी सेना को तीन भागो में बाँटा। एक भाग का अधिपति राणा का ज्येष्ठ पुत्र जयसिंह अरावली की दूसरी घाटी पर स्थित किया गया, जिसमे वह दोनो ओर से आनेवाले शत्रुओ की खबर रखे। राजकुमार भीम पश्चिम की ओर नियुक्त किया जिसमें वह गुजरात से आनेवाले शत्रु को रोके। राणा स्वयं नाहन की घाटी पर जाकर बैठे, और इस ताक मे लगे कि शत्रु पहाड़ो मे घुसें तो उनके लौटने का मार्ग रोक दिया जाय।

औरङ्गजेब ने अपने पुत्र अकबर को पचास हजार सेना देकर आगे बढने की आज्ञा दी। उसे माग मे एक भी मनुष्य न मिला। उसने बाग, महल, भवन, वाटिका, तालाब—सब देखे, पर मनुष्य का पता न था। अत उसने वहा डेरे डाल दिये। सैनिक, शत्रु के इस प्रकार भयभीत होकर भाग जाने की खुशी मे मस्त होकर जश्न मनाने लगे।

अकस्मात् राजसिंह उन पर आ पडे। उस समय कोई खा रहा था, कोई नमाज पढ रहा था, कोई ताश-शतरज मे मस्त था। सब गाजर-मूली की तरह काट डाले गये। जो बचे, भाग निकले। उनका सब सामान लूट लिया गया और छावनी फूँक दी गई। उनके रथ, घोडे, हथियार कब्जे मे कर लिये गये।

अकबर ने लौटने पर देखा कि लौटने की राह बन्द है। अब बादशाह से जा मिलना सम्भव नही। बीच मे राजसिंह के सिपाही नगी तलवारें लिये जमा हैं।

अकबर ने गोलकुण्डा के रास्ते मारवाड के मैदानो की ओर लौटना चाहा। पर उधर भीलो ने बाणो से उसकी सेना को छेद डाला। इधर भी जान सकट मे समझ, वह लौटकर दूसरी ओर को फिरा, तब कुमार जयसिंह ने ऐसा ब द लगाया कि एक भी मुगल का वहाँ से बाहर आना असम्भव हो गया। निदान, अकबर ने जयसिंह से कहला भेजा, कि यदि हमे लौट जाने दिया जाय, तो हम युद्ध बन्द कर देंगे। इस पर विश्वास कर, जयसिंह ने उन्हे पथ-प्रदशक देकर चित्तौड की प्राचीर तक पहुँचा दिया।

अब दिलेरखा की दुर्गति का हाल सुनिये। वह अपनी सेना लेकर मारवाड की ओर देसोरी घाटी मे होकर पवत माला मे घुसा। उसे भी किसी ने नही रोका, वह सेना घुसी ही चली गई। जब वे घूम घुमौवल माग मे भटककर एक चौडे मैदान मे पहुँचे, तो विक्रम सोलङ्की और गोपीनाथ राठौर उन पर टूट पडे, और सँभलने से पहले ही उन्हे काट डाला। यह सेना बिल्कुल नष्ट कर दी गई, और उसका सब असबाब लूट लिया गया।

औरङ्गजेब अपने पुत्र अजीम को साथ लिये, दीवारी मे डेरे डाले पडा, इन युद्धों का परिणाम देख रहा था। राणा अकस्मात् ही उस पर

टूट पडे । राठौरो पर इस बादशाह ने बहुत जुल्म किये थे । उनकी तलवारें खून की प्यासी हो रही थी । दुर्गादास और राजसिंह ने आज बढ बढ कर बदले लिये । सम्राट् की भारी तोपे, जिनके गोलन्दाज सुयोग्य फ्रान्सीसी थे, धरी रह गयी । राजपूतो ने मुगलो को बर्छी पर धर लिया । अन्त मे बादशाह हार कर भाग गया । उसका बहुत सा सामान लूट लिया गया । उसका झण्डा, हाथी और बहुत सा सामान राजपूतो के हाथ लगे ।

उधर भीम खाली नही बैठा था । उसने गुजरात को भेदकर ईडर पर अधिकार कर लिया, और मुगल किलेदारो को मार भगाया । फिर उसने पाटन, सिद्धपुर आदि नगरो को लूटा और सूरत की ओर बढा । दूसरी ओर राणा के मन्त्री दयालशाह ने मालवे को लूट लिया ।

सारगपुर, देवास, सारौन, माडू, उज्जैन और चन्देरी लूट लिये गये । तमाम किले कब्जे मे कर लिये—फौजो को काट डाला, मालवा उजाड हो गया ! वहा की अटूट सम्पत्ति लूटकर राणा के चरणो मे रख दी गई ।

बादशाह अकबर और अजीम को बारह हजार सेना सहित चित्तौड पर अधिकार करने को छोड गया था । उस पर जयसिंह और दयालशाह ने आक्रमण कर, उसे रणथम्भोर तक खदेड दिया । इस प्रकार प्रकाण्ड मुगल सेना सवथा मेवाड से निकाल बाहर कर दी गई ।

अब राणा मारवाड की तरफ झुके । वहा जसवन्त की रानी बडे हौसले से शाही सेना का मुकाबला कर रही थी, जो नगर पर दखल करने को आई थी । राणा ने गनौरा नामक स्थान पर मुगलो से लोहा लिया । इस युद्ध मे राजपूतो ने एक भयानक हास्य मुगलो से किया—पाच सौ ऊँट मुगलो से छीन लिये । उन पर बहुत-से गडे गूदड लपेट, तेल से तर कर, उन पर मशालें जलाकर उन्ह मुगल छावनी मे हाक दिया । पीछे-पीछे राठौर चले । मुगल छावनी मे उन जलते हुए ऊँटो ने यह आफत मचाई कि हाहाकार मच गया, और राजपूतो ने मुगल सेना को नष्ट कर दिया ।

इसके बाद बीकानेर के राजा के उद्योग से राणा और राजसिंह मे सन्धि चर्चा चली । पर, इसी बीच मे राजसिंह की मृत्यु हो गई और फिर बादशाह और जयसिंह के बीच, जो राणा हुए, सन्धि हुई । इस सन्धि के

वाद औरङ्गजेब को राजपूताने की ओर देखने का मृत्यु तक साहस नहीं हुआ।

तीसरी शक्ति, मुगलो के विरुद्ध खडी हुई, सिक्खो की थी। यह प्रथम एक धार्मिक समुदाय था। इसका जन्म एक शक्तिशाली साधु पुरुष नानक ने किया। इस धर्म का मुख्य उद्देश्य भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के लोगो को एक होकर रहने का था। उसने सब ढकोसलो और भेद-भावो की तीव्र निन्दा की। अद्वितीय ईश्वर की उपासना ही उसका मुख्य उद्देश्य था।

नानक के वाद कई गुरु गद्दी पर बैठे, और वे सब सयमित चित्त-योगी की भाँति रहते थे। धीरे-धीरे मुसलमान वादशाहो ने उन पर अत्याचार आरम्भ किये। वे वध स्थल मे पशु की भाति ले जाये जाते और उनका वध लोहे के पीजरे मे बन्द कर, निर्दयता से किया जाता। अर्जुन गुरु को जहाँगीर ने कैद किया, और उन्हे आत-यातनाओ से कुल्हाडे से मारा गया। इस घटना के बाद सिक्ख उत्तेजित हो गये, और उनके पुत्र हरगोविन्द गद्दी पर बैठते ही मुसलमानो के विरोधी हो गये। उन्होंने सिक्खो को हथियार धारण की शिक्षा दी। वह स्वय दो तलवारें बाधते थे। जब कोई उनसे इसका कारण पूछता तो वह उत्तेजित स्वर मे कहते—'एक पिता के बदले के लिये और दूसरी मुगल साम्राज्य का ध्वस करने के लिये।' इनकी मृत्यु के पीछे उनके पोते हरराम गुरु हुए। फिर हरकिशन गुरु हुए। उसके बाद गुरु तेगवहादुर हुए। यही वह समय था, जब औरङ्गजेव के अत्याचारो से भारत कम्पायमान हो रहा था। उनके पास काश्मीर के कुछ पीडित ब्राह्मण भागकर आये और दुहाई दी। तेगवहादुर ने गम्भीर विचार कर, एक भयानक सकल्प किया, और उन्हे यही पढाकर दिल्ली भेजा। उन्होने दिल्ली आकर कहा—'यदि आप तेगवहादुर को मुसलमान बनालें, तो हम खुशी से मुसलमान हो जायेंगे।' तेगवहादुर के प्रतिद्वन्दी रामराय ने भी वादशाह को इसके लिये उत्तेजित किया। तब वादशाह ने तेगवहादुर पर सेना भेजी, और वे बन्दी करके दिल्ली ले आये गये। यहाँ भरे दरवार मे वादशाह ने कहा—"कुछ करामात दिखाओ!" गुरु ने कहा—"हमारा धर्म सर्व शक्तिमान ईश्वर की उपासना करना है। परन्तु तुम्हे हम करामात

दिखाने ही आये हैं।" इतना कह, उन्होंने कुछ शब्द कागज पर लिखकर गले मे तावीज की भाँति बाँध लिये, और कहा—कि, अब मेरी गरदन तलवार से नहीं काटी जा सकती।

बादशाह ने डरते डरते जल्लाद को वार करने का संकेत किया। तलवार पड़ते ही उनका सिर कटकर धरती पर लुढ़क गया। यह देख, बादशाह विमूढ़ हो गया। कागज मे लिखा था—"सिर दिया, सार नहीं।"

यह निर्दय घटना तूफान की भाँति फैल गई। तेगबहादुर चलती बार अपने पुत्र गोविन्दसिंह को गद्दी पर बैठा आये थे—जिसकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी। उन्होंने प्राण देने का निश्चय किया था। वे जानते थे कि इसी से देश मे आग लग जायगी। इस तेजस्वी बालक ने नंगी तलवार लेकर हुङ्कार भरी और सिक्खो का संगठन शुरू किया। कई छोटे छोटे युद्ध मुगलो के साथ हुए, और सब मे उनकी विजय हुई। अन्त मे बादशाह ने प्रबल सेना भेजी, जिससे पराजित होकर गोविन्दसिंह हार गये। उनके दो पुत्र पकड़े गये और जीते ही दीवार मे चुने गये। बादशाह ने गुरु को दिल्ली बुला भेजा। पर उन्होंने कहला भेजा—अभी खालसा बादशाह से गुरु का बदला लेंगे। अन्त मे वे बादशाह से मिलने को राजी भी होगये, पर इस मुलाकात से प्रथम ही बादशाह की मृत्यु हो गई। उनके उत्तराधिकारी बहादुरशाह ने गुरु की बहुत खातिर की, पर उनकी अचानक एक पठान के आक्रमण से मृत्यु होगई। यह घटना नर्बदा-तीर के नादर नामक स्थान पर हुई। उस समय गुरु की आयु अड़तालीस वर्ष की थी।

इनके बाद सिक्ख-समुदाय एक लौह समुदाय बन गया। एक बार गोविन्दसिंह ने बादशाह को लिखा था—खबरदार रहो! तुम हिन्दू को मुसलमान करते हो। तुम अपने को बेजरर समझते हो पर मैं कबूतर से बाज का शिकार कराऊँ तो गुरु!

इस गुरु के बाद उनका धर्म ग्रन्थ ही गुरु के स्थान पर पूज्य हुआ। सिक्खो ने रामनगर और चिलियाँवाला मे ऐतिहासिक अमर कारनामे किये। बन्दा बैरागी ने बादशाही को हिला डाला, और अन्त में सिख महाराज रणजीतसिंह ने जन्म लेकर काबुल तक को थर्रा दिया।

इस बात पर विचार करना उचित है कि इस भयानक व्यक्ति ने ऐसे

अत्याचार और प्रजा-पीडन करने पर भी किस भाति पचास वष तक राज्य किया, और समस्त कठिनाइयो को कैसे पार किया ! यह व्यक्ति वास्तव मे बुद्धिमान और तीखा, घमण्डी, धूत और मुस्तैद था। किसी को मुँह न लगाता था। एक बार का जिक्र है कि इसके किसी उमरा ने खुशामद से कहा—"हुजूर काम मे इस कदर मसरूफ है कि यह अन्देशा है कि इससे सेहते-जिसमानी वल्कि दिमागी कुव्वत मे कुछ फक आ जाय, और ताकत को कुछ नुकसान पहुचे।"

यह सुनकर बादशाह ने उस बुद्धिमान उपदेशक की ओर से मुँह फेर लिया—मानो उसकी बात सुनी ही नही। फिर कुछ ठहरकर एक और बहुत बडे अमीर की ओर, जो बडा ही विद्वान् और बुद्धिमान था, देखकर कहा—"आप तमाम अहले-इल्म इस बात मे मुत्तफिकुलराय है कि मुश्किल और खौफ के जमाने मे जान जोखो मे पड जाना और जरूरत के वक्त रिआया की बेहतरी के लिये, जिसे खुदा ने उसे सुपुर्द किया है, तलवार पकड कर मैदाने जग मे जान देना बादशाह का फर्ज है। मगर इसके बरअक्स यह नेक और बातमीज शख्स [!] है ! यह चाहता है कि रिआया के आराम व आसाइश के लिये जरा भी तकलीफ न उठाई जाय। और उनकी [रिआया की] रिफाह की तदबीरो के सोचने मे एक रात या एक दिन भी बे-आराम रहे बगैर यह मुकद्दमा हासिल हो जाय। इसकी राय है कि मैं सिफ अपनी तदुरुस्ती को मुकद्दम जानूँ, और ज्यादातर ऐशो-इशरत और आराम व आसाइश के उमूर मे मसरूफ रहूँ, जिसका नतीजा यह हो सकता है कि मैं इस वसीह सल्तनत के कामो को किसी वजीर के भरोसे छोड बैठूँ। मगर मालूम होता है कि इसने इस अमर पर गौर नही किया कि जिस हालत में मुझे खुदा ने बादशाही खानदान मे पैदा कर, तख्त पर बिठाया है, तो दुनिया मे अपने ज़ाती फायदे के लिये नही भेजा, वल्कि औरो को आराम पहुँचाने और मिहनत करने के लिये। मेरा यह काम नही है कि अपनी ही आसाइश की फिक्र करूँ। अलबत्ता रिआया के फायदे की गरज से जिस कदर आराम लेना जरूरी है, उसका मुजायका नही। बजुज़ इसके कि इन्साफ और अदालत से वैसा ही करना साबित हो—या सल्तनत के कायम रखने और मुल्क की हिफाजत के लिये यह बात जरूरी हो। हर सूरत मे रिआया की आसा-

इश और तरक्की ही एक ऐसी चीज है जिसकी फिक्र मुझे होनी चाहिये। मगर यह शख्श इस बात की तह तो नही पहुँचा कि उस आराम मे, जो यह मेरे लिये तजवीज करता, क्या-क्या कहावतें पैदा होगी और यह भी इसे नही मालूम कि दूसरा के हाथ मे हुकूमत देना कैसी बुरी बात है। शेख सादी ने जो यह कहा कि बादशाहा को चाहिये कि नवाब खुद कारोबार-सल्तनत का बोझ अपने ऊपर ले—नही तो बेहतर है कि बादशाह कहलाना छोड दे, तो क्या बुजुग का यह कौल गलत है ? बस, आप अपने इस दोस्त से कह दीजिए कि अगर यह हमारी खुशी और हमसे आफरी हासिल करना चाहता है तो जो काम इसके सुपुर्द है उसे ठीक तौर से करता रहे, और खबरदार यह सलाह जो बादशाहा के सुनने के लायक नही हैं कभी न दे। अफसोस, इन्सान आराम-तलब है, और ऐसे खयालात से बचना चाहता है, जो दूसरा की तरक्की की फिक्र मे आदमी को घुला डालते हैं। मगर हमको ऐसे फिजूल सलाहकारा की हाजत नही है। ऐशो-आराम की सलाह तो हमारी बेगमे भी दे सकती हैं।"

एक बार औरङ्गजेब के गुरु मुल्ला सालह ने, जिसने बचपन मे उसे शिक्षा दी थी—यह सोचा कि अब मेरा शागिद बादशाह हुआ है, कुछ-न-कुछ जागीर देगा, और वह अमीरा की श्रेणी में रख लिया जायगा। उसने बडी बडी सिफारिशें पहुँचाइ और सभी दरबारिया तथा अमीर-उमरावो को अपने पक्ष मे कर लिया। यहा तक कि बेगम रोशनआरा तक को पक्षपाती बना लिया, और उसने कई बार बादशाह को याद दिलाया कि आपका माननीय विद्वान् उस्ताद प्रतिष्ठा किये जाने के योग्य है। पर बादशाह ने तीन महीने तक तो उसकी ओर आख उठाकर भी नही देखा। अन्त मे उसने एक दिन दरबारे-खास मे हाजिर होने का हुक्म दिया। वहाँ कुछ चुने हुए अमीर हाजिर थे। वहाँ बादशाह ने कहा—

"मुल्लाजी, बराए मेहरबानी यह तो फरमाइये कि आप हमारे से चाहते क्या हैं ? क्या आपका यह दावा है कि हम आपको दरबार के अव्वल दर्जे के उमरा मे दाखिल करले ? अगर आपकी यह ख्वाहिश है, तो पहिले इस बात का हिसाब करना जरूरी है कि आप किसी निशाने इज्जत के मुस्तहक अभी हैं या नही। हम इससे इन्कार नही करते कि अगर आप

हमारी तालीम व तरवियत ठीक तौर पर करते, तो जरूर ऐसी ही इज्जत के मुस्तहक होते। आप हमको किसी तरवियतयाफ्ता नौजवान शख्स का नाम वतलायें, कि उसकी तालीम व तरवियत की वावत शुक्रगुजारी का ज्यादा मुस्तहक उसका उस्ताद है या उसका बाप? फरमाइये तो सही कि आपकी तालीम से कौन सी वाकफियत मुझे हासिल हुई है। क्योंकि आपने तो मुझको यह वतलाया था कि तमाम फिरंगिस्तान (यूरोप) एक छोटे जजीरे से ज्यादा नही, जिसमे सबसे बड़ा बादशाह अव्वलन शाह पुर्तगाल था, फिर बादशाह हॉलैंड हुआ, और इसके बाद बादशाह इंगलिस्तान। फिरंगिस्तान के और वादशाहों—मसलन्, फ्रान्स और इंगलैंड की वावत यह वताया करते थे कि यह लोग हमारे यहाँ के छोटे-छोटे राजाओं के मुआफिक हैं, और यह कि हिंदुस्तान के वादशाहों मे सिर्फ हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ हुए हैं, जिनके आगे तमाम दुनिया के वादशाहों की शान व शौकत मद्धिम है। और यह ईरान, उजवक, काशगर, तातार, श्याम, चीन और माचीन के वादशाह सलातीन हिन्द के नाम से काँपते हैं। सुबहान अल्लाह! आपकी इस जुगराफियादानी और कमाले-इल्म तवारीख का क्या कहना है! क्या मुझ-जैसे शख्स के उस्ताद को लाजिम न था कि वह दुनिया की हर-एक कौम के हालात से मुझे मुत्तिला करता! मसलन् उनकी कुव्वत-जङ्गी से, उनके वसायल आमदनी से, और तर्जे-जंग से, उनके रस्मो-रिवाज, मजाहिब और तर्जे-हुक्मरानी और उन खास खास उमूर व तफसील से जुदा-जुदा मुझको आगाह करता, जिनको वे अपने हक मे ज्यादा मुफीद समझते है। मेरे जैसे शख्स के उस्ताद को लाजिम था कि वह मुझको इल्म तारीख ऐसी सिलसिलेवार पढाता कि मैं हर एक सल्तनत की जड-बुनियाद, असबावतरक्की व तनज्जुली और उनके साथ उन वाकयात और उन गलतियों से वाकिफ हो जाता, जिनके वायस उनमे ऐसे इन्कलावात होते रहे हैं। वनिस्वत इसके कि आप मुझे तमाम दुनिया की कामिल तारीख से आगाह करते, आपने तो हमारे उन मशहूर व मारूफ बुजुर्गों के नाम भी अच्छी तरह नही वतलाये, जो हमारी सल्तनत के बानी थे। उनकी सवाने-उम्री, खास-तौर की लियाकत, जिनके बाइस वह बडे-बडे फतूहात करने के काबिल हुए और उन फतूहात से पहले जो वाकयात जहूर मे आये, उनसे

भी मुझे आपने नावाकिफ रखा। बावजूद कि बादशाह को अपनी हमसाया कौमो की जबानो से वाकिफ होना जरूरी है, आपने मुझको अरबी लिखना-पढना सिखाया। इस जबान के सीखने मे मेरी उम्र का एक बडा हिस्सा जाया हुआ। मगर, आपने यह समझा कि एक ऐसी जबान सिखाकर जो दस बरस मिहनत किये बिना हासिल नही हो सकती, गोया मुझ पर बडा भारी अहसान किया! आपको यह सोचना था कि एक शाहजादे को ज्यादातर किन-किन इल्मो के पढाने की जरूरत है। मगर आपने मुझे ऐसे फना की तालीम दी, जो काजियो के लिये मुफीद हैं, और मेरी जवानी के दिन बेफायदा बच्चो की-सी पढाई मे बर्बाद किय।

"क्या आपको मालूम न था कि छुटपन मे, जब कि कूवत-हाफिजा मजबूत होती है, हजारो माकूल बातें जहननशीन हो सकती हैं? और आसानी के साथ इन्सान ऐसी मुफीद तालीम हासिल कर सकता है, जिससे दिल मे निहायत आला खयालात पैदा होते हैं, और जिनसे मैं बडे-बडे नुमाया कामो के करने के काबिल हो जाता? क्या नमाज सिर्फ अरबी ही के जरिये अदा हो सकती है? और बडी-बडी इल्मो हुनर की बातो का जानना क्या अरबी ही के जरिये हो सकता है? आपने हमारे वालिद-मजीद को तो यह समझा दिया था कि हम इसे फिलॉसफी पढाते है, और मुझे खूब याद है कि बरसो तक ऐसी बेहूदा बातो से आप मेरा दिमाग परेशान करते रहे, जो पहिले तो जल्दी समझ मे नही आती थी, और समझ मे आ जाने पर जल्द भूल जाती थी, और ऐसी थी, जिनकी दुनियावी मुआमलात मे कुछ जरूरत नही। आपने उम्र के कई कई साल ऐसी ही तालीम मे खराब कराये, जो आपको पसन्द थी। मगर जब मैं आपकी तालीम से अलहदा हुआ तो किसी बडे इल्म के जानने का दावा नही कर सकता था। बजुज इसके कि चन्द अजीब व गरीब बातो का वाकिफ था, जो एक अच्छी समझ के नौजवान शख्स की हिम्मत को पस्त, दिमाग को खराब और तबियत को हैरान कर देती है। अगर आप मुझे वे बातें सिखाते, जिनसे जहन इस काबिल हो जाता कि बगैर सही दलील के किसी बात को तसलीम नही करता, या आप मुझको वह सबक पढाते, जिससे इन्सान की तबियत ऐसी हो जाती है कि दुनिया के इन्कलाबात का उस पर कुछ भी असर नही होता,

और तरक्की या तनज्जुली की हालत में पड़ा रहता है, या मुझे कुदरती बातों से आगाह करते—तो मैं उससे भी ज्यादा आपका एहसान मानता—जितना सिकन्दर ने अरस्तू का माना था और अरस्तू से भी ज्यादा इनाम आपकी नजर करता। मुल्लाजी, नाशुक्रगुजारी का झूठा इल्जाम ख्वामख्वाह मुझ पर न लगाइये। क्या आप यह नहीं जानते थे, कि शाह-जादों को इतनी बात जरूर सिखानी चाहिये कि उनको रिआया के साथ और रिआया को उनके साथ किस तरह का बर्ताव करना चाहिये। और क्या आपको पहले ही यह ख्याल कर लेना मुनासिब नहीं था कि मैं किसी वक्त तख्तो-ताज की खातिर व अपनी जान बचाने के लिये तलवार पकड़-कर अपने भाइयों से लड़ने पर मजबूर हूँगा, क्योंकि आप यह खूब जानते हैं कि सलातीने-हिन्द की औलाद को हमेशा ऐसे मुकाबिलात पेश आते रहते हैं। पर, क्या आपने कभी लड़ाई का फन या किसी शहर का मुहासरा करना, या फौज की सफआराई का तरीका मुझे सिखाया? यह मेरी खुश-किस्मती थी, कि मैंने इन मुआमिलात में ऐसे लोगों से कुछ सीख लिया, जो आपसे ज्यादा अक्लमन्द थे। बस, अपने गाँव को लौट जाइए, और अब से कोई न जाने कि आप कौन हैं, और आपका क्या हाल है।"

पोशीदा करले, तो उसका हक-ब-जानिब है या नहीं ? हुजूर के खौफ से मैं बहुत डरता हूँ, यह नही चाहता कि हुजूर मेरे तौरो तरीके की निस्वत गलत-फहमी फरमावें। हुजूर फरमाते हैं कि तख्तनशीनी ने मुझे खुदराय और मगरूर बना दिया, लेकिन यह ख्याल गलत है। चालीस बरस के तजरबे से आप खुद ही ख्याल फरमा सकते हैं कि ताजशाही किस कदर गिरांदार चीज है, और बादशाह जब दरबार से उठता है, तब किस कदर फिक्र उसके दिल को गमगीन और दरमन्द बनाये रहती हैं। हमारे जद्दे-अमजद जलालुद्दीन मुहम्मद अक्बर ने इस गरज से, कि उनकी औलाद दानाई, नर्मी और तमीज के साथ सल्तनत करे, अपने अहले-सल्तनत की तारीख मे अमीर तैमूर का जिक्र बतौर नमूना लिखकर अपनी औलाद को उसकी तरफ तवज्जह दिलवाई थी। वह तजकिरा यो है—जब तुर्की सुलतान बजेद गिरफ्तार होकर अमीर तैमूर के हुजूर मे लाया गया, और अमीर बहुत गौर के साथ उस मगरूर कैदी की तरफ देखकर हँस दिया, तब बैजेद ने इस हरकत से नाराज होकर अमीर से कहा—'तुमको अपनी फतहमन्दी पर इतना इतराना न चाहिये। दौलत और इज्जत बख्शना या लेना खुदा के हाथ मे है। मुमकिन है कि जिस कदर तुम आज बातें करते हो, कल मेरी तरह पकड़े जाओ।' अमीर ने जवाब दिया—दुनिया और उसके जरो-दौलत की बेएतबारी से मैं खूब वाकिफ हूँ। और खुदा न करे कि मैं किसी मगलूब दुश्मन की हँसी उड़ाऊँ। मेरी हँसी का सबब यह न था कि तुम्हारा दिल दुखाऊँ, बल्कि मुझे तुम्हे देखकर अपनी और तुम्हारी बदसूरती के खयाल ने बेअख्तियार हँसा दिया। क्योकि, तुम तो काने हो, और मैं लँगड़ा। मेरे दिल मे यह गुजरी कि ताज और तख्त आखिर ऐसी क्या चीज है, जिसको पाकर बादशाह अपनी हस्ती को भूल जाते है। हालाकि खुदाए ताला उसको अपने ऐसे बन्दो को अता करता है, जो काने और लँगड़े होते है।'

"मालूम होता है कि हुजूर यह ख्याल फरमाते है कि मेरी मसरूफियत बनिस्बत उन उमूर के, जिनको मैं मुल्कदारी और सल्तनत के अन्दरूनी इन्तजाम के लिये निहायत जरूरी मानता हूँ, नई फतूहात और मुल्कगीरी की जानिब निहायत होनी चाहिये। इस अमर से मैं हरगिज इन्कार नही कर सकता कि एक बड़े शाहंशाह का ओहदा, दौलत और नई-नई फतूहात

की वजह से मुमताज़ होता है, मगर यह बात करीन-इन्साफ नही कि मुझे काहिल और खामोश बैठे रहने का इल्जाम दिया जावे। क्योंकि बंगाल और दक्खिन मे मेरी फौजो की मसरूफियत को तो हुजूर ख्याल मे ला ही नही सकते। और मैं हुजूर को यह भी याद दिलाता हूँ कि बडे-से-बडा मुल्कगीर भी हमेशा सब से बडा बादशाह नही हुआ। देखा जाता है कि कभी-कभी दुनिया के बादशाह अक्सर बिलकुल वहशी और नातरबियत-याफ्त होने पर भी बडे आदिल हैं। थोडे-से अर्से मे वे बिलकुल टुकडे-टुकडे होगये हैं। बस, हकीकत मे सब से बडा बादशाह वही है, जो रिआया की मुहब्बत और अदल व इन्साफ को ही अहना हासिल अमर जाने।"

इस जमाने मे मुगलो के महलो की क्या दशा थी, और बादशाह किस भांति अपने व्यक्तिगत जीवन व्यतीत करते थे—उनका ऐश्वर्य कितना महान था—उसका वर्णन बर्नीयर के निम्नलिखित उद्धरण से आपको मिलेगा—

"बहुधा राजमहलो मे भिन्न-भिन्न नस्लो और जातियो की दो हज़ार स्त्रियां रहती हैं—जिनमे से प्रत्येक के कर्तव्य पृथक्-पृथक् होते हैं। किसी का काम तो बादशाह की सेवा होता है, और किसी का उसकी बेगमो, बेटियो और आशनाओ की सेवा। उस श्रेणी मे व्यवस्था-प्रबन्ध स्थिर रखने के लिये उनमे से प्रत्येक को अलग-अलग कमरे मिले होते है, जिनकी जनाने पहरेदार निगरानी करते हैं। उसके सिवा उनमे से प्रत्येक को दस या बारह बांदियाँ मिली होती है, जो उपरोक्त स्त्रियो मे से दे दी जाती है। जनाने पहरेदारो को अपने दर्जे के अनुसार तीन-चार या पाँच सौ रुपये तक माह-वारी वेतन मिलता है, और इनकी आधीन दासियो को पचास रूपये से दो सौ रुपये तक। जनाने पहरे वालो के सिवा गानेवालियो को भी वेतन तो उसी प्रकार मिलता है, पर शाहज़ादे और शाहज़ादियो से, जिनके नाम पाठको के मनोरंजन के लिये मैं आगे चलकर लिखूगा—बहुमूल्य तोहफे भी मिलते रहते हैं। इनमे से कई तो शाहज़ादियो को लिखना पढना सिखाती हैं, परन्तु बहुधा इश्क आशिकाना गजलें सिखाती रहती हैं। इसके सिवा महल की खातून गुलिस्तां और बोस्तां नामक पुस्तकें, जो एक प्रसिद्ध लेखक शेखसादी द्वारा रचित है, और अन्य प्रेम सम्बन्धी पुस्तकें पढती रहती हैं,

जो बहुत करके उपन्यास और किस्सो के ढग की हैं, और अत्यन्त अश्लील है।

"यह नौकर औरतें बादशाह की सेवा किस तरह करती हैं, यह भी उल्लेखनीय बात है। क्योकि जिस तरह बाहर मर्दो मे अमीर और मनसबदार है, उसी तरह महलो मे स्त्रियो मे भी हैं। वरिक बहुतेरो के तो वही ओहदे भी होते है, जो बाहर मर्दो के। जब बादशाह-सलामत बाहर तशरीफ न लाना चाहे, तो इन्ही ओहदेदारो के द्वारा बाहर के अफसरो को आज्ञा प्रदान की जाती है। इन ओहदो पर जो स्त्रियाँ नियुक्त की जाती हैं, उनके चुनाव मे खास सावधानी की जाती है—जो बुद्धिमान् हो, और राज्य मे जो कुछ हो रहा हो, उससे परिचित रहे, क्योकि जिन बातो की बादशाह को सूचना आवश्यक हो, उनकी पूरी रिपोट बाहर से अफसर लिख भेजते हैं, और जिस तरह बादशाह आज्ञा दें, जनाने अफसर उन पर रिपोट लिखती और जवाब देती है, और बाकायदा मुहर करके मर्दाने अफसरो के सुपुर्द कर देती है, और इधर-से-उधर और उधर-से-इधर जवाब लाती और ले जाती रहती है। मुगलो का यह भी एक नियम है कि जो कुछ राज्य मे हो रहा है, सप्ताह मे एक बार उसकी रिपोर्ट 'खुफिया-नवीस' मे अवश्य दर्ज करानी होती है, जो एक प्रकार का गजट या अखबार है। इन खबरो को लगभग सन्ध्या के नौ बजे महल मे जनाने अफसर बादशाह को सुनाती हैं, और इस तरह महल मे भी राज्य-भर की घटनाओ की सूचना मिलती रहती है। इसके सिवाय जासूस हैं, जिनका कर्त्तव्य है कि सप्ताह मे कम-से कम एक बार दूसरे आवश्यक विषयो और खासकर शाहजादो के कामो के सम्बन्ध मे, आवश्यक रिपोट भेजे। वह रिपोट लिखित होती है। बादशाह आधी रात तक बैठा इसी प्रकार काम करता रहता है। इसके बाद केवल तीन घण्टे तक सोता है, और उठते ही मामूली नमाज पढता है, जिसमे उसे डेढ घण्टा लगता है। प्रति वर्ष वह एक जलसा करता है, जिससे ईश्वर उसे विजय और प्रताप दे। परन्तु आजकल चूँकि वह बूढा हो गया है, और शत्रु इसे कुछ करने नही देते, इसलिये विवश उसे आराम करना पडता है। परन्तु वह आवश्यक कार्यों के सम्बन्ध मे प्रतिदिन सोचने तथा उचित आज्ञा प्रदान करने मे कमी नही करता। इस तरह

इसका यह नियम है कि चौबीस घण्टे मे एक बार भोजन करता है, और केवल तीन घण्टा सोता है। सोने के समय बाँदियाँ उसकी रक्षा करती हैं, जो बडी वीर तथा तीर-कमान और हथियारो के प्रयोग मे खूब प्रवीण होती हैं। प्रतिदिन शाही बावरची को खाने के खर्च के लिये एक हजार रुपया दिया जाता है। अफसरो को इस रकम मे से आवश्यक सामान जुटाना पडता है। शाही दस्तरखान् पर एक नियत सख्या मे भिन्न भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट मास भिन्न-भिन्न प्रकार के चीनी के प्याला मे--सुनहरे वर्तनो मे रखकर पेश किये जाते हैं, और जब बादशाह को किसी बेगम, शाहजादी या जनरल पर विशेष कृपा प्रकट करनी हो, तो इनमे से या और किसी चीज मे से उसे भेज देता है। पर इस प्रतिष्ठा का मोल उन्हे बहुत देना पडता है। क्योकि स्वाजासरा, जो यह खाना लेकर जाते हैं, उनमे भारी रकम इनाम मे प्राप्त करते हैं। जब बादशाह शत्रु के देश मे हो, तो यथा सम्भव बावरची-खाने के खर्च का कुछ हिसाब नही लिखा जाता, परन्तु महल मे बेगम और शहजादियाँ तथा अन्य स्त्रियो के लिये पृथक् वजीफे नियत होते हैं। किन्तु बादशाह के महल मे कई हिन्दू राजाओ की लडकियाँ भी हैं, जिन्हे हिन्दू नाम दिये गये हैं। इसी तरह, जैसी उसकी इच्छा हो, मुसलमानो को वह इस्लामी नाम देता है। बादशाहो और मुगल शाहजादो मे यह भी दस्तूर है कि वह बुड्ढी स्त्रिया से जासूसी का काम लेते हैं, और यह भी उसी ढग के स्वाजासराओ को राज्य-भर की सुन्दरी स्त्रिया के पते देती रहती है, जिन्हे यह बुढियाएँ धोखा, फरेब या लालच से, जैसे बन सके, महल मे ले आती हैं। जहाँ बादशाह या शाहजादे की इच्छा हो, वहा उन्ह आशना लोगो की पवित मे रखा जाता है। जैसा कि मैं शाहजहाँ और दारा के वणनो मे कह आया हूँ--जब ऐसा सयोग होता है कि वह इन्हें महल मे रखना न चाहे, तो इन्हें कोई भारी नजराना देकर वापस भेज देते हैं। मैं इन घटनाओ का उल्लेख कर रहा हूँ--क्याकि मुझे इन गुप्त रहस्यो और अन्य कई बातो के सम्बन्ध मे खास खबर है, जिनका उल्लेख करना मैं उचित नही समझता।

"यद्यपि औरङ्गजेब ने प्रत्येक प्रकार के राग-रङ्ग को बन्द कर दिया

है, फिर भी बेगम और शाहज़ादियो के मनोरजन के लिये कई-एक नाचने और गानेवालिया नौकर है।

"बहुधा ये गानेवाली उस्तादनिया जन्म से हिन्दू होनी हैं, जिन्हे बचपन मे घरो से भगा लिया जाता है। यद्यपि उनके नाम हिन्दुआना है, पर है सब मुसलमान। इनमे से प्रत्येक की आधीनता मे लगभग १० शिष्यायें होती हैं, जिनके साथ वे भिन्न भिन्न बेगमो, शाहज़ादियो और आशनाओ के महल से उपहार लेती रहती हैं, और प्रत्येक को अपनी स्थिति के अनुसार दर्जा मिला होता है।

"बेगम और अन्य महिलाएँ अपनी-अपनी गानेवालिया के साथ अपने-अपने महलो मे समय काट लेती हैं। इन गानेवालियो को सिवाय अपनी मालिका के और किसी के यहा गाने की आज्ञा नही होती, सिवाय उस सूरत के जब कि कोई भारी त्यौहार हो। तब वे सब-की-सब एक ही होती है, और उस त्यौहार पर कुछ न-कुछ गाने का हुक्म दिया जाता है। ये स्त्रिया सभी सुन्दरी, उत्तम वस्त्रा भूषणो से सज्जिता होती हैं, मस्तानी चाल से चलती ह, और बात-चीत मे बडी गुस्ताख, हाजिर-जवाब, और अत्यन्त वासनायुक्त होती है, क्योकि गाने के सिवाय इनका काम सिवाय व्यभिचार के और कुछ होता ही नही।

"महल के दैनिक खर्च की तादाद कभी एक करोड रुपये से कम नही होती। यह रकम प्रकट मे यद्यपि बहुत बडी है, पर इतनी बडी नही रहती, जब यह समझ लिया जाय कि हिन्दुस्तान के सब लोग सुगन्ध और पुष्पो के बहुत शौकीन है, और भिन्न भिन्न जाति के इत्र, सुगन्धित तेलो की सुगन्धि और रूहो पर बहुत सा रुपया खर्च करते हैं। इसके बाद पान का खर्च है, जो इनके मुँह मे देखा जाता है। स्मरण रहे, कि यह रोजाना के खर्च हैं। इसमे वह रुपया भी सम्मिलित होना चाहिए, जो जवाहारात की खरीद मे खर्च होता है, और यही कारण है कि सुनारो को जेवर तैयार करने से फ़ुरसत नही मिलती। इन जवाहरातो मे से अनेक अत्यन्त बहुमूल्य और दुष्प्राप्य है, जो बादशाह और बेगमो तथा शाह-ज़ादिया के निजू इस्तेमाल मे आते ह। ये बेगमें और शाहज़ादिया अपने अपने जवाहिरातो को देख-देखकर प्रसन्न होती और दूसरो को दिखाने की

बडी अभिलाषिणी रहती है। इनके ऐसा करने का कारण भी है। मैंने स्वय देखा है कि कई बार उन्होने मुझे सम्मति लेने के बहाने अपने कमरो मे बुलाया, और बात-चीत का सिलसिला प्रारम्भ करने के लिये अपने जवाहिरात और जेवर मँगाने शुरू किये, जो सोने की बडी किश्तिया में रखकर इनके सामने लाये जाते थे। वे मुझसे उनकी जाति या गुण और विशेषतायें पूछती, साथ ही इस प्रकार के अन्य प्रश्न करती। इसी बीच में मुझे इनकी सारी पहचान हो गई, और मैं यह कह सकता हूँ कि मैंने लगभग प्रत्येक प्रकार के जवाहिरात देखे हैं—जिनमे बाज तो असाधारण हैं। मैंने एक बार रूप-रग मे एक-से मोतिया की माला देखी है, जिन्हें प्रथम बार देखकर तो मैंने भिन्न प्रकार के मेवेजात समझा था। मैंने मेवेजात कहा है, क्योकि वह हीरा की माला थी, जो मोतियो की तरह बिंधी और पिरोई हुई थी। उनमे से प्रत्येक हीरा आकृति में नारियल के बराबर था। इनका लाल रग, जिसमे मोतियों का सफेद रग अपनी आभा डालता था—इन्हें फल-फूलो का रंग देता था। क्योंकि बेगम जानती हैं कि इनके सिवाय कोई अन्य इनके जवाहिरात को नहीं पहन सकता, इन मालाओं को वे अपने कन्धो पर ओढनी की तरह पहनती है। इनके साथ दोना तरफ मोतियों की मालाएँ होती हैं। बहुधा इनके गले मे तीन से ले लेकर पाँच तक मोतियो की मालाएँ होती हैं, जो कि पेट से नीचे के हिस्से तक पहुँचती है। सिर पर वे मोतियो का गुच्छा-सा पहनती हैं, जो माथे तक पहुँचता है, और जिसके साथ एक बहुमूल्य आभूषण जवाहिरात का बना हुआ सूरज, चाद या किसी और तारे या कभी-कभी किसी फूल की आकृति का होता है। दाहिनी तरफ एक गोल छोटा-सा गहना होता है। जिसमें दो मोतियो के बीच जडा एक छोटा सा लाल होता है। कानो मे बहुमूल्य आभूषण पहनती है, और गर्दन के चारो तरफ बडे बडे मोतियों तथा अन्य बहुमूल्य जवाहिरात के हार, जिनके बीच मे एक बडा सा हीरा, लाल, याकूत या नीलम और इसके बाहर चारो तरफ बडे-बडे मोतियों के दाने। बाहो पर कुहनी से ऊपर दो इ च चौडे बहुमूल्य जडाऊ बाजूबन्द हैं, जिनके ऊपर विभिन्न जाति के मूल्यवान जवाहिरात जडे होते हैं। चारो तरफ मोतिया के छोटे-छोटे गुच्छे लटकते हैं। कलाई पर बड़ी

कीमती पहुँचियाँ या मोतियो के गुच्छे १० या १२ पवितयो मे होते हैं। इस तरह पर इनकी नब्ज की जगह इस तरह ढकी होती है कि मुझे बहुधा इस पर हाथ रखना बडा कठिन हो जाता था। उँगलिया मे बहुमूल्य अँगूठिया पहनती हैं, और दाहिने हाथ के अँगूठे मे एक आरसी होती है जिसमे जवाहिरात का एक छोटा-सा गोल आइना तथा इद गिद मोती जडे होते हैं। इस आइने मे वे बार-बार मुँह देखती हैं, क्योकि इस बात की वे शौकीन होती है, और हर घडी इनकी दृष्टि इसी पर लगी रहती है। इनके कमरे के चारो ओर सोने का एक पटका दो अँगुल चौडा होता है, जो सारे का सारा जवाहिर से भरा हुआ होता है। इजारबन्द दोनो सिरो पर, जो इन के पाजामो को बाँधने का काम देता है—पाँच अँगुल लम्बे पन्द्रह लड के मोतियो के गुच्छे लटकते हैं, और टाँगो के नीचे के भाग मे या तो सोने की पाजेब, या बडे-बडे मोतियो की लडिया। इन गहनो के सिवाय—जिनका मैं इस स्थान पर उल्लेख नही करता—और जो वे अपनी-अपनी इच्छानुसार पहनती हैं, इन शाहजादियो के पास उपरोक्त गहनो के छ से लेकर आठ तक जोडे होते हैं। इनकी पोशाकें बहुमूल्य और इत्र-गुलाब मे बसी हुई होती हैं। दिन भर मे कई-कई बार मे वे वस्त्र बदलती है, क्योकि पूर्वीय देशो मे ऋतु मे कई परिवतन होते रहते है। जब ये महिलाये अपने जवाहिरात को बेचना चाहे, तो इनके लिये ऐसा करना असम्भव हो जाता है, क्योकि मुझे मालूम है कि शाहजादा अकबर जब शिवाजी के इलाके मे था, तो रुपया समाप्त हो जाने के कारण उसने पाच लाल गोआ मे बेचने के लिये भेजे थे, जो इन्ही जवाहिरातो के बराबर थे। पर इन्हे खरीदने पर कोई राजी न था। क्योकि एक तो उनकी कीमत बहुत मागी गई थी, दूसरे वह छिपे हुए न थे।

"हिन्दुस्तान मे सभी स्त्रिया अपने हाथो और पैरो मे एक प्रकार की मिट्टी लगाती हैं—जिसे मेहदी कहते हैं। इससे उनके हाथ-पाँव लाल रँग के हो जाते है। मानो, इन्होने दस्ताने पहन रखे है। इनके ऐसा करने का कारण यह है कि चूँकि यह देश बहुत गम है, इसलिये न तो यहा दस्ताने और न मोजे ही पहने जाते है। इसी कारण से इनको ऐसी बारीक पोशाक पहननी पडती है कि शरीर के अग-प्रत्यग भी दीख पडते है। इन

वस्त्रो को स्राडी और मलमल वहते है। यह एक या दो या तीन कपडे पहनती ह, जिनका वजन अधिक से अधिक आधी छटाक होता है। परन्तु मूल्य उनका ४०) से ५०) रुपया तक होता है। स्मरण रहे, इसमे उस सुनहरी किनारी का मूल्य शरीक नही है, जो वे उनमे लगाती ह। ये स्त्रिया इन्ही वस्त्रा मे सोती और चौबीस घण्ट बाद इन्हे बदल डालती है, जिसके बाद फिर इन्ह नही पहनती, बल्कि अपनी बादियो को दे डालती हैं।

"इनके बाल सदा अच्छी तरह गुँथे रहते है और सुगन्धित तेला से तर रहते हैं। सर पर वे भिन्न भिन्न-प्रकार और रगो के दुपट्टे पहनती ह, जो जरवपन के होते है। सर्दी की ऋतु मे भी, जब यहा गर्मी कम होती है—क्योकि बफ जमना तो यहाँ होता ही नही—ये यही वस्त्र पहनती हैं, परन्तु ऊपरी वस्त्र के ऊपर काश्मीर की बनी हुई एक ओढनी, जो लम्बा-सा खुला चोगा होता है, पहन लेती है, और दूसरे वस्त्रो के ऊपर अत्यन्त सुदर शाल ओढ लेती है, जो इतना बारीक होता है कि छोटी अँगूठी से निकाला जा सकता है। रात के समय बहुधा इनका यह विनोद होता है कि बडी बडी भारी मशालें जलवादे, जिन पर व डेढ लाख से ज्यादा रुपया खर्च कर देती है। ये मशालें, तेल या मोम की होती है। इन शहजादियो मे से कोई-कोई बादशाह की आज्ञा से सिर पर पगडी बाधती है, जो कि मोतियो और बहुमूल्य जवाहराता से जडी होती है, और इनके सौन्दय को चौगुना कर देती है। नाच रग आदि मे तवायफो को भी यही हक प्राप्त होता है। इन बेगमो और शाहजादिया को अपने-अपने रुतबे या खानदान के अनुसार वेतन मिलता है, जो 'याहान' कहाता है। इसके सिवा व बहुधा बादशाह के पास से सुगन्ध, वस्त्र और जूते आदि खरीदने के बहाने से खास भेंट नकद रुपये की सूरत मे भी प्राप्त करती है। इस तरह पर वे बेगम अत्यन्त ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करती है, और इनका काम सिवाय इसके और कुछ नही होता—कि अपना साज शृगार करती रहे, और शान शौकत दिखावें, दुनिया मे इनकी प्रसिद्धि हो, और वह बादशाह को प्रसन्न करने मे सफल हो। यद्यपि इनमे परस्पर बहुत ही विद्वेष होता है, परन्तु ऊपर से व इसे प्रकट नही होने देती। इतने निठल्लेपन, मस्ती और ठाठ-बाट मे यह असम्भव है कि इनके मन मे बुराइयाँ उत्पन्न न होती हो,

क्योंकि वे कभी मृत्यु का विचार भी नही करतीं। सारे महल मे ऐसा शब्द कभी किसी के मुंह से नही सुना जाता, और न कोई ऐसी घटना ही होती है, जिससे मृत्यु का भय इनके सम्मुख आ सके। जब इनम से कोई रोगिनी हो जाती है, तो उसे एक सुन्दर महल में ले जाते हैं, जिसको बीमारखाना कहते हैं। यहाँ पर अत्यन्त सावधानी स उनकी चिकित्सा और परीक्षा होती है, और वहाँ से वे आरोग्य लाभ करके या मरकर ही बाहर आती हैं। यदि रोगी ऐसा हो, जिसके लिये बादशाह के हृदय मे खास इज्जत हो, तो रोग के प्रारम्भ मे वह एक बार उसकी खबर लेन आते ह। परन्तु अगर वह जल्द आरोग्य न हो, तो फिर उसके पास नही जाते, बल्कि समय पर किसी गुलाम को भेजकर उसके समाचार मँगा लेत ह। यद्यपि महल की स्त्रियाँ, जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ, प्रत्येक प्रकार का ठाठ-बाट, दिखावा करती और बडी नजाकत से रहती हैं, पर औरङ्गजेब इसमें कोई दखल नहीं देता। क्योंकि सब लोग रूपवती स्त्रिया के बडे शौकीन होते है, और जगत् मे यही एक चीज है, जो प्रसन्नता प्रदान कर सकती है। मुगल-सम्राटो का तो यह एक नियम ही हो गया है। परन्तु वतमान बादशाह अपने पिता शाहजहाँ की तरह ठाठ बाट से नही रहता। इसके कपडे अत्यन्त सादे होते है पगडी में साफ तुर्रा और छाती पर एक हार के सिवाय यह कोई जेवर नही पहनता। यद्यपि उसकी सन्तान—बल्कि चौथी पीढी तक सब के सब, मोतियो की मालाएँ पहनते है। परन्तु वह इस ओर से उदासीन है। इसके वस्त्र अत्यन्त मामूली कीमत के कपडे के होत है। यहा तक कि इस पर १०) से ज्यादा लागत नही होती। जितने जवाहरात वह पहनता है, उनके नाम किसी-न-किसी नक्षत्र पर रखे हुए होते है। जसे सूर्य्य, चन्द्र या कोई और नक्षत्र—जसा हकीमो ने बतला दिया है। क्योंकि, वह जब कोई जवाहरात मागना चाहे, तो वह यह नही चाहता कि असली नाम लेकर पत्थर माँगे, इसलिये यह कहता है—'महताब लाओ।' आफताब लाओ।' इन जवाहरातो मे से बादशाह को कई तो मुगल सम्राट तमूर आदि अपनी पूवजा से विरासत मे मिले है। साथ ही कई एक गोलकुण्डा या बीजापुर की रियासतो से प्राप्त हुए हैं। महल मे छोटे-बडे सब प्रकार के लालो की यद्यपि कमी नही—फिर भी जवाहरात की खरीद बराबर जारी रहती

है। जब महल मे कोई शाहजादी पैदा होती है तो स्त्रिया अत्यन्त प्रसन्न होती, और मन का हर्ष प्रकट करने के तौर पर अधाधुध खर्च कर डालती हैं। पर जब शाहजादा पैदा होता है, तो दरबार भी उस प्रसन्नता मे भाग लेता है। राग-रग होते और बाजे बजते है, और जितने दिन तक बादशाह हुक्म दे, जश्नो की महफिलें गर्म रहती है। अमीर-उमरा रुपया, हाथी, घोडे आदि तोहफे लेकर बधाइयाँ देने आते है। इसी दिन बादशाह शाहजादे का नाम रखता है, और उसका 'याहान' नियत करता है, जो सदा राज्य के बडे-से बडे जनरल की तनख्वाह से अधिक होता है। इसके सिवा शाहजादे के नाम पर जमीन के बडे-बडे टुकडे नियत किये जाते हैं, और साल के बाद इस जमीन की पैदावार से जो कुछ आमदनी हो, खजाने मे इसके नाम पर अलग जमा की जाती है। और इसकी जब शादी हो जाती है और इसे रहने को अलग मकान दिया जाता है, तो वह रुपया इसे दे दिया जाता है। इन शाहजादो मे किसी की तनख्वाह ५० हजार से ज्यादा नही होती, और यह रकम भी बहुधा सब से बडे पुत्र को जाती है। आज-कल शाह-आलम यही तनखाह ले रहा है। परन्तु इसकी अपनी आमदनी दो करोड रुपये से ज्यादा है। इसके महलो मे १००० के करीब स्त्रियाँ हैं, और उसके दरबार की शान बिलकुल बादशाह के दरबार-जैसी है। जब ये शाहजादे एक बार शाही महल से बाहर आ जाते हैं, तो फिर गुप्त रीति से हिन्दू-राजाओ और मुसलमान-जनरलो को इनाम-इकराम और वेतन बढाने के लालच आदि देकर उन्हे अपना मित्र बनाना शुरू कर देते हैं। वह भी इससे सहमत हो जाते हैं, और जब यह शाहजादा बादशाह हो जावे, तो वह यही समझता है कि यह अमीर इसके पक्ष मे हैं। जब किसी शाहजादे के यहाँ लडका पैदा हो, तो बादशाह उसका नाम रखता है, और वही उसका वेतन भी नियत करता है, जो दो-तीन सौ रुपये रोजाना तक पहुँचता है। बच्चे का बाप भी आमदनी के अनुसार उसका वेतन नियत कर देता है—जब तक कि वह विवाह योग्य अवस्था को न पहुँच जावे और जब कि उसे विशेष तडक-भडक करनी पडती है। बादशाहजादे और उनके पुत्र 'शाहजादे' कहाते हैं, और उन्हें सुलतान की पदवी दी जाती है। बादशाह को जो नजरें भेंट की जाती है, वह उन्हे मालिक की हैसियत से स्वीकार करता है। अर्थात् वह

समझता है कि भेंट देने वाला अपनी आधीनता प्रकट करने के तौर पर वह भेंट दे रहा है और इसे लेना बादशाह का अधिकार है। बाहर की भेंट लेने पर भी यही ख्याल किया जाता है। क्योंकि उसे कबूल करते समय बादशाह प्रकट करता है कि मानो उसे स्वीकार करके वह कोई खास कृपा कर रहा हो, क्योंकि वह अपने आपको दुनिया में सबसे बड़ा बादशाह समझता है। इसी प्रकार से जब वह किसी बादशाह को कुछ लिखे, तो उसे भी अमीर या रेजीडेण्ट कहकर सम्बोधन करता है। यदि कोई आदमी स्थान या नौकरी प्राप्त करने की इच्छा से कोई भेंट उपस्थित करे, और फिर उसे वह जगह न मिले, जैसा कि कभी कभी होता है तो उसकी भेंट व्यर्थ ही जाती है। मुझे खूब याद है कि एक फ्रांसीसी सौदागर माशिये-पेशियन के साथ यही घटना हुई थी, जिसने इस आशा पर कि बादशाह इसके तमाम जवाहिरात खरीद लेगा—एक हज़ार रुपये कीमत का एक जमरुद भेंट किया था। पर जब बादशाह ने इनमें से एक भी न खरीदा, तो वह बहुत पछताया, और मुलताफखाँ से, जो इस समय शाही खिलवत-खाने का अफ्सर था, जाकर अनुनय-विनय करने लगा कि उसका जमरुद वह उसे वापिस दिला दे। इसमें सन्देह नहीं कि मुलताफखाँ की सिफारिश से वह जमरुद उसे वापिस मिल गया, पर फिर भी उस पर उसका आधा मूल्य खर्च होगया, और यह भी बादशाह की उस पर विदेशी होने के कारण कृपा थी। भारतवर्ष में यह एक प्रथा सी होगई है, कि वसीले और रुपया खर्च किये बिना कुछ नहीं मिल सकता। यहाँ तक कि जब शाहज़ादे भी कोई मतलब सिद्ध करना चाहें, तो बिना रुपया खर्च किये नहीं कर सकते। साल गिरह या अन्य त्यौहार के अवसरों पर और खासकर नौ-रोज़ के दिन—जब, जैसा कि मैं आगे चलकर बताऊँगा, बादशाह और शाहज़ादे अपने आपको तौलते हैं, तमाम अमीरों की स्त्रियाँ बेगमों और शाहज़ादियों को मुबारिकबादी देने के लिये जाती हैं। वह भी, खाली हाथ नहीं—सदैव बहुमूल्य भेंट लेकर आती और इस त्यौहार की समाप्ति तक, जो बहुधा छः से नौ दिन तक रहता है—दरबार ही में रहती हैं। नाचने और गानेवालियाँ बधाई गा चुकती हैं, तो बेगमात सोने चाँदी की बनी हुई किश्तियाँ प्रदान करती हैं। तमाम जनाने पहरेदारों को सिर से पैर तक वस्त्र और जवाह-

रात दिये जाते है, तथा तनग्वाहो मे तरक्की की जाती है। अमीरो की स्त्रिया भी जब आती है, तो इह बहुमूल्य वस्त्र और जवाहरात मिलते है, और जब वह विदा होती हे, तो उनके हाथ खिचडी से भरे होते हैं। खिचडी एक प्रकार का खाना ह, जो भिन्न प्रकार की मेवा और फलो को मिलाकर तैयार किया जाता हे। पर स्मरण रहे, इनकी खिचडी साधारण खिचडी नही होनी, बल्कि सोने-चादी के सिक्को और बहुमूल्य जवाहरात तथा छोटे-बडे मोतियो की बनी हुई होती ह। जिस दिन कोई शाहजादा या शाहजादी पैदा हो, तो बच्चे को एक पीले रेशम का तागा पहनाकर उसमे गाठ दे दी जाती है, जो उस दिन का चिन्ह है, जब वह पृथ्वी पर जन्मा हो। अगले वर्ष उसी दिन एक और गाठ दे दी जाती है। और इस वर्ष गाठ के उपलक्ष्य मे वैसे-ही और जल्से-जश्न और गाने-बजाने का बाजार गम रहता है। पैदा होन के थोडी देर बाद बच्चे का नार काटा जाता है, और १० धागे बाँधकर ४० दिन तक कुछ ताबीजो के साथ उसके सिरहाने रख दिया जाता है। ४० दिन के बाद यह तार और ताबीजो की थैली शाहजादे के गले मे बाध दी जाती है। मुगल-साम्राज्य मे यह रस्म बिना पालन किये नही रह सक्ती।

"बहुधा औरङ्गजेब को 'पीर-दस्तगीर' कहकर पुकारते है। अर्थात् वह पूज्य पुरुष हाथ के हिलाने से दु ख और रज दूर कर सकता है। जब यह छोटा शाहदादा, जिसका मैं जिक्र कर रहा हूँ, दो साल की आयु को प्राप्त होता है तो इसे पिता की भाषा या—तातारी, जो तुर्क की पुरानी भाषा है, सिखलाई जाती है। इसके बाद इसे विद्वानो और ख्वाजासरो के हवाले कर दिया जाता है। वे इसे समस्त फौजी और सासारिक विद्यायें सिखा देते है। इस बात की विशेष चेष्टा की जाती है, कि वह बुरी आदत न सीखने पाय। विनोद के तौर पर कई नाटक आदि इसे दिखाये जाते हैं, या मुकदमे पेश किये जाते है, जिनमे वह दोनो तरफ के बयान और जिरह आदि सुनकर फैसले करता है। इसी तरह इसको युद्ध मे भी ले जाते ह, जिसमे यह अनुमान किया जाता है कि वह यदि कभी अधिकार प्राप्त करे, तो उसे ससार का कुछ-न-कुछ अनुभव हो, और वह प्रत्येक मामले पर ठण्डे दिल और दिमाग से गौर कर सके।

"जब बादशाह शिकार खेलने को या मस्जिद मे जाते हैं, तब इन छोटे शाहजादा को साथ ले जाते हैं। इस तरह ये महल के अन्दर सोलह साल की आयु तक रहते तथा शिक्षा पाते है। इसके बाद इनकी शादी की जाती है। ये आयु भर महल ही मे रहते है, और इन्हे खासी पेन्दान मिलती है। शादी के बाद शाहजादो को अलग महल प्रदान किया जाता है। इनके पास बहुत सी आमदनी और दास दासिया की एक बडी सख्या हो जाती है परन्तु अच्छे अच्छे विद्वान और जासूस सदा इनके साथ रहते हैं, जो बादशाह को सब बाता की सूचना देते रहते है। जब यह शाहजादे अपने-अपने महल मे रहते है तो वे स्वय उपरोक्त विधि से अपनी साल गिरह और त्यौहार मनाते है, और उनके अफसरा को उन्ह उसी प्रकार भेट आदि देनी पडती है। सन १६६६ ई० मे, जब बादशाह आलमशाह औरङ्गाबाद मे अपनी वर्ष-गाठ की प्रसन्नता मना रहा था तो उसकी माता ने कई बहुमूल्य भेंटें—जिनका मूल्य ५० हजार के लगभग था—उसे दी, परन्तु इस पर भी उसने अप्रसन्न होकर शिकायत की, कि दूसरे वर्षो की अपेक्षा इस साल माता ने बहुत कजूसी दिखाई है। इस तरह पर मल्का को विवश और भट देनी पडी। महल की आम शाहजादियो ने भी इसी तरह अपनी शक्ति के अनुसार भेंट दी। इन अवसरा पर इन बातो का यहा तक ख्याल रखा जाता है, कि प्रत्येक आदमी, चाह वह बडा आदमी हो, चाह मामूली हैसियत का, अपनी सामथ्य के अनुसार अवश्य कुछ-न कुछ ले जाता है। उन लोगो का वष २२ माच को आरम्भ होता है, और उस दिन—जैसाकि कि मैं वणन् कर चुका हूँ, एक भारी महोत्सव मनाया जाता है। महल के इद-गिद और भीतर-बाहर बहुमूल्य पर्दे लटकाये जाते ह, जो शाहजहा की आज्ञा से तरत ताऊस के साथ तयार किये गये थे। यह तरत बहुत मूल्यवान् है, परन्तु बनाने वाले के भाग्य मे इस पर बैठना नही लिखा था। औरङ्गजेब ने ही पहिले-पहल अपने राजतिलक के दिन इसका प्रयोग किया था। यह एक ऊँची छत के कमरे मे रखा हुआ ह, और उत्सव के दिन बादशाह इस पर विराजता है। उस दिन का यह दस्तूर है कि हिंदुस्तान के इससे प्रथम के बादशाहा ने जो तरत काम मे लिये थे, वे इस तख्त के चारो तरफ—जरा नीचे, रखे जाते हैं।

"उस दिन पुरानी रीति के अनुसार शाही खानदान के तमाम व्यक्ति भिन्न-भिन्न रीति से तोले जाते हैं। प्रथम, हर प्रकार की धातुओ के साथ, जैसे सोना, चादी, ताँबा-आदि। फिर विविध प्रकार के वस्त्रो के साथ, जैसे जरवफ्त, कलावत्तू, मखमल-आदि। तत्पश्चात् भिन्न प्रकार के अन्नो के साथ जैसे गेहूँ, चावल, जौ-आदि। इससे अभिप्राय यह होता है, कि पिछले साल और इस साल के वज़न मे अन्तर मालूम हो जाय। वे तमाम वस्तुएं गरीबो मे दान कर दी जाती है, और प्रत्येक का वजन उस दिन की पुस्तक मे दर्ज कर लिया जाता है। बादशाह को उस दिन खूब फायदा होता है। क्योकि महल के प्रत्येक व्यक्ति और दरबार के अमीरो का कर्तव्य है कि उसे भेट दें। उस दिन को नौरोज, यानी नयी साल कहते है। बादशाह भी इस दिन अनेक रीतियो से अपनी कृपायें प्रदान करता है। जैसे, उस दिन वह कई जगह नये हाकिम नियत करता है, कई जगह पुरानी बातो मे परिवर्तन करता है, और बहुत-से लोगो को हाथी, घोडे, जवाहरात, सरोपा-आदि देता है। जब वह सफर मे हो, तो वैसी शान से उत्सव नही होता, न तख्त लाये जाते हैं। क्योकि वह दिल्ली के किले के बाहर नही लाये जाते।

"एक और त्योहार भी है, जो बडी शान से मनाया जाता है। इसे ईद-कुरबानी, यानी कुर्बानियो का त्योहार कहते है, जो इनके रोजो की समाप्ति पर होता है, और उस दिन बादशाह नौ बजे बडे ठाठ-बाट के साथ महल के बाहर निकलकर मस्जिद मे जाता है। वहा पर काजी अज़म सात नम्बर के जीने के पास खडा हुआ, उसकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। पहली रस्म हो चुकने के पीछे काजी बडी ऊँची आवाज से तैमूरलग से आरम्भ करके तमाम मुगल-बादशाहो के नाम और उनकी प्रशसा बडी सफाई के साथ और बढा-चढाकर सुनाता है। इसी तरह जब वर्तमान बादशाह का नाम आता है, तो वह उसकी प्रशसा मे बहुत-कुछ कहता है, जिसके साथ खुशामद की भारी मात्रा होती है। वह बादशाह को अनेक प्रकार के धार्मिक खिताब देता है, और अन्त मे उसके गुणो की तारीफ के पुल बाध देता है, तथा उसकी बहादुरी और न्याय की सराहना करता है। इस फतवे के पढते समय यह अनिवार्य होता है, कि वह खूब सावधान रहे, और अपने हृदय की सभी बातों को बयान कर दे, क्योंकि जरा-सी भी

भूल या गलतबयानी करने पर सिर काटने के लिए जल्लाद उसके पीछे खड़ा रहता है। जब यह बात मालूम हो जाती है तो काजी या खुद बादशाह सिर से पैर तक के वस्त्र प्रदान करता है। मस्जिद से जिस समय चलते हैं, तो सीढ़ियों के नीचे कुरबानी के लिए एक ऊँट तैयार खड़ा रहता है। बादशाह अपनी सवारी पर सवार होकर उसकी गर्दन पर नेजे से वार करता है। यदि स्वयं ऐसा न करना चाहे तो अपने पुत्रों में किसी को ऐसा करने की आज्ञा देता है। बहुधा जब शाहआलम दरबार में होता था तो वह इस रस्म को कुरबानी का—जैसा कि यह लोग इस काम को कहते हैं—किया करता था। इसके बाद कुरबानी के ऊँट को जमीन पर लिटाकर इसका गोश्त इस तरह बाँट देता है, मानो यह किसी महात्मा का प्रसाद है।

ख्वाजासरा को—जिसका मैंने ऊपर नाम दिया है—नाजिर यानी सुपरिण्टण्डेण्ट का खिताब मिला हुआ है। बादशाह शाहजादे शाहजादियाँ, बेगमात उन पर विश्वास करते हैं और हर एक बेगम शाहजादी या महल की अन्य स्त्री का एक एक नाजिर होता है जो इसकी जायदाद जागीर और आमदनी का हिसाब किताब रखता है अथवा इनका प्रबन्ध करता है। तमाम अफसरों, नौकरों और गुलामों को अपने तमाम कामों और तमाम कपड़े आदि का हिसाब इन ख्वाजासराओं को देना होता है। बहुधा नाजिर की अधीनता में भी अन्य कई वृद्ध और जवान ख्वाजासरा होते हैं, जिनका महल में आगमन लगा रहता है। इनमें से कोई चिट्ठी-पत्री आदि ले जाता है, और कइयों पर इधर-उधर के बहुत-से कामों की जिम्मेवारी होती है। कई एक का फाटक पर यह काम होता है कि वह महल के अन्दर जाने वालों को देख लें, और इस बात की सावधानी रखें कि महल में शराब, भंग, अफीम या अन्य कोई नशे की चीज न जाने पाये क्योंकि महल की तमाम स्त्रियाँ ऐसी ऐसी नशीली चीजों को बहुत चाहती हैं। न महल के अन्दर गाजर, मूली, बैगन और ऐसी सब्जी जिनका नाम न लेना चाहिए, प्रवेश नहीं हो सकती। जब कोई स्त्री किसी को मिलने महल में आये—तो, यदि वह परिचित न हो, तो बिना इस बात का ख्याल किये कि उसके पद की मर्यादा क्या है, उसकी तलाशी ली जाती है। इतनी कड़ाई का कारण यह है कि ख्वाजासरों को इस बात का भय रहता है कि

कोई नवयुवक-मद ज़नानी पोशाक मे महल के भीतर न चला जाय। जब राज-मिस्त्री या अन्य मजदूर वहाँ काम करते हो तो प्रत्येक दरवाजे से गुजरते हुए इनके नाम रजिस्टर मे नोट किये जाते हैं। साथ-ही इनके चेहरो के निशान आदि, जिनसे इनकी पहचान हो सके, लिख लिये जाते ह। एक कागज पर यह सब विवरण लिखकर ख्वाजासराओ के सुपुर्द कर दिये जाते हैं,—इन्हे महल से इसी तरह बाहर ले जाते है, और वे इस बात की विशेष सावधानी रखते ह कि वापस आनेवाला व्यक्ति वही और उसी हुलिये का है। इस तमाम सावधानी का कारण यह भय है, कि कही कोई आदमी भीतर रह जाय, या किसी को भीतर मे बदलकर न भेज दिया जाय। दरवाजो पर स्त्रिया नियत होती हैं, जो बहुधा काश्मीर की होती हैं। उनका काम यह है कि जिस चीज की आवश्यकता हो, महल के भीतर ले आयें, और वहा से बाहर ले जायें। ये स्त्रिया किसी से पर्दा नही करती। महल के बडे-बडे दर्वाजे सूर्यास्त होने पर बन्द कर दिये जाते है, और बडे फाटक पर सिपाहियो का एक मजबूत दस्ता पहरे पर होता है। इसके सिवा उन पर मुहर भी लगा दी जाती है। सारी रात मशाले जलती रहती है। प्रत्येक के पास एक-एक घडियाल होता है, तथा एक स्त्री भी मौजूद रहती ह, जिसे नाजिर को प्रत्येक घटना और सब आने-जाने वालो के सम्बन्ध मे रिपोर्ट देनी पडती है। जब किसी हकीम को महल के अन्दर ले जाने की आवश्यकता होती है, तो उसके सिर और शरीर को कमर-तक ढक दिया जाता है, और इस दशा मे उसे ख्वाजासरा अन्दर ले जाते हैं, तथा इसी प्रकार बाहर निकाल लाते है। अन्य अमीर भी अपनी स्त्रियो पर इसी प्रकार कडाई करते है, जैसा कि बादशाह। इसका कारण यह है कि, इस मामले मे मुसलमान लोग बहुत अनुदार होते हैं, और उनका स्वभाव इतना शङ्काशील होता है, कि अपनी स्त्रियो को वे किसी के सामने जाने की आज्ञा नही देते। यही नही, हालत यहा तक पहुँची हुई है कि बहुत सा को तो अपने भाइयो तक पर विश्वास नही। इस तरह स्त्रिया कडी निगरानी मे बन्द रहती हैं, और कडी पाबन्दियो मे दिन काटती हैं। न इन्ह स्वाधीनता है, न कोई काम। इसलिये तमाम दिन इन्हें शृंगार-पटाव के और कोई काम नही। इनके मन की भावनायें उत्तेजना से परिपूर्ण होती है।

न वात का एक बार स्वय इन स्त्रिया मे से एक ने मेरे सामने इजहार ाया था। वह स्त्री आगफरा वजीर की पत्नी थी। इसका नाम नवल-ाई था। इसने मुझे वताया, कि 'मेरे ख्यालात सदा यह सोचने म लग हते हैं, कि कोई-न-कोई ऐसा जरिया हो, जिसस मैं अपने पति को प्रसन्न र सकू, और वह दूसरी स्त्रिया के निकट न फटके। इससे यह नतीजा नकलता है कि इन सबके विचारा की धारा केवल एक ही ओर है। सके सिवाय कोई और विचार आता ही नही। अच्छे-अच्छे शोरवे-कवाव ाने और अच्छे से-अच्छे कपडे पहनने तथा जवाहरात और मोतिया से दी रहने का उन्ह वडा चाव है। शरीर को सदा इत्र और सुगन्ध स तर खने की उन्ह इच्छा होती है। हाँ इस वात की इन्ह बडाव आज्ञा होती कि स्वांग-तमाशे और नाच देखें, इश्किया कहानियाँ और किस्से सुनें, ूलो की सेजो पर आराम करें वागो म घूमें वहते हुए पानी मे किलोल रें, राग-रग का आनन्द लें, आदि-आदि। कोई-कोई ऐसी हैं जो केवल इसलिये समय-समय पर बीमारी का बहाना करती हैं, कि इस बहाने हकीम देखने आयेगा, तो वात चीत करने और नब्ज छुआने का मौका हाथ आयेगा। हकीम आकर पर्दे मे हाथ देखता है, तो वह उसे पकडकर चूम लेती हैं, और धीरे-से दाँतो मे दवा लेती हैं। वल्कि कई-एक तो उसे अपनी छाती पर रख लेती हैं। ऐसी घटनाएँ मेरे साथ कई वार हुई हैं। परन्तु मैंने ऐसा प्रकट किया, मानो कुछ हुआ ही नही। अन्यथा इद गिद की स्त्रिया और ख्वाजासरा असल मामले को भाँपकर सन्देह मे पड जाते। ये स्त्रियाँ हकीमो से बहुधा उत्तम व्यवहार करती हैं, और वह भी इनके साथ वात-चीत अथवा अन्य विषयो मे वडी बुद्धिमानी से पेश आते हैं। कारण यह कि इनकी भाषा मँजी हुई और सयत होती है। ये दरवार के उमराओ को दवाइया देने मे वडी उदारता दिखाती हैं और उनके लिये —जिनकी वे इज्जत करती है—तरक्की और खास नौकरियाँ प्राप्त करने मे बुद्धिमान होती है। इनके तोहफे बहुधा घोडे, सरापा, तुर्रा तथा अन्य चीज होती है।

"शायद ही इनकी कोई ऐसी सेवा की जाती होगी, या इनसे कोई अच्छा सलूक किया जाता होगा, जिसका वह एक या दूसरी तरह से वदला

न चुका देती हो। हा, इतना अन्तर अवश्य होता है, कि प्रत्येक आदमी को अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार ही सब मिलता है,—या, यह कि जितना वे इन महिलाओ के दिल पर अपना प्रभाव जमा सकें। मैंने देखा है, कि औरङ्गजेब की लडाई ने नवाब जुल्फिकारखा और उसके पिता के साथ भिन्न-भिन्न व्यवहार किये थे। इस नवाब को बादशाह ने कर्नाटक का हाकिम बनाकर भेजा था, और चलने से प्रथम वह इस शाहजादी से विदा होने गया, क्योकि इसका विवाह इसके किसी सम्बन्धी से ही हुआ था। शाहजादी ने चलते समय इसे एक पान की डिबिया और एक सोने का पीकदान प्रदान किया था, जो चारो तरफ कीमती जवाहरात से जडा था। इस घटना के एक साल बाद कुछ सरकारी कारणो से बादशाह ने अपने पुत्र कामबख्श को वजीर आसफखाँ की आधीनता मे उसी ओहदे पर नियुक्त करके भेजा, और जब वजीर इस शाहजादी से मिलने आया, तो उसने चलते वक्त एक पान की डिबिया प्रदान की—जो चादी की थी। इस पर आसफखा ने इतने कम मूल्य का तोहफा देखकर शिकायत करते हुए कहा —"कम-से कम मुझे अपने प्यारे पुत्र से अधिक नही, तो उसके बराबर तो मिलना चाहिये, क्योकि मैं उसका पिता हूँ, और उससे ऊँचा पद रखता हूँ, तथा साम्राज्य का प्रधान-मन्त्री हूँ।"

"शाहजादी—परन्तु उनमे और आप मे एक अन्तर भी है। वह यह कि आपका पुत्र हमारा सम्बन्धी है, परन्तु आप केवल नौकर है।" यह सुनकर बेचारा बूढा कुछ न बोल सका, और कोर्निश करके चलता बना। —क्योकि सभी शाही व्यक्तियो को उसी तरह अभिवादन करना पडता है, चाहे उनका बादशाह से कैसा-ही निकट का रिश्ता क्यो न हो।

"इन स्त्रियो से विदा मागने की विधि वह नही, जो आपमे से बहुतो का विचार होगया है, क्योकि इन्हे कोई देख तो पाता नही, इसलिए में यहा उसका भी कुछ वर्णन किये देता हू। जब किसी आदमी को इनसे विदा होना हो, तो वह पहले महल के दरवाजे पर जाकर ख्वाजासराओ से कहता है कि मैं इस मतलब से आया हूँ, और अमुक व्यक्ति को मेरे आने की सूचना द दो। ख्वाजासरा यह सन्देशा भीतर ले जाकर उसका जवाब ले आते हैं। जैसा कि मैंने ऊपर कहा है, इन स्त्रिया मे से कोई बाहर नही निकलती,

और कभी-कभी किस्से-कहानी की कोई पुस्तक अथवा कागज लेकर ही साथ आथ रहते हैं।

"प्रत्येक अमीर के लिये यह आवश्यक है कि प्रति दिन प्रात काल ११ बजे, जब तक बादशाह दरबार मे बैठता है और फिर सध्या के समय ६ बजे सलाम करने के लिये उपस्थित हो, और प्रत्येक को अपनी-अपनी बारी पर दुग मे उपस्थित होकर सप्ताह मे एक दिर पहरा देना पडता है। उस समय ये लोग बिछाने के वस्त्र और कालीन अपने साथ ले जाते हैं परन्तु भोजन इ हे शाही भोजनालय से ही मिलता है जिसको लेते समय एक विशेष प्रकार की प्रथा के अनुसार काय किया जाता है। अर्थात् खडे होकर आर बादशाह के तथा बादशाह के महल की ओर मुँह करके अमीर तीन बार झुक कर सलाम करते है। फिर अपना हाथ प्रथम भूमि तक लेजाकर फिर मस्तक तक उठाते हैं।

"जब कभी बादशाह पालकी, हाथी या तख्त पर सवार होकर निकलता है तो बीमार या वृद्ध अथवा उन आदमियो को छोडकर जो किसी विशेष कारण से मुक्त होते हैं सब अमीरो को उसके साथ अवश्य ही रहना पडता है। हाँ, जब वह नगर के निकट शिकार खेलने या बाग मे या किसी मस्जिद मे नमाज पढने के लिये जाता है तो केवल कभी-कभी वही अमीर उसके साथ जाते हैं जिनकी उस दिन चौकी होती है। नियम यह है कि बादशाह चाहे शिकार मे हा चाहे सेना लेकर किसी लडाई मे जायें अथवा एक नगर से दूसरे नगर को जाते हा छत्र चँवर आदि उनके साथ रहते हैं और अमीरो को—चाहे कैसी ही कडी धूप पडती हो वर्षा हो या गर्मी के मारे दम घुटा जा रहा हो—घोडा पर चढकर बिना किसी प्रकार की छाया के साथ-साथ रहना होता है।

मनसबदार एक प्रकार के सवार हैं जो मनसब या वेतन पाते हैं। उनका वेतन माकूल और उनकी प्रतिष्ठा के योग्य होता है। यद्यपि वह अमीरा के वेतन के समान नहीं है—पर तु साधारण सवारा से बहुत अधिक है। इसी कारण छोटी श्रेणी के अमीरा मे इनकी गणना की जाती है। बादशाह के अतिरिक्त य किसी के आधीन नहीं हैं, और जो काम अमीरा से लिया जाता है—वही इनसे भी लिया जाता है। यदि इनके पास भी कुछ

सवार हो, जैसा कि पहले नियत था, तो यह भी अमीरो के बराबर हो जायें। परन्तु आजकल इनके पास केवल दो-चार घोडे रहते है, जिन पर बादशाही चिन्ह लगे रहते हैं। इनका वेतन कभी-कभी १५०) रु० मासिक तक होता है। परन्तु ७००) रु० मासिक से अधिक नही होता।

रोजीनेदार भी एक प्रकार के सवार ही हैं, जिनका वेतन प्रतिदिन मिल जाया करता है, जैसाकि स्वय उनके नाम से प्रकट है। परन्तु इनकी आमदनी बहुत है। कभी-कभी तो ये लोग मनसबदारो से भी अधिक पा लेते हैं। तथापि विशेप प्रकार का वेतन होने के कारण अधिक वेतन से इनकी प्रतिष्ठा नही है, और मनसवदारो की भाति ये लोग ऐसे कालीन और फर्श मोल लेने को विवश नही है, जो महलो में काम मे आने के बाद मनसबदारो को लेने पडते हैं, तथा प्राय जिनके लिये मनसबदारो को बहुत मूल्य देना पडता है। इन लोगो की सख्या बहुत अधिक है, और छोटे-छोटे काय इन लोगो के सुपुर्द हैं। इनमे बहुत से मुत्सद्दी और नायव-मुत्सद्दी हैं, और बहुत-से इस काम पर नियुक्त है कि उन आज्ञा-पत्रो पर, जो रुपया देने के लिये लिखे जाते हैं—सरकारी मुहरें लगायें। उन्हींमे कुछ ऐसे है, जो इन आज्ञा-पत्रो का काय शीघ्र समाप्त कर देने के बदले घूस लिया करते हैं।

अब साधारण सवारो का वृत्तान्त सुनिये। ये उन अमीरो के आधीन होते हैं—जिनका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। साधारण सवार दो प्रकार के होते है—एक तो दो घोडेवाले, जिनको बादशाही सेवा के लिये तैयार रखना अमीरो के लिये आवश्यक है, और जिनके घोडो की रानो पर उन अमीरो के चिह्न लगे रहते हैं। दूसरे एक घोडेवाले होते हैं, और दो घोडेवालो का वेतन और सम्मान एक घोडेवाले की अपेक्षा अधिक है। यद्यपि सरकार से एक घोडेवाले सवार के निमित्त २५) रु० मासिक के हिसाब से मिलता है, परन्तु सवारो को कम या अधिक देना बहुत-कुछ उनके सरदारो, अर्थात् अमीरो की उदारता पर निर्भर रहता है।

पैदल सिपाहियो का वेतन सब प्रकार के ऊपर लिखे कर्मचारियो मे कम है। इनकी श्रेणी के लोग बन्दूकची है। इन्हें आराम और शान्ति के समय भी बहुत-से बखेडो मे रहना पडता है। अर्थात् बन्दूक चलाते समय

जब ये घुटने टेककर बैठते है, और अपनी बन्दूक को लकडी की तिपाइयों पर रखकर, जो बन्दूक के साथ लटकती है—चलाते है तो उनकी यह बैठक देखने ही योग्य होती है, और इतनी सावधानी करने पर भी यह डर लगा रहता है, कि कही बन्दूक दागनेवाले की लम्बी दाढी और आखे न जल जाय, अथवा किसी भूत-प्रेत के विघ्न से कही बन्दूक फट न जाय !

पैदल सैनिको मे किसी का वेतन २०) रु० मासिक है किसी का १५) रु० और किसी का १०) रु०। परन्तु गोलन्दाजो का वेतन बहुत है,—विशेषकर विदेशी गोलन्दाजो का, अर्थात्—पुर्तगीजो, डचो, अँग्रेजो, जर्मनो और फ्रांसीसियो का जो गोआ और डचो तथा अँग्रेजो की कम्पनी के कार्यालयो से भाग आते है। प्रारम्भ मे जब मुगल-लोग तोप चलाना अच्छी तरह नही जानते थे, इन विदेशी गोलन्दाजो को अधिक वेतन मिलता था, और उसमे से अब भी कुछ लोग है, जो २००) रु० मासिक तक पाते है। परन्तु अब बादशाह इन लोगो को बहुत कम नौकर रखता है, और २० रु० से अधिक वेतन नही देता।

तोपखाना दो प्रकार का है—एक भारी, दूसरा हल्का। भारी तोपखाने के विषय मे मुझे स्मरण है कि जब बादशाह बीमारी के बाद सेना-सहित लाहौर के मार्ग से काश्मीर गया था—जिसको भारतवर्ष मे द्वितीय स्वर्ग कहते है, तो उस यात्रा मे जम्बूरको अर्थात् ऊँटो पर एक प्रकार की बहुत छोटी छोटी तोपे रखनेवालो के अतिरिक्त जो दो-तीन सौ तेज ऊँटो पर थे सत्तर भारी तोपें, जिनमे प्राय विरजी तोपें थी (ये छोटी तोप दो दो बन्दूको के बराबर थी) साथ थी।

भारी तोपखाना बादशाह के साथ नही रहता था क्योकि आखेट करने या पानी के निकट रहने के अभिप्राय से बादशाह सीधे मार्ग से अलग होकर चलता था और ये तोप ऐसी भारी थी कि दुर्गम मार्गो नावो या पुलो पर से, जो शाही सेना के उतरने के लिये बनाये गये थे—जा नही सकती थी। परन्तु हल्का तोपखाना सदैव बादशाह के साथ रहता था। आखेट के स्थानो मे, जो बादशाह के लिये ठीक किये हुए रहते है, और जानवरो को रखने के लिये, जिनकी नाके बन्दी आखेट के समय की जाती है, जब बादशाह बन्दूक से अथवा और किसी प्रकार से आखेट करना चाहता

है, तो यह तोपखाना जितना शीघ्र सम्भव होता है, आगे के पडाव—जहाँ बादशाह और बडे-बडे अमीरों के खेमे पहले से लगे होते है—जा रहता है। बादशाही खेमा के सामने इन तोपो की लाइन लगा दी जाती है, और जब बादशाह पडाव मे पहुँचता है तो उसकी सूचना के लिये सलामी की जाती है।

"जो सेना प्रान्तो मे नियत रहती है, उसकी, और बादशाह के साथ रहनेवाली सेना की अवस्था मे इसके अतिरिक्त और कुछ अन्तर नहीं है। प्रान्तो मे रहनेवाले सैनिको की सख्या अधिक है। प्रत्येक प्रान्त मे अमीर मन्सबदार, साधारण प्यादे और तोपखाने उपस्थित रहते हैं। एक दक्षिण प्रान्त मे २५-३० सहस्र सवार रहते हैं, जो गोलकुण्डा के शक्ति-सम्पन्न बादशाह के धमकाने, और बादशाह-बीजापुर तथा उन राजाओ से लडने के लिये आवश्यक हैं, जो आपके बचाव के विचार से अपनी सेना लेकर बीजापुर के बादशाह से मिल जाते हैं। काबुल-प्रान्त मे जो सेना है, और जिसका ईरान, बिलोचिस्तान, अफगानिस्तान तथा अन्यान्य पहाडी देशो के विरोध और उपद्रवो को रोक-थाम करने के लिये रहना प्रयोजनीय है, वह बारह अथवा पन्द्रह सहस्र से कम नही हो सकती। काश्मीर मे चार सहस्र से अधिक सैनिक, और बङ्गाल मे, जहाँ सदैव लडाई-भिडाई रहा ही करती है, बहुत अधिक सेना रहती है। कोई प्रान्त ऐसा नही है, जहाँ उसकी लम्बाई, चौडाई और अवस्था के विचार से कम या अधिक सेना रखना आवश्यक न हो। इसलिये समग्र सैन्य की सख्या इतनी अधिक है, जिस पर सहसा विश्वास नही हो सकता। पैदल सेना को, जिसकी सख्या कम है, अलग रखकर और घोडा की उस सख्या को, जो नाम-मात्र के लिये है, और जिसको सुनकर अनजान आदमी धोखा खा सकता है, छोडकर, मैं तथा दूसरे जानकार लोग अनुमान करते है कि वे सवार, जो बादशाह के साथ रहते हैं, राजपूतो और पठानो-समेत पैंतीस या चालीस हजार होंगे, जो प्रान्तीय सैनिको के साथ मिलकर दो लाख से अधिक हो जाते है।

"इस बात का वर्णन भी आवश्यक है कि अमीरो से लेकर सिपाहियो तक का वेतन हर दूसरे महीने बाँट दिया जाना प्रयोजनीय होता है, क्योकि

वेतन के सिवा, जो कि बादशाही खजाने से मिलता है, कोई और द्वार उनके पेट पालने का नही है।

"आगरे और देहली के अस्तबलो मे दो या तीन सहस्र तो केवल अच्छे घोड ही हैं, जो आवश्यकता के लिये सदा तैयार रहते हैं, और आठ या नौ सौ हाथी तथा बहुत से टट्टू और खच्चर और मजदूर भी होते है, जो उन असख्य और बडे लम्बे चौडे खेमो और उनके साथ छोटे खेमो, तथा बेगमो और महल की अन्यान्य स्त्रियो, और सामान तथा बावर्चीखाने के असबाब और गगा-जल आदि बहुत-सी वस्तुओ के उठाने के लिये होते हैं, जिनका यात्रा के समय बादशाह के साथ रहना आवश्यक रहता है।"

औरगजेब के समय की दिल्ली, किला और तत्कालीन नागरिकता का वणन भी 'वर्नियर' इस भाति करता है —

"यह शहरपनाह नगर और किले, दोनो को घेरे हुए है, तथा उसकी लम्बाई इतनी अधिक नही है, जितनी लोग समझते है, क्योकि तीन घण्टे मे मैं उसके चारो ओर फिर आया हूँ। मेरे घोडे की चाल एक फ्रासीसी 'लीग या तीन मील प्रति घण्टे से अधिक न थी। मैं इसमे राजधानी के आस-पास की उन बस्तियो को नही मिलाता, जो बहुत दूर तक लाहौरी दरवाजे की ओर चली गई है, और पुरानी देहली के उस बचे हुए भाग को, और उन तीन चार बस्तिया को भी नही मिलाता हूँ, जो राह के पास हैं, क्योकि इन्हे भी उसी मे मिलाने से शहर की लम्बाई इतनी बढ जाती है कि यदि शहर के बीचो-बीच एक सीधी रेखा खीची जाय, तो वह साढे-चार मील से अधिक होगी। यद्यपि बाग आदि के बीच मे आजाने के कारण मैं नही कह सकता कि नगर का ठीक व्यास कितना है,—पर फिर भी इसमे सन्देह नही कि वह कुछ छोटा-मोटा नही है।

"किला, जिसमे शाही महलसरा और मकान हैं, जिनका वणन मैं आगे चलकर करूँगा, अर्द्ध-गोलाकार सा है। इसके सामने जमना नदी बहती है। किले की दीवार और जमना नदी के बीच मे एक बडा मैदान है, जिसमे हाथियो की लडाई दिखाई जाती है, अमीर सरदारो और हिन्दू राजाओ की फौज बादशाह के देखने के लिये खडी की जाती है, जिन्हे बादशाह महल के झरोखे से देखता है।

किले की दीवार अपने पुराने ढग के गोल बुर्जों के कारण शहर-पनाह से मिलती-जुलती है। इसीलिये शहरपनाह की अपेक्षा यह अधिक सुन्दर है। साथ-ही यह शहरपनाह से ऊँची और सुदृढ भी है। इस पर छोटी तोपें चढी हुई हैं, जिनका मुँह नगर की ओर है। नदी की ओर को छोडकर किले की सब ओर गहरी और पक्की खाई बनी हुई है। इसके बाध मजबूत पत्थर के बने हुए ह। यह खाई हमेशा पानी से भरी रहती है, और इसमें मछलिया बहुत अधिकता से हैं। यद्यपि यह इमारत देखने मे बडी मालूम होती है, पर वास्तव मे यह दृढ नही है। मेरी समझ में एक साधारण तोपखाना इसे गिरा सकता है। इस खाई के निकट एक बहुत बडा बाग है, जिसमें बहुत सुन्दर और अच्छे फूल होते हैं। किले की लाल रग की दीवार सामने होने के कारण यह बाग बहुत ही सुन्दर मालूम होता है। इसके सामने शाही चौक है, जिसके एक ओर किले का दरवाजा है, और दूसरी ओर शहर के दो बडे बाजार आकर समाप्त होते हैं। जो नौकर प्रति सप्ताह यहा चौकी देने आते हैं, उनके खेमे इसी मैदान मे लगाये जाते हैं, क्योंकि ये लोग, जो एक प्रकार के छोटे बादशाह होते हैं, किले में रहना स्वीकार नही करते, और इसीलिये किले मे उमरा और मन्सबदारों का पहरा होता है। इस जगह सवेरे बादशाही घोडे फिराये जाते हैं, और वे उसके निकट ही एक बडे अस्तबल मे रहते हैं। इसी स्थान पर फौज का मीरबख्श नये सवारों के घोडो को देखता-भालता है, और तुर्की या और अच्छे मजबूत घोडों की रान पर बादशाही तथा उस अमीर का निशान लगवा देता है, जिसकी फौज मे वे नौकर हो। इससे यह लाभ होता है, कि पेश करने के समय नये सवार इन्ही घोडो को लेकर पेश नहीं कर सकते। इसी स्थान पर तरह-तरह की चीजो की बिक्री के लिये पैंठ लगती है। इसमे पेरिस के 'पॉण्ट नि-योफ' की तरह भानमती का-सा मेल दिखानेवाले हिन्दू तथा मुसलमान नजूमी इकट्ठे होते हैं। ये झूँठे ज्योतिषी धूप मे एक मैला कालीन का टुकडा बिछाये बैठ रहते हैं। उनके सामने एक बडी सी किताब खुली पडी रहती है, जिसमे ग्रहों के चित्र बने होते हैं, और सामने रमल फेंकने का पासा होता है। इसी प्रकार ये लोग राह-चलतो को धोखा देते और फुसलाते हैं। लोग उन्हे विद्वान् समझकर उनसे

प्रश्न करते है। एक पैसा लेकर ये लोग उस बेचारे को उसका भविष्य बतला देते है, और उनके हाथ और मुँह को अच्छी तरह देख-भालकर उन्हे विश्वास दिलाते ह कि वे वास्तव मे कुछ हिसाब लगा रहे ह। किसी काम के आरम्भ करने के लिये समय पूछने पर ये लोग मुहूत बतलाते है। नासमझ स्त्रिया सिर से पर तक सफेद चादर ओढकर उनके निकट खडी रहती हैं। वे प्राय अपनी सब बाता के सम्बन्ध मे उनमे कुछ न-कुछ पूछा करती हैं, और अपना सारा हाल उन्ह सुना देती हैं, ठीक वैसे ही—जैसे फ्रान्स मे कोई स्त्री पादरी के सामने क्षमा किये जाने के लिये अपने सारे दोष कह-सुनाती है। इन मूखाओ को पूण रूप से यह विश्वास होता है कि ग्रहो के फलो को बदल देना इन्ही ज्योतिपिया के हाथ मे है। इनमे सबसे विचित्र एक दोगला पुतगीज था—जा गोआ से भाग आया था। वह भी कालीन बिछाये हुए बडे-ही शान्त भाव से बैठा रहता था। इसके पास बहुत से लोग आया करते थे। यह व्यक्ति कुछ भी लिखा-पढा नही था। इसके पास ज्योतिष के यत्रो के स्थान मे केवल एक पुराना जहाजी दिग्दशक-यन्त्र या कुतुबनुमा था, और ज्योतिष की पुस्तका के स्थान मे रोमन कैथलिक ईसाईया की नमाज की दो पुरानी सचित्र पुस्तके थी। वह कहा करता था—योरोप मे ग्रहो के चित्र ऐसे ही होते है। एक दिन एक पादरी फादर बुजी ने यह बात सुनकर उससे प्रश्न किया कि तू यह क्या कहता है। उसने निलज्जता से उत्तर दिया—ऐसे मूर्खों का ज्योतिषी भी ऐसा ही होना चाहिये।'

यह हाल उन गरीब ज्योतिषियो का है, जो बाजारा मे बैठे दिखाई देते है। पर जो ज्योतिषी अमीरा के पास जाते ह, वे बहुत ही विद्वान् समझे जाते हैं। यो ही ये लोग धनवान् बन जात ह। सारा एशिया इस व्यय के वहम मे फँसा हुआ है। स्वय बादशाह तथा और बड-बडे अमीर इन धोखेबाज भविष्य वक्ताओ को लम्बे-चौडे वतन देते हैं, और बिना इनकी सलाह के साधारण काम भी आरम्भ नहीं करत। माना यह न नजूमी भविष्य की सारी बातें जानत ह। प्रत्यय काम के आरम्भ करने क लिये उत्तम समय नियत करत और कुरान के पन्न उलट-पलटकर सब प्रश्ना का उत्तर द दते हैं। दिन के समय यहीं लोग सवारिया पर बैठकर व्यापार

और मराफे का अपना-अपना काम करते ह, और ग्राहको को माल दिखाते हैं। इन वराम्दो के पीछे जमवाव-आदि रखने लिये कोठिया वनी हुई हैं, जिनमे रात के समय सारा असवाव रख दिया जाता है। इनके ऊपर व्यापारिया के रहने के लिये मकान वने हुए हैं, जो वाजार मे देखने पर वहुत-ही सुन्दर मालूम होते हैं। ये मकान हवादार होते हैं, और इनमे गर्द या धूल विलकुल नही जाती।

"यद्यपि शहर के भिन्न-भिन्न भागो मे भी दुकाना के ऊपर इसी प्रकार के मकान होते हैं, पर वे इतने छोटे और नीचे होते हैं, कि वाजार मे भली भाति दिखाई नही देते। धनिक व्यापारी दूकानो पर नही सोते। वरन् रात को काम कर चुकने पर अपने अपने मकाना को, जो शहर मे होते हैं— चले जाते हैं।

"इनके अतिरिक्त पाच और वाजार हैं। यद्यपि उनकी वनावट आदि वैसी ही है, पर वे इतने लम्बे और सीधे नही हैं। और भी वहुत-से छोटे छोटे वाजार है, जो एक दूसरे को काटते हुए चले जाते हैं। यद्यपि उनके सामने की इमारतें महराव के ढग की हैं, तथापि वे ऐसे लोगो के हाथ की वनी हुई होने के कारण, जिन्हे इमारत के सुडौल होने का कोई विचार नहीं था, इतनी सुन्दर, चौडी और सीधी नही हैं, जितने वे वाजार हैं जिनका वर्णन मैंने अभी ऊपर किया है। शहर के गली-कूचो मे मन्सवदारो, हाकिमो और धनी व्यापारिया के मकान हैं। उनमे भी वहुधा अच्छे और सुन्दर हैं।

"ईंट या पत्थर के वने मकान वहुत ही कम हैं, कच्चे या घास-फूस के घर अधिक हैं। इतना होने पर भी वे सुन्दर और हवादार हैं। वहुत-से मकानो मे चौक और वाग होते हैं। इनमे सव प्रकार की सुख-सामिग्री वर्तमान रहती है। जो मकान घास-फूस के वने होते हैं, वे अच्छी सफेदी किये हुए होते हैं। इनमे साधारण नौकर, खिदमतगार और नानवाई आदि जो वादशाह के लश्कर के साथ जाया करते है—रहते ह। इन्ही के कारण नगर मे प्राय आग लगती है। गत वर्ष तीन वार ऐसी आग लगी कि तेज हवा के कारण, जो यहा गरमी के दिनो मे चला करती है, कोई ६० हजार छप्पर जलकर खाक हो गये, और कुछ ऊँट, घोडे तथा परदेदार स्त्रिया भी इसमे जल-भुनकर राख हो गई। ये स्त्रिया कुछ ऐसी लजीली होती हैं,

कि पुरुषो के सामने मुँह छिपाने के सिवा और कुछ इनसे होना ही नहीं। इसीलिये, जो स्त्रियाँ आग लगने के कारण जल मरी, उनमे इतना साहस नही था, कि भागकर बच जायें। इन कच्चे और घास फूस के मकानो के कारण ही मैं समझता हूँ, कि देहली कुछ देहातो का समूह या फौज की छावनी है, पर भेद इतना है कि यहाँ कुछ थोडा-सा सामान आराम का भी है।

"अमीरो के मकान प्राय नदी के किनारे और शहर के बाहर हैं। इस गरम देश मे भी वही मकान अच्छा समझा जाता है जिसमे सब प्रकार का आराम मिले, और चारो ओर से—विशेषतया उत्तर की दिशा से—खुली हवा आती हो। यहाँ वही मकान अच्छे कहे जाते है, जिनमे एक अच्छा बाग, पेड और हौज हो, और दालान या दरवाजे मे छोटे-छोटे फौव्वारे या तहखाने हो। इन तहखानो मे बडे-बडे पखे लगे होते है। और गर्मी के दिनो मे सन्ध्या को (दोपहर से चार या पाँच बजे तक हवा ऐसी गर्म होती है, कि साँस नही लिया जाता) यहा बहुत आराम मिलता है, पर तहखानो की अपेक्षा लोग, खसखानो को अधिक पसन्द करते हैं। यह छोटे-छोटे खास कमरे होते है, जो एक प्रकार की खुशबूदार घास की जडो से, बाग मे हौज के निकट इस अभिप्राय से बनाये जाते है, कि नौकर चमडे की डोलचियो मे भर-भरकर अच्छी तरह उन पर पानी छिडकें, और उन्हे तर कर सकें।

"जिस मकान के चारो ओर ऊँचे ऊचे दालान हो, और वे किसी बाग के अन्दर बने हो—तो बहुत अधिक पसन्द किये जाते है। वास्तव मे कोई बढिया मकान ऐसा नही है, जिसमे घरवालो के सोने के लिये आगन न हो। वर्षा या आँधी के समय या सवेरे जब ठण्डी हवा चलती हो—ओस पडने लगती हो, तो पलँग को खसकाकर अन्दर कर लेते है। यह ओस यद्यपि अधिक नही होती, तो भी बदन मे पैठ जाती है, तो कभी कभी हाथ पाव ऐठ जाते है।

"अच्छे घरो मे बैठने के लिये फर्श के ऊपर रुई का एक भारी और चार अगुल मोटा गद्दा बिछा रहता है, जिस पर गर्मी के दिनो मे अच्छा कपडा (चादरें) और जाडे के दिनो मे रेशमी कालीन बिछाया जाता है।

इस दीवानखाने मे अच्छे स्थान पर दो छोटे गद्दे पडे रहते हैं, जिन पर रेशम की हल्के काम की सुजनी—जिसमे सुनहरी और रुपहली जरी की धारिया होती है, पडी रहती है। इस पर मालिक या और प्रतिष्ठित लोग, जो उनसे मिलने आते है, बैठते है। प्रत्येक गद्दे पर कमरवाव का एक तकिया पडा रहता है। इसके अतिरिक्त और लोगो के लिये दालान मे इधर-उधर मखमली और फूलदार रेशमी तकिये पडे रहते है। जमीन से डेढ या दो गज की ऊँचाई पर भाँति-भाति के सु दर ताक बने होते है, जिनमे चीनी के बतन और गुलदान रखे जाते है। दालान की छत पर बेल-बूटे बने होते है, और उन पर मुलम्मा किया हुआ होता है। पर मनुष्य या किमी और जीवित पदाथ की तस्वीर उस पर नही होती, क्योकि यह बात मुसलमानी धम मे वर्जित है।

"भारतवप के एक अच्छे मकान का यह पूरा वणन है। दिल्ली मे ऐसे वहुत-से मकान है। मैं समझता हूँ कि भारतवप की राजधानी के मकान, यद्यपि योरोप के मकाना से उनकी समानता नही हो सकती, सु दरता में किमी प्रकार कम नही हैं। वास्तव मे योरोप के शहरो की सु दरता का कारण है वे बडी बडी शानदार दुकानें, जिनका दिल्ली मे अभाव है। यह शहर एक वडे ज़बरदस्त बादशाह के दरवार का स्थान है, जहाँ पर बहुमूल्य चीजा की अच्छी दुकाना का होना एक आवश्यक बात है। पर फिर भी यहाँ कोई ऐसा बाजार नही है—जैसा हमारे यहाँ 'सेण्ट-डेनिस' है, और जिमकी समानता का बाजार कदाचित् एशिया-भर मे न होगा।

"बहुमूल्य वस्तुएँ यहाँ प्राय मालखानो मे रखी रहती है, और इङ्गलड की तरह भडकदार और बहुमूल्य असबाबा से दुकानें शायद ही कभी सजाई जाती हो। यदि किसी एक दूकान मे पश्मीना, कमरवाब, जरीदार कन्दील और रेशमी कपडे आदि ह, तो पास ही कोई पच्चीस दुकानो मे चावल, दाल, घी, तेल और गेहूँ आदि अनेक प्रकार के अनाज—जो न केवल शाकाहारी हिदुओ के खाद्य-पदाथ है, वरन् गरीब मुसलमानो और बहुत-से सिपाही भी यही खाते है—बोरियो मे भरे हुए रखे रहते है। यहाँ, एक बाज़ार ऐसा है, जिसमे केवल मेवा बिकता है। गर्मी के दिना मे इन दुकानो मे ईरान, बलख, बुखारा और समरकन्द के मेवे बादाम, पिस्ता, किशमिश,

घर, शफ़तालू और अनेक प्रकार के सूखे फल और जाड़े के दिनों में रुई के गालों में लिपटे हुए बढ़िया ताजे अंगूर जो विदेशों से आते हैं और नाशपाती तथा कई प्रकार के अच्छे सेब और गर्द, जो जाड़ों भर बिकते ही रहते हैं। ये मेवे महँगे मिलते हैं। इनके महँगेपन का अन्दाजा आप इसी से लगा सकते हैं कि एक सेब पाँच चार आने का मिलता है। इतना महँगा होने पर भी यहाँ के लोग और मेवों की अपेक्षा इसे अधिक पसन्द करते हैं। अमीर लोग इसे बहुत अधिक खरीदते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे आगा के यहाँ सवेरे भोजन के समय ५०) रु० के सेब आते थे। गर्मी के दिनों में देशी खरबूजे बहुत सस्ते मिलते हैं। पर वे कुछ अधिक स्वादिष्ट नहीं होते। हाँ वे खरबूजे, जिनका बीज ईरान से मँगवाया और यहाँ बोया जाता है (प्रायः अमीर लोग ऐसा ही करते हैं) बहुत अच्छे होते हैं। इतना होने पर भी अच्छे और स्वादिष्ट खरबूजे यहाँ बहुत कम मिलते हैं क्योंकि यहाँ की जमीन इनके अनुकूल नहीं है। गर्मी के दिनों में आम यहाँ बहुत सस्ते और अधिकता से मिलते हैं। पर देहली में जो आम पैदा होता है वह न तो कुछ ऐसा अच्छा होता है और न बुरा। सबसे अच्छा आम बंगाल गोलकुण्डा और गाडा से आता है जो वास्तव में बहुत अच्छा होता है और जिसकी बराबरी कोई मिठाई भी नहीं कर सकती। तरबूज यहाँ बारहों मास रहता है। पर जो तरबूज देहली में पैदा होता है वह नरम और फीका होता है। इसकी रंगत भी अच्छी नहीं होती। पर अमीरों के यहाँ कभी-कभी बहुत-ही स्वादिष्ट तरबूज देखने में आते हैं जो इसके लिए बहुत धन व्यय करके बाहर से बीज मँगवाकर बड़ी सावधानी से पेड़ लगवाते हैं।

'शहर में हलवाइयों की दुकानें अधिकता से हैं। पर मिठाई इनमें अच्छी नहीं बनती। उन पर गर्द पड़ी होती है, और मक्खियाँ भिनभिनाया करती है। नानबाई भी बहुत हैं। पर यहाँ के तन्दूर हमारे यहाँ के तन्दूरों से बहुत ही भिन्न और बड़े होते हैं। इसी कारण रोटी न अच्छी होती है, और न भली भाँति सिकी हुई। पर जो रोटी किले में बिकती है वह कुछ अच्छी होती है। अमीर लोग तो अपने मकानों ही पर रोटियाँ बनवा लेते हैं। उनमें दूध, मक्खन और अण्डा डाला जाता है। इससे वह और भी

स्वादिष्ट हो जाती है। यद्यपि वह बहुत फूल जाती है, पर स्वाद उसका
जली हुई रोटी-सा होता है। यह रोटी साधारण से लेकर विलायती चपाती
की तरह होती है, पर पैरिस की 'गैलविन' (एक प्रकार की रोटी)-सी
स्वादिष्ट नही होती। बाज़ार मे बहुत तरह का कबाब और कलिया बिकता
है, पर मुझे विश्वास नही कि वह किसी अच्छे जानवर का मास हो, क्योकि
मैं जानता हूँ कि कभी-कभी यह माँस ऊँट, घोडे या बीमार पशुओ का भी
होता है, और इसीलिये जो चीजें अपने मकान पर न बनाई जायँ, वे कभी
खाने और व्यवहार मे लाने योग्य नही होती। दिल्ली की प्रत्येक गली मे
माँस बिकता है। पर कभी बकरी के धोखे मे भेड का भी मास दे देते हैं।
इसलिये इन सबो को अच्छी तरह देख भालकर लेना-खाना चाहिये।
यद्यपि बकरी व अन्य ऐसे पशुओ के माँस का स्वाद बुरा नही होता, पर वह
कुछ गर्म होता है, तथा बादी करता और देर मे पचता है। बकरी के बच्चे
का मास सब से अच्छा होता है। पर वह बाज़ार मे नही मिलता। इसमे
जीवित बच्चा खरीदना पडता है। एक कठिनता तो यहाँ यह है कि सुबह
का मास शाम तक नही ठहरता। दूसरी यह कि जानवर दुबले मिलते है,
जिसमे उनके मास का स्वाद बिगड जाता है। बाज़ार मे कसाइयो की
दूकानो पर भी दुबली बकरियो का माँस मिलता है, जो बहुधा कठोर
होता है। पर मैं इन सब कष्टो से बचा हुआ हूँ। कारण यह है कि मैं इन
लोगो के फन्दा से परिचित हूँ, और इसलिये अपने खाने का मूल्य बादशाह
के बावर्चीखाने के दरोगा के पास किले मे अपने नौकर के हाथ भेज देता
हूँ, और वह मुझे खुशी से अच्छा भोजन देते हैं। यद्यपि इन चीजो पर उनकी
लागत बहुत कम आती है, पर मैं उन्हे मूल्य कुछ अधिक देता हूँ। मैंने
एक दिन अपने आगा से इस चोरी और चालाकी के विषय मे कहा भी
जिस पर वह बहुत हँसा। फ्रान्स मे मैं ।।) मे बादशाही भोजन कर लिया
करता था। पर यहा यदि ऐसी चालाकी न करता, तो कदाचित् ३७५) रु०
मे जो मुझे मेरे आगा की सरकार से मिलते हैं, मेरा गुजारा कभी न होता
और मैं भूखो मर जाता।

"इस देश के लोगो मे दया अधिक है, और इसी कारण मुर्गा बाज़ार
मे दिखाई नही देते। पर नही मालूम, यह दया उन मनुष्यो के भाग्य मे

क्यो नही होती, जो जनाने मकानो के लिये खोजा बनाता है। चिडिया बाजार मे अनेक प्रकार की अच्छी और सस्ती मिलती है। यहाँ हर प्रकार की छोटी मुर्गी, जिसका चमडा काला होता है और जिसका नाम मैंने 'जिप्सी' रखा है, मिलती है। कबूतर भी मिलते हैं, पर बच्चे नही मिलते। इसका कारण यही है कि यहा के लोग बच्चा को मारना बडी निष्ठुरता का काय समझते है, तीतर भी मिलते हैं, जो हमारे देश के तीतरो से छोटे होते है। किन्तु जाल मे फासकर और पिंजरे मे बन्द करके लाये जाने के कारण वे ऐसे अच्छे नही होते जैसे अनेक पशु। यही अवस्था यहा मुर्गियो और खरगोशो की होती है, जो जीवित पकडे जाकर पिंजरो मे भरे हुए शहर मे आते है। देहली के मछुए अपने काय मे कुछ ऐसे चतुर नही है। पर फिर भी मछलिया कभी कभी बाजारा मे अच्छी बिकती ह— विशेषकर सिघाडा, जो अपने यहा की 'काय' के समान होती है—अच्छी होती है। जाडे के दिना मे मछुए मछलियाँ कम पकडते है। कारण कि वहा के लोग सर्दी से उतना ही डरते है, जितने हम लोग जाडे के दिनो मे गर्मी से। यदि कोई मछली बाजार मे दिखलाई दे, तो ख्वाजासरा उसे स्वय खरीद लेते है। वे लोग इसे बहुत पसन्द करते है। परन्तु इसका कोई विशेष कारण मुझे अब तक मालूम नही हुआ। अमीर लोग अपने कोडो के बल, जो उनके दरवाजे पर इसी काय के लिये लटकते रहते है—जाडे के दिनो मे प्राय मछली पकडवाया करते है। इसमे सन्देह नहीं, कि यहाँ के धनी लोगो को हमेशा अच्छी चीजें मिला करती है, पर इसका कारण केवल रुपया और उनके पास बहुत से नौकरा का रहना ही है। देहली मे साधारण स्थिति के लोग नही रहते। बडे-बडे अमीर, उमरा और रईस बिल्कुल ही कम है। ऐसी हैसियत के लोग—जिनका जीवन कष्ट से बीतता है, अधिक रहते है। यद्यपि मुझे यहा अच्छा वेतन मिलता है, परन्तु सामान जो मिलता भी है वह बहुत ही रद्दी, और केवल वही जोकि अमीर लोगो के नापसन्द होने के कारण बच रहता है। मदिरा, जो हमारे यहाँ भोजन का प्रधान अङ्ग है—दिल्ली की किसी दुकान पर नही मिलती। जो मदिरा यहा देशी अगूर की बन सकती है, वह भी नहीं मिलती, क्योकि मुसलमानो की कुरान और हिन्दुओ के शास्त्रो मे उसका पीना वर्जित है। मुगल-राज्य

मे जो मदिरा शीराज वा कनारी टापू मे आती है, अच्छी होती है।
शीराजी मदिरा ईरान से 'बुश्की' के रास्ते—'वन्दर-अब्बास' और वहा के
जहाज के द्वारा सूरत मे पहुँचती और फिर वहा से दिल्ली आती है।
शीराज से दिल्ली तक मदिरा आने मे छ दिन लगते हैं। कनारी टापू से
मदिरा सूरत होती दिल्ली आती है। पर ये दोनो मदिरायें इतनी मँहगी
होती हैं कि इनका मूल्य ही इन्हें बदमजा कर देता है। एक शीशी जो
तीन अँग्रेजी बोतलो के बराबर होती है, १५) या १८) रुपये की आती है।
जो मदिरा इस देश मे बनती है, जिसे यह लोग अक कहते हैं—वह बहुत
ही तेज होती है। यह भभके मे खीचकर गुड मे बनाई जाती है, और बाजार
मे नहीं बिकने पाती। धम विरुद्ध होने के कारण अँग्रेजो व ईसाइयो के
अतिरिक्त इसे कोई नहीं पी सकता। यह अक ठीक वैसा ही है, जैसा कि
पोलैण्ड के लोग अनाज मे बनाते हैं और जिसे परिमाण से जरा भी अधिक
पीजाने से मनुष्य बीमार पड जाता है। समझदार आदमी तो यहा सादा
पानी पियेगा या नीबू का शरबत, जो यहा सहज ही मिल जाता है, और
जो हानिकारक भी नहीं होता। इस गर्म देश मे लोगो को मदिरा की
आवश्यकता भी नहीं होती। मदिरा न पीने और बराबर पसीने आते
रहने के कारण यहा के लोग सर्दी, बुखार, पीठ का दर्द आदि रोगो मे बचे
रहते हैं, और जो ऐसे रोगी यहा आते हैं, वह शीघ्र ही अच्छे भी होजाते
हैं, जिसकी मैं स्वय परीक्षा कर चुका हूँ।

"चित्रकारी और नक्काशी करने का काम तो यहा ऐसा उत्तम और
बारीक होता है, जिसे देखकर मैं चकित हो गया। अकबर बादशाह की एक
बडी लम्बाई की तस्वीर, चित्रकार ने सात वर्ष मे, एक ढाल पर बनाई
थी। उसे देखकर मैं हैरान रह गया। परन्तु भारतीय चित्रकार मुँह तथा
किसी अन्य अगो द्वारा उन भावो को व्यक्त नहीं कर पाते, जो पात्र की
चित्रित दशा मे हुआ करते है। यदि इन्हे इसकी पूर्ण रूप मे शिक्षा दी जाये,
तो ये इस दोष से मुक्त हो सकते हैं। हा, इससे स्पष्ट प्रकट है कि भारत
मे बहुत अच्छी-अच्छी चीजो का न होना, यहा के लोगो की अयोग्यता
के कारण नहीं, वरन् शिक्षा के अभाव से है। यह भी स्पष्ट है कि यदि
इन लोगो को उत्साह दिलाया जाय, तो भारत मे उत्कृष्ट कलाओ का

ादुर्भाव सहज ही मे हो सकता है । कारीगरा को यहाँ इनके कला-कौशल ा यथोचित पुरस्कार नही मिलता बल्कि उनके साथ कठोरता का व्यव-ार होता है ।

धनी लोग सब वस्तुए सस्ते मूल्य पर लेना चाहते ह । जब किमी अमीर को कारीगर की आवश्यकता होती है तो वह उ ह बाजार से पक-ड़वा मँगाता है और वेचारे से जबरदस्ती काम लिया जाता है तथा चीज तयार हो जाने पर उसके योग्यतानुसार नही किन्तु अपनी इच्छानुसार उसे मजदूरी देता है । कारीगर कोडो की मार खाने से ही बच जाने मे अपना अहोभाग्य समझता है । तब ऐसी अवस्था मे यह कब सम्भव है कि कोई कारीगर अच्छी और सु दर चीज बनाने की चेप्टा कर सके ?

किले के दरवाजे पर कोई ऐसी वस्तु नही है जिसका वणन किया जाय । हा उसके दोना ओर दो पत्थर बड बडे हाथी बनाकर खडे कर दिय गये हैं जिनम स एक पर चित्तौड क सुविरयात राजा जयमल और दूसरे पर उनक भाई फत्ता की मर्ति बनी है । ये दोनों वीर बड पराक्रमी थे । इनकी माता इनसे भी अधिक बहादुर थी । यह दोनो शाई अकबर के साथ बडी बहादुरी से लड ये कि उनका नाम प्रलय तक ससार मे अमर रहगा । जिस समय शह्शाह अकबर ने इनके नगर को चारा ओर से घर लिया था इन्होने बडी वीरता से उसका सामना किया और इतने बडे वाद-शाह के सामने भी पराजय स्वीकार करने की अपेक्षा उन्हाने तथा उनकी वीरागना माता ने रण भूमि मे अपने प्राण विसजन कर दिये । यही कारण है जा उनके शत्रुओ ने भी उनकी इन मूर्तिया को चिह्न स्वरूप स्थापित रखना अपना सौभाग्य समझा । वह दोनों हाथी—जिन पर यह दोना वीर बठे है बड शानदार है । इ ह देखकर मेरे मन मे ऐसा आतङ्क उठा जिस-का वणन मैं नही कर सकता ।

इस फाटक से होकर किले मे जाने पर एक लम्बी चौडी सटक मिलती है जिसके बीचा-बीच पानी की एक नहर बहती है और उसके दोना ओर पाच या छ फ्रासीसी फुट ऊँचा और प्राय चार फट चौडा चबू तरा परिस के पाण्टनियोफ की भाँति बना हुआ है । इसको छोडकर दोनो ओर बराबर महराबदार दालान बनते चले गये हैं जिनम भिन्न-भिन्न

विभागो के दारोगा और छोटी श्रेणी के ओहदेदार बैठे हुए अपना काम करते रहते है, और वह मन्सबदार भी, जो रात के साथ पहरा देने आते है, यही ठहरते है। पर इनके नीचे से आने-जानेवाले सवारो और साधारण लोगो को इससे कोई कष्ट नही होता।

"किले की दूसरी ओर के फाटक के अन्दर और भी ऐसी-ही लम्बी-चौडी सडक है। उसके भी दोनो ओर ऐसे-ही चबूतरे है। पर मेहराबदार दालानो के स्थान मे वहाँ दुकाने बनी हुई है। सच पूछिये, तो यह एक बाजार है, जो लदाव की छत के कारण, जिसमे ऊपर की ओर हवा और प्रकाश के लिये रोशनदान बने हुए है, गर्मी और बरसात के काम की जगह है।

"इन दोना सडको के अतिरिक्त इसके दाहिनी और बाई ओर भी अनेक छोटी-छोटी सडके है, जो उन मकानो की ओर जाती हैं, जहा नियमानुसार उमरा लोग सप्ताह मे बारी-बारी से पहरा दिया करते है। यह मकान, यहा उमरा लोग चौकी देते हैं, अच्छे है। इनके सहन मे छोट-छोटे बाग है, जिनमे छोटी-छोटी नहरे, हौज और फव्वारे बने हुए है। जिस अमीर की नौकरी होती है, उसके लिये भोजन शाही खजाने से आता है। जब भोजन आता है, तो अमीर को धयवाद और सम्मान-स्वरूप महल की ओर मुँह करके तीन बार आदाब बजा लाना, अर्थात जमीन तक हाथ ले जाकर माथे तक ले आना होता है। इनके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न स्थाना मे सरकारी दफ्तर के लिये दीवानखाने बने हुए है, और खेमे लगे हुए ह, जिनके प्रत्यक भाग मे किसी अच्छे कारीगर की निगरानी मे काम हुआ करता है। किसी मे चिकनदोज और जरदोज आदि काम करते है, किसी मे सुनार, किसी मे चित्रकार और नक्काश, किसी मे रगसाज, बढई और खरादी, किसी मे दर्जी और मोची, किसी मे कमखाब और मखमल बुनने-वाले और जुलाहे, जो पगडियाँ, कमर के बाधने के फूलदार पटके और जनाने पायजामो के लिये बारीक कपडा बनाते है—बैठते है। यह कपडा इतना महीन होता है, कि एक-ही रात व्यवहार मे लाने से बे-काम हो जाता है। यह २५)-३०) मूल्य का होता है। जब इस पर सुई स बढिया जरी का काम किया जाता है, तो इसका मूल्य और भी अधिक हो जाता है। ये सब

कारीगर सवेरे से आकर अपना अपना काम करते हैं, और शाम को अपने घर चले जाते हैं। इसी दिनचर्य्या मे इन लोगो का जीवन व्यतीत हो जाता है। जिस अवस्था मे ये लोग जन्म लेते हैं, उसमे उन्नतिशील होने की चेष्टा तक नही करते। चिकनदोज आदि अपनी सन्तान को अपना ही काम सिखलाते है। सुनार का लडका सुनार ही होता है। शहर का हकीम अपने पुत्र को हकीमी ही सिखलाता है। यहा तक कि कोई व्यक्ति अपने लडके या लडकी का विवाह अपने पेशेवालो के अतिरिक्त और किसी के घर नही करता। इस नियम का पालन मुसलमान भी वैसा ही करते ह, जैसा कि हिन्दू, जिनके शास्त्रो की यह आज्ञा है। इसी कारण से बहुत-सी सुन्दर लडकिया कुमारी ही रह जाती हैं। उनके माता-पिता यदि चाह, तो उन लडकियो का विवाह बहुत अच्छी जगह हो सकता है।

"अब मैं दरबार खास व आम का वणन उचित समझा हूँ—जो इन मकाना के आगे मिलता है। यह इमारत बहुत सुन्दर और अच्छी है। यह एक बडा-सा मकान है, जिसके चारो ओर महरावे है, और यह 'पैलेस-रॉयल' से मिलता है। पर भेद इतना ही है कि इसके ऊपर कुछ इमारत नही है। इसकी महराबें ऐसी बनी हुई है कि एक महराब से दूसरी महराब मे जा सकते हैं। इसके सामने एक बडा दरवाजा है, जिसके ऊपर नक्कारखाना बना हुआ है। इसमे शहनाई, नफीरिया और नक्कारे रखे है। इसी से लोग इसे नक्कारखाना कहते है जो दिन और रात को नियत समय पर बजाये जाते है। यह नक्कारे एक साथ बजाय जाते है। इसमे सब से बडी नफीरी—जिसको 'करना' कहते हैं, ६ फीट लम्बी है, और इसके नीचे का मुँह एक फ्रान्सीसी फुट से कम नही है। लोहे या पीतल के सबसे छोटे नक्कारे की गोलाई कम-से कम छ फीट है। इससे आप समझ सकते हैं, कि इस नक्कारखाने से कि इतना शोर होता होगा। जब मैं पहले-पहल यहाँ आया, तो शोर के मारे कान बहरे हो गये। अभ्यास के कारण अब मैं उसे बडे चाव से सुनता हूँ। विशेषत रात के समय, जबकि मकानकी छत पर लेटे हुए इसकी आवाज दूर से सुनाई देती है, तो बहुत-ही सुरीली और भली मालूम होती है। और यह कोई आश्चय की बात भी नही है, कारण कि इसके बजाने वाले बचपन ही से इसकी शिक्षा पाते और इन

वाजो की आवाज को ऊँचा-नीचा करने और सुरीली तथा लय-पूर्ण बनाने मे बड़े चतुर होते हैं। यदि यह नफीरी दूर से सुनी जाय, तो अच्छी मालूम होती है। नक्कारखाना शाही महल से बहुत दूर बना है, जिससे बादशाह को इसकी आवाज से कष्ट न हो।

"नक्कारखाने के दरवाजे के सामने सहन के आगे एक बडा दालान है, जिसकी छत सुनहरे काम की है। यह बहुत ऊँचा, हवादार और तीन ओर से खुला हुआ है। उस दीवार के बीचोबीच, जो इसके और महल के मध्य मे है, प्राय ६ फीट ऊँचा और १ फुट चौडा शहनशीन बना हुआ है, जहा नित्य दोपहर के समय बादशाह आकर बैठता है। उसके दाएँ-बाएँ शहजादे खडे होते हैं, और ख्वाजासरा या तो मोर्छल हिलाते हैं या बडे-बडे पखे हिलाते हैं, और या बादशाह का हुकुम बजा लाने के लिये हाथ-बाधे खडे रहते हैं। तख्त के नीचे चादी का जगला लगा हुआ है, जिसमे उमरा, राजे तथा अन्य राजाओ के प्रतिनिधि हाथ बाधे और नीची आखें किये बैठे रहते हैं। तख्त से कुछ दूर हटकर मनसबदार या छोटे-छोटे उमरा खडे रहते हैं। इसके अतिरिक्त जो स्थान खाली बचता है, उसमे बडे-छोटे अमीर गरीब सब तरह के लोग भरे रहते है। केवल यही एक स्थान है, जहा बादशाह को सर्वसाधारण के आगे उपस्थित होने का सुअवसर मिलता है, और इसलिये इसे आम व खास कहते है। यहा डेढ-दो घण्टे तक लोगो का सलाम व मुजरा होता रहता है। इसलिये बादशाह के मुलाहजे के लिये अच्छे अच्छे सजे और सधे घोडे पेश किये जाते हैं। इनके बाद हाथियो की बारी आती है, जिनकी मैली खाल खूब नहला-धुलाकर साफ कर दी जाती है, और फिर स्याही से रग दी जाती है। इसके सिर से लाल रग की लकीर सूँड के नीचे तक खीच दी जाती हैं। फिर इन पर जरी की झूलें पडती हैं, जिनमे चादी के घण्टे एक जजीर से बाँधकर उसके दोनो ओर लटका दिये जाते हैं। दो छोटे-छोटे हाथी, जो खूब सजे होते है, खिदमतगारा की तरह इन बडे हाथिया के दोनो ओर चलते है। यह हाथी झूम-झूमकर और सँभलकर पैर रखते हैं, इतराते हुए चलते है, और जब तख्त के निकट पहुँचते हैं, तो महावत—जो उनकी गर्दन पर बैठा होता है अकुश चुभोकर कुछ आज्ञा-सूचक शब्द कहता है। उस समय हाथी घुटने के बल

वैठकर, सूँड ऊपर की ओर उठाकर चिङ्घाडता है, जिसे लोग उसका सलाम करना समझते है। इसके उपरान्त और-और जानवर पेश होते है। सिखाये हुए हरिन लडाये जाते है। नीलगाय, गडे और बगाल के वडे-बडे भैसे भी लाये जाते है—जिनके सीग इतने लम्वे और तेज होते है, कि वे शेर के साथ लड सकते है। चीते, जिनसे हिरन का शिकार खेला जाता है, और अनेक प्रकार के शिकारी कुत्ते, जो बुखारा आदि से आते है, जिनके वदन पर लाल रग की झूले पडी होती है—पेश होते है। अत मे शिकारी पक्षी, जसे-वाज, शिकरे आदि, जो तीतर और खरगोश को पकडते है, पेश किये जाते है। कहते है, यह पक्षी हिरन पर भी छोडे जाते है, जिन पर यह वहुत तेज़ी से झपटते और पजे मार-मारकर उन्ह अधा कर देते हैं। इन सव के पेश हो जाने के बाद कभी-कभी दो अमीरो के सवार भी पेश किये जाते हैं, जिनके कपडे और समय की अपेक्षा अधिक बहुमूल्य और सुदर होते ह। इनके घोडा पर पाखर पडी होती है। तरह-तरह के जेवर, जसे—हैकल, झुनझुने आदि, से व सजे हाते हैं। वहुधा वादशाह को प्रसनता के लिये अनेक खेल किये जाते है। मरी हुई भेडें, जिनका पेट साफ करके फिर सी दिया जाता है, वीच मे रख दी जाती है। उमरा मसवदार गुजवर्दार और नेजा वर्दार, उन पर तलवार से अपना करतब दिखलाते है, और एक ही हाथ मे उन्ह काटने की चेष्टा करते है। यह सब खेल दरवार के आरम्भ मे हुआ करते हैं। इनके वाद राज्य-सम्वधी अनेक मामले पेश होते ह। फिर वादशाह सव सवारा को बडे गौरव से देखता है। जव से लडाई वन्द हुई, कोई सवार या पैदल ऐसा नही है जिसे वादशाह ने स्वय न देखा हो। वहुतो का वेतन वादशाह स्वय वढाता, अनेको का कम करता, और कइया को विल्कुल ही मौकूफ कर देता है।

"इस अवसर पर सवसाधारण जो अर्जियाँ पेश करत है, वे सव वादशाह के कानो तक पहुँचती है, और वादशाह स्वय लोगा से उनके दुख के विषय मे पूछता और उनके निवारण के उपाय करता है। इनम से दस अर्जियाँ देने वाले चुनकर सप्ताह मे एक दिन वादशाह के सामने पश किय जात है, और उस दिन वादशाह पूर दो घण्टा तक वे अर्जिया सुना करता है।

"इन अर्जी देने वाले व्यक्तियो के चुनने का काम अमीर के सुपुर्द है। इनका फैसला बादशाह शहर के दो काजियो के साथ 'अदालतखाना' नामक कमरे मे बैठकर करता है, और इसमे कभी नागा नही होती। इससे यह स्पष्ट प्रकट है कि वह एशिया के बादशाह, जिन्हे हम फिरङ्गी लोग मूर्ख और तुच्छ समझते हैं, अपनी प्रजा का न्याय करने मे त्रुटि नही करते।

आम-खास के बडे दालान से सटा हुआ एक खिलवतखाना है, जिसे गुस्लखाना कहते हैं। यहाँ बहुत कम आदमियो को जाने की आज्ञा है। यद्यपि यह आम व खास के बराबर नही है फिर भी बहुत ही बडा, सुन्दर और सुनहरे काम का है, और शह्नशीन की तरह चार-पाच फ्रान्सीसी फुट ऊँचा है। यहाँ कुरसी पर बैठकर बादशाह—वजीरो से, जो इधर-उधर खडे होते हैं, सलाह करता है, बडे-बडे अमीरो और सूबेदारो की अर्जिया सुनता है, और अनेक गूढ राज्य-कार्य करता है। यद्यपि गुस्लखाने के दरबार मे यही बात होती है, जो मैंने अभी कही है, पर आम व खास की तरह यहा भी अधिकाश जानवरो आदि का मुलाहजा होता है। हाँ, रात हो जाने के कारण और सामने सहन के छोटे हो जाने के कारण अमीरो के रिसाला का मुलाहजा नही हो सकता। इस समय के दरबार मे यह विशेषता है, कि यह मन्सबदार, जिनकी उस दिन चौकी की बारी होती है, बडी ही शिष्टता और अदब के साथ सामने सलाम करते हुए गुजर जाते हैं। उनके आगे लोग हाथ मे 'कौर' लिये हुए चलते है। यह 'कौर' बहुत-ही सुन्दर होते है, और चादी की छडियो के सिरो पर मढे होते हैं। इनमे से कुछ तो मछलियो की शक्ल के और हाथ और पजे की तरह बने हुए होते हैं। इन लोगो मे से बहुत से गुजबरदार होते है, जो हृष्ट-पुष्ट शरीर देखकर भर्ती किये जाते हैं और जिनका काम है कि दरबार के समय हुल्लड या गडबड न होने दें, तथा बादशाही आज्ञा-पत्र आदि यथा-स्थान पहुँचा दें और बादशाह जो आज्ञा दे, बहुत शीघ्र उसका पालन करें।

१५

मुगल—साम्राज्य का अन्त

औरङ्गजेव के बाद उसका पुत्र मुअज्जम आगरे मे गद्दी पर बैठा। उसने अपनी उपाधि बहादुरशाह रखी। उसके छोटे भाई ने विद्रोह किया, पर वह कद कर लिया गया। यह व्यक्ति उतना क्रूर तो न था, पर इस महान साम्राज्य को सम्हालने की शक्ति भी उसमे न थी। इस समय मुगल-साम्राज्य का विस्तार इतना था, जितना पहले कभी न हुआ था।

इसने प्रजा को सन्तुष्ट करने की चेष्टा की। राजपूतो और मरहठा की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया। मरहठो को मुगल प्रान्तो से चौथ लेने का भी अधिकार दे दिया। परन्तु सिक्खो से उसका समझौता नही हो सका। सिक्ख लोग तूफानी ढग से बढ रहे थे। उन्होने पूर्वी पजाब और सरहद को जीत लिया था। उनका नेता वदा वडी वीरता दिखा रहा था। वादशाह को इनके विरुद्ध स्वय यात्रा करनी पडी। यह वादशाह तीन ही वर्ष राज्य करके लाहौर मे मर गया।

इसके बाद इसका छोटा पुत्र 'जहादारशाह' के नाम से गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही उसने सब सम्बन्धियो को तलवार के घाट उतारा। पर वह जितना जालिम था, उतना-ही कायर भी था। वह सेनापति जुल्फिकारखाँ के हाथ की कठपुतली था। जुल्फिकारखाँ अच्छा सेनापति तो था, परन्तु अच्छा प्रबन्धक न था। अत प्रजा मे चारो तरफ कुप्रबन्ध तथा अत्याचारो के दौर होने लगे। दक्षिण मे तो दाऊदखाँ ने हद करदी। अन्त मे दक्षिण के हाकिम सैयद हुसनअली और अवध के हाकिम अबदुल्ला ने जुल्फिकार को हटाकर बहादुरशाह के पोते फरुखसियर को

गद्दी पर बैठाया। यह अभागा ५ वर्ष गद्दी पर रह पाया, और जब तक रहा, तब तक दोनों सैयदों के हाथ की कठपुतली बना रहा। इसके राज्य-काल में दक्षिण बिल्कुल हाथ से निकल गया, और उसे मरहठों का करद राज्य स्वीकार कर लिया गया। इसी बादशाह ने अंग्रेजों को बङ्गाल में बिना चुङ्गी व्यापार करने का अधिकार दे दिया। सिक्ख कैदियों सहित दिल्ली लाये गये, और अति क्रूरता से मारे गये। अन्त में दक्षिण का सैयद सूबेदार १०००० मरहठों को बालाजी विश्वनाथ पेशवा की अध्यक्षता में चढ़ा लाया, जिनके हाथों यह बादशाह मार डाला गया।

इसके बाद सैयदों ने एक और व्यक्ति को बादशाह बनाया, जिसे क्षय-रोग था। तीन मास ही बादशाह रहकर वह मर गया। फिर एक और व्यक्ति बादशाह बना। वह एक वर्ष राज्य करके मर गया। इस बीच में मुगल-प्रान्त एक एक करके खतम हो गये। तब सैयदों ने बहादुरशाह के एक पोते मुहम्मदशाह को गद्दी पर बैठाया, पर सैयदों के उपद्रव से तंग आकर इसने दो पराक्रमी सरदार सआदतखाँ और आसफजाह की सहायता से उन्हें मार डाला। इसके इनाम में सआदतखां को अवध की नवाबी दी गई, जिसे उस सरदार ने जल्द ही एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में सम्पादित कर लिया। तब से किसी ने भी अवध को फिर कब्जे में करने की चेष्टा नहीं की, और १३० वर्ष तक सआदत के वंशधर वहाँ की बादशाहत भोगते रहे।

इसके दो वर्ष बाद आसफजाह ने, जो इसका मन्त्री था, मन्त्री-पद से इस्तीफा दे दिया, और दक्षिण में जाकर हैदराबाद को राजधानी बना, नया राज्य स्थापित कर लिया। १० वर्ष तक वह मरहठों से लोहा लेता रहा और एक विख्यात राज्य पैदा कर दिया।

शिवाजी के वंशधर अब मुगल-सम्राट् से कर ग्रहण करते थे। शिवाजी के समय में राज्य-सत्ता बालाजी विश्वनाथ के हाथ में पहुँच गई थी, जो पेशवा के नाम से प्रख्यात हुए। दूसरा पेशवा बाजीराव इतना सशक्त हुआ कि उसके समय में महाराष्ट्र-शक्ति उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच गई। शीघ्र ही मरहठा के तीन बड़े राज्य स्थापित हो गये। सिंधिया ग्वालियर में, होल्कर इंदौर में, और गायकवाड़ बड़ौदे में।

तीनों सरदार शूद्र से क्षत्रिय वर्ण में परिणित हुए। अन्त में मराठों

की पूर्ण-शक्ति सगठित होकर दिल्ली पर चढ़ आई। बादशाह ने आसफ को सहायता के लिये लिखा। वह हैदराबाद से भारी सैन्य लेकर चला। भूपाल मे बाजीराव ने ८० हजार सवार लेकर उससे लोहा लिया। निजाम की पूरी हार हुई, और उसने मालवा प्रान्त मरहठा के हवाले कर दिया, तथा ५० लाख रुपये दिल्ली के खजाने से दिलाने स्वीकार कर लिये। बाजीराव ने मालवा सिंधिया और होल्कर को हजाने मे दे डाला।

अब नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया। यह खुरासान का एक गडरिया था, जिसने अपने बाहु बल से ईरान का राज्य प्राप्त किया था। निजाम और सआदत ने उसे करनाल मे रोकना चाहा, पर वे बुरी तरह हराये गये। दिल्ली के निकट पहुँचकर उसने बादशाह को लिखा—"दो करोड़ रुपये दो, वरना दिल्ली की इट से इट बजा दूँगा।"

जब यह दूत दरबार मे पहुँचा, तो बादशाह शराब पी रहा था, और शेर-गजलें गाई जा रही थी। राजा स्वय भी अपनी कविताएँ सुना रहे थे, और अमीर-उमरा उन्हे 'कलामुल्मुल्क मूकुलक्लाह' कहकर झुक-झुककर सलाम कर रहे थे। दूत ने खत दिया तो बादशाह ने वजीर से कहा—"पढो क्या है?" वजीर ने पढा और कहा—"हुजूर, ऐसे गुस्ताखी के अल्फाज हैं कि जहापनाह के सुनने काबिल नही।" बादशाह ने कहा—"ताहम—पढो।" खत सुनकर कहा—"क्या यह मुमकिन है, कि यह शख्स दिल्ली की ईंट से इट बजा दे?" खुशामदी दरबारियो ने कहा—"हुजूर, कतई नामुमकिन है।" तब बादशाह ने हुक्म दिया—"यह खत शराब की सुराही मे डुबो दिया जाय, और इसके नाम पर एक-एक दौर चले।" जब दौर खतम हुआ तो दूत ने कहा—"हुजूर, बन्दे को क्या इरशाद है?" बादशाह ने हुक्म दिया—"पाँच सौ अशर्फी और एक दुशाला इसे इनाम मे दिया जाय।"

दूत चला गया और नादिरशाह तूफान की भाति दिल्ली मे घुस आया। तब रङ्गीले बादशाह की आखें खुली। उसने नगर पर और किले पर अधिकार कर लिया। बादशाह ने सिर झुकाकर तुरत उसकी नजर किया। कहते हैं कि उसने उसे हुक्म दिया—महल की तमाम बेगमात और शाहजादियां उसके सामने हाजिर की जायें। जब उसके हुक्म की तामील की गई और तमाम औरतें उसके सामने खडी कर दी गईं, तो उसने कमर

से तलवार खोलकर तख्त के एक किनारे रख दी, और आराम से तख्त पर लेट गया। कुछ देर बाद वह उठा और लाल-लाल आंखों से घूरकर प्रत्येक औरत को देखा, और कहा—"तुम लोग शाहजादी और शाही बेगमात हो, परन्तु इस कदर बेशर्म और बेगैरत हो, कि बिना तअम्मुल दुश्मन के सामने आ-खड़ी हुई। किसी में इतनी गैरत न थी, जो जान खो देती, मगर मेरे सामने न आती? मैंने तलवार दूर रख दी, और इतनी देर आंखें बन्द किये पड़ा रहा। इस पर भी किसी की हिम्मत न हुई कि अपनी बेहुर्मती और बे इज्जती करने वाले दुश्मन के कलेजे में कटार भोंक दे। ओ, जलील औरतो! क्या तुमसे यह उम्मीद की जाय कि तुम हिन्दुस्तान पर हुकूमत करनेवाले बच्चे पैदा कर सकती हो? हटो सामने से!" यह यह कहकर वह वहाँ से चल दिया।

दूसरे दिन उसके मरने की अफवाह फैल गई, और उसके सिपाही जहां-तहां मारे जाने लगे। यह देख वह स्वयं घोड़े पर सवार होकर निकला, पर उस पर भी पत्थर फेंके गये। यह देख, वह सुनहरी मस्जिद पर चढ़ गया और वहां से उसने कत्ले-आम का हुक्म दिया। चार दिन तक कत्ले-आम होता रहा। शहर लाशों से पट गया। नगर धांय-धांय जलने लगा। शहर-भर लूट लिया गया। राज्य का खजाना भी लूट लिया गया। व्यापारियों और सरदारों के जवाहरात लूट लिये गये। तख्त ताऊस भी वह लूट ले गया। इस लूट में उसे तख्त के अलावा दस करोड़ का माल मिला।

इसके बाद दिल्ली की शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई। दक्षिण, मालवा, गुजरात, राजपूताना, यह सब दिल्ली के अधिकार से बाहर हो गये। अब से बंगाल के नवाब अलीवर्दीखां ने भी अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया और खिराज देना बन्द कर दिया। यह सब उलट-पुलट माया के जादू से—औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद सिर्फ तीस वर्ष के भीतर-ही भीतर हो गई।

उसके मरने पर अहमदशाह तख्त पर बैठा। छः वर्ष राज्य करने के बाद गाजीउद्दीन नामक एक सरदार ने उसको पटककर आंखें निकाल ली, और जहांदार के बेटे को तख्त पर बैठाया। उसका नाम आलमगीर द्वितीय रखा। इसके गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद अहमदशाह अब्दाली ने भयानक रीति से दिल्ली को लूटा। फिर वह मथुरा पर चढ़ गया, और यहां

कत्लेआम मचा दिया और लौट गया। अब गाजीउद्दीन ने बादशाह से बिगड़कर मराठा को बुलाया। पेशवा का भाई रघुनाथराव दिल्ली आया और गाजीउद्दीन को बादशाह का मन्त्री बनाकर पंजाब चला गया। वहाँ से अब्दाली के हाकिम को मार भगाया। अब मराठा का आधिपत्य सर्वोपरि होगया, और वे प्रत्येक प्रान्त से चौथ वसूल करने लगे।

अब अब्दाली फिर एक भारी सेना लेकर चढ़ आया। गाजीउद्दीन ने यह देख, आलमगीर को मरवा डाला और वह स्वयं जाटों की रियासत में भाग गया। उधर मराठे बड़े दर्प से अब्दाली का मुकाबिला करने पानीपत के मैदान मे आ डटे। परन्तु परस्पर की फूट और विग्रह ने उनका पतन किया। होलकर और सूरजमल लड़ाई से फिर गये। दो लाख मराठे काट डाले गये और बाईस हजार को पकड़कर अब्दाली गुलाम बनाकर ले गया। इस घटना ने महाराष्ट्र मे हाहाकार मचा दिया।

युद्ध के पीछे अली गौहर गद्दी पर बैठा और अपना नाम 'शाहेआलम' रखा। इसके समय मे गुलाम कादिर नामक एक सरदार रुहेलों को चढ़ा लाया। गुलाम जोरों से महल में घुस गया और बादशाह को तख्त से नीचे गिराकर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। कटार से आँख निकालकर बाहर फेंक दी। फिर किले को खूब लूटा। यहाँ तक कि बेगमों के बदन से कपड़े भी उतरवा लिये। मराठों ने जब यह सुना, तो तुरन्त महादजी सिन्धिया दिल्ली पर आ धमके, और गुलाम कादिर को पकड़कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। इसके बाद सिन्धिया ने बादशाह को तो किले मे बन्द कर दिया और नगर पर अपना कब्जा कर लिया।

अब अंग्रेज रंग-मञ्च पर खुल्लम-खुल्ला आये। लॉर्ड लेक ने दिल्ली जाकर बादशाह को सिन्धिया की कैद से छुड़ाया और इलाहाबाद ले गये। उन्होने अवध के नवाब से डरा धमकाकर इलाहाबाद और कड़ा का इलाका बादशाह के लिये ले लिये, और बादशाह को इलाहाबाद का किला सौंप दिया। इसके बाद ही लॉर्ड क्लाइव ने आकर बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी बादशाह से ले ली। इसका मतलब यह था कि अंग्रेजों को इन तीनों प्रान्तों से कर और लगान उगाहने का अधिकार मिल गया। अँग्रेजों

ने इसके बदले बादशाह को छब्बीस लाख रुपये पेन्शन देने का वचन दिया। मुर्शिदाबाद के नवाबो का केवल शासनाधिकार मात्र रह गया।

परन्तु इसके कुछ दिन बाद ही ज्योही बादशाह दिल्ली आये, उधर वारेन हेटिंग्स गवनर हुए। उन्होने पचास लाख रुपये नकद लेकर अवध के नवाब को फिर इलाहाबाद और कडा का इलाका बेच दिया। साथ-ही बादशाह को खिराज भेजना बन्द कर दिया। उसका कारण यह बतला दिया कि बादशाह मराठो से मिल गया है।

बादशाह ने कई बार गवनर को पत्र लिखा। एक बार पत्र के उत्तर मे वारेन ने लिखा था—

"जब आप कम्पनी और अवध के नवाब-वजीर से अलहदा होकर दूसरो को (मराठो को) अपना कृपा-पात्र बनाने लगे, जिसमे कम्पनी की सरासर हानि है, तो जो-कुछ आपके पास था, उसी समय कम्पनी का हो चुका।"

परकैच बादशाह ने फिर भी ठण्डे-ठण्डे लिखा—

"कम्पनी के अधिकारी सुलहनामे की रु से आप हमारे पाक दामन से अलहदा नही हो सकते, और बगाल के सूबे का खिराज भेजना उनका फर्ज है। हम कही क्यो न रह, कडा और इलाहाबाद हमारे नौकरो के हाथो मे बने रहने चाहिये। दो वर्षो से हमे इलाहाबाद और कडा के रुपये नही मिले। रुपयो की हमे अजहद जरूरत है।"

परन्तु इस पत्र का कोई जवाब नही दिया गया। विवश, बादशाह ने फिर मराठा की शरण ली। उन्होने महादजी सिन्धिया को लिखा कि तुम खुद कलकत्ता जाकर यह खिराज वसूल करो। नाना फडनवीस से भी सहायता माग गई। सिन्धिया पूना पहुँचकर नाना से इस सम्बन्ध मे सलाह कर ही रहे थे, और सम्भव था कि भारी सैन्य लेकर कलकत्ते खिराज के लिये चढ दौडते, पर, अकस्मात्-ही उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि उन्हे मरवा डाला गया।

इस व्यक्ति की प्रशसा मे एक बादशाह ने कहा था—

"माधोजी सीधिया फर्ज़न्द जिगर बन्देमन्।
हस्त मसरूफ तलाफीए सितमगरि एमा॥"

अर्थात्—माधोजी सिंधिया मेरे जिगर का टुकड़ा और मेरा बेटा है। मेरे दुःखों को दूर करने मे लगा हुआ है।

इसके बाद अँग्रेजो ने मराठो और बादशाह मे विरोध उत्पन्न करा दिया और एक इकरारनामा लिख दिया, जिसका अभिप्राय यह था कि उन्हे मराठो से सम्पूर्ण अधिकार दिला दिये जायँगे।

परन्तु यह वादा कभी पूरा नही किया गया। लार्ड लेक ने दिल्ली के समस्त अधिकार अपने कब्जे मे कर लिये और बारह लाख रुपये बादशाह की पेशन नियत करदी। अब बादशाह के हाथ मे कुछ भी अधिकार न थे। वह सिर्फ पेन्शन-भोगी नाम-मात्र का बादशाह था। दिल्ली पर कब्जा रखने और बादशाह को कब्जे मे रखने के लिये, दिल्ली मे एक मजबूत सेना रखने की व्यवस्था की गई। एक बार बादशाह को दिल्ली से हटाकर मुंगेर भेजने का विचार किया गया, परन्तु विद्रोह के भय से यह विचार काम मे न लाया गया।

शाहआलम के बाद बादशाह अकबरशाह (दूसरा) गद्दी पर बैठा। इसके समय मे ही लखनऊ के नवाबो को बादशाह की उपाधि प्राप्त हुई और अँग्रेजो ने उन्हे बादशाह स्वीकार किया।

अब तक अँग्रेज अधिकारी दिल्ली के बादशाह को भारत का बादशाह मानते तथा कम्पनी-सरकार का न्यायाधिराज स्वीकार करते थे। उनके साथ बातचीत करने, मिलने और पत्र-व्यवहार मे, सभी अफसर प्राचीन मर्यादा का पालन करते थे, तथा प्रत्येक गवनर-जनरल दिल्ली आकर उनसे मिलता था।[1] परन्तु जब वारेन हेस्टिंग्स गवनर हुए, तब बादशाह अकबरशाह ने हेस्टिंग्स को दिल्ली बुलाना चाहा। परन्तु हेस्टिंग्स ने साफ इन्कार कर दिया और यह कहा कि मुझे इस नियम को स्वीकार करने मे ऐतराज है कि दिल्ली के बादशाह कम्पनी की सरकार के अधिराज हैं।

जब लॉर्ड एमहर्स्ट गवनर बनकर आये तब दिल्ली आकर बादशाह से मिले। इन्होने यह प्रथम ही तय कर लिया था कि इस मुलाकात मे

१ गवनर की मुहर पर दिल्ली के बादशाह का 'फिदवी-खास' खुदा रहता था।

प्राचीन शाही अलकाव आदाव काम मे न लाये जायेंगे। जब गवनर वादशाह के सामने पहुँचा, तब वे तख्त पर वैठे थे। एमहर्स्ट वादशाह के सामने दाहिनी ओर की शाही कुर्सी पर वैठा। उसका रुख वादशाह के वाई ओर था। रेजीडेण्ट और वडे-वडे तमाम अफसर खडे रहे।

जब वात-चीत शुरू हुई, तो लॉड एमहर्स्ट ने वात चीत मे सब अलकाव-आदाव वदल दिये, और इस प्रकार वादशाह तमाम दरवारियो की नजर मे तुच्छ होगये। उसने पुराने वायदो को भी राजनैतिक छल कहकर पालन करने से इनकार कर दिया। इसके वाद जो पत्र-व्यवहार वादशाह से अँगरेज़ी सरकार का हुआ, उसमे भी कोई आदाव-अलकाव काम मे नही लाया गया।

इस मुलाकात का जो असर हुआ, उसका वणन 'पीटर ऑरा' नामक एक अँगरेज़ ने इस भाति किया है—

"इससे प्रथम कि इस कपना का अत कर दिया जाय कि अँगरेज सरकार दिल्ली के बादशाह की प्रजा हैं, अत्यन्त स्वभाविक था कि इस घटना ने एक जवदस्त सनसनी पैदा कर दी थी, क्योंकि यह पहला अवसर था, जवकि हमने खुले और निश्चित तौर पर ब्रिटिश-सत्ता की स्वाधीनता का प्रतिपादन किया। लोग आम तौर पर यह कहते थे कि—हिदोस्तान का ताज दिल्ली के वादशाह के सर मे हटाकर अब अँगरेजो के सिर पर रख दिया जाय।"

कहा जाता हैं कि शाही खानदान लौर उसके आश्रितो ने इस घटना पर गहरा शोक मनाया। उन्होने अनुभव किया कि इससे प्रथम उन्हे मराठो के कारण और तकलीफे चाहे कुछ भी क्यो न सहनी पडी हों, किन्तु मराठे दिल्ली-सम्राट को सदा समस्त भारत का न्याय-अधिराज स्वीकार करते रहे। अब पहली वार उनका रुतवा छीना गया है।

वादशाह ने खिन्न होकर लाड लेक का दस्तखती इकरारनामा देकर राजा राममोहनराय को विलायत भेजा था। वहा वह गुम कर दिया गया और इस वात पर खेद प्रकट कर दिया गया कि किसी भी भाँति वह नही मिला।

अब तक कम्पनी का रेजीडेण्ट, जो दिल्ली मे रहता था साधारण

अमीर की भांति बादशाह को बाकायदा तस्लीम, कोर्निस और मुजरा किया करता था और शाही खानदान के प्रत्येक बच्चे के प्रति प्रतिष्ठा प्रकट करता था। पर, अब उसके स्थान पर मेटकाफ नियुक्त होकर आया। उसने अपना व्यवहार बिलकुल बदल दिया, और बार-बार बादशाह का अपमान करना शुरू कर दिया।

बादशाह ने अपने पुत्र मिरज़ा सलीम को युवराज-पद देना चाहा, परन्तु अँग्रेजो ने उसे इलाहाबाद किले मे नज़रबन्द कर दिया। अन्त मे बादशाह मरा, और उसका पुत्र बहादुरशाह पिता की भाग्यहीन गद्दी पर बैठा।

यह वह समय था, जब भारत मे भीतर-ही-भीतर अशान्ति के चिह्न उठ रहे थे। बादशाह की आर्थिक स्थिन बहुत नाजुक थी। बादशाह ने अँग्रेजो को खर्च की रकम अधिक देने को लिखा, पर उसे जवाब दिया गया—"आप अपने और अपने वशजो के समस्त अधिकार कम्पनी को सौप दे, तो यह रकम बढ सकती है।" बादशाह ने इसे नामजूर किया।

अब तक भी यह रस्म बनी थी कि ईद के दिन या नौरोज़ या बादशाह की साल गिरह पर गवनर जनरल और कमाण्डर इन-चीफ, दोनो, शाही दरबार मे हाजिर होकर या रेजीडेण्ट द्वारा, नजरें पेश करते थे। बहादुरशाह के तख्त पर बैठने तक भी यह रस्म की गई थी। परन्तु इसके कुछ ही वर्ष बाद लॉर्ड एलेनब्रुक ने इस नजर को भी बन्द कर दिया।

इस अवसर पर गवनर-जनरल लार्ड एलेनब्रुक ने रेज़ीडेण्ट टामस मेटकाफ को लिखा था—

'बादशाह की ऊपरी शानो शौकत का शृंगार उतर चुका है। उसके वैभव की पहली-सी चमक-दमक नही रही। बादशाह के व अधिकार जिन पर तैमूर के खानदानवाला को घमण्ड था, एक दूसरे के बाद छिन चुके है। इसलिये बहादुरशाह के मरन के बाद कलम के एक डाव मे 'बादशाह' की उपाधि का अत कर दना कुछ भी कठिन नही है। बादशाह की नजर जो गवनर-जनरल और कमाण्डर-इन चीफ देते थे, बन्द हुई। कम्पनी का सिक्का जो बादशाह के नाम स ढाला जाता था, बन्द कर दिया गया। गवनर-जनरल की मुहर मे जो पहले 'बादशाह का फिदवी-खास'—ये शब्द रहते

, वे निवाल दिये गये, और हिन्दुस्तानी रईसो को तम्बीह कर दी गई,
कि वे अपनी मोहरो मे वादशाह के प्रति ऐसे शब्दो का उपयोग न करें।
इन सब बातो के बाद गवनमेण्ट ने अब फैसला कर लिया है कि, दिखावे
की अब कोई भी बात ऐसी न रखी जाय, जिसमे हमारी गवनमेट वादशाह
के आधीन मालूम हो। इसलिये दिल्ली के वादशाह की उपाधि एक ऐसी
उपाधि है, जिसे रहने देना गवनमेट की इच्छा पर निभर है।"

सन् १८३६ मे वादशाह के पुत्र दारावख्त की मृत्यु हुई। वादशाह
उसके वाद वेगम जीनतमहल के पुत्र शाहजादे जवावख्त को युवराज नियत
करना चाहते थे। परन्तु अँग्रेज-सरकार ने वादशाह के आठ पुत्रो मे से
मिरजा कीमास के साथ एक गुप्त सन्धि करके उसे युवराज स्वीकार कर
लिया। उस सन्धि मे तीन शर्ते थी—

१—वह वादशाह के स्थान पर 'शाहजादा' कहा जायेगा।

२—दिल्ली का किला खाली करना पडेगा।

३—एक लाख मासिक के स्थान पर १५ हज़ार रुपये मासिक खच के
लिये मिला करेगा।

१० मई को सन् ५७ का विद्रोह मेरठ मे फूट निकला, और उसी
दिन विद्रोही फौजें दिल्ली को चल दी। ये फौजे ११ मई को दिल्ली मे आ
पहुँची। दिल्ली के सिपाही उनसे मिल गये और अफसरो को मार डाला।
संयुक्त सेना काश्मीरी दरवाजे से नगर मे घुसी। दरियागज की तमाम
अंग्रेज़ी वस्ती जला डाली गई, और वहुत से अँग्रेज काट डाले गये। दिल्ली
के किले पर तुरन्त उनका कब्जा होगया। इतने मे मेरठ की पैदल फौज
और तोपखाना भी आ पहुँचा। उसने किले मे घसते-ही वादशाह को ११
तोपो की सलामी दी। वादशाह ने उनसे कहा—"मेरे पास कोई खज़ाना
नही। मैं आप लोगो को तनख्वाह कहाँ से दूँगा?"

सिपाहियो ने कहा—"हम लोग हिन्दुस्तान-भर के अँग्रेजी खजाने
लूटकर आप के कदमो पर डाल देंगे।"

अन्त मे वादशाह ने विद्रोह का नेतत्व ग्रहण किया। दिल्ली मे प्रत्येक
नागरिक ने विद्रोह का स्वागत किया। जो अँग्रेज जहा मिला, काट डाला
गया। दिल्ली-निवासी, विद्रोही सिपाहियो को ओलो और वताशा का

शरबत लुटियो मे घोल-घोलकर पिलाने लगे। दिल्ली का अँग्रेजी दूतावास लूटकर जला दिया गया। अन्य अँग्रेजी इमारते भी तहस-नहस कर दी गई। दिल्ली के मेगजीन मे ८ लाख कारतूस, १० हजार बन्दूक तथा बहुत-सा गोला बारुद था। मेगजीन मे ९ अँग्रेज और कुछ हिन्दुस्तानी सिपाही थे। हिन्दुस्तानियो ने जब किले पर हरा और सुनहरा झण्डा फहराते देखा, तब वे भी उनमे मिल गये। नौ अँग्रेजो ने मेगजीन का बचना असम्भव देखकर उसमे आग लगादी। उसके धडाके से तमाम दिल्ली हिल गई। ६ अँग्रेज, २५ हिन्दुस्तानी सिपाही, और ३०० आदमी इधर उधर गली मे टुकडे-टुकडे हो गये। बन्दूके विद्रोहियो के हाथ आइ। प्रत्येक सिपाही को ४-४ बन्दूके मिली।

शीघ्र ही यह विद्रोह की आग दूर-दूर तक फैल गई। बहुत से अँगरेज मारे-काटे और लूट लिये गये।

लॉड केनिंग ने एक भारी सेना जनरल नील की आधीनता मे विद्रोह-दमन को भेजी। यह सेना जिधर से गुजरी, रास्ते-भर बिना विचारे कत्लेआम करती, गाँवो को लूटती, और फूँकती बढी चली आई। इस समय का वणन सर जान ने इस प्रकार किया है—

"फौजी और सिविल दोनो अदालते बिना किसी तरह के मुकदमे का ढोग रचे और बिना मर्द-औरत या छोटे-बडे का विचार किये—भारतवासियो का सहार कर रही थी। बूढी औरता और बच्चो का उसी तरह वध किया, जिस प्रकार विद्रोहिया का। उन्ह सोच-समझकर फासी नही दी गई बल्कि उन्ह उनके गावो मे अन्दर जलाकर मार डाला गया, गोली से उडा दिया गया। सडको के चौरस्तो पर बाजारा मे जो लाशें टँगी हुई थी, उनको उतारने मे प्रात काल से सध्या तक मुरदे ढोने वाली आठ-आठ गाडिया बराबर तीन महीने तक लगी रही। "

जनरल नील भयानक मार-काट करता हुआ इलाहाबाद तक बढा चला गया। इलाहाबाद का किला अब भी सिक्खो की बदौलत अँगरेजी अधिकार मे था। वहाँ के विद्रोही नेता मौलवी लियाकतअली ने डटकर युद्ध किया। अन्त मे तीस लाख रुपये का खजाना लेकर कानपुर को भाग आया। इलाहाबाद मे भयानक कत्लेआम और अग्नि-काण्ड करके वह सेना

आगे बढी——लखनऊ, कानपुर इत्यादि विद्रोह के मुख्य केन्द्र थे। उधर सिक्खो ने किसी भाँति विद्रोह म सहायता न दी। बादशाह ने एक अपना खास दूत ताजुद्दीन पटियाला, नाभा आदि रियासतो के राजाओ के पास भेजा था। उसने बादशाह को लिखा—

"सिख-सरदार सब सुस्त और कायर हैं। उनसे बहुत कम आशा है। वे फिरगियो के हाथो के खिलौने हैं। मैं उनसे एकान्त मे मिला और बाते की। उनके सामने कलेजा पानी कर कर दिया। इस पर उन्होने जवाब दिया—'हम मौके की इन्तजारी मे हैं। बादशाह का हुक्म होते ही हम दुश्मनो को एक-ही दिन मे मार भगायेंगे, परन्तु मेरे विचार मे उन पर विश्वास नही किया जा सकता।"

उधर अँग्रेज-सरकार ने इन राजाओ को अपने आधीन करने मे बडी-बडी युक्तियाँ काम मे ली।

अब सिक्ख राजाओ की सहायता लेकर सर हेनरी बनार्ड भारी सेना ले, दिल्ली पर चढ आया। उसने भी माग मे लूट-मार, अग्नि काण्ड, कत्ले आम बराबर जारी रखा। उधर दिल्ली मे पल्टन और खजाने जमा हो रहे थे। बादशाह के नाम राज भक्ति के पत्र आ रहे थे। शहर मे बारूद और हथियारा के कारखाने खुल गये थे, जिनमे दजना तोपें रोज ढलती, और हजारो मन बारूद तैयार होती थी। बादशाह, हाथी पर बैठकर नगर मे निकलता और नगरवासियो को उत्साहित करता।

बादशाह ने एक ऐलान छपाकर सब फौजो और बाजारो मे बँटवाया था। वह इस प्रकार था—

"तमाम हिन्दू मुसलमानो के नाम। हम महज अपना धम समझकर जनता के साथ शरीक हुए हैं। इस मौके पर जो बुजदिली दिखायेगा—या भोलेपन के कारण दगाबाज फिरङ्गिया पर एतबार करेगा—वह जल्द शर्मिन्दा होगा, और इङ्गलिस्तान के साथ अपनी वफादारी का वैसा ही इनाम पावेगा, जैसा लखनऊ के नवाबो ने पाया। इसके अलावा इस बात की भी जरूरत है कि इस जङ्ग मे तमाम हिन्दू और मुसलमान मिल कर काम करें, और किसी प्रतिष्ठित नेता की हिदायतो पर चलकर इस तरह का व्यवहार करें, जिससे कि अमनो-अमान क़ायम रहे, और ग़रीब सन्तुष्ट

रह तया उनका रुतवा और शान वढे। जहाँ तक मुमकिन हो सकता है, सब को चाहिये कि इस ऐलान की नक्ल करके किसी आम जगह पर लगायें।"

जव दिल्ली मे युद्ध छिडा, मिरजा मुगल सेनापति थे। पर वे सुप्रवन्धक और सुशासक न थे। न कोई सेनापति ही उस समय योग्य था। वादशाह ने उनकी जगह वख्तखाँ को प्रधान सेनापति वनाया। वह वीर और साहसी था। इसके साथ चौदह हजार पैदल, तीन हजार सवार, और अनेक तोपें थी। सेना को उसने छ महीने का वेतन पेशगी बाँट दिया था, और चार लाख रुपया वादशाह को नजर किया था। उसने नगर म घोषणा करदी थी, कि कोई शस्त्र रहित न रहे। जिसके पास शस्त्र न थे, उन्ह मुफ्त हथियार बाँट दिये गये। यह प्रवन्ध कर, तीन जुलाई को आम-परेड हुई। इसमे वीस हजार सिपाही सम्मिलित थे।

चार जुलाई को वख्तखाँ ने अँग्रेजी सेना पर आक्रमण किया। छोट-वडे घमासान युद्ध हुए। जयपुर जोधपुर, सिंधिया और होलकर अभी-तक आगा-पीछा कर रहे थे। फिर भी वादशाह के पास पचास हजार सेना थी। परन्तु सेनानायक का अभाव था। वख्तखा वीर और साहसी था। पर कुल-वश का उच्च न था और कुलीन राजे उसकी आधीनता मे युद्ध करना अपना अपमान समझते थे।

वादशाह ने जोश मे आकर एक खत राजपूत-राजाओ को अपने हाथो से लिखा—

"मेरी यह दिली ख्वाहिश है कि जिस जरिये और जिस कीमत पर भी हो सके, फिरङ्गियो को हिंदुस्तान से बाहर निकाल दिया जाय। मेरी यह जबदस्त ख्वाहिश है कि तमाम हिंदुस्तान आजाद हो जाय। इस मक-सद को पूरा करने के लिये जो लडाई शुरू की गई है, उसमे उस वक्त तक फतहयावी नही हो सकती, जब तक कोई शख्श अपने ऊपर ऐसी जिम्मे-वारी न ले ले, जो कौम की मुख्तलिफ ताकतो को सगठित करके एक ओर लगा सके, और अपने को तमाम कौम का नुमाइन्दा कह सके। अँग्रेजो को हिंदुस्तान से निकाल देने के वाद अपने जाती फायदे के लिये हिंदुस्तान पर हुकूमत करने की मुझे जरा भी ख्वाहिश नहीं है। अगर आप सव देशी

राजे दुश्मन को निकालने की गरज से अपनी तलवार खींचने के लिये तयार हो, तो मैं इस बात के लिये राजी हूँ कि अपने तमाम शाही हकूक और अख्त्यारात राजाओ के ऐसे गिरोह के हाथ सौंप दूँ—जो इस काम के लिये चुने जायें।"

पचीस अगस्त तक युद्ध होता रहा। इसके बाद विद्रोही सेना मे द्वेष-भाव उत्पन हो गया। अब साहस करके अँग्रेजी सेना नगर की ओर बढने लगी। इस समय अँग्रेजी सेना मे पाच हजार सिख, गोरखे और पजाबी तथा ढाई हजार कश्मीरी और स्वय महाराज जींद अपनी सेना-सहित थे। दोनों ओर भयानक मार-काट होती गई। अन्त मे १४ सितम्बर को अँग्रेजी सेना दिल्ली मे घुस आई। इसी दिन सेनापति निकलसन घायल हुआ और २३ सितम्बर को हस्पताल मे मरा। इधर अव्यवस्था बढ गई थी। कुछ सेना दिल्ली छोडकर चल दी। अन्त मे १६ सितम्बर तक अधिकाश नगर अँग्रेजी अधिकार मे आ गया। तब बादशाह किला छोड-कर हुमायूँ के मकबरे मे चले गये। बख्तखा मकबरे की दाहिनी ओर फौज लिये पडे थे। उन्होने बादशाह से कहा—"अभी आप हिम्मत न हारिये। मेरे साथ दिल्ली से निकल चलिये। हम, पूरी तैयारियो से फिर युद्ध करेंगे।" पर मिरजा इलाहीबख्श, जो अँगरेजो के एजेण्ट थे, बादशाह को भागने की सलाह न देते थे। अन्त मे बादशाह ने बख्तखा से कहा—

"बहादुर, मुझे तेरी बात का यकीन है, और तेरी राय भी दिल से पसन्द करता हूँ, मगर जिस्म की कुव्वत ने जवाब दे दिया है। इसलिये मैं मामला तकदीर के हवाले करता हूँ। मुझे मेरे हाल पर छोड दो, और बिसमिल्लाह करो। यहा से जाओ और कुछ काम करके दिखाओ! मैं नही, मेरे खानदान मे से नही, तुम या कोई हिदुस्तान की लाज रखे, हमारी फिक्र न करो, अपने फर्ज को अदा करो।"

बादशाह के इस जवाब से बख्तखा हताश हो गया। वह गर्दन नीची करके मकबरे के पूर्वी दरवाजे से निकल आया। उधर इलाहीबख्श ने पश्चिमी दरवाजे से निकलकर कप्तान हडसन को सूचना दी कि बादशाह को गिरफ्तार करने का यही समय है। उसने तुरन्त ५० सवार लेकर, पश्चिमी दरवाजे पर पहुँच बादशाह को गिरफ्तार कर लिया।

बादशाह, बेगम जीनतमहल और शाहजादे जवाँबख्त को लाकर लाल-किले मे कैद किया गया। बख्तखा का किसी को पता नही लगा।

बादशाह के दो बेटे मिरजा मुगल और मिरजा अख़तर सुलतान तथा बादशाह का पोता मिरजा अकबर हुमायूँ के मक्बरे मे अब भी थे। इलाहीबख्श से सूचना पाकर हडसन ने फिर वहाँ जाकर उन्हे कैद कर लिया। इलाहीबख्श के समजाने से वे चुपचाप कैद होगये। जब उन्हे रथो पर सवार कराकर हडसन शहर की ओर लौटा, और शहर एक मील रह गया, तब उसने रथो को ठहराया और शाहजादो को रथो से उतरने का हुक्म दिया। उनके कपडे उतरवाए और एक सिपाही के हाथ से तमचा लेकर तीनो को गोली मार दी। उसके बाद उनके तत्काल सिर काट लिये गये, और उन्हे रूमाल मे रखकर बादशाह के सामने पेश किया गया, और कहा गया—"आपको बहुत दिन से शिकायत थी कि कम्पनी ने आपको खिराज नही दिया। यह खिराज हाजिर है।"

बादशाह ने देखकर मुँह फेर लिया और कहा—"अलहम्दोलिल्लाह! तैमूर की औलाद है, जो सुर्खरू होकर बाप के सामने आई है।"

अगले दिन दो सिर खूनी दरवाजे के सामने लटका दिये गये और धड कोतवाली के सामने टाग दिये गये। दूसरे दिन उन्हे जमना मे फिकवा दिया गया। इसके बाद दिल्ली की तत्कालीन भयानक अवस्था का रोमाच-कारी वृत्तान्त लॉर्ड राबर्ट्स ने लिखा है—

"हम सुबह को लाहौरी दरवाजे से चादनी चौक गये, तो हमे शहर, वास्तव मे मुर्दो का शहर नजर आता था। कोई आवाज, सिवाय हमारे घोडो की टापो के, सुनाई न देती थी। कोई जीवित मनुष्य नजर नही आया। सब ओर मुर्दो का बिछौना बिछा हुआ था, जिनमे से कुछ मरने से पहले सिसक रहे थे।

"हम चलते-चलते बहुत धीरे-धीरे बात करते थे, इस डर से कि कही हमारी आवाज से मुर्दे न चौक पडें। एक ओर लाशो को कुत्ते खा रहे थे और दूसरी ओर लाशो के आस पास गिद्ध जमा थे, जो उनका मांस नोच-नोचकर खा रहे थे, और हमारे घोडो की टापो की आवाज से उड-उडकर थोडी दूर पर जा बैठते थे।"

"शहर पर कब्जा करने के बाद ३ दिन तक कम्पनी की फौज नगर को लूटती रही। ख्वाजा हसन निज़ामी साहब ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि—" एक दस्ता फौज को इस काम के लिये नियुक्त किया गया कि जहां कही आबादी पाओ—मद, औरत और बच्चो को घर के असबाब सहित गिरफ्तार कर, ले आओ। आगे-आगे मर्द असबाव के गट्ठर सिर पर रखे हुए आते, और पीछे पीछे उनकी औरतें रोती हुई पा-पैदल और बच्चो को साथ लिये हुए। जिन औरतो को कभी पैदल चलने की आदत न थी, वे ठोकरें खा खाकर गिरती थी, बच्चे गोद से गिर पडते थे और सिपाही क्रूरता के साथ उन्हे आगे चलने के लिये धकेलते थे।

"जब वे लोग सामने पेश होते तो हुक्म दिया जाता कि असबाब मे जितनी कीमती चीजें हैं, उन्हे ढूंढकर जब्त करलो। व्यर्थ की चीजें इन्हे वापिस दे दो। यह हो चुकने पर दूसरा हुक्म होता कि इन्हे सिपाहियो की देख-रेख मे लाहौरी दरवाजे तक ले जाओ और वे लोग शहर से बाहर धक्का देकर निकाल दिये जाते।

"दिल्ली शहर के बाहर इस प्रकार हजारो मद, औरतें और बच्चे असहाय, नगे पाव, नगे-सिर, भूखे-प्यासे फिर रहे थे। सैकडो माताएँ छोटे बच्चा का दु ख न देख सकने के कारण उन्हे अकेला छोडकर कुएँ मे डूब मरी। नगर के अन्दर हजारो औरतें ऐसी थी, जो बेइज्जती और मुसीबतो से बचने के लिये कुओ मे गिरने लगी। ये इतनी अधिक सख्या मे गिरी कि डूबने को पानी न रहा। अनेक कुएँ औरतो की लाशो से भर गये थे।

"इस प्रकार वदनसीब दिल्ली ने एक बार फिर भयानक दिन देखे। शाही खानदान पर बुरी वीती। वहुतो को तो फासी नसीब हुई। कुछ शाहजादे जेलखाने मे भेज दिये गये। जब वे अपना काम पूरा न कर सकते थे—तो उन पर कोडा की मार पडती थी।"

मिर्जा कोमास, जिसे अङ्गरेज-सरकार ने युवराज बनाना स्वीकार किया था, एक दिन दिल्ली के पास जगल मे घोडे पर सवार नगा खडा दिखाई दिया था। हडसन उसकी तलाश मे घूम रहा था। उसके बाद आज तक उसका पता न लगा, कि कहाँ है?

बहादुरशाह की एक बेटी रजिया बेगम ने रोटियों से मुहताज होकर दिल्ली के एक बावर्ची हुसैनी से शादी करली थी। उनकी दूसरी बेटी फातिमा सुलताना ने ईसाई-जनाना-स्कूल में नौकरी करली। बादशाह, बेगम जीनतमहल और शाहजादा जवावरत कैद करके रगून भेजे गये, जहा सन् १८६३ मे इस वृद्ध बादशाह का देहात हुआ, और उसके साथ-साथ दिल्ली के प्रतापी मुगल साम्राज्य का टिमटिमाता दीपक सदा के लिये बुझ गया !!

१६

तख्ते-लखनऊ

दिल्ली इस्लाम की परम प्रतापी राजधानी अवश्य रही—परन्तु इसलामी नजाबत, जो ऐयाशी और मद से उत्पन्न हुई थी—उसका जहूर तो लखनऊ ही मे नज़र आया। आज भी लखनऊ अपनी फसाहत और नजाबत के लिये मशहूर है। लखनऊ के नव्वाबो के एक-से एक बढकर मजेदार और आश्चर्यजनक कारनामे सुनने को मिलते हैं। वह बाकपन वह अल्हडपन, वह रईसी बेवकूफी दुनिया मे सिर्फ लखनऊ ही के हिस्से मे आई थी। आज भी वहा सैकडो नवाब जूते चटकाते फिरते हैं। यद्यपि अंग्रेजी दौर-दौरे ने लखनऊ को पूरा ईसाई बना दिया है, पर कुछ बुढऊ खूसट अब भी गज भर चौडे पायचे का पायजामा और हल्की दुपल्ली टोपी पहनकर उसी पुराने ठाठ से निकलते हैं। ताजियेदारी के दिन माना लखनऊ भूल जाता है कि अब हम प्रबल प्रतापी ब्रिटिश की जायदाद है—उस समय उसमे वही शाही छटा देखने को मिलती है। अगर खोज की जाय तो आज भी वहा नवाब कनकव्वे और नवाब बटेर देखने को मिल सकते हैं। खम्मीरी तम्बाकू की भीनी महक मे डूबकर प्रत्येक पुराना मुसलमान अब भी अपने ऊपर इतराता है।

लखनऊ की नवाबी की नींव नवाब सआदतखां बुर्हानुल्-मुल्क ने

डाली थी। उसका असली नाम मिरज़ा मुहम्मद अमीन था। उन दिनो दिल्ली के तख्त पर मुहम्मदशाह रँगीले मौज कर रहे थे। अवध मे तब शेखो ने वडा ऊधम मचा रखा था। उनकी देखा-देखी दूसरे जमीदार भी सरकश हो उठे थे। जो कोई अवध का सूबेदार बनकर जाता, उसे ही मार डालते थे। इसलिये बादशाह किसी ज़बरदस्त आदमी की तलाश मे थे। स्वय बादशाह-सलामत भी इनसे सशक रहते थे। वे इन्हें दरबार से हटाना चाहते थे, और अन्त म अवध की सूबेदारी देकर उन्होने इन्हे दूर किया।

बादशाह ने मिरज़ा साहब को अवध की सूबेदारी और खिलअत तो दे दी थी, पर फौज का कोई भी बन्दोबस्त न था। मिरज़ा साहब ने हिम्मत न हारी—आवारा और बेकार मुसलमान-युवको को बटोरकर सगठित किया और कहा—"क्यो पडे-पडे बेकार ज़िन्दगी बरबाद करते हो? खुदा ने चाहा, तो अवध पर दखल करके मज़ा करेंगे।"

कुछ ही दिनो मे हज़ारो आदमी जमा हो गये। कुछ तोपे और हथियार शाही शस्त्रागार से मिल गये। इस फौज को अवध तक ले जाने और सामान के लिये बैल खरीदने को मिरज़ा ने अपनी बेगम के जेवर बेच डाले।

जब मिरज़ा इस ठाठ से चले, तो रास्ते मे आगरे के सूबेदार ने इनकी खातिरदारी करनी चाही। आपने कहा—"जो रुपया मेरी खातिर-तवाज़े मे खर्च करना चाहते हो, मुझे नक्द दे दो, क्योकि रुपये की मुझे बडी जरूरत है।" आगरे के सूबेदार ने यही किया। वहाँ से बरेली पहुँचे तो वहा के सूबेदार से भी दावत के बदले रुपया लेकर फरुखाबाद आये। वहा नवाब ने कहा—"लखनऊ के शेख बडे लडाके और अवध के आदमी भारी सरकश है। आप एकाएक गगा पार न कर, पहले आस-पास जमी-दारा और रईसो को मिला लें, तब सबकी मदद लेकर लखनऊ पर चढाई करें।" मिरज़ा ने यही किया—और जब वे धूम-धाम से लखनऊ पहुँचे और शेखो को अपने आने की सूचना दी, तो वे इनकी सेना से डर गये, और कहा—"आप गोमती के उस-पार मच्छी-भवन मे डेरा डालिये।" मच्छी-भवन अनायास ही दखल हुआ देखकर मिरज़ा बहुत खुश हुए, क्योकि उन्हे आशा न थी कि विना रक्त-पात हुए सफलता मिल जायगी।

नवाब ने अपने सुप्रबन्ध और चतुराई से थोडे-ही दिनो म सूबे की आमदनी सात लाख रुपया करली। और अट्ठाईस वर्षों तक बडी सफलता से शासन किया। मृत्यु के समय खजाने मे नौ करोड रुपये जमा थे। यह सन् ११५० हिजरी की बात है।

इनकी मृत्यु पर इनके भाजे और दामाद मिरजा मुहम्मद मुकीम अबुल मन्सूरखाँ सफदर जग के नाम से वजीरे-नवाब नियुक्त हुए। यह अपनी राजधानी लखनऊ से उठाकर फजाबाद ले गये। यहाँ नवाब की सेना की छावनी थी। यह बुद्धिमान् न थे, इसलिय इनका जीवन युद्ध और झगडो मे गया। इनके समय मे शेख फिर सिर उठाने लग। अन्य सरदार भी बागी हो गये।

इनमे एक गुण था—एक-नारी-व्रती थे। इनकी पत्नी नवाब सदर-जहा बेगम युद्ध-स्थल मे भी छाया की भाँति साथ रहती थी। य सोलह वष नवाबी भोगकर मरे।

इनके बाद मिरजा जलालुद्दीन हैदर नवाब शुजाउद्दौला के नाम से मसनद पर बैठे। ये २४ वष की आयु के वीर युवक थे, पर चरित्र ठीक न था। गद्दी पर बैठते ही किसी हिन्दू स्त्री का अपमान करने के कारण हिन्दू बिगड गये। परन्तु इनकी माता ने बहुत-कुछ समझा-बुझाकर हिन्दू रईसो को शान्त किया। इन्होंने बाईस वष तक नवाबी की। इनके जमाने मे दिल्ली की गद्दी पर बादशाह शाहआलम थे, और बगाल की सूबेदारी के लिये मीरकासिम जी-जान से परिश्रम कर रहा था। शुजाउद्दौला, बादशाह के वजीर और रक्षक थे। मीरकासिम ने उनसे सहायता मागी थी। उस समय अङ्गरेजी कम्पनी के अधिकारियो ने मीरजाफर को नवाब बनाया था। शुजाउद्दौला ने एक पत्र अगरेज कौन्सल को लिखकर बादशाह के अधिकार और उनके कर्त्तव्या की चेतावनी दी थी। पर उसका कोई फल न देख, युद्ध की तैयारी कर दी। युद्ध हुआ भी, परन्तु अगरेजो की भेद नीति से शुजाउद्दौला की हार हुई, उसमे नवाब को हर्जाने के पचास लाख रुपये और इलाहाबाद तथा कडे के जिले अगरेजो को देने पडे। अगरेजो का एक एजेण्ट भी उनके यहाँ रखखा गया, और दोनो ने परस्पर के शत्रु मित्रो को अपना निजू शत्रु-मित्र समझने का कौल-करार भी कर लिया।

नवाब को इमारतो का भी बडा शौक था। १० लाख रुपये के लगभग आप इमारतो पर भी खर्च किया करते थे। इनकी बनाई इमारतें आज भी लखनऊ की रोशनी हैं। दौलतगज या दौलतखाना जहाँ नवाब स्वय रहते थे—इन्द्र भवन के समान शोभा रखता था।

यह वह समय था, जब ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी की कौंसिल में वारेन हेस्टिंग्स का दौर-दौरा था, और मुगल-तख्त शाह आलम के पैरो के नीचे डगमगा रहा था। हम कह आये है, कि लखनऊ मे भी कम्पनी का एक रेजीडेण्ट रहता था। उस समय तक रेजीडेण्टो को नवाब के सामने आने पर दरबार के नियमो का पालन करना पडता था, और अन्य दरबारियो की भाँति उन्हे भी अदब के साथ नवाब से मिलना पडता था।

नवाब ने रेजीडेण्ट के रहने के लिये एक विशाल इमारत बनवाई थी, जो १८५७ की घटनाओ के कारण अब बहुत प्रसिद्ध होगई है।

एक बार नवाब घोडे पर सवार सैर को निकले, तो एक चूहा आप के घोडे की टाप के नीचे दब गया। इस पर आपने वही उसकी कब्र बनवा दी, और एक बाग लगवाया, जो 'मूसा बाग' के नाम से प्रसिद्ध है। यह बाग नवाब को बहुत प्रिय था। इसी मे बादशाह जानवरो की लडाई देखा करते थे।

इनके बाद इनके तीसरे पुत्र मिरजा अनजीअलीखा आसफउद्दौला के नाम से गद्दी पर बैठे। ये प्रारम्भ मे ७ वर्ष तक फैजाबाद मे रहे। परन्तु बाद मे लखनऊ चले आये, और उसे ही राजधानी बनाया।

इनके लखनऊ आने से लखनऊ की तकदीर चेती। उस समय तक लखनऊ एक साधारण कस्बा था। आसफउद्दौला ने उसे अच्छा खासा शहर बना दिया। उन्होंने कई मुहल्ले और बाजार बनवाये। ये बडे शाहखर्च, स्वाधीन प्रकृति के, और हिम्मतवाले शासक थे। इन्होंने सब पुराने दरबारियो को निकालकर नयो को नियुक्त किया। इनके जमाने मे दरबार की शानो शौकत देखने योग्य थी। दाता तो अनोखे थे। इनकी शाहखर्ची से इनकी मा ने अँगरेजो से कह-सुनकर खजाना अपने अधिकार मे कर लिया था, परन्तु नवाब ने लड-भिडकर ६२ लाख रुपये ले लिये। होली, दिवाली, ईद, मुहर्रम के अवसरो पर लाखो रुपये स्वाहा हो जाते थे। ब्याह-

शादी की दावतो मे ५-५, ६-६, लाख रुपया पानी हो जाता था। नवाब का निजू रोजाना खर्च भी कम न था। आपके यहाँ १२०० हाथी, ३००० घोडे, १००० कुत्ते, अगणित मुर्गिया, कबूतर, बटेर, हिरन, बन्दर, साँप, बिच्छू और भाँति भाँति के जानवर थे। इनके लिए लाखो की इमारतें बनी थी, और लाखो रुपये खर्च होते थे। इनके निजू नौकरो मे २००० फराश, १०० चोबदार और खिदमतगार तथा सैकडो लौंडियाँ थी। ४ हजार तो माली थे। रसोई का खर्च ही २ ३ हजार रुपये रोजाना का था। सैकडो बावर्ची थे। शाहजादे वजीरअली की शादी मे ३० लाख रुपये खर्च किये थे। ये सिर्फ दाता और उदार ही नही, एक योग्य शासक और गुण-ग्राही भी थे। मीर, सौदा और हसरत आदि उर्दू के नामी कवि थे, जो साल मे सिर्फ एक बार दरबार मे हाजिर होकर हजारो रुपये पाते थे। संगीत और काव्य के ऐसे रसिक थे, कि एक-एक पद पर हजारो रुपये बरसाये जाते थे।

अँगरेज कम्पनी ने नवाब से कई बडी रकमे बार-बार तलब की थी। उधर वारेन हेस्टिंग्स को रुपये की बडी जरूरत थी। वह जहाँ तक बनता, रईसो से रुपये तलब करता था। विवश हो, नवाब ने चुनार के किले मे गवर्नर से मुलाकात की, और बताया कि केवल सेना की मद्द मे ही मुझे एक बडी रकम देनी पडती है।

अन्त मे गवर्नर ने नवाब से मिलकर यह तै किया कि चूँकि स्वर्गीय नवाब शुजाउद्दौला मृत्यु के समय मे अपनी मा और विधवा बेगम को बडे-बडे खजाने दे गया है, और फैजाबाद के महल भी उन्ही के नाम कर गया है, तथा ये बेगमे अपने असंख्य सम्बंधियो, बांदियो और गुलामो के साथ वही रहती थी—अत उनसे यह रुपया ले लिया जाय। आसफुद्दौला यह शन सुनकर बहुत लज्जित हुआ, पर लाचार इसे सहमत होना पडा, और इसका प्रबंध अगरेज अधिकारी स्वय कर लेंगे, यह निश्चय होगया।

पाठको को स्मरण रखना चाहिए कि मृत नवाब इन बेगमो को अगरेजो की संरक्षकता मे छोड गये थे। अब इन पर काशी के राजा चेतसिंह के साथ विद्रोह मे सम्मिलित होने का अभियोग लगाया गया, और सर इलाइजा कहारो की डाक बैठाकर इस काम के लिए कलकत्ते से तेजी के साथ

रवाना हुआ। लखनऊ पहुँचकर उसने गवाहो के हलफनामे के लिये, और बेगमो को विद्रोह मे सम्मिलित होने का फैसला करके कलकत्ते लौट गया।

फैजाबाद के महलो को अँगरेजो फौजो ने घेर लिया—और बेगमात को हुक्म दिया कि आप कैदी हैं, और आप तमाम जेवरात, सोना, चाँदी, जवाहरात दे दीजिए। जब उन्होंने इन्कार किया, तो बाहर की रसद बद कर दी गई, और वे भूखो मरने लगी। अन्त मे बेगमो ने पिटारो-पर-पिटारे और खजानो-पर-खजाने देना शुरु कर दिया। इस रकम का अन्दाज एक करोड रुपये के अनुमानत होगा।

इस घटना से अवध-भर मे तहलका मच गया, और आसफुद्दौला का दिल टुकडे टुकडे हो गया।

इसके बाद हेस्टिंग्स ने कनल हैनरी को नवाब के यहाँ भेजा और उसे बहराइच तथा गोरखपुर जिलो का कलक्टर बनवा दिया। इसने उन जिलो पर भयानक अत्याचार किया, और तीन वर्ष के अन्दर ही उसने पचालीस लाख रुपया कमा लिया। नवाब ने तग होकर उसे वर्खास्त कर दिया। पर हेस्टिंग्स ने फिर उसे नवाब के सिर मढना चाहा। तब नवाब ने लिखा—"मैं हजरत मुहम्मद की कसम खाकर कहता हूँ कि यदि आपने मेरे यहाँ किसी काम पर कनल हैनरी को भेजा—तो मैं सल्तनत छोडकर निकल जाऊँगा।"

सर जॉन केमार तीसरे अँगरेज-गवर्नर थे। उन्होने नवाब की पुरानी सधि को तोड डाला, और नवाब पर जोर दिया कि आप साडे पाँच लाख रु० सालाना खर्च पर एक अँगरेजी पल्टन अपने यहा और रक्खे। नवाब 'सबसीडियरी सेना' के लिये पचास लाख रुपया सालाना प्रथम ही देता था। उसने इससे इन्कार कर दिया। तब अँगरेजो ने, जबर्दस्ती वजीर झाऊलाल को पकडकर कैद कर लिया। पीछे जब सर जान शोर लखनऊ पहुँचे तो नई फौज का खर्चा नवाब के सिर मढ दिया।

इस धीगा-मुश्ती से नवाब के दिल को सदमा पहुँचा। वह बीमार हो गया, और दवा खाने से भी इन्कार कर दिया। इसी रोग मे उसकी मृत्यु हो गई।

इन्होंने २३ वर्ष राज्य करके शरीर त्यागा। इनके बाद इनकी वसीयत पर मिरजा वजीरअली गद्दी पर बैठे। पर इन्होंने एक ही वर्ष मे सब को

नाराज कर दिया। अन्त मे ईस्ट-इण्डिया कम्पनी ने बनारस मे उन्हें नजरबन्द कर दिया। वहा उन्होने विद्रोह की तैयारिया की, तो अँगरेजो ने उन्हे कलकत्ता बुलाया। जब रेजीडेण्ट मि० चोरी उन्ह यह सन्देश देने गये, तो बात बढ चली और नवाब ने अपनी तलवार निकालकर साहब को कत्ल कर दिया। मेम साहब भागकर बच गई। आप नहाल के जगलो मे भेष बदले मुद्दत तक फिरते रहे। अन्त मे जब नगर के राजा के विश्वास घात से गिरफ्तार किये गये, और लखनऊ मे उन पर कत्ल का मुकदमा चला। पर गवाह कोई न मिलने से फाँसी से बच गये। तब वे कलकत्ते मे नँद कर लिये गये। वहा वे २६ वष की आयु मे मृत्यु को प्राप्त हुए।

इनके बाद नवाब आसफउद्दौला के भाई सआदतअलीखाँ गद्दीनशीन हुए। इस समय इनकी उम्र ६० वष की थी। वे बडे बुद्धिमान, दूरदर्शी, ईमानदार और योग्य शासक थे। पर, लोग इन्ह कजूस कहा करते थे, क्योकि वे आसफउद्दौला की भाति शाह खच न थे। परन्तु खच की जगह पीछे न हटते थे। ये अँग्रेज-सरकार के बडे भक्त थे, क्योकि इन्हे अँग्रेज सरकार ने ही गद्दीनशीन किया, और उस वक्त कम्पनी के साथ इनकी ये शर्तें हो गई थी —

१—कम्पनी को बकाया रकम दे दें।

२—इलाहाबाद का किला कम्पनी का है। उसकी मरम्मत के लिये आठ लाख रुपया दे दे।

३—फतहगढ के किले की मरम्मत के लिए तीन लाख रुपये दे दे।

४—फौजो के इधर उधर जाने-आने का खर्चा दे। कितने लाख ?—यह पीछे देखा जायेगा।

५—उन्हे नवाब बनाने की चेष्टा मे जो खच हुआ, उनके लिये १२ लाख रुपये दें।

६—पदच्युत नवाब वजीरखाँ को डेढ लाख की पेन्शन दें।

७—'सब सीडियरी सेना' के खच के लिये ५६ लाख के स्थान पर ७६ लाख रुपया सालाना दें।

मेजर बड का अनुमान है कि इस प्रकार कुल मिलाकर एक करोड रुपये से ऊपर तथा इलाहाबाद का किला एक वष ही के अन्दर कम्पनी को

मिल गया। एक शर्त यह भी थी कि सिवा कम्पनी के आदमियो के अन्य कोई भी यूरोपियन अवध-राज्य मे न रहने पाये।

इस सन्धि के सम्बन्ध मे 'कलकत्ता रिव्यू' मे सर हेनरी लारेंस ने लिखा था " शायद सर जॉन शोर की सन्धि से अँग्रेज-पाठकों को सब से अधिक यह बात खटके, कि अवध के शासन प्रबन्ध का इसमे कही जरा भी जिक्र नही है। मालूम होता है कि अवध की प्रजा सब से बढकर बोली बोलनेवाले के हाथ नीलाम कर दी गई। सर जॉन शोर ने अवध की मसनद को केवल एक अंग्रेज-गवर्नर के हाथो की एक बिक्री की चीज बना दी थी।"

इसके बाद गवर्नर होकर लार्ड वेलेजली आये, तो उन्होने दो वर्ष बाद ही यह सन्धि तोड दी। उसने नवाब को अपनी सेना मे कुछ संशोधन करने की भी अनुमति दी। उस संशोधन का अभिप्राय यह था कि माल-गुजारी की वसूली आदि के लिये जितनी सेना दरकार हो, उसे छोडकर शेष सब सेना तोड दी जाय, और उसके स्थान पर कम्पनी के प्रबन्ध और नवाब के नाम से कुछ ऐसी सेनाएँ रक्खी जायें—जिनका खर्चा ७५ लाख रुपये सालाना हो।

नवाब ने इसके उत्तर मे एक तर्क-पूर्ण और कडा उत्तर लिखा, और अंग्रेज सरकार को इस प्रकार हस्तक्षेप करने के लिये मीठी फटकार दी।

इस पत्र को लॉर्ड वेलेजली ने तिरस्कार-पूर्वक वापिस कर दिया और नवाब को लिख दिया, कि कुछ पेंशन सालाना लेकर सल्तनत से हट जाओ, या जो पल्टनें नई आ रही है, उनके खर्च के लिए आधा राज्य कम्पनी के हवाले करो।

ये पल्टनें भेज दी गई, और रेजीडेण्ट को लिख दिया गया, कि यदि नवाब ची-चपड करे, तो सेना-द्वारा राज्य पर कब्जा कर लो। वेलेजली ने यह भी स्पष्ट लिख दिया कि नवाब की सैनिक-शक्ति खतम करदी जाय, और अवध की सारी सल्तनत के दीवानी और फौजदारी अधिकार कम्पनी के हो जायें।

नवाब ने बहुत चिल्ल-पो मचाई, पर नतीजा कुछ न हुआ, और नवाब को अपनी सल्तनत का आधा भाग, जिसकी आय एक करोड पैंतीस

लाख रुपये सालाना थी, और जिससे वर्तमान युक्त प्रान्त की बुनियाद पड़ी, सदा के लिये कम्पनी को सौंप देने पड़े।

इसके कुछ दिन बाद ही फर्रुखाबाद के नवाब को, जो अवध का सूबा था, एक लाख आठ हजार रुपया सालाना पेन्शन देकर गद्दी से उतार दिया।

इनमे एक दुर्गुण भी था। ये शराबी और विलासी थे। पर पीछे से तौबा करली थी। इन्होंने लखनऊ में बहुत सी सुंदर इमारतें बनवाईं। ये लखनऊ को एक खूबसूरत शहर की शान में देखना चाहते थे। इन्होंने बहुत-से मुहल्ले और बाजार भी बनवाये।

इनकी मृत्यु पर इनके बड़े बेटे नवाब गाज़ीउद्दीन हैदर गद्दी पर बैठे। उन्होंने अपना खिताब नवाब वजीर की बजाय बादशाह रखा। बादशाही पदवी प्राप्त करके इन्होंने अपना नाम 'अबुल मुजफ्फर मुइज़्ज़ुद्दीन शाह जिमनगाजीउद्दीन हैदर बादशाह' रखा। इन्होंने अपने नाम का सिक्का भी चलाया।

ये भी उदार, साहित्यिक और गुणग्राही बादशाह थे। मिरज़ा मुहम्मदजानकी किरमाली इनके दरबारी थे। उर्दू के प्रसिद्ध कवि आतिश और नासिख इन्हीं के जमाने मे थे। ईद के अवसर पर कवियों को बहुत इनाम मिलता था। उस समय के प्रसिद्ध गवैये रजकअली और फजलअली का भी दरबार मे पूरा मान था। यह दोनो 'ख्याल' गाने मे अपना सानी नही रखते थे। एक दक्षिणी वेश्या का भी इनके यहाँ बहुत मान था।

इनके प्रधान मन्त्री नवाब मोतमिउद्दौला आगा मीर थे जो बड़े बुद्धिमान थे। इन्होने राज्य की बड़ी उन्नति की। खजाना रुपया से भरपूर रहा। करोड़ो रुपये ईस्ट इण्डिया-कम्पनी को कर्जा देते रहे।

बादशाह की प्रधान बेगम बादशाह बेगम कहाती थी, और बड़े ठाठ से अलग महल मे रहती थी। इनसे किसी बात पर बादशाह की खटक गई थी। इन्होने भी कई अच्छी इमारतें बनवाइं। प्रसिद्ध शाह नजफ इन्होंने बनवाया था। लोहे का पुल, जो गोमती नदी पर है, इन्होंने विलायत से बनवाकर मँगवाया था, पर उसे तैयार न करा सके, और आप की मृत्यु हो गई।

इस जमाने मे कम्पनी की आर्थिक स्थिति बहुत ही नाजुक थी। उसकी हुण्डियो की दर बाजार मे बारह फीसदी बट्टे पर निकलती थी। इन दिनो मेजर बेली रेजीडेण्ट थे, जिनके बुरे व्यवहार से नवाब तग आगये थे। नवाब ने गवनर से इनकी शिकायतें की। गवनर लखनऊ आये, पर नतीजा उल्टा हुआ। इस सम्बन्ध मे स्वय तत्कालीन गवनर लार्ड हेस्टिग्स ने लिखा है—

"नवाब मेजर बेली के उद्धत प्रभुत्व के नीचे हर घण्टे आहे भरता था। उसे आशा थी कि मैं उसे इस अन्याय से छुटकारा दिला दूगा। किन्तु मैंने मेजर बेली का प्रभुत्व और भी पक्का कर दिया। मेजर बेली छोटी से छोटी बातो पर नवाब पर हुकूमत चलाता था। जब कभी मेजर बेली को नवाब से कुछ कहना होता था, वह चाहे जब बिना सूचना दिये महल मे जा-धमकता था। उसने अपने आदमियो को बडी-बडी तनख्वाहो पर नवाब के यहाँ लगा रखा था, जो जासूसी का काम करते थे। मेजर बेली जिस हाकिमाना शान के साथ हमेशा नवाब से बात करता था, उसके कारण उसने नवाब को उसके कुटुम्बियो और प्रजा की नजरो मे गिरा दिया था।"

इस यात्रा मे गवनर ने नवाब से ढाई करोड रुपये नकद नेपाल युद्ध के खच के लिये वसूल किये थे। इसके बदले नेपाल से मिली भूमि का टुकडा नवाब को दिया गया था, जो वास्तव मे लगभग बजर था। इसके बाद नवाब को एक दर्बार करके 'स्वतन्त्र-बादशाह' का पद दिया गया। इसमे भी एक राजनतिक छल था। क्योकि इस चाल से दिल्ली के साम्राज्य को भग किया गया था। बादशाह बन कर न नवाब के अधिकार बढे थे, न स्वतत्रता—यह केवल एक हास्यास्पद प्रहसन था।

आपके बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र गाजी नसीरुद्दीन हैदर गद्दी पर बैठे। इन्होने अपना नाम अबुलबसर कुतुबुद्दीन सुलेमान जाह नसीरुद्दीन हैदर-बादशाह, रक्खा। ये पचीस वष के युवक थे। इन्होने गद्दी पर बैठते ही पिता के वजीर को बर्खास्त करके एक पीलवान को वजीर बनाया और एतमुद्दौला का खिताब दिया। पर ये शीघ्र ही मर गये। तब नवाब मुत्त-जिमुद्दौला हकीम ऐहदीअली खां वजीर हुए। इन्होने एक अस्पताल और

एक मेरातखाना तथा एक लीथो छापाखाना भी खुलवाया। एक अग्र जो स्कूल भी खुला।

नसीरद्दीन बड़े ऐयाश थे। इनके महल मे कई यूरोपियन लेडियाँ थी। छतरमंजिल आप ही ने बनवाई थी। और भी बहुत सी कोठियाँ आपने बनवाई। इन्होंने कनल विलकान्स की आधीनता मे एक वेधशाला भी बनवा दी थी, जो गदर मे नष्ट होगई थी। इन्होंने दस वर्ष राज्य किया।

इनके जमाने मे गवनर लार्ड बेंटिंग थे। उन्होंने अवध के दौरे मे नवाब बादशाह को खूब डरा धमकाकर राज्य मे बहुत-से उलट-फेर किये, और यह अफवाह फैल गई थी कि अङ्गरेज अब नवाबी का अन्त किया चाहते है। नवाब ने घबराकर इंगलिस्तान की पार्लियामेण्ट मे अपील करने के इरादे से कनल धनाब नामक फ्रान्सीसी को इङ्गलैण्ड भेजा। पर बैंटिंग ने नवाब को डरा धमकाकर बीच ही मे उसकी बर्खास्तगी का परवाना भिजवा दिया।

इनके बाद बादशाह की वेश्या का पुत्र मुन्नाजान गद्दी पर बैठा। पर नसीरद्दीन की माता ने उसका भारी विरोध कर, उसे गद्दी से उतरवाया। कुछ खून खराबी भी हुई। अन्त मे वे चुनार मे कैद कर लिये गये। इनके बाद नवाब सआदतअली खाँ के द्वितीय पुत्र मिरजा मुहम्मदअली गद्दी पर बैठे। ये विद्या-व्यसनी और शान्त पुरुष थे। हुसेनबाद का इमामबाडा इन्होंने बनवाया था। इन्होंने सिर्फ ५ वर्ष राज्य किया।

इनके बाद मिरजा मुहम्मद अमजदअली खाँ गद्दी पर बैठे। ये शाह मुहम्मदअली के बेटे थे। ये भी ५ वर्ष राज्य कर, मृत्यु को प्राप्त हुए।

इनके बाद प्रसिद्ध और अन्तिम बादशाह वाजिद अली शाह २५ वर्ष की आयु मे गद्दी पर बैठे। ये बड़े शौकीन, नाजुक मिजाज और विनोद प्रिय थे। इन्होंने नये फैशन के अँगरखे कुरते, टोपी ईजाद किये। ठुमरी भी इन्ही की ईजाद है। इनके जीवन मे २४ घण्टे नाच गाने का रंग रहता। स्वय भी नाच-गाने मे उस्ताद थे। सिकन्दरबाग, कैसरबाग आदि इमारतें इन्ही की बनवाई हुई हैं।

यह नवाब जवान, सुन्दर, उत्साही और समझदार था। इसने अवध का राज रोग समझ लिया था। इसने मुस्तदी से सेना को सुधारना शुरू

किया, और रोजाना अपने सामने फौज से कवायद करानी शुरू की। बादशाह दोपहर तक कवायदे देखता था। कम्पनी सरकार ने इस काम से नवाब को बलपूर्वक रोका।

लाड डलहौजी ने गवनर होते ही घोषणा कर दी कि नवाब शासन के योग्य नही, अत अवध की सल्तनत कम्पनी के राज्य मे मिला ली जायगी। गवनर के हुक्म से रेजीडेण्ट नुहरम महल मे वह परवाना लेकर गया, और उस पर नवाब को दस्तखत करने को कहा। नवाब ने इससे बिल्कुल इनकार कर दिया। धमकी और प्रलोभन भी दिये गये। तीन दिन गुजर गये, पर नवाब ने दस्तखत करना स्वीकार न किया। इस पर कम्पनी 'सब-सीडियरी सेना' जबदस्ती महल मे घुस पडी। महल लूट लिया गया, और वाजिदअली को पकडकर कैद करके कलकत्ते भेज दिया गया। समस्त अवध पर कम्पनी का अधिकार होगया। कैद मे बादशाह को एक लाख रुपया महीना खच के लिये मिलता था। यह घटना सन् १८५६ मे हुई।

इसके बाद अवध के ताल्लुकेदारो की रियासतें छीन ली गई और अवध का तख्त सदा के लिये धूल मे मिल गया।

१७

रुहेलों का अन्त

अवध के उत्तर और गगा के पूव हिमालय की तराई मे जो हरा-भरा सुहावना प्रदेश है, वही रुहेलखण्ड है। दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह रँगीले के जमाने मे यहा का सूबेदार नवाब अली मुहम्मद था। सन् १७४८ मे जब वह मरा, तो उसके आधीन एक लाख सेना अफगानो और पठानो की थी। खजाने मे तीन करोड चालीस लाख रुपये और एक करोड सोलह लाख सोने की मोहरें थी।

अवध के नवाब बहुत दिनो से रुहेलखण्ड को हथियाना चाहते थे, मगर जब कभी सब रुहेल-सर्दार मिलकर युद्ध का डङ्का बजाते थे, तब उनकी सख्या अस्सी हजार पहुँचती थी। इसके सिवा वे वीर भी थे, अत नवाब को उन्हे छेडने का साहस न होता था। अब उसने अँग्रेजो की धन लिप्सा को देखा तो उसने गवनर वारेन हेस्टिग्स को लिखकर इस काम मे मदद मागी। दोनो ने सलाह करली, और चालीस लाख रुपये और सेना का कुल खच लेना स्वीकार करके अँग्रेजो ने भाडे पर अपनी सेना देना स्वीकार कर लिया।

रुहेलो से अँग्रेजो का कोई मतलब न था, न कुछ टण्टा था, इसके सिवा वे अन्य सूबेदारो की तरह बादशाह के अधिकार प्राप्त सूबेदार थे। ऐसी दशा मे केवल रुपये के लालच से भाडे पर सेना भेजना सवथा अनुचित काम था।

इस विषय पर मेकाले ने लिखा भी था —

"धन लेकर और भडैतू बनाकर पामर अथवा हानिकारक काम मे

प्रवृत्त होना अवश्य ही अकीर्ति का काम है, और बिना छेड़-छाड़ के किसी पर चढ़-दौड़ना अवश्य ही नीचता का काम है।"

हेस्टिंग्स ने कर्नल चैम्पियन की आधीनता मे तीन ब्रिगेड अँगरेजी सेना और ४००० कडावीन रवाने किये। रुहेलो ने प्रथम तो बहुत-कुछ लिखा-पढ़ी की, पर अन्त मे हार-कर युद्ध की तैयारियाँ की, और हाफिज रहमतखाँ ४० हजार सेना लेकर अवध के नवाब और अँगरेजो की सम्मिलित सेना की गति रोकने को अग्रसर हुए। बाबुल नाले पर घोर युद्ध हुआ, और रुहेलो की वीरता से इस सयुक्त सेना के छक्के छूट गये। पर भारत से मुसलमानो का भाग्य-चक्र तेजी से फिर रहा था। २३ अप्रैल १७७४ मे स्मरणीय दिन हाफिजखाँ युद्ध मे मारा गया, और पूर्वी सेनाओ के दस्तूर के अनुसार उसके मरते ही सेना का उत्साह भग होगया, और वह भाग चली। रुहेलो का अस्तित्व मिट गया!

नवाब की फौज ने भागते रुहेलो को मारने और लूटने मे बड़ी फुर्ती दिखाई। एक लाख से अधिक रुहेले सुख निवासो को छोड़-छोड़कर विकट जगलो मे भाग गये।

नवाब ने फसल उजाड़ दी, कुछ घोड़ो से कुचलवा दी। नगर गावो मे आग लगवा दी। क्या मनुष्य, क्या स्त्री, क्या बालक, या तो कत्ल कर दिये गये, या अग-भग करके तड़पते छोड़ दिये गये, अथवा गुलाम बना-कर बेच दिये गये। रुहेले सरदारो की कुल-महिलाओ और कुमारी कन्याओ का अत्यत पाशविक ढग से सतीत्व नष्ट किया गया। यह सब काम जब नर-पशु नवाब के सिपाही कर रहे थे, तब अँग्रेज सेना तटस्थ खड़ी थी!

हेस्टिंग्स के इस कृत्य का विरोध करते हुए कलकत्ते के कुछ अग्रेज-मेम्बरो ने विलायत को लिखा था—

"रुहेलखण्ड की बर्बादी की असली बात अब छिपाने पर भी देर तक नही छिपी रहेगी। अब वह समय दूर नही है, जब कारण बताने के पूर्व ही परिणाम प्रकट हो जायेगा। ऐसा होने पर यह निश्चय कर लेना कठिन न होगा कि किसी व्यक्ति की दुर्व्यवस्था से सम्पत्तिशाली एव भरे पूरे एक राज्य का अकारण नाश हुआ, और उसमे बसने वाले मनुष्य भिखमगो की दशा को प्राप्त हुए।"

युद्ध काल चम्पियन, जो इस काम के लिये भेजा गया था, लिखता है।

"हम ब्रिटिश जाति को आधुनिक रोमन की उपाधि से इसलिये विभूषित कर सकते हैं कि उनकी राजनैतिक सभा के सदस्य अपनी जातीय प्रतिष्ठा को कलंकित करने के लिये भाड़े पर एक अंग्रेज जनरल को काफिर हाकिम के आधीन कर देने की बात कभी न मन करेंगे।'

हेस्टिंग्स ने इस विषय में अपने बचाव में कहा था कि रुहेले मरहठों के साथ लगाव रखते थे यदि वे उनसे मिलकर एक हो जाते, तो कम्पनी और उसके मित्र नवाब वजीर की सरहद में शान्ति बनाये रखना असम्भव हो जाता। पर यह सब झूठ था। मरहठे तो रुहेलों पर आक्रमण ही करते थे, वे उनके मित्र नहीं थे। एक बार उन्होंने मुरादाबाद तक आक्रमण किया था, और भारी लूट-पाट मचाई थी। तब रामघाट के पास नवाब वजीर ने ही मरहठों की गति को रोका था। इसके सिवा मरहठों का अन्त दो वर्ष पूर्व पानीपत के मैदान में अहमदशाह अब्दाली के भीषण युद्ध में हो चुका था, जिसमें दो लाख मरहठे उस खेत में कट मरे थे। यह कैसे सम्भव था, दो ही वर्ष में मरहठे फिर वैसे ही सशक्त बन जाते, जो उस समय की विजयिनी और सुशिक्षित कम्पनी की प्रबल सेना को जो रुहेला एवं नवाब-वजीर तथा कासिम की संयुक्त सेनाओं को बुरी तरह से पराजित कर चुकी थी, शान्ति स्थापित रखना असम्भव कर देते?—और एक हँसी के योग्य बात है कि जो नवाब वजीर कल मीरकासिम का पक्ष लेकर कम्पनी से इलाहाबाद तक का प्रदेश छिनवा बैठा था, वह आज ४० लाख रुपये देते ही कम्पनी का मित्र बन गया!

इस युद्ध के बाद ही नये शासन सुधारों की योजना हुई और गवर्नर को एक कौंसिल दी गयी। तब तक हेस्टिंग्स ही सर्वेसर्वा था, अब कौंसिल ने उससे रुहेला-युद्ध के सम्बन्ध के कागज-पत्र माँगे। हेस्टिंग्स साहेब ने उन्हें दिखाने में आना-कानी की। कौंसिल में झगड़ा मच गया। कौंसिल के मेम्बरों ने हेस्टिंग्स के पिट्ठू मिडिलटन साहब को लखनऊ की रेजीडेन्सी से च्युत कर दिया, और कम्पनी की पल्टनें लौटा ली। नवजात-वजीर को सब रुपये भेज देने की ताकीद कर दी।

कर्नल चैम्पियन, जिनके अधीन अंग्रेजी सेना रुहेलों के विरुद्ध भेजी

गई थी, नवाव से न जाने-क्यो वहुत विगड गये थे, उनके ऊपर वाले नोट से ही पता चलता है कि उन्होने नवाव को काफिर कहा था। अव उन्होने ही इस युद्ध का भण्डा फोड किया। हेस्टिग्स के सकेत से मिडिलटन ने इन पर कई दोप लगाये। हेस्टिग्स ने कर्नल चैम्पियन पर नवाब की आज्ञा-भग करने के अपराध मे मुकदमा चलाने की धमकी दी थी। इस पर कनल ने इस्तीफा दे दिया, पर कौन्सिल के नवीन सभ्यो ने रुहेला-युद्ध की जाच करना आरम्भ किया। कर्नल लेंसली, मेजर हन्नो, कनल चैम्पियन आदि से जिरह हुई। सभी मैम्वर जिरह के समय प्रश्न करते थे। अनेक नई बातें प्रकट हुई।

इसी जिरह मे मरहठो के आक्रमण की बात झूठ सिद्ध हुई। इसी जिरह मे मुशी वेगम के अँगूठी-छल्ले तक उतरवाये जाने की बात खुली। इसी जिरह मे महवूबखा की लडकी पर नवाव के पाशविक अत्याचार से विप खाकर आत्म-घात करने की पाप-कथा खुली। इसी जाच मे यह मालूम हुआ कि रुहेलो का डेढ करोड रुपये का माल लूटा गया है। इसी जाच से यह बात भी खुली कि जिन रुहेले सरदारो की बेगमो ने घरो की ड्योढियो के वाहर पैर नही धरा था—वे दाने-दाने के लिये दर-दर की भिखारिणी बनायी गयी। इसी जाच से विदित हुआ कि इस जीत से नवाब-वजीर को ७०-८० लाख सालाना की रियासत मिल गई। इसी जाच मे यह पता लगा कि लखनऊ के नवाव ने कैदी रुहेलो को अभयदान देकर उनके साथ विश्वासघात किया था। इसी जाँच से विदित हुआ कि कनल चैम्पियन की नजर बचाने के अभिप्राय से कठोर अत्याचार और यन्त्रणायें भुगतने के लिये रुहेले सरदार महवूबुल्लाखा और फिदाउल्लाखाँ के परिवारवाले भेज दिये गये।

१८

बगाल के मुस्लिम-राज्य

१२ वी शताब्दी मे शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज चौहान को बन्दी करके दिल्ली की गद्दी गुलाम कुतुबुद्दीन को दी। उसके १० वर्ष बाद उसने अपने सेनापति बख्तियार खिलजी को बगाल विजय के लिये भेजा। उस समय बगाल मे राजा लक्ष्मणसेन राज्य करता था। उसे हटाकर बख्तियार ने बगाल पर अधिकार कर लिया।

इसके बाद शमशुद्दीन अल्तमश ने बगाल के विद्रोह को दमन कर, उस पर अपना अधिकार जमाया। फिर जब अलाउद्दीन मसऊद दिल्ली के तख्त पर था, तब मुगलो ने तिब्बत के रास्ते से बगाल पर आक्रमण किया था, पर पराजित होकर भाग गये।

इसके बाद खिलजी वश का वहा कुछ दिन अधिकार रहा। बुगरा खाँ वहाँ का सूबेदार था।

मुग़ल-काल मे कभी हिन्दू और कभी मुसलमान शाहजादे और अमीर बगाल के सूबेदार रहे। शाहजहा के जमाने मे शाहजादा शुजा और औरगजेब के जमाने मे प्रथम मीर जुमला और बाद मे शाइस्ताखाँ वहा के सूबेदार रहे।

इसके बाद नवाब अलीवर्दीखा बगाल, बिहार तथा बगाल और उडीसा के सूबेदार रहे। जब उन पर मराठो की मार पडी और कमजोर दिल्ली के बादशाह ने उनकी मदद न की, तो नवाब ने दिल्ली के बादशाह को सालाना मालगुजारी देना बन्द कर दिया। परन्तु वह बराबर अपने को बादशाह के आधीन ही समझता रहा।

अलीवर्दीखा एक सुयोग्य शासक था, और उसके राज्य मे प्रजा वहुत प्रसन्न थी। ऐस० सी० हिल ने लिखा है—" वगाल के किसानो की हालत उस समय के फ्रास अथवा जमनी के किसानो से कही अधिक अच्छी थी।" वङ्गाल की राजधानी मुर्शिदावाद के सम्बन्ध मे क्लाइव ने लिखा था—

"मुर्शिदाबाद शहर उतना ही लम्बा-चौडा, आबाद और धनवान है, जितना कि लन्दन शहर। अन्तर सिर्फ इतना है कि लन्दन के धनाढ्य से धनाढ्य मनुष्य के पास जितनी सम्पत्ति हो सक्ती है, उससे वहुत ज्यादा मुर्शिदावाद निवासियो के पास है।" कर्नल मिल ने इस भारी सम्पत्ति को देखकर एक योजना योरोप भेजी थी। उसमे लिखा था—

"मुगल-साम्राज्य सोने-चाँदी से लबालब भरा हुआ है। यह साम्राज्य मदा से निवल और अरक्षित रहा है। बडे आश्चय की बात है कि आज तक योरोप के किसी वादशाह ने, जिसके पास जल-सेना हो, वगाल को फतह करने की कोशिश नही की। एक ही बार मे अनन्त धन प्राप्त किया जा सकता है, जो कि ब्राजील और पेरू की सोने की खानो के मुकाबिले होगा। मुगलो की राजनीति खराव है। उनकी सेना और भी अधिक खराब है। जल-सेना उनके पास नही है। राज्य-भर मे विद्रोह होते रहते हैं। नदियाँ और बन्दरगाह दोनो विदेशियो के लिये खुले है। यह देश इतनी ही आसानी से फतह हो सकता है, जितनी आसानी से कि स्पनवालो ने अमेरिका के नगे बाशिन्दो को अपने आधीन कर लिया था।

"अलीवर्दीखा के पास ३० करोड रुपया नकद है, और उसकी सालाना आमदनी भी सवा दो करोड मे कम नही। उसके प्रान्त समुद्र की ओर से खुले हुये हैं। ३ जहाजो मे डेढ या दो हजार सैनिक इस काम के लिये काफी हैं।"

जव अगरेज़ वङ्गाल मे आये और इन्होंने यहाँ के व्यापार से लाभ उठाना चाहा, तो वहाँ के हिदुओ से मिलकर उन्होंने मुस्लिम-राज्य को पतित करने की चेष्टा की। एक पजावी धनी व्यापारी अमीचन्द को इसमे मिलाया गया, और उसके द्वारा चुपके-चुपके वडे-वडे हिन्दू-राजाओ को वश मे किया गया। अमीचन्द को वडे-वडे सब्ज़ बाग़ दिखाये गये। अमी-

पद से था और अंगरेजों के दावों ने मिलकर, नवाब के दरबार को बेई-मान बना डाला।

इसके बाद अंगरेजों ने अपनी सैनिक शक्ति बढ़ानी और किलेबन्दी शुरू कर दी। दीवानी के अधिकार वे प्रथम ही ले चुके थे। अलीवर्दीखाँ अंगरेजों के इस सट्टा को ध्यान से देख रहा था, पर वह कुछ कर न सका और उसका देहान्त हो गया।

१९

सिराजुद्दौला

यह भाग्यहीन युवक नवाव २४ वर्ष की आयु मे अपने नाना की गद्दी पर सन् १७५६ मे वैठा। इस समय मुगल-साम्राज्य की नींव हिल चुकी थी, और अगरेजो के हौसले बढ रहे थे। उन्हे दिल्ली के वादशाह ने वगाल मे बिना चुगी महसूल दिये व्यापार करने के पास दे दिये थे। इन पासो का खुल्लमखुल्ला दुरुपयोग किया जाता था, और वे किसी भी हिन्दुस्तानी व्यापारी को बेच दिये जाते थे, जिससे राज्य की बडी भारी हानि होती थी।

मरते वक्त अलीवर्दीखा ने पुत्र को यह हिदायत दी थी "योरोपियन कौमो की ताकत पर नजर रखना। यदि खुदा मेरी उम्र वढा देता, तो मैं तुम्हे इस डर से बचा देता। अब मेरे बेटे! यह काम तुम्हे खुद करना होगा। तिलगो के साथ उनकी लडाइयाँ और राजनीति पर नजर रखो—और सावधान रहो। अपने-अपने वादशाहो के घरेलू झगडो के वहाने इन लोगो ने मुगल वादशाह का मुल्क और उनकी प्रजा का धन छीनकर आपस मे वाट लिया है। इन तीनो कौमो को एक-साथ जेर करने का खयाल न करना, अगरेजो को ही पहले जेर करना। जब तुम ऐसा कर लोगे, तो वाकी कौमें तुम्हे ज्यादा तकलीफ न देगी। उन्हें किले बनाने या फौज रखने की इजाजत न देना। यदि तुमने यह ग़लती की, तो मुल्क तुम्हारे हाथ से निकल जायगा।"

सिराजुद्दौला पर, मालूम होता है, इस नसीहत का भरपूर प्रभाव पडा था, और वह अगरेजी शक्ति की ओर से चौकन्ना था। उसके तख्त-

नशीन होने पर नियमानुसार अंग्रेजो ने उसे भेंट नही दी थी, इसका अर्थ यह था कि वे उसे नवाब न स्वीकार करते थे। वे प्राय सिराजुद्दौला से सीधा सम्बन्ध भी नही रखते थे, आवश्यकता पडने पर अपना काम ऊपर-ही ऊपर निकाल लेते थे।

धीरे-धीरे नवाब और अंग्रेजो का मन मुटाव बढता गया। अंग्रेजो ने जो कासिम बाजार मे किलेबन्दी करली थी, नवाब उसका अत्यन्त विरोधी था। उसने वहाँ के मुखिया को बुलाकर समझाया—"यदि अंग्रेज शान्त व्यापारियो की भाँति देश मे रहना चाहते हो तो खुशी से रहें। किन्तु सूबे के हाकिम की हैसीयत से मेरा यह हुक्म है कि वे उन सब किलो को फौरन तुडवाकर बराबर करदें, जो उन्होने हाल ही मे बिना मेरी आज्ञा के बना लिये हैं।"

परन्तु इसका कुछ भी फल न हुआ। अन्त मे नवाब ने कासिम बाजार मे सेना भेजने की आज्ञा देदी। अचानक कासिम बाजार मे नवाबी सिपाही दीख पडने लगे। होते-होते और भी सैकडो सवार और बरकन्दाज आ-आकर शामिल होने लगे। सन्ध्या के प्रथम ही दो लडाके हाथी झूमते-झामते कासिम बाजार मे आ पहुँचे। यह कफियत देखकर, अंग्रेजो के प्राण कापने लगे। राजदूत का अपमान करने की बात सबको मालूम थी। एक-एक करके अंग्रेज कोठीवाले भागने लगे। महामति हेस्टिंग्स भागकर अपने दीवान कान्ता बाबू के घर मे छिप गये। सबने समझ लिया, रात्रि के अन्धकार के बढने की देर है, बस नवाब की सेना बलपूर्वक किले मे घुसकर अंग्रेजो के माल-असबाब का सत्यानाश कर, लूट पाट मचा देगी। किले मे जो नौकर तथा गोरे काले सिपाही थे, वे तैयार होकर दरवाजे पर आ डटे। परन्तु बुद्धिमान नवाब ने आक्रमण नही किया। उसका मतलब खून बहाने का न था। वह केवल उनकी राजनीति के विरुद्ध, किले बनाने की कार्यवाही का विरोध करने और अपनी आज्ञा के निरादर का दण्ड देने आया था।

सोमवार, मगल, बुध, वृहस्पतिवार भी बीत गया। नवाब की अगणित सेना किला घेरे खडी रही। पर आक्रमण नही किया। उस क्षुद्र किले को राख का ढेर बनाना क्षण-भर का काम था। इस चुप्पी से अंग्रेज बडे

चकित हुए, घबराये भी। न मालूम नवाब का क्या इरादा है! अन्त मे साहस करके डॉ० फोथ साहब को दूत बनाकर नवाब की सेवा मे भेजा।

उमरबेग ने डॉक्टर को समझा दिया—"घबराओ मत, नवाब का इरादा खून-खराबी का नही है। आपके सरदार वाट्स साहब को नवाब के दरबार मे एक मुचलका लिख देना होगा और उसे वे यदि राज़ी से न लिखेंगे, तो जबदस्ती लिखाया जायगा। सिफ इतनी सेना इसीलिये यहाँ आई है।"

पर वाट्स साहब को आत्म-समपण करने का साहस नही हुआ। उन्होने अत्यन्त नम्रतापूण लिख भेजा—

"नवाब साहब का अभिप्राय ज्ञात हो जाने-भर की देर है। पश्चात् जो उनकी आज्ञा होगी—अगरेजो को वह स्वीकार होगा।" इस पत्र का नवाब के दरबार से यही उत्तर मिला—"किले की चाहरदीवारी गिरा दो—बस, यही नवाब का एकमात्र अभिप्राय है।"

अगरेजो ने बडे शिष्टाचार और नम्रता से कहला भेजा कि—नवाब का जो हुक्म होगा, वही किया जायगा। परन्तु वे अपनी अभ्यस्त रिश्वत और खुशामद के ज़ोर से मतलब निकालने की चेष्टा करने लगे। उन्होने अमीर-उमरावो को इसी बल पर अपने वश मे कर लिया। पर, वास्तव मे अगरेज सिराजुद्दौला के स्वभाव और उद्देश्य को नही जानते थे। उन्होने इस खटपट का यही मतलब समझा था कि रिश्वत और भेंट लेने के लिये यह नया जाल फैलाया गया है। काले लोगो को हीन समझने वाले इन बनियो के दिमाग मे यह बात न आई कि सिराजुद्दौला युवक और ऐयाश है—तो क्या है, वह देश का राजा है। विद्वान् सिराजुद्दौला, इन प्रलोभनो से जरा भी विचलित न हुआ।

अन्त मे वाट्स साहब हाथ मे रूमाल बाधकर दरबार मे हाजिर हुए। नवाब ने उनको अगरेजो के उद्दण्ड-व्यवहार के लिये बहुत लानत-मलामत की। वाट्स बेचारे हवा मे बेत की तरह कापते-थरथराते खडे रहे। लोगो को भय था कि नवाब इन्हे कही कुत्तो से न नुचवा दे। परन्तु, उसने क्रोधित होने पर भी, कर्त्तव्य का ख्याल किया। उसने साहब को अपने डेरे

मे जाकर मुचलका लिख देने की आज्ञा दी। वाटस साहब ने जल्दी जल्दी मुचलका लिख दिया। उसका अभिप्राय यह था—

"कलकत्ते का किला गिरा देंगे। कुछ अपराधी, जो भागकर कलकत्ते मे छिप गये, उन्हे बाँधकर ला देंगे। बिना महसूल व्यापार करने की जो सनद बादशाह से कम्पनी ने पाई है, और उसके बहाने बहुतेरे अगरेजो ने बिना महसूल व्यापार करके जो हानि पहुँचाई है, उसकी भर-पाई कर देंगे। कलकत्ते के अगरेज कर्मचारी हॉलवेल के अत्याचारो से—देशी प्रजा जो कठिन क्लेश भोग रही है, उसे, उनसे मुक्त करेंगे,"

मुचलका लिखवाकर वाट्स और चेम्बस को उसकी शर्तों के पालन होने तक मुर्शिदाबाद मे नजरबन्द करके नवाब शान्त हुए। परन्तु पन्द्रह दिन बीतने पर भी मुचलके की शर्तों का कलकत्ते वालो ने पालन नही किया। वाट्स की स्त्री और नवाब की माता मे मेल-जोल था। वह अन्त -पुर मे आकर बेगम-मण्डली मे 'हाय-दैया' मचाने—रोने-पीटने लगी। उसके करुण-विलापो से पिघलकर नवाब की माता ने पुत्र से दोनो को छोड देने का अनुरोध किया। माता की आज्ञा शिरोधार्य कर, नवाब को बिलकुल अनिच्छा से दोनो बन्दियो को छोडना पडा।

शीघ्र ही नवाब को मालूम हुआ, कि अगरेज लोग मुचलके की शर्तों का पालन नही करेंगे। अतएव उसने व्यर्थ आलस्य मे समय न खो, कलकत्ते को एक दूत भेजा और स्वय सेना ले चलने की तैयारी करने लगा।

अगरेजो ने यह समाचार पाकर झटपट ढाका, बालेश्वर, जगदिया आदि स्थानो की कोठियो को सूचना दे दी कि, बहीखाता आदि समेट-समाट कर सुरक्षित स्थानो मे चले जाओ। कलकत्ते मे गवनर ड्रेक नगर-रक्षा के लिये सैन्य-सग्रह और बन्दोबस्त करने लगे। वास्तव मे वे सिराज को अस्थायी नवाब समझते थे। उनका ख्याल था, अनेक घरेलू शत्रुओ से घिरा रहकर वह हमारे इस तुच्छ काम पर क्या दृष्टि डालेगा ? इसके सिवा, अभी तक अपनी घूँस और रिश्वत पर उन्हे बहुत भरोसा था।

पर सिराजउद्दौला वास्तव मे नीतिज्ञ पुरुष था। वह जानता था, कि मेरे सभी सरदार मेरे विरोधी हैं। वे बार-बार उसे कलकत्ते न जाने की सलाह देते थे, क्योकि प्राय सभी नमकहराम और घूस खाये बैठे थे। पर

नवाब ने किसी की न सुनी। वरन्, जिस-जिस पर उसे षड्यन्त्र का सन्देह हुआ, उस उस को उसने अपने साथ ले लिये, जिससे पीछे का खटका भी मिट गया। राजवल्लभ, मीरजाफर, जगतसेठ, मानिकचन्द्र, सभी को अनिच्छा होने पर भी नवाब के साथ चलना पडा। अगरेजो ने स्वप्न मे भी न सोचा था कि वह ऐसी बुद्धिमत्ता से राजधानी के सब झगडे मिटाकर, बिलकुल बे-खटके होकर, इतनी सैन्य ले, कलकत्ते पर आक्रमण करेगा।

७ जून को खबर कलकत्ते पहुँची। नगर मे हलचल मच गई। अगरेज लोग प्राणपण से तैयारी करने लगे। उसी किले मे ढेरो तोपें लगादी गइ। जल-माग सुरक्षित करने को, बागबाजार वाली खाई मे लडाई के जहाज लगा दिये गये। १५०० सिपाही खाई के बराबर खडे किये गये। चहारदीवारी की समस्त मरम्मत करवाकर उसमे अनादि भर दिया गया। मद्रास से मदद मागने को हरकारा भेजा गया, और जिन फ्रासीसी शत्रुओ के डर से किला बनाने का बहाना किया गया था, उनसे तथा डचो से भी सहायता मागी गई।

डच लोग तो सीधे सादे सौदागर थे। उन्होंने लडाई झगडे मे फँसने से साफ इनकार कर दिया। परन्तु फ्रेंचो ने जवाब दिया—"यदि अगरेजी वीर प्राणो से बहुत ही भयभीत हो रहे हैं, तो वे फौरन् ही बिना किसी रोक-टोक के चन्दननगर मे हमारा आश्रय लें। आश्रितो की प्राण-रक्षा के लिये फ्रान्सीसी वीर सिपाही अपने प्राण देने मे तनिक भी कातर न होंगे।"

इस उत्तर से अगरेज लज्जित हुए, और खीझे। कलकत्ता से ढाई कोस पर गगा के किनारे नवाब का एक पुराना किला था। ५० सिपाही उसमे रहते थे। वह कभी किसी काम न आता था। अगरेजो ने दौडकर उस पर हमला कर दिया। बेचारे सिपाही भाग गये। उनकी तोपें तोड-फोडकर अगरेजो ने गगा मे बहादी, और बडे गौरव से अपनी विजयपताका उस पर फहरा दी। लोगो ने समझ लिया, बस, अब अगरेजो की खैर नही है। नवाब यह उद्दण्डता न सहन करेगा। दूसरे दिन २००० नवाबी सिपाही किले के सामने पहुँचे ही थे, कि अगरेज अफसर लज्जा को वही छोड, खिसकने लगे। परन्तु सिपाहियो ने भागतो पर भी तरस न किया। भागते-जहाजो पर

तडातड गोले बरसने लगे। अगरेज अपना गोला बारूद नष्ट कर, और अपनी झण्डी उखाड, कलकत्ते लौट आये।

यहा आकर, उन्होने दो एक और भी बढिया काम किये। कृष्ण वल्लभ, जो राजा राजवल्लभ का पुत्र था, और भागकर विद्रोह के अपराध मे अगरेजो की शरण आरहा था, उसे इस डर से कैद कर लिया कि, कही यह क्षमा-आदि मागकर नवाब से न मिल जाय।

अमीचन्द कलकत्ते का एक प्रमुख व्यापारी था। सेठो मे जैसी प्रतिष्ठा जगतसेठ की थी, व्यापारिया मे वही दर्जा अमीचन्द का था। यह व्यक्ति भारतवर्ष के पश्चिमी प्रदेश का बनिया था। अगरेजों ने उसी की सहायता से बगाल मे वाणिज्य-विस्तार का सुभीता पाया था। उसी की मार्फत अगरेज गाँव गाव रुपया बाटकर कपास तथा रेशमी वस्त्र की खरीद मे खूब रुपया पैदा कर सके थे। उसकी सहायता न होती, तो अगरेज लोगो को अपरिचित देश मे अपनी शक्ति बढाने और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का मौका कदापि न मिलता। इस व्यक्ति के परिचय मे इतिहासकार अक्षयकुमार लिखते हैं—

"केवल व्यापारी कहने ही से अमीचन्द का परिचय नही मिल सकता। सैकडो विशाल-महलो से सजी हुई उसकी राजधानी, तरह-तरह की पुष्प-बेलियो से परिपूरित उसका वृहत् राज भण्डार, सशस्त्र सनिका से सुसज्जित उसके महल का विशाल फाटक, देखकर औरो की तो बात क्या है स्वय अगरेज उसे राजा मानते थे। विपत्ति पडने पर अगरेज लोग सदा अमीचन्द की ही शरण लेते थे। अनक वार अमीचन्द ही के अनुग्रह से अगरेजा की इज्जत बची थी।" अगरेज इतिहासकार 'अर्मी साहब' न लिखा है—

"अमीचन्द का महल बहुत ही आलीशान था। उसके भिन्न-भिन्न विभागा मे सैकडा कर्मचारी हर वक्त काम किया करते थे। फाटक पर पर्याप्त सेना उसकी रक्षा के लिये तैयार रहती थी। वह कोई मामूली सौदागर न था, वल्कि राजाओं की भाति बडी शान शौकत से रहता था। नवाब के दरबार मे उसका बहुत आदर था, और नवाब उसे इतना मानते थे कि कोई आफ्त-मुसीबत आने पर नवाब-सरकार से किसी तरह की सहायता लेने के लिये लोग प्राय अमीचन्द की ही शरण लेते थे।"

जिस समय नवाब की सेना कलकत्ते की तरफ आरही थी, तो अमीचन्द के मित्र राजा रामसिंह ने गुप्त रूप मे एक पत्र लिखकर अमीचन्द को चेता दिया था कि 'तुम सुरक्षित स्थान मे चले जाओ तो अच्छा है।' दैवयोग से यह पत्र अगरेजो के हाथ लग गया। बस, इसी अपराध पर धीर-वीर अगरेजो ने अमीचन्द को पकडकर कदखाने मे ठूँस देने का हुक्म फौज को दे दिया। अमीचन्द को इस विपत्ति की कुछ खबर न थी। एकाएक फौज ने उसे गिरफ्तार कर लिया, और अभियुक्तो की तरह बाँधकर ले चली। कलकत्ते के देशी लोगो मे इस घटना से हाहाकार मच गया।

अमीचन्द का एक सम्बधी, जो सारे कारबार का प्रबधक था, अत्याचार से डरकर स्त्रियो को कही सुरक्षित स्थान मे पहुँचाने का बन्दोबस्त करने लगा। पर अगरेजो ने जब यह सुना, तो अमीचन्द के घर पर धावा बोल दिया। अमीचन्द के यहाँ जगन्नाथ नामक एक बूढा विश्वासी जमादार था। वह जाति का क्षत्रिय था। वह तत्काल अमीचन्द के नौकर बरकदाजो को इकट्ठा करके महल के फाटक पर रक्षा करने को कमर-कसकर तैयार होगया। अगरेजो ने आकर फाटक पर लडाई-दङ्गा शुरू कर दिया। दोनो पक्षो की मार-काट से खून की नदी बह निकली। अन्त मे एक-एक करके अमीचन्द के सिपाही धराशायी हुए। मानुषिक-शक्ति से जो सम्भव था, हुआ। अगरेज बडे जोरो से अन्त पुर की ओर बढने लगे। बूढे जगन्नाथ का पुराना क्षत्रिय-रक्त गर्म होगया। जिन आर्य-महिलाओ को भगवान भुवन-भास्कर भी नही देख सकते थे, वे क्या विदेशियो द्वारा दलित होगी? स्वामी के परिवार की लज्जावती कुल-कामिनियाँ भी क्या बाँधकर विधर्मियो की बन्दी की जायेगी?

बस, पल-भर मे बिजली तरह तडपकर उसने इधर-उधर से टूटे-फूटे काठ किवाड और लकडी एकत्र कर आग लगादी और नङ्गी-तलवार ले, अन्त पुर मे घुस गया, तथा एक-एक कर १३ महिलाओ का सिर काट-काटकर आग मे डाल दिया। अन्त मे पतिव्रताओ के खून से लाल—वही पवित्र-तलवार अपनी छाती मे खोम ली, और उसी रक्त की कीचड मे गिर पडा।

देखते-ही-देखते आग और धुएँ का तूफान उठ खडा हुआ। बडी

कठिनता से जगन्नाथ को सिपाहियो ने उठाकर कैद किया—उसके प्राण नही निकले थे। पर अगरेजो को भीतर घुसने का समय न मिला—धांय-धांय करके वह विशाल महल जलने लगा।

नवाव हुगली तक आ पहुँचा। गङ्गा की धारा को चीरती हुई सैकडो सुसज्जित नावे हुगली मे जमा होने लगी। डच और फ्रासीसी सौदागरो ने नवाव से निवेदन किया कि 'यूरोप मे अगरेजो से सधि होने के कारण वे इस लडाई मे शरीक नही हो सकते हैं।' नवाव ने उनकी इस नीति-युक्त बात को स्वीकार कर, उनसे गोला-बारूद की सहायता ले, उन्हे विदा किया।

नवाव के कलकत्ते पहुँचने की खबर बिजली की तरह फैल गई। अगरेज लोग किले मे घुसकर फाटक बन्द कर, बैठ रहे। जिसको जिधर राह सूझी भाग निकला। रास्तो, घाटो, जगलो और नदियो के किनारो मे दल-के दल स्त्री-पुरुष कुहराम मचाते भागने लगे। पर सबसे अधिक दुर्दशा उन अभागो की हुई थी, जिन्होने काले चमडे पर टोप पहनकर अपने धर्म को तिलाजलि दी थी। इनसे देशवासी भी घृणा करते थे, और अगरेज भी। निदान, इन्हे कही आसरा न था। ये सब स्त्री, बच्चे, बूढे इकट्ठे होकर किले के द्वार पर सिर पीटने लगे। अन्त मे इनके आर्तनाद से निरुपाय होकर अगरेजो ने इन्हे भी किले मे आश्रय दिया।

नवाव की वृहदाकार तोपें भीषण गर्जन द्वारा जब अपना परिचय देने लगी, तो अगरेजो के छक्के छूट गये। उन्होने अब भी मायाजाल फैलाने घूस देने और नजर-भेंट देने की बहुत चेष्टा की, पर नवाब ने इरादा नही बदला। उसका यही हुक्म था, कि किला अवश्य गिरा दिया जायेगा।

यह किला पूर्व की ओर २१० गज, दक्षिण की ओर १३० गज, और उत्तर की ओर सिर्फ १०० गज था। मजबूत चहारदीवारी के चारो कोनो पर चार बुर्ज थे। प्रत्येक पर १० तोपें लगी थी। पूर्व की ओर विशाल फाटक पर ५ वृहदाकार तोपें मुँह फैला रही थी। इसके पश्चिम की ओर गङ्गा की प्रबल धारा समुद्र की ओर बह रही थी। पूरब की ओर फाटक के पास से गुजरती हुई लाल बाजार की सीधी और सुन्दर सडक बलिया-घाट तक चली गई थी। इस किले पर पूर्व, उत्तर और दक्षिण की ओर तोपो के तीन मोर्चे और भी थे। कलकत्ते के तीन ओर मराठा-खाई थी।

:क्खिन की ओर खाई न थी—घना जगल था। पीछे गङ्गा मे युद्ध-सज्जा
ा सजे जहाज तैयार थे। १८ जून को नवाब की तोप दगी। अगरेजो ने
ात्काल किले और जहाजो से आग बरसानी शुरु की।

अगरेजो का ख्याल था कि बागबाजार की ओर से ही नवाब आक्र-
मण करेगा। उस मोर्चे पर उन्होने बडी-बडी तोपें लगा रखी थी। पर
अमीचन्द के उस जख्मी जमादार जगन्नाथ की सहायता से नवाब को यह
भेद मालूम होगया कि नगर के दक्षिण मे मराठा-खाई नही है। अतएव
नवाब ने उसी ओर आक्रमण किया।

लालबाजार के रास्ते के ऊपर पूर्व की ओर जो तोपो का मच
बनाया गया था, उसके सामने की कुछ दूर पर जेलखाना था। अगरेजो ने
उसकी एक दीवार को फोडकर कुछ तोपें जुटा रखी थी। उनका ख्याल
था कि लालबाजार के रास्ते नवाबी सेना के अग्रसर होते ही जेलखाने और
पूर्व वाले मोर्चों से आग बरसाकर सेना को तहस नहस कर देंगे। परन्तु
नवाब की सेना अनजानो की तरह तोपों के सामने सीधी नही आई। उसने
सावधानी से सडकवाला रास्ता ही छोड दिया। केवल पहरेदारो को मार-
कर वह उत्तर और दक्षिण को हटने लगी।

देखते-ही-देखते अगरेजी तोपो के तीनो मोर्चे घिर गये। अब तो
नगर-रक्षा असम्भव हो गई। कलकत्ते के स्वामी हॉलवेल साहब और मोर्चे
के अफसर कप्तान क्लेटन किले मे भाग गये। मोर्चे नवाबी सेना के कब्जे
मे आगये। अब उन्ही तोपो से किले पर गोले बरसने लगे। किले मे कुह-
राम मच गया।

किले के नीचे गङ्गा मे कुछ नाव और जहाज तैयार थे। उनके द्वारा
स्त्रियो को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देने की व्यवस्था शाम को हुई, स्त्रियो
को जहाज तक पहुँचाने को दो अफसर मेनिहम और फाकलेण्ड रात्रि के
अधकार मे चुपके-चुपके निकले। परन्तु जहाज पर पहुँचकर उन्होंने फिर
किले मे आने से साफ इन्कार कर दिया। उनकी इस कायरता का वर्णन
थरटन साहब ने इन शब्दो मे किया है—" उनका पारस्परिक
अनैक्य और मतभेद तथा कम्पनी के कुछ प्रधान-कर्मचारियो की बिना ही

कुछ हानि उठाये भाग जाने की इच्छा,—यह ऐसे नीच काम थे, जो पराजय के अन्तिम समय मे किये गये, और जो शायद अगरेज़ो मे कभी नही हुए।"

किले की भीतरी दशा अजीब थी। सब-कोई दूसरा को सिखाने मे लगे थे। पर स्वय किसी की बात को कोई नही मानना चाहता था। बाहर तो नवाबी सेना उन्मत्तो की भाँति कूद-फाँद और शोर मचा रही थी, भीतर फिरङ्गियो का आर्त्त नाद, सिपाहियो की परस्पर की कलह और सेनापतियो के मति-भ्रम इत्यादि से किले मे शासन-शक्ति का सर्वथा लोप हो गया था।

बडी कठिनता से रात को दो बजे सामरिक सभा जुडी। इसमे छोटे-बडे सभी थे। बहीखाता समेटकर भाग जाना ही निश्चय हुआ। प्रात काल जो भागने को एक गुप्त दरवाजा खोला गया, तो बहुत से आदमियो ने उतावली से भागकर, किनारे पर आकर कोलाहल मचा दिया, और नावो पर बैठने मे छीना-झपटी करने लगे। परिणाम बुरा हुआ—नवाबी सेना ने सावधान होकर तीर बरसाने शुरू किये। कितनी ही नावें उलट गइ। किसी तरह कुछ लोग जहाज तक पहुँचे। उस पर गोले बरसाये गये। फिर भी गवनर ड्रेक, सेनापति मनचन, कप्तान ग्राण्ट आदि बडे-बडे आदमी इस तरह से भाग गये।

अब कलकत्ते के ज़मीदार हॉलवेल साहब ही मुखिया रह गये। वे क्या करते? अगरेज़ समझते थे कि महामति ड्रेक घबराकर मति-भ्रम होने के कारण भाग गये हैं। शायद, वे विचार कर, सहकारियो को सज्जित करके अपने साथियो की रक्षा के लिये फिर आयें। पर आशा व्यर्थ हुई। ड्रेक साहब न आये। किलेवालो ने लौटने के बहुत सकेत किये—बराबर निवेदन किये। गवनर साहब न आये। एक अँगरेज़ने लिखा है—"केवल एक नायक और पन्द्रह वीर पुरुषो की सरक्षकता ही से दुर्गवासियो की दुर्दशा का अत हो सकता था। परन्तु शोक! भागे हुए अँगरेजो में ऐसे पन्द्रह वीर न थे।"

अब हारकर हालवेल साहब अपने पुराने सहायक अमीचन्द की शरण मे गये, जो उन्ही के कदखाने मे वन्दी पडा था। अमीचन्द ने उस समय उनकी कुछ भी लानत मलामत न कर, उनके कातर-क्रन्दन से

द्रवीभूत हो नवाब के सेनानायक मानिकचन्द को एक पत्र इस आशय का लिख दिया—"अब नही। काफी शिक्षा मिल गई है। नवाब की जो आज्ञा होगी—अगरेज़ वही करेंगे।"

यह पत्र हॉलवेल साहब ने चहारदीवारी पर खडे होकर वाहर फेंक दिया। पर इसका कोई जवाब नही आया। पता नही, वह पत्र ठिकाने पहुँचा भी या नही। एकाएक किले का पश्चिम दरवाजा टूट गया, और धुआधार नवाबी सेना किले मे घुस आई। सब अगरेज़ कैद कर लिये गये। किले के फाटक पर नवाबी पताका खडी कर दी गई।

तीसरे पहर नवाब ने किले मे पधारकर दरबार किया। अमीचन्द और कृष्णवल्लभ को खोजा गया। अगरेज़ो के ही इतिहास मे लिखा है कि—"वे दोनो आकर जब नवाब के सामने नम्रतापूर्वक खडे हुए, तो नवाब ने उनका तिरस्कार तो दूर रहा, उनका आदर करके आसन दिया। यही कृष्णवल्लभ था—जिसकी वदौलत इतने झगडे हुए थे।"

इसके बाद अगरेज़ कैदियो की तरह बाधकर नवाब के सामने लाये गये। सामने आते ही हॉलवेल साहब के बधन खुलवा दिये गये, और उन्हे अभय दान देते हुए कहा—"तुम लोगो के उद्दण्ड-व्यवहार के कारण ही तुम्हारी यह दशा हुई है।" इसके वाद सेनापति मानिकचद को किले का भार सौंपकर दरबार बर्खास्त किया। थकी-मादी सेना आराम का स्थान इधर-उधर खोजने लगी।

यह बात बहुत प्रसिद्ध हो गई है कि नवाब ने १४६ अगरेज उस दिन (२० जून को)—रात को—१८ फुट आयतन की कोठरी मे बद करवा दिये, जिसमे सिर्फ एक खिडकी थी, और जिसमे लोहे के छड लगे हुए थे। प्रात काल जब दरवाजा खोला गया, सिर्फ २३ आदमी जिदा बचे।

काल-कोठरी की यह बात इतनी प्रसिद्ध होगई है कि समस्त भारत और इगलड मे बच्चा-बच्चा इस बात को जानता है। पर यह बात प्रमाणित की जा चुकी है कि यह सिर्फ नवाब को बदनाम करने को हॉलवेल ने कहानी गढी थी, जिसके अत्याचार का ज़िक्र मुचलके मे है, और जो बडा मिथ्या-वादी आदमी था।

अत्यन्त साधारण बुद्धिवाला व्यक्ति भी समझ सकता है कि १८

जहाज का भण्डार खाली, पास में रुपया नहीं। न कोई बाजार! केवल कुछ डच, फ्रांसीसी और काले बंगालियों की कृपा से कुछ खाद्य पदार्थ मिल जाया करते थे।

दुरवस्था ने खाद दुर्दिन भी उनमें बढ़ गई। किसके दोष से हमारी यह दुर्दशा हुई?—इसी बात को लेकर परस्पर विवाद चला। सब लोग कलकत्ते की कौंसिल को सारा दोष देने लगे। कौंसिल के सब लोग परस्पर एक दूसरे का दोष देने लगे। घोर वैमनस्य बढ़ा। अन्त में सब यही कहने लगे कि लाभ में आकर कृष्णवल्लभ को जिन्होंने आश्रय दिया और कम्पनी के नाम से परवाने औरों को बेचकर जिन्होंने बदमाशी की, वे ही इस विपत्ति के मूल कारण हैं।

पाँचवीं अगस्त को मद्रास में भागे हुए अंगरेजों ने पहुँचकर कलकत्ते की दुर्दशा का हाल सुनाया। सुनकर सबके सिर पर वज्र गिरा। सब हत्-बुद्धि होगये। सबने अन्त में एक कमेटी की, खूब गर्जन-तर्जन हुआ। उन दिनों फ्रांस से युद्ध छिड़ने के कारण अंगरेजों का बल क्षीण हो रहा था। वे इसलिये कुछ निश्चय न कर सके।

उधर फालता बन्दर में अंगरेज चुपचाप नहीं बैठे थे। यदि नवाब फालता बन्दर तक बढ़ा चला आता, तो अंगरेजों को चोरों की तरह भी भागने का अवसर न मिलता। पर उनका उद्देश्य केवल उनके दुष्ट व्यवहार का दण्ड देना ही था। अनेक बंगाली इन दुर्दिनों में भी लुक-छिप कर इनकी सहायता कर रहे थे। औरों की तो बात अलग रही—स्वयं अमीचन्द, जिसका अंगरेजों ने सर्वनाश किया था, और जो इन्हीं की कृपा से शोक-ग्रस्त और मर्म-पीड़ित हो, पथ का भिखारी बन चुका था, वह भी नवाब के दरबार में उनके उत्थान के लिये बहुत-कुछ अनुनय विनय कर रहा था। उसने एक गुप्त चिट्ठी अंगरेजों को लिखी थी जिसका आशय था—

"सदा की भाँति आज भी मैं उस भाव से आप लोगों का भला चाहता हूँ। यदि आप ख्वाजा वाजिद, जगतसेठ या राजा मानिकचन्द से गुप्त पत्र-व्यवहार करना चाहें, तो मैं आपके पत्र उनके पास पहुँचाकर जवाब मँगा दूँगा।"

इस पत्र से अंगरेजों को साहस हुआ। शीघ्र ही मानिकचंद की

कृपादृष्टि उन पर हुई। उनके लिये बाजार खोल दिया गया, और तरह-तरह की नम्र विनतियों से नवाब के दरबार मे व्यापार करने के आज्ञा-पत्र के साथ प्रार्थना-पत्र जाने लगे, और उनके सफल होने की भी कुछ-कुछ आशा होने लगी। परन्तु इसी बीच मे कासिम-बाजार से हेस्टिंग्स ने लिखा,—"मुर्शिदाबाद मे बडी गडबडी मची है। दिल्ली से शौकतजग ने बगाल, बिहार और उडीसा की नवाबी की सनद प्राप्त करली है, और प्राय सभी जमीदार उसके पक्ष मे तलवार उठायेगे। अब सिराज़ुद्दौला का गर्व चूर्ण हुआ चाहता है।"

इस खबर के मिलते ही अगरेजो के इरादे ही बदल गये। अब वे शौकतजग से मेल बढाने की व्यवस्था करने लगे। पर नवाब को इसकी कुछ खबर न थी। उसके पास बराबर अनुनय-विनय के पत्र जा रहे थे। जो उसे इस राज-विद्रोह की कुछ भी खबर लग जाय, तो शायद फालता बन्दर ही अगरेजो का समाधि क्षेत्र बन जाय।

इधर मद्रासवाले अगरेजो ने कोई दो महीने पीछे कलकत्ते की रक्षा का निश्चय बडे वाद-विवाद के बाद किया, और कर्नल क्लाइव तथा एडमिरल वाट्सन के साथ और स्थल की सेनायें भेज दी गई। ये लोग ५ सैनिक जहाजो के साथ १३ वी अक्तूबर को चले। ५ जहाजों पर असबाब था। ९०० गोरे और १५०० काले सिपाही थे।

दिल्ली का सिंहासन धीरे धीरे काल के काले हाथो से रग रहा था। पर अब भी उसके नाम के साथ चमत्कार था। नवाब ने सुना कि शाह-जादा शौकतजग अग्रेजो की सहायतार्थ आ रहा है तो उसने उसके आने से पूर्व ही शौकत जग को परास्त करने का निश्चय किया। उसे यह मालूम था कि शौकतजग बिलकुल मूर्ख, घमण्डी और दुराचारी आदमी है, और उसके साथी—स्वार्थी और खुशामदी। उसे हराना सरल है। परन्तु वह भी अलीवर्दीखाँ खानदान का था। अतएव उसने शौकतजग को एक चिट्ठी लिखकर समझाया। उसका जवाब जो मिला वह यह था—

"हम बादशाह की सनद पाकर बगाल, बिहार और उडीसा के नवाब हुए हैं। तुम हमारे परम आत्मीय हो। इसलिए हम तुम्हारे प्राण लेना नही चाहते। तुम पूर्वी बगाल के किसी निर्जन स्थान मे भाग कर

अपने प्राण बचाना चाहो, तो हम उसमे बाधा नही देंगे। बल्कि तुम्हारे लिये सुव्यवस्था कर देंगे, जिससे तुम्हे अन्न-वस्त्र का कष्ट न हो। बस, देर मत करना, पत्र को पढते ही राजधानी छोडकर भाग जाओ। परन्तु—खबरदार! खजाने के एक पैसे में भी हाथ न लगाना। जितनी जल्दी हो सके, पत्र का जवाब लिखो! अब समय नही है। घोड़े पर जीन कसा हुआ है, पाव रकाब मे डाल चुका हूँ। केवल तुम्हारे जवाब की देर है।"

इस पत्र से ही प्रमाणित होता है कि शौकत किस योग्यता का आदमी था। नवाब ने यह पत्र उमरावो को पढ सुनाया। उसे आशा थी, सब कूच की सलाह देंगे, और बागी, गुस्ताख शौकत को सब बुरा कहेंगे। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। मंत्री से लेकर दरबारियो तक ने विषय छिडते ही वाद-विवाद उठाया। जगतसेठ ने प्रतिनिधि बनकर साफ कह दिया—"जब आपके पास बादशाह की सनद नही है—शौकतजंग ने उसे प्राप्त कर लिया है, ऐसी दशा मे कौन नवाब है—इसका कुछ निर्णय नही हो सकता।"

नवाब ने देखा, विद्रोह ने टेढे मार्ग का अवलम्बन किया है। उसने गुस्से में आकर जगतसेठ को कैद कर लिया और दरबार बरखास्त कर दिया। फिर फौरन आक्रमण करने को पुर्निया की ओर कूच कर दिया।

शौकतजंग मूर्ख, घमण्डी और निकम्मा नौजवान था। वह किसी की राय न मान, स्वयं ही सिपहसालार बन गया। इससे प्रथम उसने युद्ध-क्षेत्र की कभी सूरत भी नही देखी थी। अनुभवी सेनापतियो ने सलाह देनी चाही, तो उसने अकडकर जवाब दिया—'अजी मैंने इस उमर मे ऐसी-ऐसी सौ फौजो की फौजकशी की है। सेनानायक बेचारे अभिवादन कर-करके लौटने लगे। परिणाम यह हुआ कि इस युद्ध मे शौकतजंग मारा गया। नवाब की विजय हुई। पुर्निया का शासन-भार महाराज मोहनलाल को देकर और शौकत की माँ को आदर के साथ संग लाकर नवाब राजधानी मे लौट आया तथा शौकत की माँ सिराज की माँ के साथ अन्तःपुर मे रहने लगी।

इस बीच मे उसे अंगरेजो पर दृष्टि देने का अवकाश न मिला था। अतः उन्होने घूस-रिश्वत दे-दिलाकर बहुत से सहायक बना लिये थे। जगतसेठ को

मेजर क्लिप्याट्रिक ने लिखा—"अगरेजो को अब आपका-ही भरोसा है। वे कतई आप पर-ही निभर है।" जो अगरेज एक वर्ष पहले कलकत्ते मे टकसाल खोलकर जगतसेठ को चौपट करने के लिये बादशाह के दरबार मे घूम के रुपया की बौछार कर रहे थे, वे ही अब जगतसेठ के तलुए चाटने लगे। मानिकचन्द को घूस देकर पहले ही मिला लिया गया था। सबने मिलकर अगरेजो को पुन अधिकार देने के लिए नवाब मे प्राथना की। नवाब राजी भी हुआ।

परन्तु अगरेज इधर लल्लो-चप्पो कर रहे थे, उधर मद्रास से फौज मँगाने का प्रबन्ध कर रहे थे। नमकहराम मानिकचन्द ने नदी की ओर बहुत-सी तोपें सजा रखी थी। पर सब दिखावा था, वे सब टूटी-फूटी थी। किले मे सिफ २०० सिपाही थे, और हुगली के किले मे सिफ ५०। ये सब खबरें अगरेजो को मिल रही थी।

क्लाइव और वाट्सन धीरे-धीरे कलकत्ते की ओर बढे चले आ रहे थे। दोनो 'चोर-चोर मौसरे भाई' थे। कुछ दिन पहले मालाबार के किनारे पर युद्ध-व्यापार मे दोनो ने खूब लाभ उठाया। मराठो ने इन दोनो की सहायता से स्वण दुग को चट कर डाला था, और इसके बदले इन्ह १५ लाख रुपये मिले थे। उडीसा के किनारे पहुँचकर एक दिन जहाज पर ही दोनो मे इस बात का परामश हुआ कि यदि बगाल को हमने लूट पाया, तो लूट मे से किसे कितना हिस्सा मिलेगा। दोनो मे बहुत वाद-विवाद के पीछे अद्धम-अद्धा तय हुआ।

जिन्होने इन दोनो को बगाल भेजा था—उन्होने सिफ बगाल मे वाणिज्य-स्थापना करने की हिदायत कर दी थी, और बिना रक्त पात के यह काम हो, इसीलिये निजाम और सरकार के नवाब से सिफारिशी चिट्ठिया भी सिराजुद्दौला के नाम लिखाई थी। पर ये लोग तो रास्ते ही मे लूट के माल का हिसाब लगा रहे थे।

इधर पालता-बन्दर के अगरेजो की विनीत प्राथना से नवाब उन्हें फिर से अधिकार देने को राजी होगया था। सब बखेडो का अन्त होने वाला था, कि एकाएक नवाब को खबर लगी, कि मद्रास से अगरेजो के जहाज फौज और गोला-बारूद लेकर पालता-बन्दर आगये हैं। इस खबर के

साथ ही वाट्सन साहब का एक पत्र भी आया, जिसमें बड़ी हेकड़ी के साथ नवाब का अंगरेजों के प्रति निर्दय-व्यवहार की मलामत की गई थी, और उन्हें फिर बसने देने और हर्जाना देने के सम्बन्ध में वैसी-ही हेकड़ी के शब्दों में बात लिखी थी।

इनके साथ-ही क्लाइव ने भी बड़ा अभिमानपूर्ण पत्र नवाब को लिखा, जिसमें लिखा था—'मेरी दक्षिण की विजयों की खबर आपने सुनी ही होगी—मैं अंगरेजों के प्रति किये गये आपके व्यवहार का दण्ड देने आया हूँ।"

कलकत्ते के व्यापारी भी लड़ाई को दबाना चाहते थे, क्योंकि नवाब ने उन्हें अधिकार देना स्वीकार भी कर लिया था। परन्तु क्लाइव और वाट्सन के तो इरादे ही और थे।

वे शीघ्र ही सज्जित होकर कलकत्ते की ओर बढ़ने लगे। गंगा किनारे बजबज नामक एक छोटा किला था। अंगरेजों ने उस पर धावा कर दिया। मानिकचन्द ढोंग बनाने को कुछ देर झूठ मूठ लड़ा, पर शीघ्र ही भागकर मुर्शिदाबाद जा पहुँचा। यही हाल कलकत्ते के किलेवालों का भी हुआ। सूने किले में क्लाइव ने धूमधाम से प्रवेश किया।

इस बढ़िया विजय पर क्लाइव और वाट्सन में इस बात पर खूब ही झगड़ा हुआ कि किले पर कौन अधिकार जमाये? अन्त में क्लाइव ही उसका विजेता माना गया। अब ड्रेक साहब पुनः बड़े गौरव से कलकत्ते आकर बिना किसी लज्जा के गवर्नर बन गये।

किले के भीतर की सब वस्तुएँ ज्यों की त्यों थीं। नवाब ने उसे लूटा न था, न किसी ने चुराया। किला फतह होगया, मगर लूट तो हुई ही नहीं। क्लाइव को बड़ी आतुरता हुई। अन्त में हुगली लूटने का निश्चय हुआ। वह पुरानी व्यापार की जगह थी। वाणिज्य भी वहाँ खूब था। मेजर किलपैट्रिक बहुत दिन से बेकार बैठे थे। उन्हें ही यह कीर्ति सम्पादन का काम सौंपा गया। पदल, गोलन्दाज, सभी अंग्रेज हुगली पर टूट पड़े। नगर को लूट-पाटकर आग लगा दी गई।

हुगली को लूटकर जब अंगरेज किले में लौट आये, नवाब का पत्र मिला—

"मैं कह चुका हूँ कि कम्पनी के प्रधान कर्मचारी ड्रेक ने मेरी आज्ञा के विपरीत आचरण करके मेरी शासन-शक्ति का उल्लघन किया तथा दरबार को निवासी का पावना अदा न कर, मेरी भागी प्रजा को आश्रय दिया। मेरे बार-बार रोकने पर भी उन्होंने इसकी परवा नही की। इसी का मैंने उन्हे दण्ड दिया अतएव राज्य और राज्य के निवासियो के कल्याण के लिये मैं तुम्हे सूचित करता हूँ कि किसी व्यक्ति को अध्यक्ष नियुक्त करो, तो पूर्व-प्रचलित नियम के अनुसार ही तुमको वाणिज्य के अधिकार प्राप्त होगे। यदि अगरेजो का व्यवहार व्यापारियो जैसा रहेगा, तो इस सम्बन्ध मे वे निश्चिन्त रहे कि मैं उनकी रक्षा करूँगा, और वे मेरे कृपा-पात्र रहगे।"

नवाब के इस पत्र का अग्रेजो ने इस प्रकार जवाब भेजा—

"आपने इस झगडे की जड जा ड्रेक साहब का उद्दण्ड व्यवहार लिखा है—सो आपको जानना चाहिये कि शासक और राजकुमार लोग न आख से दखते है, न कानो से सुनते है। प्राय असत्य खबर पाकर-ही काम कर बैठते हैं।... क्या एक आदमी के अपराध मे सब अगरेजो को निकालना उचित था! वे लोग शाही फरमान पर भरोसा रखकर उस रक्त-पात और उन अत्याचारा के बजाय—जो दुर्भाग्य से उन्हे सहने पडे—सदैव अपने जान-माल को सुरक्षित रखने की आशा रखते थे। क्या यह काम एक शाहजादे की प्रतिष्ठा के योग्य था? इसलिये आप यदि बडे शाहजादे की तरह न्यायी और यशस्वी बना चाहते है, तो कम्पनी के साथ जो आपने बुरा व्यवहार किया है, उसके लिये उन बुरे सलाहकारो को, जिन्होंने आपको बहकाया था—दण्ड देकर कम्पनी को सन्तुष्ट कीजिये, और उन लोगा को, जिनका माल छीना गया है—राज़ी कीजिये, जिससे हमारी तलवारा की वह धार म्यान मे रहे, जो शीघ्र ही आपकी प्रजा के सिरा पर गिरने के लिये तैयार है। यदि आपको मि० ड्रेक के विरुद्ध कोई शिकायत है, तो आपको उचित है कि आप उसे कम्पनी को लिख भेजिये, क्योकि नौकर को दण्ड देने का अधिकार स्वामी को होता है। यद्यपि मैं भी आपकी तरह सिपाही हूँ, तथापि यह पसन्द करता हूँ कि यह आप स्वय अपनी इच्छा से सब काम करदें। यह कुछ अच्छा नही होगा कि मै आपकी निरपराध प्रजा को पीडित करके आपको यह काम करने पर बाध्य करूँ।"

यह पत्र वाटसन साहब ने लिखा था। जिस समय नवाब का यह पत्र मिला, उस समय के कुछ पूर्व ही हुगली की लूट का भी वृत्तान्त मिल चुका था। नवाब अंगरेजों के मतलब को समझ गया, और अब उसने एक चिट्ठी अंगरेजों को लिखी—

"तुमने हुगली को लूट लिया, और प्रजा पर अत्याचार किया। मैं हुगली आता हूँ। मेरी फौज तुम्हारी छावनी की तरफ धावा कर रही है। फिर भी यदि कम्पनी के वाणिज्य को प्रचलित नियमों के अनुकूल चलाने की तुम्हारी इच्छा हो, तो एक विश्वास पात्र आदमी भेजो, जो तुम्हारे सब दावों को समझकर मेरे साथ सन्धि स्थापित कर सके। यदि अंगरेज व्यापारी ही बनकर पूर्व नियमों के अनुसार रह सकें—तो मैं अवश्य ही उनकी हानि के मामले पर भी विचार करके उन्हें सन्तुष्ट करूँगा।

"तुम ईसाई हो, तुम यह अवश्य जानते होगे कि शान्ति-स्थापना के लिये सारे विवादों का फैसला कर डालना—और विद्वेष को मन से दूर रखना कितना उत्तम है, पर यदि तुमने वाणिज्य-स्वार्थ का नाश करके लड़ाई लड़ने ही का निश्चय कर लिया है, तो फिर उसमें मेरा अपराध नहीं है। सर्वनाशी युद्ध के अनिवार्य कुपरिणाम को रोकने के लिये ही मैं यह चिट्ठी लिखता हूँ।"

हुगली की लूट और नवाब को गमागम पत्र लिख चुकने पर विलायत से कुछ ऐसी खबर आई कि फ्रेंचों से भयङ्कर लड़ाई आरम्भ हो रही है। भारतवर्ष में फ्रेंचों का जोर अंगरेजों से कम न था। अंगरेज लोग अब अपनी करतूतों पर पछताने लगे। शीघ्र-ही उन्हें यह समाचार मिला कि नवाब सेना लेकर चढ़ा आ रहा है। अब क्लाइव बहुत घबराया। वह दौड़कर जगतसेठ और अमीचन्द की शरण गया। परन्तु उन्होंने साफ कह दिया कि नवाब अब कभी सन्धि की बात न करेगा। हुगली लूटकर तुमने बुरा किया है। परन्तु जब नवाब का उक्त पत्र पहुँचा, तो मानो अंगरेजों ने चाँद पाया उनको कुछ तसल्ली हुई।

कलकत्ते में वणिकराज अमीचन्द के ही महल में नवाब का दरबार लगा। आंगन का बगीचा तरह-तरह के वाग बहारों और प्रदीपों से सजाया गया। चारों ओर नंगी तलवार लेकर सेनापति तनकर खड़े हुए। भारी-

भारी बहुमूल्य रत्नजटित वस्त्र पहनकर लोग दुजानू होकर, सिर नवाकर बैठे। बीच मे सिंहासन, उसके ऊपर विशाल मसनद, ऊपर सोने के दण्डो पर चन्दोवा—जिस पर मोती और रत्नो का काम हो रहा था, लगाया गया। उसी रत्न-जटित चम्पे के फूल जैसी खिली मुख-कान्ति से दीप्तमान—बगाल, बिहार और उडीसा का युवक नवाब आसीन हुआ।

वाट्सन और स्क्राफ्टन अगरेजो के प्रतिनिधि बनकर आये। नवाब के ऐश्वय को देखकर क्षण-भर वे स्तम्भित रहे। पीछे हिम्मत बाध, धीरे-धीरे सिंहासन की ओर बढे, और सम्मानपूवक अभिवादन करके,नवाब के सामने खडे हुए।

नवाब ने मधुर स्वर और सम्यक् भाषा मे उनका कुशल-प्रश्न पूछा, और समझाकर कहा—"मैं तुम्हारे वाणिज्य की रक्षा करना चाहता हूँ, और अपने तथा तुम्हारे बीच मे सन्धि-स्थापना करना ही मेरे इतना कष्ट उठाने का कारण है।"

अगरेजो ने झुककर कहा—"हम लोग भी सन्धि को उत्कण्ठित हैं, और झगडे-लडाई से हममे बडी बाधाएँ पडती है।" इसके बाद नवाब ने सन्धि की शर्ते तै करने को, उन दोनो के लिये दोपहर को डेरे मे जाने की आज्ञा दे, दरबार बर्खास्त कर दिया।

षडयन्त्रकारियो ने देखा—काम तो बडी खूबी से समाप्त हो गया है। उन्होने इस अवसर पर एक गहरी चाल खेली। अगरेज दोनो सिविलियन थे। लडाई झगडे के नाम से बेचारे बहुत घबराते थे। बस, मानिकचन्द ने बडे शुभचिन्तक की तरह उनके कान मे कहा—"देखते क्या हो, जान बचाना हो, तो भाग जाओ। वहा डेरा मे तुम्हारी गिरफ्तारी की पूरी पूरी तैयारियां हैं। यह सब नवाब का जाल है। नवाब की तोपें पीछे रह गई हैं। इसीलिये यह धोखा दिया जा रहा है। भागो, मशाल गुल कर दो।" इतना कह मानिकचन्द झपटकर घर मे घुस गया, और दोनो अगरेज हतबुद्धि होकर भागे।

उस दिन रात-भर अगरेजों ने विश्राम न किया। क्लाइव जलते अङ्गारे की तरह लाल-लाल होकर सैन्य सज्जित करने लगा। वाट्सन ने ६०० जहाजी गोरे माँगकर अपनी पैदल सेना मे मिलाये, और रात के तीन

बजे नवाब के पडाव पर आक्रमण कर दिया। नवाब के पडाव मे उस समय साठ हजार सिपाही, दस हजार सवार और चालीस तोपे थी। सब मजे मे सो रहे थे। क्लाइव ने यह न सोचा विशाल सैन्य के जागने पर क्या अनर्थ होगा ? उसने एकदम तोपें दाग दी।

एकदम 'गुडम्-गुडम्' सुनकर नवाब की छावनी मे हल चल मच गई। जल्दी जल्दी लोग सजने लगे। सिपाही, मशाल जला, हथियार ले तोपो के पास आने लगे। फिर तो नवाब की तोपें भी प्रचण्ड अग्नि-वर्षा करने लगी।

सवेरा हो जाने पर चारो तरफ धुँआ था। कुछ न दीखता था—तोपो का गर्जन चल रहा था। जब अच्छी तरह सूरज निकल आया, तब लोगो ने आश्चर्य से देखा—क्लाइव की समर-पिपासा बुझ गई है, और उसकी गर्वोन्मत्त पल्टन किले की ओर भाग रही है। नवाबी सेना उनका पीछा कर रही थी। अगरेजो के कटे सिपाही जहाँ तहा धूल मे पडे लोट रहे थे। उनकी तोपे भी छिन गई थी।

क्लाइव की हठधर्मी से अगरेजो का सर्वनाश होगया। इस तुच्छ सेना मे १२० अगरेजो के प्राण गये।

नवाब ने जब इस एकाएक युद्ध का कारण मालूम किया, तो—उसे अपने मन्त्रियो का क्रूर-कौशल मालूम हुआ। उसे पता लगा, मीरजाफर भी उस नीच काम मे लिप्त है, जिसे वह अपना आदरणीय सेनापति समझता था। उसने आक्रमण रोकने की आज्ञा दी, सुरक्षित स्थान पर डेरे डलवाये और अगरेजो को फिर सन्धि के लिये बुला भेजा।

क्लाइव बहुत भयभीत होगया था, और सन्धि के लिये घबरा रहा था। परन्तु वाट्सन उसकी बात को न माना। नवाब ने अगरेजो की इच्छानुसार ही सन्धि करली। अगरेजो ने जो मागा—नवाब ने उन्हे वही दिया। उन्हे व्यापार के पुराने अधिकार भी मिले, किला भी बना रहने देना स्वीकार कर लिया, टकसाल कायम करके शाही सिक्के ढालने की भी आज्ञा मिल गई, और नवाब ने अगरेजो की पिछली क्षति की पूर्ति भी स्वीकार की।

इस उदार सन्धि मे अँगरेजो को कोई बात शिकायत की न रह गई थी। परन्तु नवाब को यह न मालूम था, कि फ्रान्स के साथ जो जानि ६००

वप से लडकर भी रक्त-पिपासा को शात न कर सकी, वह किस प्रकार प्रतिज्ञा पालन करेगी ? नवाब ने समझा था, वनिये है, चलो टुकडे दे दिला-कर ठण्डा करे—ताकि रोज का झगडा मिटे।

परन्तु सधि को एक सप्ताह भी न हुआ था, कि अँगरेज फ्रासीसियो को सदा के लिये निकाल देने की तैयारी करने लगे। उन्होने इस पर नवाब का भी मन लिया। सुनकर नवाब को वडा क्रोध आया, और उसने साफ जवाब दे दिया कि अगरेजो की तरह फ्रासीसी भी मेरी प्रजा है, म कदापि अपने आश्रितो पर तुम्हारा कोई अत्याचार न होने दूँगा। क्या यही तुम्हारी शान्ति-प्रियता है ? अगरेज चुप हो गये। नवाब ने कलकत्ते से प्रस्थान किया। पर माग मे ही उसे समाचार मिला कि अगरेज चन्दननगर लूटने की तैयारिया कर रहे हैं। नवाव ने वाट्सन साहब को लिख भेजा।

"सारे झगडो को शात करने ही के लिए मैंने तुम्हे सब अधिकार तुम्हारी इच्छा के अनुसार दिये हैं। परतु मेरे राज्य मे तुम फिर क्या कलह-सृष्टि कर रहे हो ? तैमूरलग के समय से अब तक कभी यूरो-पियन यहाँ परस्पर नही लडे। अभी उस दिन सधि हुई—और अब तुम फिर युद्ध ठान देना चाहते हो ? मराठे लुटेरे थे, पर उन्होने भी सधि नही तोडी। तुमने सधि की है। इसका पालन तुम्हे करना होगा। खबरदार, मेरे राज्य मे लडाई-झगडा न मचे। मैंने जो-जो प्रतिज्ञाएँ की हैं—उनका पालन करूँगा।"

पत्र लिखकर ही नवाब शान्त न हुआ। उसने प्रजा की रक्षा के लिये महाराजा नन्दकुमार की अधीनता मे हुगली, अमरद्वीप और पलासी की सेनायें नियुक्त करदी।

मुर्शिदाबाद पहुँचकर नवाब ने सुना कि अगरेजा ने चन्दननगर पर आक्रमण करना निश्चय ही कर लिया है। उसने फिर एक फटकार का खत लिखती वार लिखा कि—"बाइबिल की कसम और क्राइस्ट की दुहाई ले-लेकर भी सधि का पालन न करना—शम की बात है।"

अब की बार अगरेजो ने जो जवाब लिखा, उसका सार इस प्रकार था—"आप फ्रान्सीसियो के साथ युद्ध से सहमत नही हैं—यह मालूम हुआ।

फ्रासीसी यदि हमसे सधि करलें, तो हम न लडेगे, पर आपको सूबेदार की हैसियत से उनका जामिन होना पडेगा।"

नवाब ने इस कूट-पत्र का सीधा जवाब दिया—उसका अभिप्राय ऐसा है—"फ्रासीसी यदि तुमसे लडेगे, तो मैं उनको रोकूँगा। मेरा अभिप्राय प्रजा मे शाति रखने का है। सधि के लिये मैंने फ्रासीसिया को लिखा है। "

यथा-समय फ्रासीसियो का प्रतिनिधि सधि के लिये कलकत्ते पहुँचा, परन्तु अगरेजो ने सधि-पत्र पर दस्तखत करती बार अनेक वितण्डे खडे किये। वाट्सन साहब इनमे मुख्य थे। निदान, सधि नही हुई।

उपरोक्त पत्र मे नवाब ने यह भी लिखा था कि दिल्ली की सेना मेरे विरुद्ध आरही है। यदि तुम मेरी मदद अपनी सेना से करोगे, तो मैं तुम्हे एक लाख रुपया दूँगा।

अब फ्रान्सीसी दूत को लगड बताकर वाट्सन साहब ने लिखा—"यदि आप हमे फ्रासीसियो को नाश करने की आज्ञा दे, तो हम आपकी सहायता अपनी सेना से कर सकते है।"

इस बार सिराजुद्दौला घोर विपित्ति मे पड गया। बादशाही फौज बडे जोरो से बढ रही थी। उधर अँगरेज फ्रासीसिया के नाश की तैयारिया कर रहे थे। नवाब पदाश्रित फ्रासीसियो का सवनाश करवाकर अगरेजो की सहायता मोल ले—या स्वय सकट मे पडे।

वाटसन का खयाल था कि नवाब के सामने धम अधम कोई वस्तु नही, अपने मतलब के लिये वह अगरेजा को राजी करेगा ही। परन्तु नवाब ने वाट्सन को कुछ जवाब न देकर स्वय सैय-सग्रह करने की तयारिया की।

उधर अगरेजो की कुछ नई पल्टनें बम्बई और मद्रास से आगई। सब विचारा को ताक पर रखकर अगरेजो ने फ्रासीसियो से यद्ध की ठान ली, ओर नवाब को मकटापन्न देख, वाटसन साहब ने नवाब को लिख भेजा—

"अब साफ-साफ कहने का समय आगया है। शान्ति की रक्षा यदि आपको अभीष्ट है, तो आज से दस दिन के भीतर-भीतर हमारा सब

पावना रुपया हर्जाने का चुका दीजिये, वरना अनेक दुघटनाएँ उपस्थित होगी हमारी बाकी फौज कलकत्ते पहुँचनेवाली है, जरूरत पडने पर और भी जहाज सेना लेकर आवेंगे, और हम ऐसी युद्ध की आग भडकावेंगे—जो तुम किसी तरह भी न बुझा सकोगे। "

नवाव न इस उद्धत पत्र का भी नम जवाव लिखकर जता दिया—"सधि के नियमानुसार मैं हर्जाना भेजता हूँ। मगर तुम मेरे राज्य मे उत्पात मत मचाना। फ्रासीसियो की रक्षा करना मेरा धम है। तुम भी ऐसा ही करते, यदि कोई शत्रु भी तुम्हारी शरण आता। हा, यदि वे शरारत करें, तो मैं उनका समथन न करूँगा।"

अगरेजो ने समझ लिया, नवाब की सहायता या आज्ञा मिलनी सम्भव नही है। उन्होने जल-माग से वाट्सन की कमान मे और स्थल-माग से क्लाइव की अधीनता मे सेनाएँ चन्दननगर पर रवाना कर दी।

७ फरवरी को सधि-पत्र लिखा गया, और ७ ही माच को चन्दननगर के सामने अगरेजी डेरे पड गये। इस प्रकार वाइविल और मसीह की कसम खाकर जो सधि अगरेजो ने की थी, उसकी एक ही मास मे समाप्ति हो गई।

फ्रान्सीसियो ने किले की रक्षा का पूरा-पूरा प्रवन्ध किया था। पास ही महाराजा नन्दकुमार की अध्यक्षता मे सेना चाक-चौवन्द उनकी रक्षा के लिये खडी थी। क्लाइव, जो वडे जोरो मे आ रहा था—यह सब देखकर भयभीत हुआ। अन्त मे अभागे अमीचन्द की माफत महाराज नन्दकुमार को भरा गया, और तत्काल वे अपनी सेना ले, दूर जा खडे हुए। फिर मुट्ठी-भर फ्रान्सीसियो ने वडी वीरता से, २३ तारीख तक किले की रक्षा की और सब वीरो के धराशायी होने पर किले का पतन हुआ। इस प्रकार इस महायुद्ध मे अगरेज विजयी हुए।

इधर नवाव नन्दकुमार को वहा भेजकर इधर की तैयारी कर रहा था। अहमदशाह अब्दाली की चढाई की खबर गम थी, और अगरेजो से घूस खाकर मीरजाफर, जगतसेठ, रायदुलभ आदि नमकहरामो ने नवाव के मन मे दुर्रानी के विषय मे तरह-तरह की शकाये, भय तथा विभीषिकाये भर रखी थी। खेद की वात है, नन्दकुमार ने भी नमकहरामी की। फिर

भी नवाब ने अपना कर्तव्य पालन किया। जो फ़ासीसी भागकर किसी तरह प्राण बचा, मुर्शिदाबाद पहुँच गये, उन्हें अन्न, वस्त्र, धन की सहायता दे, कासिमबाजार मे स्थान दिया गया।

इस घृणित विजय से गर्वित अगरेजो ने जब सुना, कि नवाब ने भागे हुए फ़ासीसियो को सहायता दी है, तो वे बड़ बिगड़े। वे इस बात को भूल गये कि नवाब देश का राजा है। शरणागतो और खासकर प्रजा की रक्षा करना उसका धर्म है। पहले उन्होने लल्लो-चप्पो का पत्र लिखकर नवाब से फ़ासीसियो को अगरेजो के समर्पण करने को लिखा। पीछे जब नवाब ने दृढता न छोडी, तो गर्जन-तर्जन से युद्ध की धमकी दी।

नवाब ने कुछ जवाब नही दिया। अब वह चुपचाप, सावधान होकर अगरेजो के इरादो का पता लगाने लगा। इधर अगरेज बाहर से तो फ़्रान्सीसियो के नाश के लिये नवाब से कभी लल्लो-चप्पो और कभी घुडक-फुडक से काम ले रहे थे, और उधर नवाब को सिंहासन से उतारने की तैयारी कर रहे थे।

विलायत मे, हाउस ऑफ कॉमन्स मे गवाही देते हुए क्लाइव ने साफ-साफ यह कहा था—

"चन्दननगर पर अधिकार होते ही मैंने सबको समझा दिया था कि बस, इतना करके बैठे रहने मे काम न चलेगा—कुछ दूर और आगे बढ कर नवाब को गद्दी से उतारना पडेगा। इस मेरे मन्तव्य से सब सहमत भी हो गय थे।"

अब अगरेजो ने गहरी चाल चली, घूस की मदद से नवाब के उमरावो द्वारा यह बात नवाब से कहलाई कि फ़ासीसियो के क़ासिमबाजार मे रहने से शान्ति भङ्ग होने की आशका है,—आप इन्हे पटने भेज दे—वहा यह सुरक्षित रहेंगे। नवाब को इस बात मे कुछ चाल न सूझी। उसने फ्रेंच सेनापति लॉस को पटना जाने का हुक्म दे दिया। लॉस एक बुद्धिमान अफ-सर था। उसने कुछ दिन दरबार मे रहकर सब व्यवस्था भली-भाति जाँच ली थी। उसने नवाब से कहा—

"आपके वजीर और फौजी सरदार सब अगरेजो से मिले हैं, और आपको गद्दी से उतारने की कोशिश कर रहे हैं, केवल फ़ासीसियो के भय

से खुलने का साहस नही करते । हमारे हटते-ही युद्धानल प्रज्ज्वलित होगी ।" नवाव ने सब बात समझकर भी लाचार कहा—"आप लोग भागलपुर के पास रहे, मैं बगावत की सूचना पाते ही आपको खबर दूँगा । सेनापति लॉम ने आखो मे आसू भरकर सिफ इतना ही कहा—"यही अतिम भेंट है—अब हमारा-आपका साक्षात् न होगा ।"

इतना करके नवाव के नमकहरामो को दण्ड देने पर कमर कसी । मानिकचद पर अपराध प्रमाणित हुआ, और वह कैद रखा गया । पर, पीछे बहुत अनुनय-विनय कर, १० लाख रुपये दे, छूट गया । उसके छूटने से ही भयङ्कर षड्यन्त्र की जड जमी ।

इस उदाहरण से जगतसेठ, अमीचन्द, रायदुलभ आदि सभी भयभीत हुए—और जगतसेठ का भवन गुप्त मन्त्रणा का भवन बना । जैन जगतसेठ, मुसलमान मीरगज मीरजाफर, वैद्य राजवल्लभ, कायस्थ रायदुर्लभ, सूदखार अमीचद, और प्रतिहिंसा परायण मानिकचद—इनमे से न किसी का मत मिलता था, न धम, न स्वभाव, न काम ! ये केवल स्वार्थाध होकर एक हुए । इनके साथ ही कृष्णनगर के राजा महाराजेद्र कृष्णचद्र भूप बहादुर भी मिले । जब आधे बङ्गाल की अधीश्वरी रानी भवानी को राजा साहब की इस कालिमा का पता चला, तो उसने इशारे से उपदेश देने को उनके पास चूडी और सिदूर का उपहार भेजा, किन्तु स्वाथ के रग मे राजा बहादुर को उस अपमान का कुछ ख्याल न हुआ ।

नवाव का ख्याल था कि फ्रासीसियो से जब ये सब और अगरेज चिढ रहे है, तो उन्हे हटा देने से सब सन्तुष्ट हो जायेंगे, परन्तु जब नवाव ने सुना कि फ्रासीसियो को ध्वस करने को अगरेजी पल्टन जा रही है, तो नवाव ने क्रोध मे आकर वाट्सन साहब से कहला भेजा—"या तो इसी समय फ्रासीसियो को पीछा न करने का मुचलका लिख दो, वरना इसी समय राजधानी त्यागकर चले जाओ ।"

यह खबर तत्काल साहब को लगी । उसने फौरन व्यापारी नौकाएँ सजवाई । उनमे भीतर गोला-बारूद था, और ऊपर चावल के बोरे । उनके ऊपर भी ४० सुशिक्षित सैनिक थे । इस प्रकार ७ नावो को लेकर क्लाइव

कलकत्ता रवाना हुआ। साथ ही कासिमबाजार के स
भेजने का गुप्त आदेश भी कर दिया गया।

इसके बाद क्लाइव ने नवाब को अन्तिम पत्र लि
"अब भी फ्रांसीसियों के [illegible] अंग्रेज़ों
कासिमबाजार को फौज भेजी है और शीघ्र ही फ्रांसीसि
को पटने फौज भेजी जायगी। इन सब बातों से आपकी
[illegible] घटेगी।

[illegible] पाकर वह सिराजुद्दौला की सेवा में २००० सवारों का
मीरजाफर की अध्यक्षता में [illegible] प्रथम उसी
पास पहुँचा। दूसरे दिन [illegible]
कलकत्ता-बन्दर पर भी अंग्रेजों की जासूसी करता था
जाकर इस शर्त पर आपकी मदद को तैयार है कि आ
और पीछे वह आपकी इच्छानुसार काम करेगा। मी
आदि सब सरदार आपके पक्ष में होंगे। यह भी सला
बहादुर को लौट जाना चाहिए। नवाब शीघ्र ही फ
की फौज से लड़ने को कूच करेगा। तब राजधानी प
होगा।

बहादुर तत्काल लौट गया, और नवाब को
'हम तो सेना लौटा लाये। अब आपने पलासी में क्या
है?" जो दूत इस पत्र को लेकर गया था, वह वाटसन
चिट्ठी भी ले गया— मीरजाफर से कहना, सबराय न
सिपाहियों को लेकर उसके पक्ष में आ मिलूँगा, जिन्हों
नहीं दिखाई।'

परन्तु अहमदशाह अब्दाली भारत में लौट गया,
पटने जाना ही नहीं पड़ा। इसके सिवा उसने अंगरेजों में
रोकली, और पलासी में ज्यों की त्यों छावनी डाले रहा।
गुप्तचर छोड़ दिये गये। फ्रांसीसियों को भागलपुर ठहरने क
और मीर जाफर को १५ हजार सेना लेकर पलासी में रहने का

इधर मीरजाफर से एक गुप्तसंधि-पत्र लिखाकर १७ मई को कलकत्ते में उस पर विचार हुआ। इस संधि-पत्र में एक करोड़ रुपया कम्पनी को, दस लाख कलकत्ते के अंगरेजों, अरमानी और बंगालियों को, तीस लाख अमीचंद को देने का मीरजाफर ने वादा किया था। इसके सिवा बगावत के प्रधान सहायकों और पथ-प्रदर्शकों की रकमें अलग एक चिट्ठे में दर्ज की गई थीं। राज-कोष में इतना रुपया नहीं था। परन्तु रुपया है या नहीं?—इस पर कौन विचार करता? चारों ओर गदर ही तो था!

मसौदा भेजते समय वाट्सन साहब ने लिखा—"अमीचंद जो मांगता है, उसे वही मंजूर करना। वरना, सब भण्डाफोड़ हो जायगा।" पहले तो अमीचन्द को मार डालने की ही बात सोची गयी, पीछे क्लाइव ने युक्ति निकाली। उसने दो दस्तावेज लिखाये—एक असली दूसरा जाली लाल कागज पर! इसी जाली पर अमीचन्द की रकम चढाई गई थी। असली पर उसका कुछ जिक्र न था। वाट्सन ने इस जाली दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। पर, चतुर क्लाइव ने उसके भी जाली दस्तखत बना दिये।

इसी दस्तावेज की जालसाजी के सम्बन्ध में हाउस ऑफ कॉमन्स में गवाही देते समय क्लाइव ने कहा था—

"मैंने कभी इस बात को छिपाने की चेष्टा नहीं की। मेरे मत से ऐसे अवसरों पर जाल-झूठ के काम निकाला जा सकता है। मैं जरूरत पड़ने पर और सौ बार ऐसा काम करने के लिये तैयार हूँ।"

इन महापुरुष की तारीफ में मैकॉले ने लिखा है—

"क्लाइव के घरवालों को उसके स्वभाव से कुछ आशा न थी। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि उन्होंने उसे दस वर्ष की आयु में कम्पनी की मुहर्रिरी से कुछ रुपया पैदा करने या मदरास में बुखार से मर जाने के लिये भारतवर्ष में भेज दिया।"

मिल ने लिखा है—"धोखे से काम निकालने में क्लाइव को जरा भी सङ्कोच न होता था, और न वह इसमें जरा से भी कष्ट का अनुभव करता।"

यही दुर्दान्त अंगरेज युवक था, जिसने अंगरेजी साम्राज्य की नींव

कलकत्ता रवाना हुआ। साथ ही कासिमबाजार के खजाने को कलकत्ते भेजने का गुप्त आदेश भी कर दिया गया।

इसके बाद क्लाइव ने नवाब को अन्तिम पत्र लिखा—

"एक भी फ्रांसीसी के जिन्दा रहते अंगरेज शान्त न रहेंगे। हम कासिमबाजार को फौज भेजते हैं और शीघ्र ही फ्रांसीसियों का पीछा करने को पटने फौज भेजी जायगी। इन सब कामों में आपको अंगरेजों की सहायता करनी पड़ेगी।

यारलतीफखाँ पहले जगतसेठ के यहाँ गद्दियों पर नौकर था। समय पाकर वह सिराजुद्दौला की सेना में २००० सवारों का अधिपति हो गया। मीरजाफर की नमकहरामी का सन्देश सब प्रथम उसी के द्वारा अंगरेजों के पास पहुँचा। दूसरे दिन एक अरमानी सौदागर ख्वाजा पिट्रू ने जो कलकत्ता-बन्दर पर भी अंगरेजों की जासूसी करता था—खबर दी कि मीर-जाफर इस शर्त पर आपकी मदद को तैयार है कि आप उसे नवाब बनादें और पीछे वह आपकी इच्छानुसार काम करने को तैयार है। जगतसेठ आदि सब सरदार आपके पक्ष में होंगे। यह भी सलाह हुई कि इस समय क्लाइव को लौट जाना चाहिये। नवाब शीघ्र ही पटना की तरफ दुर्रानी की फौज से लड़ने का कूच करेगा। तब राजधानी पर हमला करना उत्तम होगा।

क्लाइव तत्काल लौट गया और नवाब को अंगरेजों ने लिखा—"हम तो सेना लौटा लाये। अब आपने पलासी में क्यों छावनी डाल रखी है?" जो दूत इस पत्र को लेकर गया था वह वाट्सन साहब के लिये यह चिट्ठी भी लेगया—"मीरजाफर से कहना, घबराये नहीं, मैं ऐसे ५ हजार सिपाहियों को लेकर उसके पक्ष में आ मिलूँगा, जिन्होंने युद्ध में कभी पीठ नहीं दिखाई।'

परन्तु अहमदशाह अब्दाली भारत से लौट गया, इसलिये नवाब को पटने जाना ही नहीं पड़ा। इसके सिवा उसने अंगरेजों की जाली नौकाएँ रोकलीं, और पलासी में ज्यों-की-त्यों छावनी डाले रहा। अंगरेजों के पीछे गुप्तचर छोड़ दिये गये। फ्रांसीसियों को भागलपुर ठहरने को कहला भेजा, और मीर जाफर को १५ हजार सेना लेकर पलासी में रहने का हुक्म दिया।

इधर मीरजाफर से एक गुप्तसंधि-पत्र लिखाकर १७ मई को कलकत्ते मे उस पर विचार हुआ। इस सन्धि-पत्र मे एक करोड रुपया कम्पनी को, दस लाख कलकत्ते के अगरेजो, अरमानी और बगालिया को, तीस लाख अमीचन्द को देने का मीरजाफर ने वादा किया था। इसके सिवा बगावत के प्रधान सहायको और पथ-प्रदर्शको की रकमे अलग एक चिट्ठे मे दर्ज की गई थी। राज-कोष मे इतना रुपया नही था। परन्तु रुपया है या नही ?—इस पर कौन विचार करता ? चारो ओर गदर ही तो था!

मसौदा भेजते समय वाटसन साहब ने लिखा—"अमीचन्द जो मागता है, उसे वही मजूर करना। वरना, सब भण्डाफोड हो जायगा।" पहले तो अमीचन्द को मार डालने की ही बात सोची गयी, पीछे क्लाइव ने युक्ति निकाली। उसने दो दस्तावेज लिखाये—एक असली दूसरा जाली लाल कागज पर! इसी जाली पर अमीचन्द की रकम चढाई गई थी। असली पर उसका कुछ जिक्र न था। वाट्सन ने इस जाली दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। पर, चतुर क्लाइव ने उसके भी जाली दस्तखत बना दिये।

इसी दस्तावेज की जालसाजी के सम्बन्ध मे हाउस ऑफ कॉमन्स मे गवाही देते समय क्लाइव ने कहा था—

"मैंने कभी इस बात को छिपाने की चेष्टा नही की। मेरे मत से ऐसे अवसरा पर जाल-झूठ के काम निकाला जा सकता है। मैं जरूरत पडने पर और सौ बार ऐसा काम करने के लिये तैयार हूँ।"

इन महापुरुष की तारीफ मे मैकॉले ने लिखा है—

"क्लाइव के घरवालो को उसके स्वभाव से कुछ आशा न थी। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि उन्होंने उसे दस वर्ष की आयु मे कम्पनी की मुहर्रिरी से कुछ रुपया पैदा करने या मदरास मे बुखार से मर जाने के लिये भारतवर्ष मे भेज दिया।"

मिल ने लिखा है—"धोखे से काम निकालने मे क्लाइव को जरा भी सङ्कोच न होता था, और न वह इसमे जरा-से भी कष्ट का अनुभव करता।"

यही दुर्दान्त अगरेज युवक था, जिसने अगरेजी साम्राज्य की नींव

भारत मे जमाई, और अन्त मे आत्मघात करके मरा तथा इंगलैण्ड मे जिसकी मूर्ति वीर जनरल वेलिंगटन के बराबर न लग सकी।

अमीचन्द को धोखा देकर ही ये लोग शान्त न रहे। बल्कि व उसे कलकत्ते मे लाकर अपनी मुट्ठी मे लाने की जुगत करने लगे। यह काम स्क्रायल के सुपुर्द हुआ। उसने अमीचन्द से कहा—

"बातचीत तो समाप्त होगई। अब दो-ही चार दिन मे लडाई छिड जायगी। हम तो घोडे पर चढकर उड त् होगे, तुम बूढे हो—क्या कराग ! क्या घोडे पर भाग सकोगे ?" दवा कारगर हुई। मूख बनिया घबराकर नवाब से आज्ञा ले, मुर्शिदाबाद भागा।

अब मीरजाफर से सन्धि पर हस्ताक्षर होने बाकी थे। पर गुप्तचर चारो ओर छुटे थे, वाटसन साहब बहादुर पर्देदार पालकी मे घूंघटवाली स्त्रियो का वेश धर प्रतिष्ठित मुसलमान घराने की स्त्रियो की तरह सीधे मीरजाफर के जनानखाने मे पहुँचे, और मीरजाफर ने कुरान सिर पर रख, तथा पुत्र मीरन पर हाथ धर, सन्धि-पत्र पर दस्तखत कर दिये। इस पर भी अगरेजो को विश्वास न हुआ, तो उन्होने जगतसेठ और अमीचन्द को जामिन बनाया।

पाठक, एक बात ध्यान मे रखिये कि अन्तिम समय मीरजाफर के हाथ कोढ से गल गये थे, और उसके पुत्र मीरन पर अकस्मात् बिजली गिरी थी।

इधर सिराज को इस सन्धि का पता चला। वाट्सन साहब सावधान हो घोडे पर चढ हवाखोरी के बहाने भाग गये। नवाब ने अगरेजो को अन्तिम पत्र लिख कर अन्त मे लिखा—"ईश्वर को धन्यवाद है—मेरे द्वारा सन्धि भग नही हुई।   "

१२ जून को अगरेजो की फौज चली। जिसमे ६५० गोरे, १५० पदल गोलन्दाज, २१ नाविक, २१०० देशी सिपाही थे। थोडे पुतगीज भी थे। सब मिलाकर कुल ३००० आदमी थे। गोला-बारूद आदि लेकर २०० नावो पर गोरे चले। काले सिपाही पैदल की गगा के किनारे किनारे चले। रास्ते मे हुगली, काटोपा, अग्रद्वीप, पलासी की छावनियो मे नवाब की काफी फौज पडी थी। पर हाय ! बनिये अगरेजा ने सबको खरीद लिया था।

किसी ने रोक-टोक न की। उधर नवाव ने सव हाल जानकर भी मीरजाफर को उसके अपराधो को क्षमा करके महल मे वुला भेजा। लोगो ने उसे गिरफ्तार करने की भी सलाह दी थी परन्तु नवाब ने समझा—अलीवर्दी के नाम और इस्लाम-धर्म को ख्याल कराकर समझाने-बुझाने से वह सीधे मार्ग पर आ जायगा। पर मीरजाफर डरकर राजमहल मे नही गया। अन्त मे आत्माभिमान को छोडकर नवाब स्वयँ पालकी मे बैठकर मीरजाफर के घर पहुँचा। मीरजाफर को अब बाहर निकलना पडा। उसकी आँखो मे शर्म आई। उसने अपने प्यारे मित्र सरदार के मुख से करुणाजनक धिक्कार सुनी। मीरजाफर ने नवाव के पैर छूकर सब स्वीकार किया। कुरान उठायी और उसे सिर से लगाकर ईश्वर और पैगम्बर की कसम खाकर, उसने अगरेज़ो से सम्बध तोडकर—नवाब की सेवा धर्म-पूर्वक करने की प्रतिज्ञा की।

घर की इस फूट को प्रेमपूर्वक मिटाकर नवाब को सन्तोष हुआ। अब उसने सेना का आह्वान किया। पर वागियों के वहकाने से सेना ने पहले बिना वेतन पाये, युद्ध-यात्रा से इनकार कर दिया। नवाब ने वह भी चुकाया। मीरजाफर प्रधान सेनापति बना। यारलतीफखा—दुर्लभराय—मीर मदन-मोहनलाल—और फ्रेन्च सिनफ्रे एक एक विभाग के सेनाध्यक्ष बने।

अगरेज इतिहासकारो ने मीरजाफर को क्लाइव का गधा लिखा है। उस क्लाइव के गधे ने क्लाइव को, नवाब के साथ जो कसम-धर्म हुआ, था—सब लिख भेजा। साथ ही यह भी लिख दिया—"बढे चले आओ मैं अपने वचनो का वैसा ही पक्का हूँ।"

पर क्लाइव को आगे बढने का साहस न हुआ। वह पाटुली मे छावनी डालकर पड गया। सामने कटोया का किला था। यह निश्चय हो चुका था कि सेनाध्यक्ष कुछ देर बनावटी युद्ध करके पराजय स्वीकार कर कर लेगा। क्लाइव ने पहले इसी की सचाई जाननी चाही। मेजर कूट २०० गोरे और ३०० काले सिपाही लेकर किले पर चढा। मराठो के समय मे गहरी-गहरी लडाइयो के कारण भागीरथी और अजय के सगम का यह किला वीरो की लीला-भूमि प्रसिद्ध हो चुका था। परन्तु इस वार फाटक पर युद्ध नही हुआ। कुछ देर नवावी सेना नाटक-सा खेलकर जगह-जगह

अपने ही हाथा से आग लगाकर भाग गई। क्लाइव ने विजय-गर्वित की तरह किले पर अधिकार किया। नगर-निवासी प्राण लेकर भागे—अगरेजा ने उनका सवम्न लूट लिया। केवल चावल ही इतना मिल गया था—जो १० हजार सिपाहियो को १ वप तक के लिये काफी था। फिर भी क्लाइव विश्वास और अविश्वास के बीच मे झक्योरे ले रहा था। हाउस ऑफ कॉमन्स मे इस समय की बात का जिक्र करती बार उसने कहा था—

"म बडा ही भयभीत था। यदि कही हार जाता तो हार का समाचार ले जाने के लिये भी एक आदमी को जिन्दा वापस जाने का मौका नही मिलता।" निदान, उसने नवाब के विरोधी वतमान महाराज को लिख भेजा—"आपके सवार चाहे १ हजार से अधिक न हा, तो भी आप फौरन् आ मिलिये।" २२ जून को गगा पार करके मीरजाफर के बनाये सकेतो पर वह आगे बढा, और रात्रि के दो बजे पलासी के लक्खीबाग मे मोर्चे जमाये।

नवाब का पडाव उसके नजदीक ही तेजनगरवाले विस्तृत मैदान मे था। परन्तु उसकी सेना का प्रत्येक सिपाही माना उसका सिपाही न था। वह रात-भर अपने खेमे मे चिंतित बैठा रहा।

रात बीती। प्रसिद्ध प्रभात आया। अग्रेजो ने बाग के उत्तर की ओर एक खुली जगह मे व्यूह रचना की। नवाब की सेना मीरजाफर, दुलभराय, यारलतीफखा—इन तीन नमकहरामो की अध्यक्षता मे अद्ध चन्द्राकार व्यूह रचना करके बाग को घेरने के लिये बढी।

अगरेज क्षण-भर को घबराये। क्लाइव ने सोचा कि यदि यह चन्द्र-व्यूह तोपो मे आग लगादे, तो सवनाश है। पर जब उसने उस सेना के नायको को देखा तो धैय हुआ। क्लाइव की गोरी पल्टन चार दला मे विभक्त हुई, जिसके नायक किलप्याट्रिक, ग्राण्टक्रट और कप्तान गप थे। बीच मे गोरे, दाएँ-बाएँ काले सिपाही थे। नवाब की सेना के एक पार्श्व मे फ्रच सेनापति सिनफ्रे, एक मे मोहनलाल और उनके बीच मे मीरमदन। फौजकशी का भार मीरमदन ने लिया। अगरेजो ने देखा—नवाब का व्यूह दुर्भेद्य है।

८ बजे मीरमदन ने तोपो मे आग लगाई। शीघ्र ही तोपो का दोनो

ओर से घटाटोप होगया। आधे घण्टे मे १० गोरे और २० काले आदमी मर गये। क्लाइव की युद्ध पिपासा इतने ही मे मिट गई। उसने समझ लिया, इस प्रकार प्रत्येक मिनट मे एक आदमी के मरने और अनेकों के जख्मी होने मे यह ३०० सिपाही कितनी देर ठहरेंगे ? क्लाइव को पीछे हटना पडा। उसकी फौज ने बाग के पेडो का आश्रम लिया। वे छिपकर गोले दागने लगे। पर उनकी दो तोपें बाहर रह गई। चार तोपें बाग मे थी। नवाब की तोपो का मोर्चा चार हाथ ऊँचा था। अतएव मीरमदन की तोपो से तडातड गोले दग रहे थे।

यह देखकर क्लाइव घबरा गया। उस समय वह अमीचन्द पर बिगडा। उसका मजेदार हाल 'मुताखरीन' मे इस तरह लिखा है—

"क्लाइव ने अमीचन्द से बदगुमान होकर गुस्सा फर्माया और कहा—'ऐसा ही वायदा था कि खफीफ लडाई मे मुद्दआय-दिल हासिल हो जायगा और शाही फौज भी नवाब की मुनहरिफ है। ये सब तेरी बातें खिलाफ पाई जाती हैं।'

"अमीचन्द ने कहा—'सिर्फ मीरमदन और मोहनलाल ही लड रहे है। ये नवाब के सच्चे सहायक हैं। किसी तरह इन्ही को हराइय। दूसरा कोई सेनापति हथियार न चलायेगा।"

मीरमदन वीरतापूर्वक गोले चला रहा था। उस समय मीरजाफर की सेना यदि आगे बढकर तोपो मे आग लगा देती, तो अगरेजो की समाप्ति थी। मगर वे तीनो पाजी खडे तमाशा देखते रहे। क्लाइव ने १२ बजे पसीने से लथ-पथ सामरिक मीटिंग की। उसमे निश्चय किया कि दिन-भर बाग मे छिपे रहकर किसी तरह रक्षा करनी चाहिये।

इतने ही मे एकाएक मेह बरसने लगा। मीरमदन की बहुत-सी बारूद भीग गई। फिर भी वह वीरतापूर्वक भागी हुई सेना का पीछा कर रहा था। इतने ही मे एक गोले ने उसकी जाघ तोड डाली। मोहनलाल युद्ध करने लगा। मीरमदन को लोग हाथो-हाथ उठाकर नवाब के पास ले गये। उसने ज्यादा कहने का अवसर न पाया। सिर्फ इतना कहा —"शत्रु बाग मे भाग गये। फिर भी आपका कोई सरदार नही लडता, सब खडे तमाशा देखते हैं।" इतना कहते-कहते ही उसने दम तोड दिया।

नवाव को इस वीर पर वहुत भरोसा था। इसकी मृत्यु से नवाव मर्माहत हुआ। उसने मीरजाफर को बुलाया। वह दल वाधकर सावधानी से नवाव के डेरे मे घुसा। उसके सामने आते ही नवाब ने अपना मुकुट उसके सामने रखकर कहा—"मीरजाफर ? जो होगया, सो होगया। अलीवर्दी के इस मुकुट को तुम सच्चे मुसलमान की तरह वचाओ।" उसने यथोचित रीति से सम्मानपूर्वक मुकुट को अभिवादन करते हुए, छाती पर हाथ मारकर वडे विश्वास से साथ कहा—"अवश्य ही शत्रु पर विजय प्राप्त करूँगा। पर अव शाम हो गई है, और फौजे थक गई हैं। सवेरे मैं कयामत वर्पा कर दूँगा।'—नवाव ने कहा, "अँगरेजी फौज रात को आक्रमण करके क्या सवनाश न कर देगी ?" उसने गव से कहा—"फिर हम किसलिये है ?"

नवाव का भाग्य फूट गया। उसे मति भ्रम हुआ। उसने फौजा को पडाव से लौटने की आज्ञा दे दी। तव महाराज मोहनलाल वीरतापूवक धावा कर रहे थे। उन्होने सम्मानपूवक कहला भेजा—"वस, अव दो ही-चार घडी मे लडाई का खातमा होता है। यह समय लौटने का नहीं है। एक कदम पीछे हटते ही सेना का छत्र-भग हो जायगा। मैं लौटूँगा नही लडूँगा।"

मोहनलाल का यह जवाब सुन, क्लाइव का गधा थर्रा गया। उसने नवाव को पट्टी पढाकर फिर आज्ञा भिजवाई। वेचारा मोहनलाल, साधारण सरदार था—क्या करता ? क्रोध से लाल होकर कतारे वाध, वह पडाव को लौट आया। गधे की इच्छा पूरी हुई। उसने क्लाइव को लिखा—"मीरमदन मर गया। अव छिपने का कोई काम नही। इच्छा हो, तो इसी समय, वरना रात के तीन वजे आक्रमण करो—सारा काम वन जायगा।"

वस, मोहनलाल को पीछे फिरता देख, और गधे का इशारा पा, क्लाइव ने स्वय फौज की कमान ली, और वाग से वाहर निकल, धीरे-धीरे आगे वढने लगा। यह रग-ढग देख वहुत-से नवावी सिपाही भागने लगे पर मोहनलाल और सिनफ्रे फिर घूमकर खडे हो गये।

इधर वेईमान दुलभराय ने नवाव को खवर दी कि आपकी फौज

भाग रही है। आप भागकर प्राण बचाइये। नवाब का प्रारब्ध टूट चुका था। सभी हरामी, शत्रु और दगाबाज थे। उसने देखा—मेरे पक्ष के आदमी बहुत ही कम हैं। राजवल्लभ ने उसे राजधानी की रक्षा करने की सलाह दी। अब नवाब ने २००० सवारों के साथ हाथी पर सवार हो, रक्ष-क्षेत्र त्यागा। तीसरे पहर तक मोहनलाल और फ्रेंच सिनफ्रे लडे। परन्तु विश्वासघातियों से खीझकर अन्त मे उन्होंने भी रण-भूमि छोडी। नवाब के सूने खेमे पर विजयी क्लाइव और उसके गधे ने अधिकार कर लिया।

जिस सेना ने इस महायुद्ध मे ऐसी वीर-विजय पाई थी—उसके झण्डे पर सम्मानार्थ 'पलासी' लिख दिया गया है और उस बाग़ के आम की लकडी का एक सन्दूक बनाकर किसी साहब बहादुर ने महारानी विक्टोरिया को भेंट किया था। आज भी उस स्थान पर एक जय-स्तम्भ खडा, अगरेजो की वीरता की कहानी कह रहा है!

राजधानी मे नवाब के पहुँचने से पहले ही नवाब के हारने की खबर सबत्र फैल गई। चारो ओर भाग-दौड मच गई। अगरेजो की लूट के डर से लोग इधर-उधर भागने लगे। नवाब ने सरदारों को बुलाकर दरबार करना चाहा। मगर औरतें तथा स्वय उसके श्वसुर मुहम्मद रहीमखा ही उधर ध्यान न दे, भाग खडे हुए। देखा-देखी सभी भाग गये।

अब सिराज ने स्वय सैन्य-सग्रह के लिये गुप्त खजाना खोला। सुबह से शाम तक और शाम से रात-भर सिपाहियो को प्रसन्न करने को खूब इनाम बाँटा गया। शरीर-रक्षक सिपाहियो ने खुला खजाना पाकर खूब गहरा हाथ मारा, और यह धर्म-प्रतिज्ञा करके कि प्राण-पण से सिंहासन की रक्षा करेंगे—एक-एक ने भागना शुरू किया। धीरे-धीरे खास महल के सिपाही भी भागने लगे। एकाएक रात्रि के सन्नाटे मे मीरजाफर की विकराल तोपो का गर्जन सुन पड़ा। अभागा सज्जन और एय्याश नवाब अन्त मे गौरवान्वित सिंहासन को छोडकर अकेला चला। पीछे-पीछे पुराना द्वारपाल और प्यारी बेगम लुत्फुन्निसा छाया की तरह हो लिये।

प्रात मीरजाफर ने शीघ्र ही सूने राजमन्दिर मे अधिकार जमाकर नवाब की खोज मे सिपाही दौडाये। नवाब की सब हिन्दू-बन्धु-स्त्रिया कैद

करली गई । वीरवर मोहनलाल भी जख्मी ही कैद किया गया, और नीच दुलभराय ने उसे मार डाला। फिर भी गधे को सिंहासन पर बठने का साहस न हुआ। वह क्लाइव का इतजार करने लगा। पर क्लाइव का कई दिना तक नगर मे आने का साहस न हुआ। २६ जून को २०० गोर ५०० काले सिपाहियो के साथ क्लाइव ने राजधानी मे प्रवेश किया। क्लाइव लिखता है —

"शाही सडक पर उस दिन इतने आदमी जमा थे कि यदि वे अगरेजो के विरोध का सकल्प करते तो, केवल लाठी, सोटो, पत्थरा ही से सब काम हो जाता।"

अत मे राजमहल मे आकर क्लाइव ने मीरजाफर को नवाब बनाकर सबसे पहले कम्पनी के प्रतिनिधि-स्वरूप नजर पेश करके बगाल और उडीसे का नवाब कहकर अभिवादन किया।

इसके बाद बॉट-चूँट, जो होना था कर लिया गया। शाहपुर के पास सिराजुद्दौला को माग मे मीरकासिम ने पकड लिया। उसकी असहाय बेगम लुत्फुनिसा के गहने लूट लिये और बाधकर राजधानी को लाया गया। मुर्शिदाबाद मे हलचल मच गई। बगावत के डर से नय नवाब ने अपने पुत्र मीरन के हाथ से उसी रात को सिराज को मरवा डाला। उस समय का भीषण वणन एक इतिहासकार ने इस प्रकार किया है—

"यह काम मुहम्मद के सुपुद हुआ। यह नमकहराम भी जाफर और मीरन की तरह सिराज के टुकडो पर पला था। मुहम्मदखा हाथ मे एक बहुत तेज तलवार ले, सिराज की कोठरी मे जा दाखिल हुआ। उसे इस तरह सामने देख, सिराज ने घबडाकर कहा—'क्या तुम मुझे मारने आये हो ?'

उत्तर मिला—'हा'

"अन्तिम समय निकट आया समझ, सिराज ने ईश्वर-प्राथना के लिये हाथ पैरो की जजीर खोलने की प्राथना की। पर वह नामजूर हुई। डर के मारे उसका गला चिपक गया था। उसने पानी मागा, पर पानी भी न दिया गया। लाचार हो, जमीन पर माथा रगडकर सिराज बार-बार ईश्वर का नाम लेकर अपने अपराधा की क्षमा मागने लगा। इसके बाद

लपटती ज़बान और टूटे स्वर से उसने नमकहराम, टुकडखोर लालखा से कहा—'तब, वे लोग मुझे तिल भर जगह भी न देगे। टुकडा खाने को भी न दगे। इम पर भी वे राजी नही ह ?' यह कहकर सिराज कुछ देर के लिय चुप होगया।

"फिर, कुछ देर मे वोला—'नही, इस पर भी वे राजी नही है। मुझे मरना ही पडेगा।'

"आगे वोलने का उसे अवसर न मिला। देखते-ही-देखते नर पिशाच की तेज तलवार उसकी गदन पर पडी। खून का फव्वारा वह निकला, और देखते-ही देखते, बगाल, विहार और उडीसा का युवक नवाव ठण्डा होगया। हत्यारे लालखाँ ने उसके जिस्म के टुकडे-टुकडे करके, उन्हे एक हाथी पर लदवाकर शहर मे घुमाने का हुक्म दिया।

"क्लाइव से अगले दिन मीरज़ाफर ने इतका जिक्र करके क्षमा माँगी तो, क्लाइव ने मुस्कराकर कहा—'इसके लिये, यदि माफी न मागी जाती, तो कुछ हर्ज न था।"

२०

मीरजाफर और मीरकासिम

मीरजाफर नवाब हुआ—और घूत स्क्वेफन उसका एजेण्ट वनकर दरबार मे विराजा। प्रख्यात वारेन हेस्टिंग्स उसका सहायक बनाया गया। थोडे दिन बाद स्क्वफन कौसिल मे सभ्य नियत हुआ—तब, उक्त गौरव का पद वारेन हस्टिंग्स को मिला। यह पद वडी जिम्मेदारी का था। एजेण्ट को दो वाता की कठिन जिम्मेदारिया थी—एक तो यह कि कम्पनी की आय और उसके स्वाथ मे विघ्न न पडे। दूसरे, नवाव कही सिर उठाकर सबल न हो जाय। नवाव यदि वेश्याओ और शराव मे अधिकाधिक गहराई मे लिप्त हो, तो एजेण्ट को कुछ चिन्ता न थी। उनकी चिन्ता का विपय सिफ

यह था कि यही नवाव गैंग को तो पुष्ट नही कर रहा है ? राज्य रक्षा की तरफ तो उसका ध्यान नही है ?

इन सबके सिवा जाफर ने नकद रुपया न होने पर सधि के अनुसार अगरेजो को कुछ जागीरें दी थी। उनकी मालगुजारी वसूली का भी उसी पर भार था। साथ ही, फासीसियो की छूत से नवाब को सवदा बचना भी आवश्यक था। हेस्टिंग्स ने बडी मुस्तैदी से उक्त पद के योग्य अपनी योग्यता प्रमाणित की।

पर मीरजाफर दर तक नवाब न रह सका। लोगो से वह घमण्ड-पूर्ण व्यवहार और झगडे करने लगा। मुसलमान हिंदू सब उससे घृणा करते थे। उधर अगरेजो ने रुपये के लिए दस्तक भेज भेजकर उसका नाकादम कर दिया। मीरजाफर का प्रतिक्षण अपनी हत्या का भय बना रहता था। निदान, तीन ही वर्ष के भीतर मीरजाफर का जी नवाबी से ऊब गया, और अत मे अँगरेजो ने उसे अयोग्य कहकर गद्दी से उतार, कलकत्ते मे नजरबन्द कर दिया। उसका दामाद मीरकासिम बगाल का नवाब बना। जाफर की पेन्शन नियत की गई।

एक प्रश्न उठता है कि मीरकासिम क्यो गद्दी पर बैठाया गया ? अधिकार तो मीरन का था—जो जाफर का पुत्र था। पर वहाँ अधिकार की बात ही न थी। वहा तो गद्दी नीलाम की गई थी। अगरेज बनियो की पसे की प्यास भयङ्कर थी। कासिम ने उसे बुझाया। कासिम को जिस भाव नवाबी मिली थी, उसका दिग्दर्शन हटर साहब ने अपने इतिहास मे लिखा है—

" अगरेजो का अमित धन की मागो को पूरा करने के लिए नवाबी खजाने मे रुपया नही था। इसलिये उन्हे अपनी पहले की शर्तो की रकम मे से आधा ही लेकर सतोष करना पडा। इस रकम की भी एक-तिहाई रकम नवाब के सोने चादी के बतन बेचकर सग्रह की गई, और इस भुगतान के बाद नवाबी खजाने मे फूटी कौडी भी न बची थी।"

कासिम के नवाब होने पर हेस्टिंग्स कौसिल का मेम्बर होकर कलकत्ते आगया, और उसकी जगह पर एलिस साहब एजेण्ट बने। इनके विषय मे कप्तान टॉवर लिखते है—"एलिस साहब कलह प्रिय एव बहुत

ही बुरे आदमी थे, और वे जिस पद पर नियुक्त किये गये थे, उसके योग्य न थे।"

नवाब और एजेण्ट की न बनी। बात-बात पर दोनों में झंझट चलने लगी। आखिर तंग आकर नवाब ने कलकत्ते की कौंसिल को लिखा—

"अंगरेज गुमाश्ते हमारे अधिकार की अवमानना करके प्रत्येक नगर और देहात में पट्टेदारी, फौजदारी, माल और दीवानी अदालतों की जरा भी परवा नहीं करते, बल्कि सरकारी अहलकारों के काम में बाधा डालते हैं। ये लोग प्राइवेट व्यापार पर भी महसूल नहीं देते, और जिनके पास कम्पनी का नाम है, वे तो अपने को कर्त्ता-धर्ता ही समझते हैं। सरकारी और अंगरेज कर्मचारियों की परस्पर की अनबन का कड़ुआ फल प्रजा को चखना पड़ रहा है, और उस पर असह्य निष्ठुर अत्याचार हो रहे हैं।"

मैकॉले साहब उस समय के अंगरेजों का चित्र खींचते हुए लिखते हैं—

"उस समय के कम्पनी से कर्मचारियों का केवल यही काम था, कि किसी देशी से सौ दो-सौ पाउण्ड वसूल करके जितना शीघ्र हो सके, यहां की गर्मी से पीड़ित होने के पूर्व ही विलायत लौट जायें, और वहां किसी कुलीन धनी की कन्या के साथ विवाह कर, कॉनवाल में छोटे-मोटे एक दो गांव खरीदकर और सेण्ट-जेम्स-स्क्वेयर में आनन्दपूर्वक मुजरा देखा करें।"

हेस्टिंग्स साहब जब एक बार पटने गये, तो क्या देखते हैं—नगर रो रहा है। एक ओर पाश्चात्य सभ्यता का दयाहीन झण्डा फहरा रहा है दूसरी ओर सैकड़ों वर्ष से विदेशियों के अत्याचारों को सहते सहते प्रजा उस भेड़ के समान हो गई है, जिसका ऊन मूड़ने के बहाने लोग उसका चमड़ा तक उधेड़ रहे हैं। नगर शून्य था। दूकानें बन्द थीं। प्रत्येक को लूट का भय था। लोग इधर-उधर भाग रहे थे।

मीरकासिम अपने श्वसुर की तरह नीच, स्वार्थी तथा द्रोही न था। वह सब रंग ढंग देख चुका था। उसने नवाबी मोल ली थी, फिर भी वह नवाब ही बनना चाहता था, और अंगरेजों से प्रजा की तरह व्यवहार

करना पसन्द करता था। साथ ही अंगरेजो के अत्याचार से प्रजा की रक्षा करने की सदा चेष्टा करता था।

जब उसने देखा कि अंगरेज बिना महसूल अन्धाधुन्ध व्यापार करके देश को चौपट कर रहे हैं, किसी तरह नहीं मानते, तो उसने अपनी लागत की हानि की परवा न करके महसूल का महकमा ही उठा दिया, प्रत्येक को बिना महसूल व्यापार करने का अधिकार दे दिया। अंगरेजो ने नवाब के इस न्याय और उदार कार्य का तीव्र विरोध किया। पर कासिम ने उसकी कुछ परवा न की।

अंगरेज कासिम को भी गद्दी से उतारने का प्रबन्ध करने लगे, पर मीरजाफर की तरह कासिम अंगरेजो का गधा न था। उसने सन्धि की शर्तों का पालन न होते देखकर अपनी तैयारी शुरू करदी। पहिले तो वह अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से उठाकर मुंगेर ले गया, और सेना को सज्जित करने लगा—साथ-ही अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सहायता के लिए पत्र-व्यवहार करने लगा।

इतने ही मे अंगरेजो ने चुपचाप पटने पर धावा कर दिया। पहले तो नवाबी सेना एकाएक हमले से घबराकर भाग गई, पीछे उसने आक्रमण कर नगर को वापिस ले लिया। बहुत-से अंगरेज कैद होगये। बदमाश एलिस भी कैद हुआ। नवाब ने जब पटने पर एकाएक आक्रमण होने के समाचार सुने, तो उसने अंगरेजो की सब कोठियो पर अधिकार करके, वहा के अंगरेजो को कैद करके मुंगेर भेजने का हुक्म दे दिया।

अंगरेजो ने चिढकर कलकत्ते मे आप-ही आप मीरजाफर को फिर नवाब बना दिया। इसके पीछे मुर्शिदाबाद सेना भेज दी गई। मुर्शिदाबाद को यद्यपि मीरकासिम ने काफी सुरक्षित कर रखा था, फिर भी विश्वास-घाती, नीच और स्वार्थी सेनापतियो के कारण नवाबी सेना की हार हुई। नवाब के दो-चार वीर सेनापति अन्त तक लडकर धराशायी हुए। अन्त मे उदयालन का मुख्य युद्ध हुआ। पलासी मे गधा मीरजाफर था। यहां विश्वासघाती गुरगन सेनापति था। नवाब की ४० हजार की सेना यहां उसके आधीन थी। उस पर अंगरेजो के सिर्फ ५ हजार सैनिको ने ही विजय प्राप्त करली! धीरे-धीरे नवाब के सभी नगरो पर अंगरेजो का अधिकार

हो गया। पटना और मुँगर का भी पतन हुआ। कासिम भाग कर अवध के नवाव शुजाउद्दौला की शरण गया। एक बार अवध के नवाव की सहायता से पटना और बक्सर मे फिर युद्ध हुआ। परन्तु विश्वासघात और घूस की घोर ज्वाला ने मुसलमानी तरत का विध्वस किया। इस पर प्रयाग तक मीरकासिम खदेडा गया। फल यह हुआ कि प्रयाग भी अगरेजो के हाथ आगया।

मीरकासिम का क्या हाल हुआ ? कुछ पक्की खबर नही। लोग कहते थे कि दिल्ली की सडक पर एक दिन एक लाश देखी गई थी—जो एक बहुमूल्य शाल से ढकी हुई थी। उसके एक कोने पर लिखा था—मीर-कासिम।

मीरजाफर फिर नवाव बन गया। अगरेजो ने कासिम की लडाई का सब खर्चा और हर्जाना मीरजाफर से वसूल किया। सबको भेट भी यथा-योग्य दी गई। बगभूमि के भाग्य फूट गये। उसके माथे का सिदूर पोछ लिया गया।

मराठो ने प्रथम ही बगाल को छिन्न-भिन्न कर दिया था। अब इस राज-विप्लव के पश्चात् मानो बगाल का कोई कर्ता धर्ता ही न रहा। मीर-जाफर फिर गद्दी से उतारकर कलकत्ते भेज दिया गया। इस बार किसी को नवाव बनाने को जरूरत न रही। ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुर ही बगाल की मालिक बन गई।

सन् १७३८ के दिन थे। देश-भर अराजक, अरक्षित और दलित था। किसान घर बार छोड, जहा-तहा भाग गये थे। नगर उजाड होरहे थे। वर्षा भी न हुई थी। खेती बहुत कम बोई गई थी। बीज तक लोगो के पास न था। ऐसी दशा मे भयङ्कर दुर्भिक्ष बगाल की छाती पर सवार हुआ। परन्तु तिस पर भी कौडी-कौडी मालगुजारी वसूल की गई।

उस समय भी कुछ लोग धनी थे। जगतसेठ, मानिकचन्द नष्ट हो चुके थे—पर कुछ धनी बच रहे थे। पर, क्या किसान, क्या धनी—जन बँगाल मे किसी के पास न था। अशर्फिया थी—मगर कोई अन्न बेचने वाला न था।

अगरेजो ने बहुत-सा चावल कलकत्ते मे सेना के लिये भर रखा

था। यह सुनकर चारो ओर से पुर्निया, दीनापुर, वाकुडा, वद्ध मान आदि से हजारो नर नारी कलकत्ते को चल दिये। गृहस्थो की कुल कामिनिया ने प्राणाधिक वच्चो को कधे पर चढाकर विकट-यात्रा मे पैर धरा। जिन कुल वधुआ को कभी घर की देहली उलाघने का अवसर नही आया था, वे भिखारिन के वेश मे कलकत्ते की तरफ जा रही थी। बहुमूल्य आभूपण और अशर्फिया उनके अचल मे वँधे थे, और वे उनके वदले एक मुट्ठी अन्न चाहती थी।

पर इनमे कितनी कलकत्ते पहुँची ? सैकडो स्त्री-पुरुष मार्ग मे ही भूखे-प्यासे मर गये, कितनो के वच्चे माता का सूखा स्तन चूसते-चूसते अन्त मे माता की छाती पर ही ठण्डे होगये। कितनी कुल वधुओ ने भूख प्यास से उन्मत्त हो, आत्मघात किया।

वावू चण्डीचरण सेन ने उस भीपण घटना का इस प्रकार वणन किया है—

"घोर दुर्भिक्ष समुपस्थित है। सूखे नर-कङ्कालो से माग भरे पडे है। सहस्रो नर नारी मर-मरकर माग मे गिर रहे हैं। भगवती गङ्गा अपने तीव्र-प्रवाह मे भूखे मुर्दों को गङ्गासागर की ओर वहाये लिए जा रही है। अपने अधमरे बच्चो को छाती से लगाये, सैकडो स्त्रियाँ अधमरी अवस्था मे गगा के किनारे सिसक रही हैं। पापी प्राण नही निकले हैं। कभी-कभी डोम अन्य मुर्दों के साथ उन्हे भी टाँग पकडकर गगा मे फेंक रहे हैं। जहाँ-तहा आदमियो का समूह हिताहित शून्य हो, वृक्षो के पत्ता को खा रहा है। गङ्गा किनारे वृक्षो मे पत्ते नही रहे हैं।"

"कलकत्ता नगर के भीतर एक रमणी—एक मुट्ठी नाज के लिये अपनी गोद के प्यारे बच्चे को वेचने के लिये इधर-उधर घूम रही है।"

उक्त वावू साहब एक स्थान पर इन अभागे बगालियो को सम्बोधन करके लिखते हैं—"हे वङ्गदेश के नरनारीगण! तुम झूठी आशा के ही सहारे व्यर्थ कलकत्ते जा रहे हो! कलकत्ते मे जो चावल रक्खे हैं, वे तुम्हारे भाग्य मे नही बदे। तुम्हारे जीने मरने मे किसी को कुछ लाभ नही। वह अन्न तो उनके सैनिको के लिये है। तुम्हारी अपेक्षा उनके सैनिक कहीं भूखे मर गये तो मानवीय स्वतन्त्रता के मूल पर कुठाराघात कौन करेगा ?"

इसी समय के कुछ दिन प्रथम क्लाइव को एक-ही गाव की लूट मे इतना चावल मिला था, कि जिससे एक वष तक दस हजार सिपाहियो का गुजारा चल सकता था। आश्चय है, कि देखते-ही-देखते बङ्गाल इस दशा को पहुँच गया।

२१
दक्षिण के मुस्लिम-राज्य

दक्षिण के प्राचीन राज्य चेरा, चौल, पाण्ड्य, नष्ट हो गये थे। परन्तु मुहम्मद तुगलक के कुशासन से लाभ उठाकर एक हिन्दू राज्य विजयनगर पठाना के काल मे बन गया था, जो २०० वष तक रहा। इसी काल में बहमनी-राज्य हसन नामक एक वीर और साहसी मनुष्य ने स्थापित किया था। यह व्यक्ति समय के प्रभाव से गगू नामक एक ब्राह्मण की सेवा मे कुछ दिन रह चुका था—अत उसके प्रति कृतज्ञता-प्रकाश करने को, उसने अपना नाम—'सुलतान अलाउद्दीन हसन गगू वहमनी' रखा, और अपने राज्य का नाम 'वहमनी'-राज्य रक्खा। राजा होने पर गगू आजीवन इसका मत्री रहा। गोलकुण्डा के पश्चिम मे इसकी राजधानी गुलवर्गा थी, और उसका राज्य वरार मे लेकर दक्षिण मे कृष्णा नदी तक फैला हुआ था।

विजयनगर की सेना मे ७ लाख योद्धा थे और उसका शौय वहुत वढा चढा था। उसका राज्य खम्भात की खाडी से आरम्भ होकर पूव-दिशा मे जगन्नाथ के निकट बगाल की खाडी तक और दक्षिण मे कन्या-कुमारी तक फैला हुआ था।

इस हिन्दू-राजा के पास गुर्जिस्तान के ३ गुलाम थे, जिनको वह हर प्रकार सुखी, प्रसन्न और सन्तुष्ट रखता था। यहा तक कि उसने उनको दो बडे-वडे प्रान्तो का अधिकारी बना दिया था—एक को बीजापुर, पुरन्दर

२२

हैदरअली और टीपू

हैदरअली के दादा वलीमुहम्मद एक मामूली फकीर थे, जो गुलबर्गा में दक्षिण के प्रसिद्ध साधु हज़रत बन्दानेवाज गेसूदराज की दरगाह में रहा करते थे। इनके खर्च के लिये दरगाह से छोटी-सी रकम बँधी हुई थी। इनका एक पुत्र था, जिसका नाम मोहम्मदअली था। उसे शेखअली भी कहते थे। उसे भी लोग पहुँचा हुआ फकीर मानते थे।

वह कुछ दिन बीजापुर में रहा, पीछे कर्नाटक के कोलार नामक स्थान में आकर ठहरा। कोलार का हाकिम शाह मुहम्मद दक्खिणी शेखअली का बड़ा भक्त था। शेखअली के ४ बेटे थे। उन्होंने बाप से नौकरी की इजाज़त मांगी। पर उसने समझाया—हम साधुओं को दुनियाँ के धंधा में फँसना ठीक नहीं। निदान, वे पिता की मृत्यु तक उसके पास रहे। पिता की मृत्यु पर बड़ा तो पिता के स्थान पर अधिकारी हुआ और सबसे छोटा अरकाट के नवाब के यहा फौज मे जमादार हो गया, और तजोर के फकीर पीरजादा बुरहानुद्दीन की लडकी से शादी कर ली। इससे उसे दो पुत्र हुए—जिनमें छोटे का नाम हैदरअली था। इस समय उसका पिता सिरा के नवाब के यहा बालापुर कलाँ का किलेदार था। जब हैदरअली ३ वर्ष का था, तब उसका पिता किसी युद्ध मे मारा गया। उनका सब सामान ज़ब्त कर लिया गया, और हैदरअली को भाई-सहित नक्कारे मे बन्द कराकर नक्कार पर चोटें लगवानी शुरू करा दी गई। इस अवसर पर उसके चचा ने धन भेज-कर उसका उद्धार किया, और अपने पास रखा। वहाँ उसने युद्ध-विद्या सीखी, और समय आने पर दोनो भाई मैसूर की सेना मे भर्ती हो गये।

मैसूर रियासत मरहठो को चौथ देती थी। इस समय निजाम और मैसूर-राज्य का मिलकर अगरेजो से युद्ध हुआ। इस युद्ध मे हैदरअली एक साधारण सवार की भाति लडा।

इस युद्ध मे हैदर ने जो कौशल दिखाया, उस पर मैसूर के दीवान की दृष्टि पडी, और उसने हैदर को डिण्डीगल का फौजदार नियत कर दिया। वहा उसने अपनी सेना को फ्रासीसी [रीति से युद्ध करने की शिक्षा दी और तोपखाने मे भी फ्रासीसी कारीगर नियुक्त किये।

धीरे-धीरे उसका बल बढता गया, और वह प्रधान सेनापति हो गया। शीघ्र ही वह मैसूर का प्रधान-मन्त्री हो गया। उस समय प्रधान-मन्त्री ही राज-काज के कर्त्ता-धर्त्ता थे। महाराज तो साल मे एकाध बार प्रजा को दर्शन देते थे। हैदरअली ने शीघ्र ही मैसूर की सम्पूर्ण सत्ता अधिकार मे कर ली, और प्रधान-मन्त्री की पदवी उसकी खानदानी पदवी हो गई। दिल्ली के सम्राट् ने भी उसे सीरा-प्रान्त का सूबेदार नियुक्त कर दिया।

अब हैदरअली ने राज्य की व्यवस्था की ओर ध्यान दिया और शीघ्र ही प्रबन्ध उत्तमता से होने लगा। इसके बाद उसने आस-पास के प्रान्त मे विजय प्राप्त कर, रियासत को बढाना प्रारम्भ किया।

यह वह समय था, जब मराठे बढ रहे थे। मराठो का मैसूर पर चार बार आक्रमण हुआ, पर अन्त मे उन्हे हैदरअली से सन्धि करनी पडी।

इस समय अगरेजी कम्पनी की शक्ति भी किसी शक्ति की वृद्धि सहन न कर सकती थी। उन्होने छेड-छाड की और हैदरअली के मित्र कर्नाटक के नवाब को भडकाकर फाड लिया। हैदर ने यह देख, निजाम से सन्धि की, और दोनो ने मिलकर कर्नाटक और अगरेजी इलाके पर हमला कर दिया। निजाम की ओर से ५० हजार सेना सहायतार्थ आई थी। इतनी ही अगरेजी सेना जनरल स्मिथ की आधीनता मे मद्रास से बढी। हैदर के पास २ लाख सेना थी। इसमे से ५० हजार सेना लेकर उसने अगरेजी सेना की गति रोकी। परन्तु निजाम को भी अगरेजो ने फोडने की चेष्टा की। यह देख, हैदर ने सन्धि की चेष्टा की—पर, अगरेजो ने उसके दूत को 'अपमानित करके निकाल दिया। यह देख, हैदर युद्ध को सनद्ध

होगया, और शीघ्र ही समस्त छिना हुआ देश लौटा लिया, तथा अगरेज सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया।

इस समय हैदर के पुत्र टीपू की आयु १८ वर्ष की थी, और वह पिता के साथ युद्ध के मैदान मे था। हैदर ने उसे ५००० सेना देकर दूसरे रास्ते मद्रास भेज दिया। वह इतना शीघ्र मद्रास पहुँचा, कि उसकी सेना को सिर पर देख, अगरेज गवनर घबरा गया, और वे लोग भाग खड़े हुए। टीपू ने सेण्ट टॉमस नामक पहाडी पर कब्जा किया, और आस-पास के अगरेजी इलाके भी कब्जे मे कर लिये।

उधर त्रिचनापल्ली मे हैदर और जनरल स्मथ का मुकाबिला हुआ। ऐन मौके पर अपनी तमाम सेना को निजाम के अफसर ने इस बुरी तरह पीछे हटाया कि हैदर की तमाम फौज मे खलबली मच गई। यह विश्वास-घात देख हैदर ने अपनी सेना कुछ पीछे हटाई।

उधर अगरेजा ने उडा दिया कि हैदर हार गया, और टीपू को भी समाचार भेज दिया। टीपू उस समय मद्रास से ९ मील दूर था। वह अगरेजो के भरें मे आ गया, और मद्रास को छोडकर पिता से मिलने को चल दिया।

इधर हैदर, वेनियमबाडी के किले की ओर बढा, और उसे फतह करके आम्बूर की ओर गया। वहाँ उसे बहुत सा हथियार और गोला-बारूद हाथ लगा। जनरल स्मिथ हार-पर-हार खाकर पीछे हटता गया। तब उसकी सहायता के लिये कर्नल वुड एक नई सेना लेकर बगाल से चला।

इस बीच मे अगरेजा ने पादरियो द्वारा हैदर के योरोपियन अफसरो को फोडने की पूरी पूरी कोशिश की और सफलता भी प्राप्त की। पर अन्त मे हैदर ने अपना तमाम इलाका अगरेजो से छीन लिया। उधर अगरेजो ने बगलौर को हथिया लिया था—उसे टीपू न छीना। इस युद्ध मे अनेक अगरेज अफसर सेनापति सहित गिरफ्तार किये गये। अन्त मे हैदर वीरपुत्र सहित सेना को खदेडते हुए मद्रास तक जा पहुँचा। अगरेजो ने कप्तान ब्रुक को सुलह की बात चीत करने भेजा। हैदर ने जवाब दिया—"मैं मद्रास के फाटक पर आ रहा हूँ। गवनर और उसकी कौंसिल को जो कुछ कहना होगा—वहीं आकर सुनूँगा।" वह साढे तीन दिन के अन्दर १३० मील

का फासला तयकरके अचानक मद्रास जा धमका, और किले से १० मील दूर छावनी डाल दी। अगरेज़ काप उठे। हैदर और अगरेज़ो सेना के बीच मे 'सेण्ट-टॉमस' की पहाडी थी। अगरेजो ने देखा कि यदि हैदर इस पर अधिकार कर लेगा—तो खैर नही। वे जल्दी-जल्दी वहा तोपें जमा रहे थे। पर हैदर एक चक्कर काटकर मद्रास किले के दूसरे फाटक पर आ पहुँचा। अगरेज़ी सेना किले के दूसरी ओर फसील मे दो-तीन मील के फासले पर थी। अगरेजा के भय का ठिकाना न था। पर हैदर ने पूव वचन के अनुसार गवनर को कहला भेजा—"कहो, क्या कहना चाहते हो ?"—गवर्नर ने तुरन्त डुप्रे और वैशियर को सुलह की बात चीत करने को भेजा। डुप्रे भविष्य के लिये गवनर नियुक्त हो चुका था। वैशियर उस समय के गवनर का सगा भाई था।

अन्त मे सधि हुई। इसमे कम्पनी का किसी प्रकार का राजनैतिक अधिकार नही माना गया। सधि-पत्र हैदर ने जैसा चाहा, वैसा ही इग्लिस्तान के बादशाह के नाम से लिखा गया। इस सधि के आधार पर हैदरअली और इगलैण्ड के राजा मे मित्रता कायम रही। दोना ने अपने प्रात वापस लिये, और हैदर ने एक मोटी रकम युद्ध के खच के लिए ली। दूसरी सधि के आधार पर अरकाट का नवाव मैसूर का सूबेदार समझा गया, और बतौर खिराज के ६ लाख सालाना का देनदार बना। इसके सिवा एक नया युद्ध का जहाज, जिस पर उम्दा ५० तोपें थी, हैदरअली को अगरेज़ो ने भेट किया।

इस सधि का यह असर हुआ कि इगलैण्ड मे इसकी खबर पहुँचते ही ईस्ट-इण्डिया कम्पनी के हिस्सा की दर ४० फीसदी गिर गई।

कुछ दिन बाद मरहठो ने मैसूर पर आक्रमण किया। हैदर ने अगरेजो से मदद मागी। पर उन्होंने इन्कार कर दिया। हैदर अगरेज़ो की चाल समझ गया। उसने टीपू को मरहठो पर सेना लेकर भेजा, और ६ वष तक दोना मे सधि होगई। जब हैदर को यह निश्चय होगया कि अगरेज़ सधि को तोड रहे है, तो उसन अगरेजो पर चढाई करने की तैयारी कर दी, और निजाम से मदद मांगी। पर निजाम इस बार भी ऐन मौके पर दगा कर गया।

इसी बीच मे नाना फडनवीस ने हैदर मे सधि करली । अगरेजो ने फिर सधि की बहुत चेष्टा की, पर हैदर ने स्वीकार न किया । कर्नाटक का नवाब मुहम्मदअली अगरेजो का मित्र था । हैदर ने पहले उसी की ओर रुख किया, और सेना के कई भाग कर, तमाम प्रात मे फैला दिये । अगरेजी और नवाब की सेनाएँ हार पर-हार खाने लगी । अन्त म तमाम प्रान्त को हैदर ने अपने कब्जे में कर लिया । नवाब भागकर मद्रास चला गया । हैदर की सेनाये भी मद्रास जा धमकी । अँगरेजा की दो सेनाएँ उसके मुकाबले को उठी । घनघोर युद्ध हुआ और हैदर ने अँगरेजी सैन्य को बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया । अरकाट के किले और नगर पर भी अधिकार हो गया । वहा उसने एक हाकिम नियत किया, और शासन प्रबन्ध ठीक किया ।

उस समय वारेन हेस्टिंग्स गवनर जनरल थ । यह समाचार सुन, वह घबरा गये । बगाल की हालत भयानक हो गई थी । भयानक दुर्भिक्ष था । पर, फिर भी ५ लाख रुपया नकद और एक भारी सेना उसने मद्रास के लिये भेजी । मद्रास पहुँचकर इस सेना के सेनापति ने सात लाख रुपये मुहम्मदअली से और वसूल किये और सैन्य-सग्रह कर, हैदरअली के मुकाबले को बढा । कई बार मुठभेड हुई, और अगरेजो को भारी हानि उठाकर पीछे हटना पडा । अत मे सेनापति सर कूट बगाल लौट गये । हैदर ने लगभग समस्त अगरेजी इलाका फतह कर लिया था । पर अचानक उसकी मृत्यु अरकाट के किले मे होगई । हैदरअली की पीठ मे अदीठ (कारबंकल) फोडा हो गया था । उसी से उसकी मृत्यु हुई । मृत्यु के समय वह साठ वष का था ।

मृत्यु के समय उस तमाम इलाके को छोडकर, जो उसने हाल के युद्ध मे अपने शत्रुओं से विजय किया था—शेष का क्षत्रफल ८० हजार वग वग मील था, जिसकी सालाना बचत, तमाम खर्चा निकालकर, ३ करोड रुपयो से अधिक थी । उसकी स्थायी सेना ३ लाख २४ हजार थी । खजाने मे नकदी और जवाहरात मिलाकर सब ८० करोड से ऊपर था । उसकी पशुशाला मे—७०० हाथी ६००० ऊँट, ११००० घोडे, ४००००० गाय और बैल, १००००० भैंसें, ६०००० भेड थी । शस्त्रागार मे ६ लाख बन्दूक, २ लाख तलवारे और २२ हजार तोपे थी ।

यह पहला ही हिन्दुस्तानी राजा था, जिसने अपने समुद्र-तट की रक्षा के लिये एक जहाजी बेडा—जो तोपो से सज्जित था, रखा हुआ था। यह जल सेना बहुत जबदस्त थी, और उसके जल-सेनापति अली रजा ने मल-द्वीप के १२ हजार छोटे छोटे टापुओं को हैदर के राज्य मे मिला लिया था।

वह पढा-लिखा न था। बडी कठिनता से वह अपने नाम का पहला अक्षर 'है' लिखना सीख पाया था। पर, इसे भी वह उल्टा-सीधा लिख पाता था। फिर भी उसने योरोप के बडे-बडे राजनीतिज्ञो के दाँत खट्टे कर दिये थे। उसकी स्मरण शक्ति ऐसी अलौकिक थी, कि वह एक साथ कई काम किया करता था। एक साथ वह तीस-चालीस मु शियों से काम लेता था।

उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र टीपू ने युद्ध उसी भाति जारी रखा। अगरेजो ने लल्लो-चप्पो करके सन्धि की। वह वीर था—पर अनुभव शून्य था। उसने अगरेजो से मित्रता की सन्धि स्थापित की, और जीता हुआ प्रान्त उन्हे लौटा दिया। कम्पनी ने उसे मैसूर का अधिकारी स्वीकार कर लिया था।

कुछ दिन तो चला। पीछे जब लॉर्ड कानवालिस गवनर होकर आया तो उन्होने देखा कि टीपू ने निजाम और मराठो से बिगाड कर लिया है। कॉनवालिस ने झट निजाम के साथ टीपू के विरुद्ध एक समझौता किया। इसके बाद उसने टीपू और मराठो मे होती हुई सुलह मे विघ्न डालकर मराठो से भी एक समझौता कर लिया। तीन बार उसने इगलैण्ड से कुछ गोरी फौज तथा ५ लाख पौण्ड कर्ज भी मँगवाये।

अब त्रावनकोर के राजा से भी युद्ध छिडवा दिया गया, और अगरेज उसकी मदद पर रहे। मुठभेड होने पर फिर टीपू ने अगरेजी सेना को हार-पर-हार देनी आरम्भ की। अन्त मे स्वय कानवालिस ने सेना की बागडोर हाथ मे ली। निजाम और मराठे उसकी सहायता को सेनाएँ ले लेकर उससे मिल गये। ठीक युद्ध के समय तमाम योरोपियन अफसर और सिपाही शत्रु से मिल गये। टीपू के कुछ सेनापति और सरदार भी घूस से फोड लिये गये।

यद्यपि टीपू की कठिनाइयां असाधारण थी, पर उसने वीरता और दृढता से कई महीने लोहा लिया। अन्त मे बगलौर अगरेजो के हाथ मे आगया—टीपू को पीछे हटना पडा।

अब कानवालिस ने मैसूर की राजधानी श्री रङ्गपट्टन पर चढाई की। टीपू ने युद्ध किया, और सुलह की भी पूरी चेष्टा की। अगरेजो ने लालबाग़ मे हैदरअली की सुदर समाधि पर अधिकार कर लिया, और उसे लगभग नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अन्त मे दोनो दलो मे सन्धि हुई, और टीपू का आधा राज्य लेकर कम्पनी, निजाम और मराठो ने बाट लिया। इसके सिवा टीपू को ३ किस्तो मे ३ करोड ३० हजार रुपया दण्ड देने का भी वचन देना पडा, और इस दण्ड की अदायगी तक अपने दो बेटो को—जिनमे एक की आयु १० वर्ष और दूसरे की ८ वर्ष की थी—बतौर बधक अगरेजो के हवाले करना पडा।

इस पराजय से टीपू का दिल टूट गया, और उसने पलग बिस्तर छोडकर टाट पर सोना शुरू कर दिया, और मृत्यु तक उसने ऐसा ही किया।

अस्तु! टीपू ने ठीक समय पर दण्ड का रुपया दे दिया, और बडी मुस्तदी से वह अपने राज्य, राज्य कोष और प्रबन्ध को ठीक करने लगा। युद्ध के कारण जो मुल्क की बर्बादी हुई थी, उसे ठीक करने मे उसने अपनी सारी शक्ति लगादी। सेना मे भी नई भर्ती करना और उसे शिक्षा देना उसने आरम्भ किया। इस प्रकार शीघ्र ही उसने अपनी क्षति-पूर्ति करली।

उधर अगरेज सरकार भी बेखबर न थी। उधर भी सैन्य-सग्रह हो रहा था। निजाम सबसीडीयरी सेना के जाल मे फँस गया था, और पेशवा के पीछे सिंधिया को लगा दिया था। पर प्रकट मे दोनो ओर से मित्रता और प्रेम के पत्रो का भुगतान हो रहा था। अन्त मे सन् १७६६ की ६ जनवरी को हठात् टीपू को वेलेजली का एक पत्र मिला, उसमे लिखा था—"अपने समुद्र-तट के समस्त नगर अगरेजो के हवाले कर दो, और २४ घण्टे के अन्दर जवाब दो।"

३ फरवरी को अगरेजी फौज टीपू की ओर बढने लगी। टीपू युद्ध को तैयार न था। उसने सन्धि की बहुत चेष्टा की, पर वेलेजली ने कुछ भी ध्यान न दिया। जल और थल दोनो ओर से टीपू को घर लिया गया था।

गुप्त साजिशो मे बहुत से सरदार फोडे जा चुके थे। अगरेजो के पास कुल तीस हजार सेना थी।

प्रारम्भ मे टीपू ने अपने विश्वस्त सेनापति पुणियाँ को मुकाबले में भेजा। पर वह विश्वासघाती था। वह अगरेजी फौज के इधर-उधर चक्कर लगाता रहा और अगरेजी आगे बढती चली आई। यह देख, टीपू ने स्वय आगे बढने का इरादा किया। पर विश्वासघातियो ने उसे धोखा दिया, और उसकी सेना को किसी और ही मार्ग पर ले गये। उधर अगरेजी सेना दूसरे ही मार्ग से रगपट्टन आ रही थी। पता लगते ही टीपू ने पलटकर गुलशनबाद के पास अगरेजी सेना को रोका। कुछ देर घमासान युद्ध हुआ। सम्भव था, अगरेजी सेना भाग खडी होती—पर उसके सेनापति कमरुद्दीनखाँ ने दगा दी, और उलटकर टीपू की ही सेना पर टूट पडा। इस भाति अगरेज विजयी हुए।

इसी बीच मे टीपू ने सुना कि एक भारी सेना बम्बई की तरफ से चली आ रही है। टीपू वहा कुछ सेना छोड, उधर दौडा, और बीच मे ही उस पर टूटकर उसे भगा दिया। परन्तु उसके मुखबिर और सेनापति सभी विश्वासघाती थे। टीपू को वे बराबर गलत सूचना देते थे। ज्योही टीपू लौटकर रगपट्टन आया कि अगरेजी सेना ने शहर घेरकर आग बरसाना शुरू कर दिया।

टीपू ने सेनायें भेजी। पर सेनापतियो ने युद्ध के स्थान पर चारो ओर चक्कर लगाना शुरू कर दिया। अगरेज फतह कर रहे थे और टीपू को गलत खबरें मिल रही थी। क्रोध मे आकर टीपू ने तमाम नमकहरामो की सूची बनाकर एक विश्वस्त कर्मचारी को दी, और कहा—"इन्हे रात को ही कत्ल करदो।" पर एक फर्राश की नमकहरामी से भण्डाफोड हो गया। उसी दिन टीपू घोडे पर चढकर किले की फसीलो का निरीक्षण करने निकला, और एक फसील पर अपना खेमा लगवाया। कहते हैं ज्योतिषियो ने उससे कहा था—"आज का दिन दोपहर के ७ घडी तक आपके लिये शुभ नही।" उसने ज्योतिषियो की सलाह से स्नान किया, हवन-जप भी किया, और दो हाथी—जिन पर कानी झूलें पडी थी—और जिनके चारो कोनो मे सोना, चाँदी, हीरा, मोती बँधे थे ब्राह्मण को दान दिये,

गरीबो को भी अटूट धन दिया। इसके बाद वह भोजन करने बैठा ही था, कि सूचना मिली—किले के प्रधान सरक्षक अब्दुलगफ्फारखाँ को कत्ल कर डाला गया है। टीपू तत्काल उठ खडा हुआ, और घोडे पर सवार हो, स्वय उसका चाज लेने किले मे घुस गया। कुछ खास खास सरदार साथ मे थे।

उधर विश्वासघातियो ने सैयद गफ्फार को खत्म करते ही सफद रूमाल हिलाकर अगरेजी सेना को सकेत कर दिया। यह देख, टीपू के सावधान होने से प्रथम-ही दीवार के टूटे हिस्से से शत्रु के सैनिक किले मे घुस गये।

एक नमकहराम सेनापति मीरसादिक यह खबर पा, सुल्तान के पीछे गया और जिस दरवाजे से टीपू किले मे गया था, उसे मजबूती से बन्द करवाकर दूसरे दरवाजे से मदद लेने के बहाने निकल गया। वहाँ वह पहरेदारो का यह समझा ही रहा था कि, मेरे जाते ही दरवाजा बन्द कर लेना और हरगिज न खोलना, कि एक वीर ने जो उसकी नमक-हरामी को जानता था, कहा—"कम्बख्त मलऊन! सुलतान को दुश्मनो के हवाले करके यो जान बचाना चाहता है। ले यह तेरे पापो की सजा है।" कहकर खट् से उसके दो टुकडे कर दिये।

पर टीपू अब फँस चुका था। जब वह लौटकर दरवाजे पर गया, तो उसी के बेईमान सिपाही ने दरवाजा खोलने से इन्कार कर दिया। अगरेजी सेना टूटे हिस्से से किले मे घुस चुकी थी। हताश हो, वह शत्रुओ पर टूट पडा। पर कुछ ही देर मे एक गोली उसकी छाती मे लगी। फिर भी वह अपनी बन्दूक से गोलिया छोडता ही रहा। पर, फिर और एक गोली उसकी छाती मे आकर लगी। घोडा भी घायल होकर गिर पडा। उसकी पगडी भी जमीन पर गिर गई। अब उसने पैदल खडे होकर तल-वार हाथ मे ली। कुछ सैनिको ने उसे पालकी मे लिटा दिया। कुछ लोगो ने सलाह दी, कि अब आप अपने आपको अगरेजो के सुपुर्द करदें। पर उसने अस्वीकार कर दिया। अगरेज सिपाही नजदीक आगये थे। एक ने उसकी जडाऊ कमर-पेटी उतारनी चाही, टीपू के हाथ मे अब तक तलवार

थी—उसने उसका भरपूर हाथ मारा, और सिपाही के दो टूक हो दूर जा पड़ा। इतने मे एक गोली उसकी कनपटी को पार करती निकल गई।

रात को जब उसकी लाश मुर्दों में से निकाली गई, तो तलवार अब भी उसकी मुट्ठी मे कसी हुई थी। इस समय उसकी आयु ५० वर्ष की थी।

इस समय उसका बेटा फतह हैदर कागी घाटी पर युद्ध कर रहा था। पिता की मृत्यु की खबर सुनते ही वह उधर दौडा। पर नमकहराम सलाहकारो ने उसे लडाई बन्द करने की सलाह दी। साथ ही जनरल हैरिस स्वय कुछ अफसरो के साथ उससे भेट करने आये, और कहा कि यदि आप लडाई बन्द करदे, तो आपको आपके पिता के तख्त पर बैठा दिया जायगा। इस पर विश्वास कर, फतह हैदर ने युद्ध बन्द कर दिया। पर यह सिर्फ बहाना था। अगरेजी सेना ने किले पर कब्जा कर लिया, और रङ्गपट्टन मे अगरेजी सेना ने भारी लूट-खसोट और रक्त-पात जारी कर दिया।

अब अगरेजी सेना महल मे घुसी। टीपू को शेर पालने का शौक था। बाहरी सहन मे अनगिनत शेर खुले फिरा करते थे। अगरेजी फौज ने भीतर घुसते ही इन्हे गोली से उडा दिया। महल मे टीपू का खजाना, धन, रत्न और जवाहरात से ठसाठस था। इस सब माल, हाथी, ऊँट और भाति-भाँति के असबाब पर अँगरेज सेना ने कब्जा कर लिया। सुलतान का ठोस सोने का तख्त तोड डाला गया, और हीरे जवाहरात व मोतियो की माला और जेवरो के पिटारे नीलाम कर दिये गये। सिर्फ महल के जवाहरात की लूट का अन्दाजा १२ करोड रुपया था। उसका मूल्यवान पुस्तकालय और अन्य मूल्यवान पदार्थ रङ्गपट्टन से उठाकर लन्दन भेज दिये गये। इसके बाद टीपू के भाई करीम साहब, टीपू के १२ बेटो और उसकी बेगमो को कैद करके रायविल्लूर के किले मे भेज दिया गया।[1]

राज्य के टुकडे-टुकडे कर दिये गये। एक टुकडा निजाम के हाथ आया। बडा भाग अगरेजी राज्य मे मिला लिया गया। शेष भाग—मैसूर के हिन्दू राजकुल के एक ५ वर्ष के बालक को दे दिया गया, और विश्वासघाती पुर्णिया को उसका दीवान बना दिया गया।

टीपू की समाधि पर यह शेर खुदा है—

चूँ आँ मर्द मदा निहा शुद्ज दुनिया।
थके गुफ्त तारीख शमशीर गुल शुद।

अर्थात्—जिस समय वह शूर दुनिया से गायब हुआ, किसी ने कहा—इतिहास के लिये तलवार गुम हो गई।

२३

कर्नाटक के नवाब

जिस समय दिल्ली पर शाहआलम का अधिकार था, तब कर्नाटक मे नवाब दोस्तअली का शासन था। उस समय फ्रान्सीसी लोग अगरेजो के विरुद्ध अपने अधिकार के लिए पूरी चेष्टा कर रहे थे। नवाब अनवरुद्दीन के जमाने मे मराठो ने कर्नाटक पर आक्रमण किया था। पर फ्रांसीसियो और बादशाह दिल्ली की सहायता से नवाब की विजय हुई थी। धीरे-धीरे अगरेजो ने नवाब की दोस्ती प्राप्त करने की चेष्टा की। फ्रेंच सेनापति डुप्लेने नवाब से वादा किया कि, मैं मद्रास से अगरेजो को निकालकर मद्रास आपके आधीन कर दूंगा। परन्तु फ्रांसीसियो ने मद्रास-विजय करके भी ४० हजार पाउण्ड नकद लेकर अगरेजो को बेच दिया। तब नवाब क्रुद्ध होकर फ्रांसीसियो से लड पडा। अत मे फ्रांस की विजय हुई। भारतीय इतिहास मे योरोपियनो की यह प्रथम विजय थी। यह सन् १७४६ की घटना है।

अब नवाब और अगरेज मिल गये। परतु फ्रांसीसियो ने कर्नाटक नवाब के दामाद चदा साहब का पक्ष लिया, जो कर्नाटक की गद्दी के लिए दौड धूप कर रहे थे। अत मे उनकी इच्छा पूण हुई, और अनवरुद्दीन नवाब को मारकर चदा साहब कर्नाटक के नवाब बनाये गये।

त्रिचनापल्ली मे मुहम्मदअली का अधिकार था। अगरेज उसके पक्ष मे थे। अत मे दक्षिण का वह प्रसिद्ध युद्ध हुआ—जहाँ दक्षिण के तीन राजकुलो और अगरेज तथा फ्रांसीसियो की किस्मत का फैसला हो गया। फ्रांसीसी हारे और भारत मे उनके व्यापार का नाश हो गया।

अब अगरेजा की कृपा से मुहम्मदअली कर्नाटक का नवाब बना। इसके बदले मे उसने १६ लाख की आय का इलाका अगरेजा को दिया। प्रारम्भ मे मुहम्मदअली की अगरेजो मे बडी प्रतिष्ठा थी। पर, वह शीघ्र ही बगाल के नवावा की भाँति दुरदुराया जाने लगा। उससे नित नई माँगें पूरी कराई जाती थी, और नवाब को प्रत्येक नये गवनर का लगभग डेढ लाख रुपये नजर करने पडते थे। अन्त मे इस पर इतने खर्चे बढ गये, कि वह तङ्ग हो गया, और अगरेजा से जान बचाने का उपाय सोचने लगा। इस समय अगरेज व्यापारियो के कर्जे से वह बेतरह दबा हुआ था।

लार्ड कॉर्नवालिस ने नवाब से एक सधि की, जिसके कारण नवाब की तमाम सेना का प्रबन्ध अगरेजा के हाथ मे आ गया। इसके खर्च के लिये नवाब से कुछ जिले रहन रखा लिये गये। इनकी आमदनी ३० लाख रुपया सालाना थी।

सन १७६५ मे मुहम्मदअली की मृत्यु हुई, और उसका बेटा नवाब उमदतुलउमरा गद्दी पर बैठा। इस पर गवर्नर ने जोर दिया कि रहन रखे जिले और कुछ किले वह कम्पनी को दे दे। पर उसने साफ इनकार कर दिया। परन्तु इसी बीच मे अगरेजा ने प्रतापी टीपू को हरा डाला था, और रगपट्टन का अटूट खजाना उनके हाथ लगा था। उसमे गवनर को कुछ ऐसे प्रमाण भी मिले थे, कि जिनमे कर्नाटक नवाब का टीपू के साथ षड्यन्त्र पाया जाता था। परन्तु नवाब के जीते-जी यह बात यो-ही चलती रही। ज्योही, नवाब मृत्यु-शय्या पर पडा, कम्पनी को सेना ने महल को घेर लिया, और यह कारण बताया कि नवाब की मृत्यु पर बदअमनी का भय है। नवाब बहुत गिडगिडाया, पर अगरेजो ने उसे हर समय घेरे रखा, और बराबर अपनी मित्रता का विश्वास दिलाते रहे। उस समय नवाब का बेटा शाहजादा अलीहुसैन उसी महल मे था। ज्योही नवाब के प्राण निकले कि शहजादे को जबरदस्ती महल से बाहर लेजाकर अगरेजो ने कहा—"चूँकि तुम्हारे दादा और बाप ने अगरेजा के खिलाफ गुप्त पत्र व्यवहार किया है, इसलिए गवनर-जनरल का यह फैसला है, कि तुम बजाय अपने बाप की गद्दी पर बैठने के मामूली रिआया की भाति जिन्दगी बिताओ, और इस सधि-पत्र पर दस्तखत कर दो।" जहा यह बातें हो रही थी—वहा अगरेजी

सिपाही नगी तलवारें लिये फिर रहे थे। परन्तु अलीहुसैन ने मजूर न किया। तब नवाब के दूर के रिश्तेदार आजमुद्दौला से अगरेजो ने बातचीत की। उसने सधि की शर्तें स्वीकार कर ली। तब इसे मसनद पर बैठा दिया गया। इस सधि के अनुसार तमाम कर्नाटक-प्रान्त कम्पनी के हाथ आगया, और आजमुद्दौला केवल राजधानी अरकार और चिपोक के महलो का स्वामी रह गया। नवाब को चिपोक के महल मे रखा गया, और उसी मे शाहजादा अलीहुसेन और उसकी विधवा मा को कैद कर दिया गया। कुछ दिन बाद वह वही मर गया। सन्देह किया जाता है कि उसे जहर दिया गया।

२४
सूरत की नवाबी

मुगल-साम्राज्य मे सूरत एक सम्पन्न बन्दरगाह और सूबा था। बहुत दिन तक वहा बादशाह का सूबेदार रहता था। जब साम्राज्य की शक्ति ढीली पडी, तब वहा का हाकिम स्वतत्र नवाब बन बैठा। पीछे जब योरोप की जातियो ने भारत मे पैर फैलाये, और अगरेजो की शक्ति बढने लगी, तब सूरत के नवाब से भी अगरेजो ने सधि कर ली। धीरे-धीरे नवाब अगरेजो के हाथ की कठपुतली हो गया। चार नवाबो के जमाने मे यही होता रहा। वेलेजली ने अपनी नीति के आधार पर नवाब को भी सेना-भग करने और कम्पनी की सेना रखने की सलाह दी। नवाब ने बहुत ना-नूँ की, मगर अन्त मे एक लाख रुपया वार्षिक और ३० हजार रुपये सालाना की और रियायतें करनी ही पडी। इसी समय नवाब मर गया। इसके बाद इसका चचा नसीरुद्दीन गद्दी पर बैठा। इसने शीघ्र ही सब दीवानी और फौजदारी अधिकार अगरेजो को दे दिये, और स्वय बे-मुल्क नवाब बन बैठा, जो कुछ दिन बाद समाप्त होगये।

२५

निजाम

दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के वजीर आसफजाह ने वजारत से इस्तीफा देकर दक्षिण मे जा, हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाकर एक नया राज्य स्थापित किया, और १० वर्ष तक मराठो से लडकर अपने राज्य को दृढ कर लिया। धीरे-धीरे दक्षिण मे तीन शक्तियाँ प्रबल होगई। एक निजाम, दूसरी पेशवा और तीसरी हैदरअली।

अगरेजी शक्ति ने इन तीनो को न मिलने देने मे ही कुशल समझी। पाठक, हैदरअली के विवरण मे पढ चुके हैं कि किस भाँति निजाम ने अंग्रेजी शक्ति के आधीन होकर बारम्बार हैदरअली से विश्वासघात किया। ज्यो-ही टीपू की समाप्ति हुई, अगरेजी शक्ति निजाम के पीछे लगी। पहले गुण्डर का इलाका उससे ले लिया गया।

इसके बाद एक गहरी चाल यह खेली गई कि वजीर से लेकर छोटे-छोटे अमीरो तक को रिश्वते देकर इस बात पर राजी कर लिया गया, कि नवाब की सब सेना, जो फ्रान्सीसियो के आधीन थी, टुकडे-टुकडे करके बर्खास्त कर दी जाय, और कम्पनी की सबसीडियरी सेना चुपके-से हैदराबाद आकर उसका स्थान ग्रहण कर ले। इसकी नवाब को कानो-कान खबर नही हो।

वजीर यद्यपि सहमत हो गया था, घूस भी खा चुका था, परन्तु ऐसा भयानक काम करते झिझकता था। किन्तु अगरेजो ने सेना के भीतर ही जाल फैला दिये थे। फलत निजाम की सेनाएँ विद्रोह कर बैठी, क्योकि उन्हे कई मास का वेतन नही मिला था।

इसी मौके पर कम्पनी की सेना ने हैदराबाद को जा घेरा, और वजीर से कहा कि फौरन अपनी सेना को वर्खास्त करके कम्पनी की सेना को स्थान दो। पर वजीर ने इनकार कर दिया। अन्त मे उसे कम्पनी की इच्छा पूर्ण करनी पड़ी—निज़ाम ने भी स्वीकृति दे दी, और एक सन्धि द्वारा निजाम हैदराबाद की स्वाधीनता का सदा के लिये खात्मा होगया।

२६

मुस्लिम-संस्कृति का भारत पर प्रभाव

सब से प्रथम—अब हम यहाँ इस बात पर खास तौर से प्रकाश डालना चाहते हैं कि वास्तव मे जब मुस्लिम-राज्य स्थापित हो गया—तब, उस शासन मे हिन्दुओ के साथ मुसलमानो के कैसे व्यवहार रहे। यह हम बता आये है कि बादशाहो मे ऐसे कई आदमी हुए—जिन्होने धर्मान्धता के लिये —निर्दयतापूर्वक—तलवार का सहारा लिया था। पर यदि हम अत्यन्त गहराई से देखें, तो हम समझ जायेंगे कि अन्त मे उन्हे हिन्दू जन-बल से झुकना ही पड़ता रहा। यह बात थोड़े-ही विचार करने से समझ मे आ सकती है, कि महमूद और तैमूर-जैसा लुटेरा—चाहे जितना भी उत्पात या मारकाट करे, नगरो का विध्वंस करे, और बेतोल-सम्पदा लूटकर ले जाय, परन्तु एक बादशाह के लिये—जिसे सेना, कर तथा अन्य सुव्यवस्थाओं के लिये हिन्दू-प्रजा से निरन्तर काम लेना पड़ता है—अत्याचार और लूट मार कितनी घातक है! सब से मार्के की बात तो यह है, कि मुसलमानी राज्य-काल के मध्य-भाग मे जितने युद्ध हुए हैं, उनमे बहुत-ही कम ऐसे मिलेंगे, जिनको विशुद्ध हिन्दू-मुस्लिम युद्ध का रूप दिया जा सके। तरावली के युद्ध मे पृथ्वीराज की आधीनता मे अफगान सैनिकों का एक दल लड़ा था। पानीपत की तीसरी लड़ाई मे मुसलमान शासक मर-

हठा के साथ थे। अन्यत्र मुसलमान शासक जहाँ हिंदू राजाओ से लडते थे —वहाँ, यह युद्ध हिंदू-मुसलमानो मे होता था। पर, मुसलमान शासक मुसलमान राजाओ से भी उसी भाँति लडते थे। उधर हिंदू राजपूत राजा स्वय भी आपस मे खूब लडते थे। वह समय ही मानो योद्धाओ का था, और योद्धाओ की दो श्रेणियाँ थी—एक हिंदू, जो अधिक थे—पर सगठित न थे, दूसरी मुसलमान, जो कम थे—पर सगठित थे। जहागीर और शाहजहा मानो मुस्लिम-साम्राज्य मे एक शान्त, स्थिर और कला-कौशल को उन्नत करनेवाले बादशाह थे।

अलबत्ता एक बात तो थी ही, वह यह कि पठानो के राज्य-काल मे बादशाह अपनी प्रजा मे जितने सहनशील थे उतने पराये राज्य के हिंदुओ के लिये नही। मलिक काफूर का दक्षिण विध्वस ऐसा ही है,—यद्यपि उस सेना मे हिंदू-योद्धा भी थे। सच्ची बात तो यह है कि मन्दिर-विध्वस केवल धन लिप्सा के लिये था—बुतशिकनी का बहाना तो एक मीठा छल था। मध्य-युग के मुसलमान बादशाहो का अपने राज्य के बाहर के हिंदुओ पर आक्रमण करना और नगरो का लूटना एक आमदनी का जरिया था। भारत मे अति प्राचीन काल के व्यवहार-शिल्प और अध्यवसाय से बहुत धन एकत्र होगया था, अगणित जवाहरात एकत्र होगये थे और ब्राह्मणो के दुष्प्रभाव से खिचकर धर्म-मन्दिरो मे सञ्चित हो गये थे, जो उस काल मे एक मात्र धर्म स्थान थे। यही कारण है कि आक्रमणकारियो की दृष्टि मन्दिरो के धन-कोष पर ही रहती थी।

यह बात तो हमे माननी पडेगी कि मुस्लिम-साम्राज्य का वास्तविक प्रारम्भ अलाउद्दीन की क्रूर और प्रचण्ड नीति से हुआ। गुलाम वश के सुलतान तो थोथे मुसलमान थे। उसके बाद ही मुस्लिम-जाति भारत मे एक सगठित जाति के समान बनती चली गई। यह एक नैतिक पुष्टि थी— जो अलाउद्दीन से अकबर तक स्थित होती चली आई, और इसी ने उनके साम्राज्य को स्थिर बनाया।

मुसलमानो से प्रथम यूनानियो, शको और हूणो ने भारत पर बडे-बडे धावे किये। पर उससे न भारत की राजनीति पर प्रभाव पडा—न, समाज-शृंखला मे ही गडबडी हुई। सामरिक प्रभाव भी इनको सीमा-

प्रान्तो तक सीमित रहा। यदि मुसलमान भारत मे न आये होते, तो भारतवासी सुखी, समृद्ध और शान्त भारतवर्ष मे रहते होते। उनकी कृषि, व्यापार, शिल्प ठीक अवस्था मे था। रहन-सहन साधारण और कम खर्चीला था। सम्पत्ति अटूट थी। सामाजिक जीवन मे धार्मिक विश्वासो और ब्राह्मणो का अशान्त प्रभुत्व था, परन्तु ईसाइयो और मुसलमानो की अपेक्षा फिर भी उनमे सहनशीलता थी। मुसलमान भी कदापि इतने विजयी न हुए होते, यदि उनमे जहाद का प्रबल जोश और लूट की प्रबल लालसा न होती। पाठक देखते है कि योरोप और मध्य-एशिया की भाति भारत मे भी उनका विरोध ढीले हाथो से किया गया था, और समय का प्रभाव था कि मध्य एशिया तो उनके चरणो मे लोट गया, और योरोप अछूता बच गया तथा भारत मध्य मे ही भ्रष्ट होगया। बिनकासिम से बहादुरशाह जफर तक मुसलमानो का लगभग ११०० वर्ष तक काल रहा, और आज उनकी भाषा, सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा-नीति और जीवन भारत मे एक सिरे से दूसरे सिरे तक व्याप्त है। ७ करोड मुसलमान अब भी देश के निवासी हैं और देश पर उनके वही अधिकार है, जो किसी भी देश-वासी के अपनी मातृ भूमि पर होने चाहिये। इनमे दरिद्र, अमीर, शिक्षित, मूर्ख, रईस, राजा, नवाब सभी तरह के आदमी हैं।

यह हम कह चुके है कि भारत मे आज से पूर्व मुसलमानो की विजयिनी सेना ने हिन्दुकुश के पश्चिम मे समस्त एशिया और अफ्रीका तथा दक्षिणी-योरोप को रौद डाला था। पंजाब मे घुसने से पूर्व वे स्पेन और फ्रान्स को दलित कर चुके थे। कुस्तुनतुनिया का प्रताप लूटकर वे साहसी हो गये थे। फिर भी वे इससे पूर्व भारत मे घुसने का साहस न कर सके। इसका कारण भारतीय-राजाओं का सैनिक प्रबन्ध था। उन्हे विदेशियो की टक्कर लग चुकी थी, और तातारो और हूणो से वे लोहा ले चुके थे। वे खूब कट्टर योद्धा और मुस्तैद सिपाही थे। दुःख था, तो यही कि वे परस्पर संगठित और मित्र न थे, और न वे अच्छे सेनापति व रण-नीति कुशल थे। अपनी शक्तियो को परस्पर दलित करने मे लगाये ही रहते थे।

इस समय विन्ध्याचल के उत्तर मे तीन जबर्दस्त राजा बडी-बडी नदियो की घाटियो मे शासन कर रहे थे। सिन्धु सिंचित मैदानो और

मथुरा के पश्चिमोत्तर प्रान्त में राजपूतों का आधिपत्य था। मध्य भाग में ही शक्ति सम्पन्न राजाओं के अधीन विभक्त था, जिनका आधिपत्य सर्वोच्च नहीं था। गंगा के बीच की घाटियों में, पालवंशी बौद्ध राजा थे। उत्तर और दक्षिण भारत के बीच विन्ध्याचल के पश्चिम में मालवा का हिन्दू राज्य और दक्षिण में चेर चोल, पाण्ड्य राज्य फैले हुए थे।

यद्यपि ये राज्य बिखरे हुए थे पर विदेशियों के आक्रमण को रोकने के लिए यथेष्ट थे। यदि किसी एक सम्राट् की अधीनता में यह समस्त शक्तियाँ एकत्र होती थीं, तो वे अजेय समझी जाती थीं। फिर जैसा हुआ राज्य विस्तार का झगड़ा खड़ा करता था। यही कारण था कि कासिम से मुहम्मद गोरी के समय तक भारत पर मुस्लिम आक्रमणों का वह प्रभाव नहीं पड़ा जो एशिया भर में उनका पड़ा था। मुहम्मद गोरी का प्रभुत्व भी सफल होना सम्भव न था यदि पृथ्वीराज की कमर और निरन्तर युद्धों से शक्ति का ह्रास न हो गया होता। परन्तु सच्चे साम्राज्य की नींव तो अकबर के ही काल में प्रौढ़ हुई जबकि हिन्दू-सरदारों और हिन्दू-नीति पर राज्य विस्तार किया। अकबर के समय तक तो प्रबल-से-प्रबल आक्रमण प्रजा के सहने पर भी हिन्दू शक्तियाँ बराबर उसे चैलेंज देती ही रहीं और अकबर की मृत्यु के २०० वर्ष बाद ही प्रतापी और अद्भुत मुगल साम्राज्य ध्वस्त हो गया तथा उसके उत्तराधिकारी को मराठों के हाथ में कैद होना पड़ा।

दक्षिण में तालीकोट के मैदान में एक बार हिन्दू शक्ति गिरी। पर एक सौ वर्ष में ही शिवाजी के रूप में यह फिर उठी और उसने बड़े बांकपन से पानीपत के मैदान में लड़ाई सारा मरहठे सर कटा दिये।

अकबर जैसे प्रतापी शत्रु के सामने भी, प्रताप जैसों ने २५ वर्ष तलवार चलाई, और औरंगजेब ने अपने शासन के ५० वर्ष चिन्ता और तलवार की धार पर काटे।

यह इस बात का प्रमाण है कि, भारत में कभी भी हिन्दू शक्ति नष्ट नहीं हुई। पृथ्वी-भर के इतिहास में ११०० वर्ष तक अराजकता में रहकर, अरक्षित जीकर, इतने आक्रमण, कत्ल और लूट मार सहकर, तथा ७०० वर्ष विदेशी धर्म शत्रुओं के शासन में रहकर और किस जाति ने अपने

जीवन को अक्षुण्ण बनाये रखा है? हिंदुओ के मुकाबिले की और कौन-सी जाति है?

हा, हम यह कह सकते हैं कि भारत मे एक क्षण के लिये भी मुसलमानो का शासन हिमालय से लेकर कन्या राजकुमारी तक और अटक से लेकर कटक तक अबाध नही रहा। सिर्फ डेढ शताब्दी तक मुसलमानो का शासन इतना रहा कि कुछ हिन्दू राजा उसे कर देते और अपना प्रतिनिधि भेजते रहे। बस, मुसलमानी साम्राज्य का सर्वाधिक वैभव यही पर समाप्त हो जाता है, पर इस डेढ शताब्दी की समाप्ति के पूव ही हिदुआ ने फिर अपनी विजय प्रारम्भ कर दी थी। दक्षिण पूव से राजपूत, पश्चिोत्तर से सिख, और दक्षिण से मरहठे दिल्ली के मुगल तख्त को ध्वस करने को बढे चले आ रहे थे। इस काल मे दक्षिण के ब्राह्मणो की राजनीति-सत्ता और शूद्रो की सैनिक-योग्यता का मिश्रण एक अपूव घटना थी। इस समय सिफ अगरेजी शक्ति ने ही बीच मे पडकर मुसलमानो के साम्राज्य को हिंदू हाथो म जाने से रोका।

अलबत्ता दो-चार ऐसे अवसर थे, जो हिंदुओ ने खो दिये, और यदि वे न खो दिये होते, तो आज दिल्ली मे हिंदू-साम्राज्य होता। एक अवसर यह था, राणा सागा ने अपने प्रबल-प्रताप से बारम्बार दिल्ली के बादशाहो को फतह किया था। उनकी शक्ति जजर थी—और बाबर इधर-उधर भटक रहा था। राणा सागा के वशधर उस समय अनायास ही भारत के चक्रवर्ती सम्राट् हो सकते थे। दूसरा अवसर वह था, जब पृथ्वीराज के पतन के बाद मुहम्मद गोरी लौट गया था। तब यदि चाहते, तो जयचन्द के वशधर दिल्ली को धर दबा सकते थे। तीसरा अवसर वह था—जब प्रताप के पास, काबुल-विजय कर, मानसिंह मिलने गये थे। अकबर से उनका भीतरी द्वेष चल रहा था। मुगल-सैन्य उनके हाथ मे थी। मन मे न-जाने क्या भाव आये थे। यदि प्रताप घमण्ड न करके मानसिंह को छाती से लगा लेते, तो अकबर ही मुस्लिम-साम्राज्य का अतिम बादशाह होता, और दुबल, ऐयाश और शराबी जहागीर को वह गद्दी नसीब न होकर सीसोदियो को मिलती। चौथा वह अवसर था, जब मरहठों ने दिल्ली

को रौंद लिया था, बादशाह को कैद कर लिया था, और विशाल भारत वर्ष चिरकाल तक लावारिस माल पड़ा हुआ था।

इन सुअवसरो से हिन्दुओ ने लाभ नही उठाया, इसका कारण यह था, कि साम्राज्यवाद और विजय दोनो ही के महत्व को वे नही जानते थे। उनमे एकदेशीयता न थी। वे अपने प्रान्तो को स्वदेश, अपनी जाति को जाति और अपने घर को घर समझते थे। समस्त भारत और उसके निवासियो के प्रति भी कुछ उत्तरदायित्व होते हैं, यह उन्होने सोचा भी नही। अन्तत इस लावारिस माल को सँभालकर रखने का कष्ट करना पड़ा—एक विदेशी गोरी जाति को।।

२७

भारतवर्ष की देशीय एकता

अधिक विदेशी विद्वान् भारतवष को एक महाद्वीप मान बैठे है, जो कई देशो का समूह है। भारतवष मे एक-देशीय भौगोलिकता मे सन्देह करने का कारण उसका इतना बडा विस्तार ही है। भारत का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक २००० मील से अधिक और पश्चिम से पूव कोई १९०० मील के लगभग है। पृथ्वी के इतने बडे टुकडे को सहसा एक देश मानने को बुद्धि तैयार नही होती। भारत का क्षेत्रफल सारे योरोप के क्षेत्रफल के तिहाई के बराबर है। हमारा भारत ग्रेट-ब्रिटेन से १४ गुना और फ्रास या जर्मनी से ६ गुना बडा है। (यह पुस्तक के लेखन काल का विवरण है।) इसी विस्तार के कारण लोग भारतवष को अनेक देशो का समूह मानते है। सतह भी इसकी सम नही,—कही गगन-भेदी पवत, कही समुद्र-तल और कही ऊँची-नीची भूमि। यही दशा जलवायु की भी है। कही शीत की अधिकता है, कही गर्मी की। जल वृष्टि का भी यही हाल है। यदि चेरा-पूँजी मे ४६० इन्च वृष्टि हो, तो ऊपरी सिंध मे पानी का कही नाम-निशान भी नही। धरातल मे विषमता और जलवायु मे समानता न होने से पशु-पक्षी भी भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। रग विरगे पक्षी, जैसे यहा देखने मे आते है—वैसे, और देशो मे बहुत कम दिखाई देते हैं। इन सब बातो का प्रभाव भारतवष की वानस्पतिक उपज पर भी पडा है, जिसका फल यह हुआ कि मनुष्य के लिये जो पदाथ आवश्यक है, वे सभी यहा होते हैं। सबसे बढ़कर भिन्नता भारतवष के मनुष्यो मे है। ससार की जन-सख्या का पाचवा भाग भारत मे पाया जाता है। इस जन-समुदाय मे न जाने कितनी

भाषाएँ और न-जाने कितनी रस्म रिवाजें प्रचलित हैं। शरीर की आकृति के विचार से भी भारतवर्ष में सात प्रकार के मनुष्य रहते हैं। बोली की भिन्नता का तो कहना ही क्या है! यदि मतों की तरफ दृष्टि डाली जाय, तो यही जान पड़ता है कि संसार-भर के मतों और धर्मों का बाजार भारत-वर्ष है।

इस दशा में यदि किसी को भारतवर्ष की एक देशीयता में सन्देह हो, तो आश्चर्य ही क्या है।

इतना होने पर भी मिस्टर यूसुफअली, ई० एगेट तथा वीसेण्ट ए० स्मिथ आदि इतिहासज्ञों का मत है कि भारतवर्ष एक ही देश है। प्राचीन विद्वानों ने भी भारतवर्ष को एक देश माना था। प्रथम तो 'भारतवर्ष' नाम ही से इस देश की एकता का अनुभव होता है। भारत में सिंधुनद होने के कारण ईरानियों ने इसका नाम—'सिंधुस्थान' या 'हिन्दुस्तान' रख लिया था। ग्रीस-निवासियों ने इण्डस (Indus) से इण्डिया बनाया। इन सब नामों में 'भारतवर्ष' नाम में एक खास महत्त्व है। जब कोई भिन्न भिन्न वस्तुओं के समूह का एकत्र वर्गीकरण करता है, तब वह उन्हें भेद होने पर किसी एक प्रधान सूत्र से अवश्य बाँधता है। तत्कालीन विद्वानों ने भी सम्राट् 'भरत' के नाम पर 'भारतवर्ष' नाम रक्खा, जैसे रोमुलस (Romulas) राजा के नाम पर रोम का नाम निर्देश हुआ। यह वह समय था, जब किरात हूण, यवन आदि देशों पर भारत का अधिकार था।

अब ऋग्वेद के एक मन्त्र को पढ़ियेगा—

> इमं मे गंगे यमुने-सरस्वती-
> शुतुद्रि-स्तोमं सचता परुष्ण्या।
> असिक्न्या मरुद्वृधेवितस्तयार्जीकीये
> शृणुह्या सुषोमया।"

क्या इस मन्त्र में भारतवर्ष-व्यापिनी नदियों का पाठ करने से समग्र भारतवर्ष का चित्र आँखों में व्याप्त नहीं हो जाता? क्या मातृ-भूमि की एक स्निग्ध विस्तृत मूर्ति मन में नहीं भासित होने लगती? ऋग्वेद के समय का भारत इतना ही भारत था, कि उत्तर में हिमालय पश्चिम में

सुलेमान पवत, दक्षिण मे समुद्र, पूर्व मे गङ्गा। यह आजकल के भूगोल से उत्तर-भारत है। यही आयवर्त्त था। मनु ने भी आयवर्त्त की यही भौगोलिकता लिखी है—

आसमुद्रात्तु वै पूर्वाया समुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तर गिर्यो शर्य्या वत्त विहुबुधा ॥

अमर-कोष मे भी ऐसी परिभाषा है—

आर्यवर्त्त पुण्यभूमिर्मध्य विन्ध्य हिमालयो।

महाभारत मे लिखा है कि सहदेव ने पाण्ड्य, द्रविड, उड्र, केरल, आन्ध्र आदि देशो को विजय किया था। भीष्म-पर्व मे दो सौ नदियो की सूची दी हुई है। उनमे दक्षिण की प्राय सभी नदिया का जिक्र है। वन पर्व मे जिन वनो का वणन है, उनमे दक्षिण के प्राय सभी वनो का जिक्र आ गया है, जिनमे अगस्त्य, वरुण, ताम्रवर्णी, कावेरी और कन्या-तीर्थो का वणन है। यह कन्या-तीर्थ अवश्य कन्या-कुमारी होगा। भीष्म-पर्व मे एक और महत्वपूर्ण बात लिखी है। वहा देश का आकार सम त्रिकोण सदृश लिखा है। यह सम-त्रिकोण चार छोटे-छोटे सम-त्रिकोणो मे विभक्त किया है। इस सम-त्रिकोण की शिखा कन्या-कुमारी मे और आधार हिमालय पवत माना है। कनिंघम साहब लिखते हैं कि यदि पश्चिमोत्तर दिशा में भारत का विस्तार गजनी तक माना जाय, और इस त्रिकोण का एक बिन्दु कन्या कुमारी और दूसरा आसाम समझा जाय तो भीष्म-पर्व का भारत का त्रिकोण बन जाय।

पुराणो मे वर्णित नवखण्ड और बृहत् सहिता मे वाराह मिहिर के लिखे हुए देश के और नौ विभागो से भी प्रतीत होता है कि अत्यन्त प्राचीन काल मे देश का सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्यो को था। कालिदास ने मेघदूत में राम-गिरि से अल्कापुरी तक अत्यन्त सुन्दर भौगोलिक वणन किया है।

धीरे-धीरे आयवर्त्त मे दक्षिणापथ भी पौराणिक काल मे शामिल हो गया। देखिए—

गगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नमदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निध कुरु।

यह श्लोक पुण्य —हिंदू स्नान करती बार पढा करते हैं। इस श्लोक मे मानो समस्त देश लिपटा हुआ है। एक और महत्वपूण श्लोक मिलता है, जिसमे देश को सात कुलपवता का देश माना गया है—

महेन्द्रो मलय सह्य शुक्ति मानक्ष पवत ।
विन्ध्यश्च पारिपत्रश्च सप्तेते कुल पवता ॥

एक श्लोक मे सब भारतवष के तीर्थों के जिक्र हैं —

अयोध्या, मथुरा, माया काशी, काञ्ची अवन्तिका ।
पुरी, द्वारावती चव, सप्तैता मोक्षदायिका ॥"

यह भारत के सात प्रधान नगरो की सूची है। इन स्थाना की यात्रा करना हिंदुओ का धम कहा गया है, और इनकी यात्रा करना मानो समस्त भारत का भ्रमण करना है।

श्री शकराचाय के चारो मठ भारत के चारा कोनो पर प्रतिष्ठित है। यह बात भी ध्यान ने योग्य है कि इससे कैसी सावदेशिक एकता उत्पन होती है। पुराणा के और श्लोक सुनिये—

सौराष्ट्रे सोमनाथश्च श्री श ले मल्लिकाजु नम् ।
उज्जयिन्या महाकाल ओंकार अमरेश्वरे ॥
केदार हिमवत्पृष्ठे डाकिन्या भीम श करम् ।
वाराणस्याञ्च विश्वेश त्र्यम्बक गौतमी तटे ॥
वद्यनाथ चिताभूमौ नाकेश द्वारिका वने ।
सेतु बन्धे च रामेश घुश्मे शञ्च शिवालये ॥
एतानि ज्योति लिङ्गानि साय प्रात पठेतर ।
सप्त जन्म कृत पाप स्मरणे त विनश्यति ॥

इन श्लोको से सहसा मन मे यह बात पैदा होती है, कि आजकल जगह-जगह के मुहानो पर मोर्चे बाँधकर जैसे किले बनाये गये, है उसी तरह प्राचीन विद्वानो ने इस तरह मन्दिर और तीर्थों की प्रतिष्ठा करके विस्तत देश का महान् एकीकरण किया था। प्राचीन साहित्य मे देश प्रेम और देश-भक्ति के कैसे ज्वलन्त भाव है। सुनिये।

त देव निर्मित देश ब्रह्मवर्त्त प्रचक्षते ।

गायन्ति देवा किल गीत कानि ।
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे ।
स्वर्गापि वर्गास्पद मार्ग भूते ।
भवन्ति भूय पुरुषा सुरत्वात् ।
जामीय नेतत कृ वय विलीने ।
स्वग प्रदे कर्म्मणि देह बन्धम् ।
प्राप्स्याम् धन्या खलु ते मनुष्या ।
ये भारते नेन्द्रिय विप्र हीना ।

जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी ।

इन तीथ-यात्राओ से भौगोलिक ज्ञान बढता था । तीथ-दर्शनो से भिन्न भिन्न स्थानो की कला कुशलता का ज्ञान प्राप्त होता था । सत्सग से ज्ञान वृद्धि होती थी । केदारनाथ जाते हुए हिमालय के स्वर्गीय पुष्पो का आनन्द आता था । जगन्नाथ जी पहुँचने पर समुद्र की तरगो का स्वाद मिलता था । प्रयाग मे गगा-यमुना का सगम दृष्टिगोचर होता था । भारत का एक भी सौन्दय-पूण स्थान ऐसा नही बचा, जहा कोई तीथ या देव-मन्दिर न हो । भारत का नैर्सगिक सौन्दय भोग विलास के लिये नही, मन और आत्मा को उच्च बनाने के लिये है । यदि निआगरा जल-प्रपात कही भारत के अन्तगत होता, तो वहा फैशनेबल हवाखोरी की जगह धार्मिक यात्री दिखाई देते, पार्को की जगह आश्रम और होटलो की जगह देव-मन्दिर दिखाई देते ।

महाभारत मे दी हुई तीथ-सूची देश भर के अनेक प्रसिद्ध नगरा की सूची है । पौराणिक काल में जो अभिप्राय तीर्थो से सिद्ध होता था—बौद्ध-काल मे वही अभिप्राय चैत्य, स्तूप और विहारो से सिद्ध हुआ । पौराणिक प्राचीन मन्दिरो की तरह यह स्थान भी तत्कालीन शिल्प-निर्माण-कला

के साक्षी है। चीन, लका और यूनान तक के यात्री इन्हे देखने भारतवर्ष मे आते थे।

कात्यायन ने चोल, पाण्डय और महिष्मती नामक दक्षिणी राज्यो का वर्णन किया है। ऐतिहासिक विद्वानो का मत है, कि कात्यायन नन्द-वशीय राजाओ के समय मे हुए हैं—जिनका काल ईसा से ४००० वर्ष पूर्व अनुमान किया जाता है। यूनानियो के प्रसिद्ध विजयी एलग्जेण्डर ने भारत के भौगोलिक विद्वानो से देश का नक्शा तैयार कराया था, और देश का वर्णन लिखवाया था। वह लेख—एलेग्जण्डर की मृत्यु पर सिल्यूकस के समय मे पैट्रोक्लिस के हाथ पडा, और स्ट्राबो ने उसी के आधार पर देश की माप की थी।

आर्य चाणक्य ने अपने प्रख्यात अर्थशास्त्र मे उत्तरापथ और दक्षिणा-पथ का विवरण दिया है।,उससे उस समय के भारत की आर्थिक दशा, कला-कौशल और व्यापार का पता लगाता है। अशोक के शिला लेखो मे भी चोल, पाण्डय, केरल, आन्ध्र आदि राज्यो का उल्लेख है। राजकुमार महेन्द्र का लका जाना और कुछ बौद्ध यात्रियो का चीन और मिस्र जाना भी इसका प्रमाण है। पातन्जलि के महाभाष्य मे वैदभ, काञ्जीपुर, केरल या मालाबार का जिक्र है।

यह हुई भौगोलिक और धार्मिक दृष्टि से एकता की बात। अब राजनैतिक दृष्टि से इस बात को देखिए। यह बात कहने की जरूरत नही है कि राजनैतिक एकता का कितना महत्व भौगोलिक एकदेशीयता पर पडता है, क्योकि उदहारण के लिये अगरेजी साम्राज्य का भारत मे विस्तार का परिणाम सम्मुख है। प्राचीनकाल मे भी ऐसे बडे बडे साम्राज्य कायम किये गये थे। ईसवी सन् से पूर्व अशोक का राज्य अफगानिस्तान से मैसोर तक फैला हुआ था। चौथी शताब्दी मे समुद्रगुप्त और उससे प्रथम चन्द्र-गुप्त का राज्य-विस्तार भी समस्त भारत को एकता के सूत्र मे बाधे हुए था। इसके बाद सातवी शताब्दी मे हर्षवर्धन, ग्यारहवी मे पृथ्वीराज और १६ वी मे अकबर और औरङ्गजेब ऐसे ही सम्राट हुए है। वैदिक साहित्य मे भी *सम्राट, अधिराज, राजधिराज आदि नाम* देखने को मिलते हैं। शुक्र-नीति मे सामन्त, माण्डलिक, राजा, महाराजा, सम्राट, विराट और

सवभौम आदि शब्द अपने अपने पद के सूचक मिलते है। अथववेद मे राज्य, स्वराज्य, साम्राज्य, वैराज्य और आधिपत्य शब्द मिलते हैं, जिनसे पता लगता है कि अत्यन्त प्राचीन काल से भारत मे विस्तृत साम्राज्य पद्धति रही है।

वैदिक यज्ञ के प्रकरण मे बताया गया है कि राजसूय और वाजपेय-यज्ञ राजनैतिक उद्देश्यो मे होते है। राजसूय से वाजपेय का महत्व अधिक था। यज्ञ की समाप्ति पर-राजसूय से राजा का पद मिलता था, परन्तु वाजपेय से सम्राट का पद मिलता था, सिंहासनारूढ होने पर 'सम्राज्य-मस्तै'—'सम्राज्यमन्तै, की घोषणा होती थी, और फिर सम्राट् से निवेदन किया जाता था—

"इय ते राडिति राज्य मेवास्मिने तद दधायथैन मासा दयति यन्तासी यमन इति यतार मेघन मे तद यमन मासा प्रजाना करोति ध्रुवोऽसि अरण इति ध्रुव से वैनमेतद् अरुणयस्मिल्लोके करोति कृत्यैत्वाक्षमाय त्वा प्यै पोषाय त्वेति साधवे त्वेत्येवतेदाह।"

अर्थात—यह आपका राज्य है। आप इसके स्वामी है। आप दृढ और स्थिर-वृत्ति है। कृषि, धन, धान्य, प्रजा का पालन और रक्षा करने के लिये आपको समपण किया जाता है।

ऐसे सम्राटो की सूची बनाई जा सकती है, जिनका जिक्र वेद, पुराण और महाभारत मे मिलता है। चाणक्य आय ने अपने अथशास्त्र मे भी चक्रवर्तियो की एक सूची दी है, जिन्होने राजनैतिक दृष्टियो से समस्त भारत को एक किया था, और चन्द्रगुप्त के विषय मे तो उसने लिखा है—"हिमे वत् समुद्रान्तर—चक्रवर्ति क्षेत्रम्।"

२८

हिन्दू-धम और समाज पर इस्लाम का प्रभाव

अब हम इस बात पर विचार करते हैं कि जिस समय भारत मे इस्लाम का प्रवेश हो रहा था, उस समय हिन्दू-समाज की क्या दशा थी।

७वी शताब्दी के मध्य मे सम्राट हर्षवधन की सत्ता समाप्त हुई, और शीघ्र-ही सारे भारत की शक्ति छोटे-छोटे टुकडो मे बिखर गई। पश्चिम से आगे बढकर राजपूतो ने उत्तर-पूव और मध्य-भारत मे छोटी-छोटी अनेक रियासतें पैदा करली। कुछ मिश्रित जातियो ने भी अपने को राजपूत कहना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार मुसलमानो के आक्रमण से प्रथम पञ्जाब से दक्षिण और बगाल से अरब सागर तक लगभग समस्त प्रदेशो पर राजपूतो का अधिकार था। ये तमाम छोटी छोटी रियासतें आपस मे लडती-झगडती रहती थी। परस्पर कोई मेल न था। न इनके ऊपर कोई एक बडी सत्ता थी। मगध, पाटलिपुत्र आदि के साम्राज्य चिह्न खण्डहर होगये थे। वैशाली, कुशीनगर, कपिलवस्तु, श्रावस्ति आदि प्रसिद्ध बौद्ध-नगर उजड गये थे। राजनीति और धार्मिक जीवन के साथ उस काल के हिदुओ का धार्मिक जीवन भी छिन्न-भिन्न होगया था। यही कारण था, कि बुद्ध की मृत्यु के लगभग ढाई-सौ वष के अन्दर बौद्ध धम ने उस जीण-शीण हिंदू-धम को निकाल कर बाहर कर दिया, और यद्यपि बौद्धो और हिदुओ मे बडे भारी युद्ध और विरोध हुए, पर दोनो धर्मों की दोनो धर्मो पर छाप पडी थी। हिंदू-कम-काण्ड और बौद्ध-धम मे आदि बौद्धो का-सा तत्व हिदुओ मे घुसकर बैठ गया था। उत्तरी भारत मे महायान सम्प्रदाय स्थापित हो चुका था, और बुद्ध के सिवा अनेक बोधिस्वत्वो

की और विशेषकर अमिताय की पूजा होने लगी थी। बौद्ध-मन्दिरो का कम-काण्ड हिन्दू मन्दिरो की पद्धति पर होने लगा था। बौद्ध-धम ने सस्कृत का माध्यम नष्ट कर पाली भाषा को अपने धम का माध्यम बनाया था, वह महायान सम्प्रदाय मे फिर से सस्कृत को प्राप्त हो गया था। ज्ञान का माग कम-काण्ड और भक्ति ने ग्रहण कर लिया था। धीरे-धीरे वैष्णव, शैव और तन्त्र सम्प्रदायो ने सगठन किया, और बौद्ध मत को प्रबल धक्के से भारत से निकाल कर बाहर कर दिया। इस घटना के बाद हिन्दू-धम फिर से भारत मे स्थापित हुआ—पर वह बहुत ही अपूण और भ्रामक था। कुछ थोडे से उच्च श्रेणी के लोग उपनिषद और दर्शन-शास्त्र के ज्ञाता बच रहे थे। पर अधिकाश पौराणिक गपोडे और ढकोसलो की भरमार थी। जाति-भेद खूब ज़ोर से बढ रहा था। ब्राह्मण अत्यन्त प्रबल हो गये थे। शूद्र दुखित हो रहे थे, और इस प्रकार भारत के सामूहिक जीवन का विकास असम्भव हो गया था। पण्डो और पुरोहितो के असाधारण अधिकार थे। असख्य देवी, देवता, मूर्ति, शक्ति, काली, भैरव, रुद्र, शिव की पूजा—जप तप, यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ, ब्राह्मणो का दान, तीर्थ-यात्रा, मन्त्र-जन्त्र और आडम्बरमय कमकाण्ड को धम माना जा रहा था। जनता मे अन्ध-विश्वास फैला था। छुआछूत का भूत सब के सिर पर सवार था। पाचवी शताब्दी के चीनी यात्री फाहियान ने काबुल से मथुरा तक महायान-सम्प्रदाय मे देखा था। शेष भारत से भी बौद्ध धम मिट चला था। इसके २०० वष बाद ह्वेनसाग ने उत्तर-भारत मे महायान सम्प्रदाय ज़ोर से फैला हुआ देखा था। उस समय उसने समस्त भारत मे शिव की पूजा खूब विस्तार से देखी थी। अयोध्या के निकट उसने दुर्गा के सामने नर-बलि होती देखी थी। बगाल के प्रसिद्ध सम्राट् अशोक ने—जो शैव था, बौद्धा समस्त विहारो को तोड-फोडकर उनके स्थान पर शिव-मूर्ति की स्थापना की थी, और बौद्धो को या तो कत्ल करा दिया जाता था, या अत्यन्त कष्ट और यातनाएँ देकर अपने राज्य से निकाल दिया जाता था। ह्वेन-साग ने नरमुण्ड माल गले मे पहिने कापलिक भी देखे थे। उसने शव और बौद्ध ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया मे सबल देखे थे। इसके सिवा अरब के प्रसिद्ध यात्री सुलेमान सौदागर मोहम्मद इब्ने इसहाक अलहीम, अलशहर-

स्तानी इत्यादि के ग्रथा मे भी उपयुक्त बाता का समर्थन होता है। यह परिस्थिति थी, जब हिन्दू-धर्म मे अधिक विचारशील पुरुष पैदा हुए। शङ्कर, रामानुज, निम्बादित्य, वल्लभाचार्य आदि सतो ने दक्षिण-भारत मे जन्म लिया, और हिन्दू-धर्म के सशोधित रूप का सन्देश जनता को सुनाना प्रारम्भ कर दिया। यह बात खास तौर पर ध्यान देने योग्य है, कि आरम्भ से ईसा की ८ वी शताब्दी तक समस्त धार्मिक और सामाजिक सुधार उत्तर-भारत मे ही आरम्भ हुए। पर आठवी शताब्दी के बाद यह स्थान दक्षिण को मिला, और यह बात १५ वी शताब्दी तक कायम रही। रामानुज, शङ्कर, निम्बादित्य आदि सभी दक्षिणवासी थे।

इन सभी विद्वानो ने प्राचीन भारतीय शास्त्रो ही के आधार पर जनता की ज्ञान-पिपासा शान्त की, और उन्हे सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा की। शकर को ही ले लीजिये।—उन्होंने अनेक सम्प्रदायो को अपने सिद्धान्तवाद के भीतर ले लिया, और सब की सगठित शक्ति को बौद्धो के विरुद्ध खडा कर दिया। इनकी भित्ति दार्शनिक थी—और इसी कारण इन्होने बौद्धो पर विजय प्राप्त की। तब बौद्धो को दार्शनिक ग्रन्थ रचने पडे। उन्होने सब वर्णो के लोगो को सन्यास-दीक्षा का अधिकारी घोषित किया। उन्होने साफ कहा—"सच्चा तत्वदर्शी मेरा गुरु है—भले ही वह चाण्डाल हो।" वैष्णवो और शैव आचार्यो ने शकर की प्रखर प्रतिभा, तीव्र प्रवचन शैली, और प्रकाण्ड दार्शनिक-ज्ञान ने सब के छक्के छुडा दिये।

रामानुज के भक्ति-मार्ग को दक्षिण से उत्तर भारत मे लाने का श्रेय रामानन्द स्वामी को है। रामानन्द ने विष्णु का स्थान राम को दिया, और प्रत्येक जाति के लोगो को अपने सम्प्रदाय मे सम्मिलित किया। तुलसीदास और कबीर उनके शिष्य थे। तुलसीदास ने राम का नाम घर-घर अमिट कर दिया।

अलबेरुनी लिखता है कि शैव और वैष्णव-सम्प्रदायो के सिवा शनि, सूर्य, चन्द्र, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, स्कन्ध, गणेश, यम, कुबेर-आदि की मूर्तिया भी भारत मे पूजी जाती है। बौद्ध और जैनो ने मास और मद्य का प्रचार बिल्कुल बन्द कर दिया है। परन्तु कापालिको और शाक्तो ने इन चीजो को धर्म का प्रधान अङ्ग बना दिया है।

ऐसा समय था, जब भारत मे इस्लाम का प्रवेश हुआ। यह हम बता चुके है कि अरब से योरप का सम्बन्ध इस्लाम के जन्म से पूर्व का है, और इस्लाम-धर्म के जन्म के बाद भी वह सम्बन्ध वैसा ही बना रहा—हम यह भी कह चुके हैं। उस समय बिना ही बल-प्रयोग इस्लाम के साधुओ ने लाखो हिन्दुओ को मुसलमान बना लिया था। पाठक अब यह भली-भाति समझ गये होगे कि इतनी आसानी से मुसलमान साधुओ ने जो हिन्दुओ को मुसलमान बना लिया इसके दो प्रधान कारण थे—एक यह कि उस समय भारत की सामाजिक और धार्मिक स्थिति अत्यन्त छिन्न-भिन्न और कमजोर थी, अपढ और दलित लोगो के लिये स्थान ही न था। दूसरे—इस्लाम के साधुओ के रहन-सहन और विचारो पर बौद्धो और हिन्दू-दार्शनिको का प्रभाव पडा था, और वे तत्कालीन हिन्दू दलितो के लिये अति अनुकूल और प्रिय थे। यही कारण था कि समस्त भारत मे इस्लाम का प्रचार बेरोक फैल गया था, और लाखो मनुष्य मुसलमान हो गये थे, जिनमे अधिक सख्या उन छोटी जातिवालो की थी—जो, वर्ण-व्यवस्था और जात-पाँत से कारण अत्यन्त तिरस्कृत थे।

हम बता चुके हैं कि ब्राह्मणो के अधिकार और शक्तिया बेतोल थीं। भारत की सम्पत्ति मन्दिरो मे झुकी पडी थी, और वे जिस भाति अछूतो से घृणा करते थे, उसी भाति नव-मुसलिमो से भी। इन घमण्डी ब्राह्मणो और उच्च जाति के हिन्दुओ पर तब कहर पडा—जब इस्लाम नगी तलवार लेकर बल पूर्वक भारत मे घुसा। मन्दिर तोडे गये, मूर्तियाँ भ्रष्ट की गईं, खजाने लूट लिये गये, और लाखो कुलीन ब्राह्मण दास बनाकर गजनी मे ले जाकर बेच दिये गये। इस प्रकार १२वीं शताब्दी के अन्त से १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक भारत मे तलवार का राज्य रहा।

परन्तु ज्यो ही इस्लाम के साम्राज्य स्थापित हो गये, बादशाहो ने दिल्ली और आगरे मे राजधानियाँ बनाई। तब समाज मे एक भीतरी क्रान्ति प्रारम्भ हुई। भारत के शिल्प, वाणिज्य, कला-कौशल, चित्रकला विज्ञान, वस्तु-शास्त्र आदि पर इस्लाम के इन अनुयायियो की गहरी छाप पडी।

सिंध पर ८वीं शताब्दी मे मुहम्मद-बिन-कासिम ने आक्रमण

किया इसके ३०० वर्ष बाद महमूद गजनवी के आक्रमण हुए। इन हमलो का कोई स्थायी प्रभाव भारत पर न था। १०० वर्ष बाद मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किया, और उसके आक्रमणो का प्रभाव पजाब मे स्थाई होने लगा। उस समय तक भारत की राजनैतिक अवस्था हद दर्जे तक पहुँची हुई थी। अन्त मे १३वी शताब्दी मे उत्तर-भारत पर मुसलमानो का राज्य स्थिर हो गया। इसके सौ वर्ष के अन्दर मैसूर तक अधिकाश भारत पर मुसलमानो का अधिकार फैल गया।

इससे, इसमे कोई सन्देह नही कि भारत की जातीयता को भारी धक्का लगा। पर मुसलमान भारत मे बस गये, और पहले लोगो के परिश्रम से उन्हे इस काम मे अधिक कठिनाई न उठानी पडी। वे एक ही पीढी मे भारतीय बन गये, और उनकी सस्कृति का प्रवेश भारतीय सस्कृति पर भी होने लगा।

सच्चे सम्राट् की भाति मुगलो ने भारत मे राज्य किया। मुगलो की राज्य-श्री बहुत बडी चढी रही। यदि यह कहा जाय, कि उस समय पृथ्वी भर मे कोई सम्राट् मुगलो से अधिक प्रतापी न था, तो अत्युक्ति नही।

ईसा की आठवी-शताब्दी तक भारत की स्थापत्य-कला पर बौद्धो की सस्कृति थी। ८वी से १३ वी शताब्दी तक इस कला मे हिन्दुओ के आदर्शो की प्रधानता रही। फिर भी बौद्ध मत का प्रभाव इस पर स्पष्ट दीख पडता रहा। यह बात निर्विवाद है कि प्रत्येक देश की स्थापत्य-कला पर उस देश की भौगोलिक स्थिति का प्रभाव पडता रहता है। भारत अभेद्य जगलो, प्रचण्ड ऋतुओ, बडी-बडी नदियो, पहाडो और घनी उपज का देश है। इसी कारण सदा से भारतीय स्थापत्य कला की स्थूलता और विस्तार पर अधिक जोर डाला जाता रहा है। भारतीय जगलो मे विविध वनस्पति देखने को मिलती हैं। इसीलिए प्राचीन शिल्प-कला मे लतागुल्म के विविध चढाव आपको देखने को मिलेंगे।

अरब, भारत की प्राकृतिक परिस्थिति के बिलकुल ही विपरीत देश है। वहाँ जङ्गल, रेगिस्तान और उजाड मैदानो की भरमार है। तेज गर्मी, इने गिने खाद्य-सामान, और रेत के भयानक पर्वत, इसी का प्रभाव मुसल

मानो की प्रारम्भिक स्थापत्य कला पर पडा है। साफ-सादी दीवारें, ऊँची मीनारे, वडे-वडे गुम्वद, वडे-वडे चौक उसी का प्रभाव है। उनका एकेश्वरवाद और मूर्ति विरोध भी उनके इस निर्माण मे सहायक हुआ है।

परन्तु विज्ञ पाठक देखेंगे, कि भारत मे मुसलमानो के बसते ही दोनो आदर्श मिल गये, और इस कला मे एक तीसरी नवीनता, जो बहुत सुन्दर थी—पैदा होगई। आगरे का ताज इसी मिश्रित सौन्दय का फल है, जिस पर भारत को अभिमान है, और ससार-भर के यात्री जिसे देखकर आश्चय चकित होते हैं। खोज करने से पता चलता है कि १३ वी शताब्दी के प्रथम की भारतीय शिल्प-सस्कृति पृथक-पृथक थी। परन्तु इसके बाद दोनो मे ऐसा मेल होगया कि वह एक नवीन ही वस्तु बन गई, और मिश्र, श्याम, ईरान, तुर्किस्तान-आदि की शिल्प सस्कृति उनके मुकाबले मे कुछ भी न रह गई। सोलहवी सदी के बने हुए मथुरा और वृन्दावन के कुछ मन्दिर, सोनागिरी के जैन-मन्दिर, विजयनगर की इमारतें और सत्रहवी शताब्दी का बना हुआ मदुरा का तिरुमलाई नायक का प्रसिद्ध महल भी इसी मिश्रित शिल्प का प्रसाद है। सोलहवी शताब्दी के लगभग राजपूतो ने छतरिया या समाधिया बनाने की परिपाटी चलाई, जो वास्तव मे मुसलमानो से सीखी गई थी। इमारतो मे महराव का उपयोग, गोल डाट की छते मुस्लिम शिल्प सस्कृति हैं। मुगलो ने बाग लगाने की कला मे भी विस्तार किया। काश्मीर का शालामार बाग मुगल-उद्यान-अभिरुचि का एक ज्वलन्त नमूना है।

चित्रकला मे मुगल बादशाहो ने भारी उन्नति की। सभी मुगल-बादशाहो ने हिन्दू, ईरानी, चीनी चित्रकार बडी-बडी तनख्वाहो पर रखे, और उन्होंने एक दूसरे की सहायता से अपनी कला को बहुत ही उन्नत किया। मुगल-काल की फारसी लिपियो मे जयपुर, ग्वालियर, गुजरात, काश्मीर-आदि देशो के अनेक चित्रकारो के चित्र हैं। उस समय दिल्ली और आगरे से उन्नत होकर चित्र-कला जयपुर, चम्बू, चम्बा, कागडा, लाहौर, अमृतसर और दक्षिण मे तन्जौर तक फैलती दिखाई देती थी। प्रो० जदुनाथ सरकार का कहना है—कि भारत मे मुगल काल मे चित्र-कला की जो

उन्नति हुई, वह असाधारण थी राजपूताना और अन्य हिन्दू राजदरबारो मे बादशाहो की अभिरुचि की नकल की जाती थी।

हम इस बात पर प्रकाश डालेंगे कि भारतीय संस्कृति पर मुसलमानो का नैतिक प्रभाव क्या पडा ? सम्राट हर्षवर्धन के बाद ७ वी शताब्दी से १६ वी शताब्दी के प्रारम्भ तक लगभग ९०० वर्ष के समय मे भारत मे कोई प्रधान शक्ति नही थी। समस्त देश छोटे-छोटे टुकडो मे छिन्न भिन्न था। यह हम पीछे कही कह भी आये है, वह समय भारत की अतिशय राजनैतिक दुर्बलता का था। इसी कमी को मुगलो ने १६ वी सदी मे सम्पूर्ण किया, और १८ वी शताब्दी तक एक महान साम्राज्य कायम कर दिया। यह मुगल-साम्राज्य राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था, उद्योग धन्धे, कला-कौशल, समृद्धि, शिक्षा, और शासन—सभी दृष्टि से गौरवान्वित था। मुगल साम्राज्य से प्रथम सम्राट् अशोक और समुद्रगुप्त के राज्य विस्तार भी असाधारण रहे। पर मुगल साम्राज्य मे इनसे यह विशेषता रही कि देश मे एकछत्रता उत्पन्न होगई। प्रो० जदुनाथ सरकार लिखते हैं—

" अकबर के सिंहासन पर बैठने के समय से मुहम्मदशाह की मृत्यु तक (१५५६—१७४८) मुगल-शासन के २०० वर्षो मे समस्त उत्तरीय भारत और अधिकाश दक्षिण को भी एक सरकारी भाषा, एक शासन-पद्धति, एक-समानसिक्के, और हिन्दू-पुरोहितो और ग्रामीणो को छोडकर जन-साधारण को एक भाषा प्रदान की। जिन प्रान्तो पर मुगल-दर्बार का दूर का प्रभाव था—अर्थात् जो मुगल दरबार से नियुक्त सूबेदार के आधीन था—चाहे वह हिन्दू राज्य हो या मुस्लिम,—कम-अधिक मुगलो की शासन प्रणाली, सरकारी परिभाषाओ, दर्बारी शिष्टाचार, और उनके सिक्को का अनुकरण करते थे।"

एक विद्वान ने लिखा है—

"मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत २० सूबे थे, जिन पर एक-ही प्रणाली से शासन किया जाता था, और विविध सरकारी ओहदो के नाम तथा उपाधियां सब एक समान थीं। *तमाम सरकारी मिसलो, फरमानो, सनदो,* माफियो, राहदारी के परवानो पत्रो और रसीदो मे एक फारसी भाषा का

उपयोग किया जाता था। साम्राज्य-भर मे एक-समान वज्न, एक से मूल्य, एक-से नाम, और एक-सी धातु के सिक्के प्रचलित थे।"

मुगल-बादशाहो की प्रारम्भिक भाषा ईरानी थी। पर उन्होने शीघ्र ही उर्दू-जबान को जन्म दिया, और उसे जबाने-हिन्दवी कहा। यह भाषा खूब उन्नत हुई, और मुसलमानो की मातृ भाषा बन गई। सिर्फ सरकारी कागजो मे फारसी का प्रयोग होता था। १८ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उर्दू साहित्य की दृष्टि से भी एक जबरदस्त भाषा बन गई। इस भाषा के अनेक प्रसिद्ध कवि हुए, जिनमे एक अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह भी थे।

उर्दू-भाषा की उत्पत्ति भी मुगलो के काल मे हुई। यदि आप हलवाई से मिठाइया लें, तो गुलामजामुन, बालूशाही, हलुआ, कलाकन्द, नानखताई, बरफी, आदि अधिकाश नाम उर्दू दीख पडगे। वास्तव मे इनका आविष्कार भी मुगल-काल मे हुआ था।

उर्दू का अर्थ लश्कर है। बादशाही सेनाओ मे, जहा अर्बी, तुर्क, ईरानी और हिन्दुस्तानी सिपाहियो की एक अजीब खिचडी पक रही थी—तब, उनके मुख से जो-जो अपनी भाषाए निकलती थी, वे सब भी परस्पर मिल-मिलाकर एक खिचडी भाषा होगई। इस भाषा का नाम उर्दू पडा। क्योकि यह उर्दू (लश्कर) की भाषा थी। राजा टोडरमल ने इसे फारसी' लिपि मे लिपि बद्ध किया, क्योकि वह लिपि मुसलमान बादशाह को प्रिय थी, और शाही भाषा की लिपि थी, साथ ही जल्दी और कम स्थान मे लिखी जाती थी, और सब राज-कर्मचारी, जो मुसलमान थे—उससे परिचित थे।

परन्तु यह फारसी-लिपि हिन्तोस्तानी भाषा को ठीक ठीक व्यक्त करने मे असमर्थ थी। क्योकि उसमे १४ ध्वनियो का अभाव था, जैसे—भ, छ, थ, ध, झ, ख, ढ, घ, फ, घ, ढ—आदि। इन ध्वनियो के लिए शब्द अरबी मे न थे। पर जब ईरान मे अरबी-लिपि आई, और ईरानियो ने उसे अपनी लिपि बनाया, तब उन्होने बिन्दु चढाकर चार नये सकेतो का काम चला दिया। उन्होने अरबी के काम, जीभ, रे अक्षरो मे दो-दो बिन्दिया और नून की टेढी रेखा कर, एक और टेढी रेखा बढाकर गाफ, नून, चे चार अक्षरो की सृष्टि करली है। बे से ग्रैन तक ऐसे कई अक्षर है, जिनके भेद का

ज्ञान नुक्तो की न्यूनाधिक संख्या से होता है। अरबी वर्णमाला की रचना करती बार अरबो ने इस नियम पर भी ध्यान रक्खा, कि किसी एक ध्वनि का उच्चारण-स्थान खोज निकालने पर, उस ध्वनि के निकटवर्ती, स्थानो से उच्चारित न होने वाली ध्वनियो के लिये नये-नये स्वतंत्र चिन्हो की सृष्टि न करके उसी ध्वनि के उच्चारण-चिन्ह मे थोडा फेर-फार कर दिया जाय। यह ठीक भी था, क्योकि उच्चारण-स्थानोकी निकटता के अनुसार उच्चारण-चिन्हो के स्वरूप मे भी विशेष भिन्नता न रहना उचित है।

जब यह लिपि ईरान से भारतवर्ष मे आई, तब वहाँ वालो ने देखा कि ईरानियो के संशोधन करने पर भी इस लिपि मे १५ ध्वनियो की कमी है। उन्होंने १४ ध्वनियाँ और जोड दी। परन्तु जैसे ईरानियो ने एक एक नुकते की जगह दो-दो चार-चार नुकते लगाकर, काम चलाया—वैसा न करके ज़ोय से काम लिया। शेष ११ ध्वनियो को उन्होने द्विमात्रिक बना लिया। अर्थात् इन ग्यारह चिन्हो मे जो प्रथम से मौजूद थे, एक और जोड दिया। पर पीछे से ये ध्वनियाँ एक-मात्रिक ही मानी गई, जैसाकि उर्दू-कविता से स्पष्ट होता है।

फिर भी जैसा चाहिये था, वैसा काम न चला। जिन्हे भ, फ, ढ आदि के बोलने का अभ्यास था, वे ही इसका ठीक-ठीक उच्चारण कर सकते थे। परन्तु अरब और ईरानी लोगो ने, जिन्हे इन अक्षरो का अभ्यास न था, उसका अपने ढग का एक विलक्षण ही उच्चारण शुरू कर दिया। उस परिभाषिक ध्वनि का उन्होने एक नियम भी बना लिया। उसी के अनुसार बनाये गये अरबी शब्दो के नाम अरबो ने अरब, और ईसाइयो ने मुफर्रस रख दिया। इस तरह अरबो ने ईरानियो और हिन्दुस्तानियो की और ईरानियो ने हिन्दुस्तानियो की विशेष ध्वनियो को अपने-अपने ढग पर उच्चारण करना शुरू कर दिया।

इस संघर्षण का प्रभाव संस्कृत और हिन्दी-लिपि पर भी पडा। कुछ अरबी ध्वनियो का हिन्दी लिपि मे अभाव था। पर हिन्दी ने ईरानियो की तरह बिन्दी लगाकर ख़, ग़, ज़, फ़, क़, अ बना लिये, और मजे मे काम चलाया फिर भी फारसी-लिपि ही उर्दू की लिपि रही। किन्तु उसमे जो हिन्दुस्तानी ध्वनियो का अभाव था—अब तक है। ऋ, ॠ, लृ, ल, क्ष, त

ज, ये अक्षर लिखने मे बडी कठिनाई पडती है। अलबेरूनी ने एक जगह लिखा है—"हमने हिंदुओ के किसी शब्द का शुद्ध उच्चारण निर्धारित करने के लिये अनेक बार बडी सावधानी से लिखा—परन्तु जब उनके सम्मुख फिर उन्हे पढा, तो वे उसे बडी मुश्किल से पहचान सके।"

पाठक देखें, कि १८ ध्वनियो का अभाव जिसमे है, उस लिपि मे वैसे संस्कृत जैसी भाषा के शब्द लिखे जा सकते थे। जबकि आजकल भी, जब अरबी-लिपि को भारत मे आये ८०० वर्ष होगये हैं क्षत्रिय को 'कशतरिय' और क्षेम को 'कशेम' तथा सुश्रुत को—'सुकश्रुत' लिखा जाता है। साधारण लेख भी बहुधा भ्रान्तिपूर्ण लिखे जाते हैं। एक चिट्ठी मे लिखा गया—"सेठजी अजमेर गये, बडी वही को भेज दो।" लिखा गया—"सेठजी आज मर गये, बडी बहू को भेज देना।" लिखा गया—"छुरी मारी थी।" पढा गया—"छडी मारी थी।" लिखा गया—"साहब आते हैं, दो किश्ती तैयार रखना।" पढा गया—"साहब आते है, तो कस्बी (वेश्या) तैयार रखना।"—इत्यादि प्रसिद्ध बातें है, और दस्तावेजा-आदि की बेईमानी तो सब जानते है।

मुगलो ही के जमाने मे तुलसी और सूर ने, भूषण और गग ने बिहारी और मतिराम ने अमर हिंदी की रचनाए की थी। वैष्णव लेखको ने इसी काल मे बग साहित्य मे अमर ग्रन्थ लिखे। बगाल के प्रसिद्ध लेखक दिनेशचन्द्र सेन लिखते हैं—

"बगला भाषा को साहित्य के पद तक पहुँचाने मे कई प्रभावो ने काम किया है। इसमे निस्सन्देह सब से अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव मुसलमानो का बगाल-विजय है। यदि हिन्दू-राजा स्वाधीन बने रहते, तो बगला-भाषा राजदरबारो तक शायद ही पहुँचती।" बगाल के नवाबो ने रामायण व महाभारत का संस्कृत से बगला से अनुवाद कराया था। बगाल के नवाब नसीरशाह ने १४ वी शताब्दी के प्रारम्भ मे बँगला मे महाभारत का अनुवाद कराया था। मैथिल कवि विद्यापति ने गयासुद्दीन और नसीरशाह की इस काम के लिये बहुत प्रशसा की है। इसी बादशाह ने मलधर वसु को बहुत-सा रुपया देकर और गुनराजखा खिताब देकर भागवत का बँगला मे अनुवाद करवाया था। राजा कस के उत्तराधिकारी मुसलमान

हो गये थे—उन्होंने कृत्तिवास को पूरी सहायता देकर रामायण का अनुवाद बँगला मे कराया था। हुसेनशाह के सेनापति परगलखाँ ने कवीन्द्र परमेश्वर से महाभारत का एक और अनुवाद कराया था। एक मुसलमान नवाब ने मालिक ने मुहम्मद जायसी की पद्मावत का बँगला मे अनुवाद कराया था। दिनेशचन्द्र लिखते हैं—"मुसलमान बादशाहो और नवाबो ने बहुत-से सस्कृत और फारसी के ग्रन्थो का अपनी ओर से बँगला मे अनुवाद कराया। × × × इसका अनुवाद हिन्दू-राजाओ ने किया, और अपने दरबार मे बगाली कवियो की नियुक्ति की।"

दक्षिण मे बहमनी बादशाहो ने ऐसा ही किया। आदिलशाही दफतरो मे मराठी भाषा का खूब उपयोग होता था, तब मराठो को भरपूर बड़े-बडे पद दिये जाते थे। कुतुबशाह मराठी का उत्कृष्ट कवि और पण्डित था। फलत मराठी भाषा मे फारसी और हिन्दी-शब्दो की काफी भरमार होगई, इसी प्रकार पजाबी और सिन्धी भाषाओ मे भी जीवन पडा। यदि देखा जाय, तो अनेक मुसलमान हिन्दी के उच्च कोटि के कवि और अनेक हिन्दू उर्दू के उच्च कोटि के कवि इसी मिश्रण से हुए, और हिन्दी, उर्दू, मराठी, पजाबी, गुजराती, बँगला,-आदि देशी भाषाओ मे फारसी, तुर्की-शब्दो और मुहाविरो की भरमार ही इसका कारण है।

अकबर ने फैजी की सहायता से अनेक महत्वपूर्ण सस्कृत-ग्रन्थो का फारसी मे अनुवाद कराया था, और दारा ने अनेक उपनिषदो और हिन्दू धर्म ग्रन्थो को फारसी मे अनुवादित कराया।

वैद्यक, ज्योतिष और गणित ने भी मुगल-राज्य मे खूब उन्नति की। १८ वी शताब्दी मे जयसिंह महाराज ने हिन्दू पचाङ्गो का सुधार करने के लिये जयपुर, मथुरा, दिल्ली और काशी मे ज्योतिष यन्त्रालय बनवाये और अरबी के आलमजस्ती का सस्कृत मे अनुवाद कराया। कीमियागिरी के बहुत-से नुस्खे, तेजाब, रसायन, कागज बनाना, कलई करना, चीनी मिट्टी का उपयोग मुसलमानो से भारत मे प्रचलित हुए।

अभिप्राय यह कि शताब्दियो तक भारत मे अराजकता रहने के बाद मुगलो के काल मे शिल्प, वाणिज्य, कला-कौशल बढे और यह बात यही तक न रही, प्रत्युत हिन्दुओ के कट्टर-धर्म मे भी भारी परिवर्तन हुए।

सम्राट् अकबर ने दीनेइलाही, अथवा सार्वजनिक धर्म की नींव रखी। उसने सहस्रों वर्ष की पुरानी प्रथा को, जिसके अनुसार प्रत्येक विजेता युद्ध-बंदियों को गुलाम बना लेता था, बन्द कर दिया, अनिच्छित वैधव्य, बाल-विवाह, सती-प्रथा को रोकने की भारी चेष्टा की। पर उसने इस काम के लिये तलवार न उठाई। वह बे-अन्दाज धन दान करता और तीर्थ-यात्राएँ करता था। उसने हिन्दू-मुस्लिम विवाहों की मर्यादा डाली। अकबर के बाद जहांगीर और शाहजहां ने भी इस मार्ग पर पद बढाया, और शाहजहाँ का काल मुगल-साम्राज्य का उन्नतकाल था।

इन सम्राटों के जीवन-काल मे बहुत-से ऐसे साधु-सन्त हुए—जिन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता को धार्मिक रूप दिया। इनमे एक कबीर थे। सुना जाता है, वे किसी विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, और एक मुसलमान जुलाहे ने उन्हें पाला था। ये रामानन्द स्वामी के शिष्य थे। उन्होंने बनारस मे अपना सत्संग शुरू किया, और हजारों शिष्य पैदा किये, जो, नीच-ऊँच, हिन्दू-मुसलमान दोनों थे। वे जन्म-भर जुलाहे का काम करते रहे। कबीर जात-पांत के विरोधी, वेदों शास्त्रों और कुरान सभी को गौण माननेवाले—सूफी साधु के समान भक्ति के संत थे। उन्होंने अपनी रमैनी (साखी) के जरिये हिन्दू-मुसलमान दोनों को समान धर्मोपदेश दिया, और निर्भय ही दोनों मतों की रूढ़ियों का खण्डन किया,—तथा प्राणिमात्र मे प्रेम, भक्ति, और एक-ईश्वर की भक्ति का उपदेश दिया। कबीर का मत इस पद्य मे सुनिये—

> हिन्दु कहूं तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहिं।
> पाँच तत्व का पूतला, गैबी खेले माहिं॥

कबीर के विचारों की छाप अकबर पर काफी पड़ी थी, और अकबर के दीने इलाही मत चलाने की भित्ति कबीर के ही सिद्धान्त हैं। कबीर के भी विचार उनके शिष्यों-द्वारा उत्तर से दक्षिण तक फैल गये।

यहाँ स्मरण रखने योग्य बात है कि १५ वीं शताब्दी मे समस्त पंजाब के नगर और ग्राम मुसलमान सूफियों और फकीरों से भरे हुए थे। पानीपत, सरहिन्द, पाकपट्टन, मुलतान और कच्छ मे प्रसिद्ध सूफी शेखों

की खूब भरमार थी। १५ वी शताब्दी के म०य मे नानक का ज म हुआ, और उ हे फारसी तथा सस्कृत दोनो भ.पाआ मे शिक्षा दी गई। ३० वप की आयु मे वे साधु हुए, और अपने मुससमान शिप्य मदीन को लेकर भारत, लङ्का, ईरान, अरव आदि देशो मे भ्रमण करने गये उन्होने पानीपत के शेख शरफ मुसलमान के मीर बाबा फरीद के शिप्य शेख इब्राहीम के साथ बहुत काम तक विचार-विनिमय किया। अ त मे उन्होने एक नये घम को ज म दिया, जो आजकल सिख धर्म कहता है। यह धम एकता और प्रेम का धम था, जो हि दू मुसलमान दोनो के लिए खुला था। नानक का कथन है—

ब दे एक खुदाय दे, हि दु मुसलमान।
दावा राम-रसूल कर, लडदे वेईमान॥

× × ×

ना हम हि दु ना मुसलमान।
दोनों बीच बसे शैतान॥
एकै, एको, एक सुभान॥
गुरुजी कहिया सुन अब्दुर रहमान॥
दावा भूलो नाँ इक्क पिछाणा॥

नानक ने गगा-स्नान, पूजा, जप, तप पाठ सभी व्यथ बताए हैं, वेद पुराणो को निरथक कहा है अवतार और प्रतिमा-खण्डन किया है, जाति भेद का विरोध किया है।

अपने एक पद मे वे कहते हैं—

"दया की मस्जिद बना, सचाई को मुल्ला बना, इ साफ को कुर्आन् बना, विनय को खतना समझ, सुजनता का रोजा रख, तब तू सच्चा मुसलमान होगा।"

मुगल-साम्राज्य की अ तिम परिस्थिति मे नानक के सम्प्रदाय बहुत उलट-पलट गये। इनके अतिरिक्त ध ना-जाट, पीपा, सेना नाई और रैदास चमार-आदि स तो ने भी वडी प्रसिद्ध प्राप्त की। इन सब के सिद्धान्त भी इसी भाति के थे। दादू कबीर के शिप्य थे। इन्होंने भी अपने घम का प्रचार किया। वह कहता है—

"दादू का शरीर उसकी मस्जिद है। जमात के पञ्च उसके मन के अन्दर है। यही पर उनका मुल्ला इमाम है। अलक ईश्वर को सामने खडी करके वही पर वह सिजदा करता है, और सलाम करता है।"

मलूकदास भी १६ वी शताब्दी के अन्त मे हुए, और १०८ वर्ष की आयु मे मरे। नैपाल और काबुल तक मे उन्होने मठ स्थापित किये। इनका मत भी उपयुक्त सन्तो के समान था—जो, हिन्दू-मुस्लिम दोनो की कट्टरता का विरोधी था। इनका कहना है—

माला कहाँ औ कहाँ तसबीह,
अपचेत इर्नाह कर, टेक न टेकें।
काफिर कौन मलेच्छ कहावत,
सन्ध्या निमाज समय करि मेख।
है जमराज कहाँ जमरील है,
काजी है आप हिसाब के लेखें॥
पाप और पुण्य जमाकर बूझता,
देत हिसाब कहाँ धरि फेंके।
दास मलूक कहा भरमो तुम,
राम रहीम कहावत एकै॥

सत्तनामी सम्प्रदायो के गुरु वीरभानु दादू के समकालीन थे, और उनका मत भी वैसा ही है।

इन सभी सम्प्रदायो और साधुओ का जन्म हिन्दू-मुस्लिम-एकता के सघर्ष से हुआ, इसमे तनिक भी सन्देह नही। ऊपर जिन सन्तो का जिक हम कर चुके हैं—उनके सिवा बावालाल, प्राणनाथ, धरनीदास, जगजीवन-दास, कुल्लासाहेब, केशव, चरनदास, सहजो, दयाबाई, गरीबदास, शिव-नारायण, रामचरण आदि के उपदेश भी इसी भाति के हैं।

स्वामी नारायण के मजहब को मुगल-बादशाह मुहम्मदशाह ने स्वीकार किया था। बादशाह का दस्तखती परवाना अभी तक इस सम्प्रदाय के मुख्य मठ (बलिया, जिले) मे मौजूद है। अठारहवी सदी के अन्त मे

सहजानन्द, हुलनदास, भीखा पनटूदास-आदि सन्ता के नाम और उनके सिद्धात वैसे ही हैं।

बङ्गाल, महाराष्ट्र भी इस धार्मिक क्रांति का प्रभाव पाया जाता है। बारहवी शताब्दी मे ही बगाल मे मुसलमाना की दरगाहो पर मीठा चढाना, कुरान पढना, और मुसलमाना के त्यौहार मनाना—इसी प्रकार मुसलमानो के हिन्दू-त्यौहारो का मनाना भी शुरू हो गया था। और एक नए देवता—सत्यपीर—की पूजा भी शुरू हो गई थी, जिसकी स्थापना गौड-सम्राट् हुसैनशाह ने की थी। १५ वी शताब्दी के अन्त मे चैतन्यप्रभु का जन्म हुआ। उस समय की बङ्गाल की सामाजिक दशा का वर्णन दिनेशचन्द्र सेन ने इस भाँति किया है—

"ब्राह्मणा का प्रभुत्व अति कष्टकर हो गया था। कुलीनता के दृढ होने साथ-ही जाति-भेद अधिकाधिक बडा होता गया। ब्रह्माण लोग कहने के लिये अपने धर्मो मे उच्चादर्शो का प्रतिपादन करते थे किन्तु जाति-बधन के कारण मनुष्य मे अतर बढता जा रहा था। नीची जातिया के लोग ऊँची जाति के लोगा के स्वेच्छाचार ने नीचे आह भर रहे थे। इन ऊँची जाति के लोगो ने नीची जातिवाला के लिय विद्या के द्वार बद कर रक्खे थे। उन्हे उच्च जीवन मे प्रवेश करने की मनाही थी, और नये पौराणिक-धर्म पर ब्राह्मणा का ठेका हो गया था—मानो वह कोई बाजारू चीज थी।"

चैतन्य ने इस पर गम्भीर विचार किया। उन्हाने मुसलमान साधुआ से एकेश्वरवाद के तत्व समझे और गुरु भक्ति और सेवा के उपदेश दिये। सब कर्म काण्डो को उसने त्याज्य बताया, और हिन्दु-मुसलमान, नीच-ऊँच सभी को दीक्षा दी।

चैतन्य के शिष्या मे कर्ताबाबा नामक एक मुसलमान साधु ने कर्ता-भज नानक सम्प्रदाय चलाया। इनके २२ शिष्य 'बाईस फकीर' नाम से प्रसिद्ध थे, जिनका मुखिया रामादुलाल था। इस मत के लोग एक ईश्वर को मानते थे, गुरु को ईश्वर का अवतार समझते थे, दिन मे ५ बार गुरु-मन्त्र का जप करते थे, मद्य मांस स परहेज करते थे, जात पाँत, ऊँच-नीच, हिन्दु-मुसलमान-ईसाई का उनमे भेद न था। सम्प्रदाय के सब लोग साथ मिलकर भोजन करते थे।

बौद्धो के अंतिम दिनो मे, जब बौद्धो के ऊपर शैवो के अत्याचार मुसलमान होते थे—तब बौद्धो को मुसलमानो से बहुत सहायता मिली थी। तत्कालीन बङ्गला-बौद्ध-ग्रन्थो मे ब्राह्मणो के प्रति तिरस्कार और मुसलमानो के प्रति सम्मान के भाव से भरे पडे हैं।

महाराष्ट्र की तत्कालीन समाज-पद्धति पर प्रसिद्ध महाराष्ट्र-विद्वान् महादेव गोविन्द रानाडे इस भाति प्रकाश डालते हैं—

"इस्लाम का कठोर एकेश्वरवाद कबीर, नानक-आदि साधुओ के चित्तो मे घर कर गया। हिंदू त्रिमूर्ति दत्तात्रेय के उपासक उनकी मूर्ति को मुसलमान फकीर के से कपडे पहनाते थे। यही प्रभाव महाराष्ट्र की जनता के चित्त पर और भी अधिक जोरो मे काम कर रहा था। वहाँ पर ब्राह्मण और अब्राह्मण दोनो के प्रचारक लोगो को उपदेश दे रहे थे कि—राम और रहीम को एक समझो, कर्मकाण्ड और जाति-भेद के बंधनो को तोड दो, ईश्वर मे विश्वास और मनुष्य-मात्र के साथ प्रेम से मिलकर सब अपना एक धर्म बनाओ।"

इस प्रकार के उपदेश देने वाला महाराष्ट्र मे पहला साधु-नामदेव हुआ। नामदेव का गुरु खेचर था। उसका कहना था—"पत्थर का देवता कभी नही बोलता तो वह हमारे ऐहिक दु खो को कैसे दूर कर सकता है? पत्थर की मूर्ति को लोग ईश्वर समझ बैठते हैं। किन्तु सच्चा ईश्वर बिलकुल दूसरा ही है। यदि पत्थर का देवता हमारी इच्छा पूर्ति कर सकता है-तो गिरने पर वह टूटता क्यो? जो लोग पत्थर के देवता की पूजा करते हैं, वे अपनी मूर्खता से सब कुछ खो बैठते हैं।"

नामदेव के शिष्यो मे मुसलमान, अहीर, कुरमी, स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण, मराठा, दरजी, कुम्हार, भगी, चमार, ढेढ और वेश्याएँ तक थी।

बाहिराम भट्ट, दो दफे हिन्दू से मुसलमान और मुसलमान से हिन्दू हुआ उसने कहा—"न मैं हिन्दू हूँ, और न मैं मुसलमान।

शेख मुहम्मद के अनुयायी मक्का और पण्ढरपुर के मन्दिर दोनो की यात्रा करते, रोजे और एकादशी व्रत रखते थे। सन्त तुकाराम भी ऐसे ही साधु थे। उन सन्तों के नवीन विचारो से जो बौद्ध और मुसलमानो के सम्मिश्रण से पैदा हुए थे—मराठी साहित्य उत्पन्न हुआ। जाति-बधन

ढीला हुआ, स्त्रियो का पद ऊँचा हुआ। उदारता और दयालुता फली। इस्लाम के साथ हिंदू-मत का मेल हुआ। कर्मकाण्ड, तीर्थ-आदि का महत्व घटा, और सब भाँति से राष्ट्रीय क्षमता की वृद्धि हुई।

परन्तु दारा के पतन और औरङ्गजेब के उदय के साथ ही मुगल-साम्राज्य का सौभाग्य नष्ट हुआ। दारा अपने पिता का सच्चा प्रतिनिधि था। उसके विचार बहुत उत्तम थे। औरङ्गजेब ने धार्मिक सकीर्णता को अपनी राजनीति बनाया, जिससे चिढकर बहुत-से राजपूत, मराठे, सिक्ख-राजे उसके विरुद्ध उठ खडे हुए। सम्पूर्ण देश ही विरोधी शक्तियो मे उठ खडा हुआ, और हिंदू मुस्लिम ऐक्य की सम्भावना हवा होगई। औरङ्गजेब कठोर, सयमी और परिश्रमी व्यक्ति था। इसलिये उसके जीते-जी विद्रोह की आग न भडकने पाई। उसका वह दमन करता रहा। इस बादशाह ने राज्य भी बहुत दिन तक किया, और एकता के विध्वस होजाने तथा सकीर्णता के प्रबल होजाने के काफी अवसर मिले। उसके मरते-ही साम्राज्य के टुकडे-टुकडे होगये। देश के सभी उद्योग धन्धे, समृद्धि, व्यापार छिन्न-भिन्न होनेलगे।

औरगजेब के उत्तराधिकरियो ने फिर अपने पूर्वजो की रीति का पालन करने की चेष्टा की। शाहआलम ने पूना के पेशवा को अपने राज्य का वकील बनाया, तथा माधोजी सिंधिया को देहली और आगरे का सूबेदार बनाया। शाहआलम के पुत्र अकबरशाह ने राजा राममोहन राय को राजा का खिताब देकर तथा अपना एलची बनाकर इगलैड भेजा। अन्तिम सम्राट बहादुरशाह तो हिंदू मुसलमानो को एक-दृष्टि से देखते ही थे। बगाल मे पलासी-युद्ध के बाद तक बडे-बडे प्रान्तो की दीवानी बगाल के हिंदू जमीदारो के हाथ मे थी, और उनमे तथा मुसलमानो मे किसी भाति का भेद-भाव नवाब के दरबार मे नही माना जाता था।

सिराजउद्दौला का सबसे अधिक विश्वस्त अनुचर राजा मोहनलाल था, जिसने पलासी युद्ध मे नवाब के लिये प्राण दिये। महाराजा नन्दकुमार भी उनके एक दीवान थे। पजाब मे महाराज रणजीतसिंह के कई मन्त्री मुसलमान होते थे। होलकर और सिंधिया के दीवान और उच्चाधिकारी

बहुधा मुसलमान होते थे। हैदरअली और टीपू सुलतान के प्रधानमन्त्री हिन्दू थे। नाना फडनवीस हैदरअली को बहुत मानते थे।

परन्तु शोक की बात तो यह थी कि दिल्ली की केन्द्रीय शक्ति छिन्न-भिन्न हो चली थी, और देश की राजनीति राष्ट्रीयता से रहित थी। इसी का फल यह हुआ कि अगरेज़-सत्ता ने आसानी से, केवल जादू के जोर पर, औरगजेब की मृत्यु के पचास वर्ष बाद ही—पलासी के मैदान मे ऐसी विजय प्राप्त की, जिसे पढ-सुनकर ससार के राजनीतिज्ञ चिरकाल तक आश्चर्य करेंगे।

युद्ध विद्या और किले बन्दी के कामा मे भी मुगलो ने बहुत उन्नति की। बन्दूका और तोपो का रिवाज अधिकतर मुगलो ही के समय मे फैला। फौज की, मालगुजारी की, बन्दोबस्त की, हिसाब-खाते की, जो व्यवस्था मुगलो ने की—वह अत्यन्त प्रशसनीय थी।

तिथि-वार ठीक-ठीक रोज़नामचा या इतिहास लिखना हिन्दुओ ने मुसलमानो ही से सीखा था। बौद्धा के ह्रास होने के बाद से भारतीय व्यापार बहुत गिर चला था। वह मुगलो के काल मे फिर से उन्नत हुआ। मुगल-राज्य के लगभग अन्त तक अफगानिस्तान, दिल्ली के बादशाह के आधीन था, और अफगानिस्तान के जरिये बुखारा, समरकन्द, बलख, खुरासान, ख्वारज़िम और ईरान के हज़ारो व्यापारी तथा यात्री भारत मे आते थे। जहागीर के काल मे प्रति-वर्ष सिर्फ बोलन दर्रे से १४ हजार ऊँट माल से लदे आते थे। इसी प्रकार पश्चिम मे ठट्ठा, भडौंच, सूरत, चाल, राजापुर, गोआ, कारवार और पूर्व मे मछलीपट्टन तथा अन्य बन्दरगाहा से हज़ारो जहाज प्रति-वर्ष अरब, ईरान, तुर्क, मिश्र अफ्रीका, लका, सुमात्रा, जावा, स्याम और चीन से आते-जाते रहते थे।

बर्नियर कहता है—

"यह बात भी कम ध्यान के योग्य नही है, कि ससार मे घूम घामकर सोना-चाँदी जब भारतवर्ष मे पहुँचता है, तो यही खप जाता है। अमरिका से जो रुपया योरुप के देशो मे फैलता है, उसमे से कुछ तो उन वस्तुओ के बदले मे, जो टर्की (रूस) से आती हैं, अनेक द्वारो से टर्की म चला जाता है, और कुछ समरनोक बन्दरगाह के मार्ग से ईरान मे पहुँच जाता है।

वहाँ रेशम योरप मे आता है, टर्की की यह दशा है कि वहा के लोग उस सामान के विना, जो यमन से आता है, रह ही नही सकते, और टर्की, यमन तथा ईरान को भारतवष की वस्तुओ की आवश्यकता बनी रहती है। इस प्रकार मुखाबन्दर मे, जो लाल समुद्र के किनारे पर स्थित है, और बसरे मे, जो फारस की खाडी के सिरे पर है, तथा अब्बास-बन्दर मे, जो सुमात्रा टापू के पास है—इन देशो से रुपया आता है, और वहा से उन जहाजो पर लादकर जो अच्छी ऋतुओ मे भारतवष का माल लेकर इन प्रसिद्ध बन्दरगाहो मे आते हैं—भारतवष मे पहुँच जाता है। यह भी विदित हो, कि हिन्दुस्तानियो, डचो, अगरेजो और पुर्तगीजो के सब जहाज, जो हर-साल हिन्दुस्तान का माल पेगू, तेनासरम, सिलोन, अचीन, मगसर, मलयद्वीप, मोजाम्बिक-आदि स्थानो मे ले जाते हैं, वे भी उसके बदले मे चादी-सोना ही लाते है, और यह भी उस रुपये की तरह—जो मुखाबन्दर, बसरा, और अब्बास बन्दर से आता है, यही रह जाता है। जो सोना-चाँदी डच लोग जापान की खानो से निकालते हैं, उसमे भी थोडा बहुत किसी न-किसी समय यहाँ आता रहता है, और जो रुपया सीधे माग से फ्रास और पुर्तगाल से आता है, वह भी कदाचित ही यहा से लौटकर बाहर जाता है।

"यद्यपि में जानता हू कि लोग यह कहेगे, कि भारतवष को तावा, लौग, जायफल, दालचीनी-इत्यादि चीजो की आवश्यकता रहती है, जिनको डच, इगलैण्ड, जापान, मलाका और सिलोन से लाते है, और सीसा भी (शीशा नही) बाहर से आता है, जिसमे से थोडा-सा इगलैण्ड से अगरेज भेजते हैं। इसके अतिरिक्त यद्यपि फ्रास से बानात और अन्याय चीजें आती है, और दूसरे देशा के घोडो की भी आवश्यकता भारत मे रहा करती हैं, जो, प्रति-वष २५ सहस्र से अधिक उजबके देश (तुर्किस्तान) से और बहुत से कधार होकर ईरान से और मुखा बन्दर, बसरा और अब्बास-बन्दर होकर रथओपिया (हब्श) अरब और फारस से आते हैं। उसी प्रकार यद्यपि बहुत-से तर और सूखे मेवे समरकन्द, बलख, बुखारा और ईरान से आते हैं, जैसे-सरदे, मेवे, नाशपाती, अगूर, जो अधिकता से देहली मे खच होता है और जाडो-भर विकता रहता है, तथा बादाम, पिस्ते, पीपल, आलूबुखारी, किशमिश इत्यादि, जो बारह महीने बिकते

रहते हैं। उसी तरह कौडियाँ मलय-द्वीप से आती है, जो पैसे-धेले आदि के बदले मे कम मूल्य पर मिलती है। अम्बर ईरान, मलय-द्वीप और मोज़ाम्बिक से आता है। गडे के सीग, हाथी-दात और गुलाम एथिओनिया से आते हैं। मुश्क और चीनी के बतन चीन से आते है। मोती, समुद्रो और टूटीकोरन से, जो लका-टापू के निकट है, आता है,—तोभी इन चीजो के बदले मैं भारतवर्ष से चाँदी सोना बाहर नही जाता। क्योकि जो व्यापारी ये चीजे लाते हैं—वे इसमें अधिक लाभ समझते है। उनके बदले मे वे यहा की वस्तुएँ ही अपने देशो को यहा से ले जाते हैं, सो यद्यपि हिन्दुस्तान मैं बाहरी देशो से प्राकृतिक या बनावटी चीजें आती है, तथापि वे ससार-भर के, सोने या चादी के एक बडे भाग के यही रह जाने मे (जिनका अनेक द्वारो से यहाँ आगमन होता है) रुकावट नही डालती, और जो चादी सोना एक बार यहाँ आता है, वह कठिनता से पुन यहाँ से बाहर जाता है।"

बर्नियर औरङ्गजेब के समय की गिरती हुई दशा का इस प्रकार वणन करता है—

"जब कोई दरबारी या पदाधिकारी, चाहे वह कितना ही योग्य और बडा हो—आता है, तो उसकी सम्पत्ति बादशाही खजाने मे चली जाती है। उससे बढकर यह बात है, कि हिदुस्तान की सब जमीन, बागो और मकानो को छोडकर, जिनके बेचने-इत्यादि की अनुमति प्राय सवसाधारण को दे दी जाती है, बादशाह की सम्पत्ति है। मैं अनुमान करता हूँ कि इन बातो मे मैंने प्रमाणित किया कि यद्यपि सोने-चादी की खानें यहाँ नहीं हैं, तो भी चाँदी-सोना यहाँ अधिकता से है, और यह कि मुगल बादशाह, जो इस देश के बडे भाग का स्वामी है उसकी आमदनी बहुत-ही अधिक है और वह बडा ही धनाढ्य है।"

शाहजहाँ, जो बहुत कम खर्च करनेवाला था, जो किसी बडी लडाई मे फँसे तथा उलझे बिना चालीस वष से अधिक समय तक राज्य करता रहा, कभी ६ करोड से अधिक रुपया इकट्ठा न कर सका। परन्तु इस धन मे मैंने उन अगणित सोने-चाँदी की तरह-तरह की चीजो को, जिन पर बहुत अच्छे काम बने हुए हैं, तथा बडे-बडे मूल्य के मोतियो और भाँति-भाँति के अमूल्य रत्नों को सम्मिलित नही किया है। मुझे सन्देह है

कि इससे अधिक रत्न कदाचित् ही ससार के किसी बादशाह के पास हो। केवल एक तख्त ही—यदि मैं भूलता न होऊँ—तो, तीन करोड के मूल्य का है। ये सब जवाहरात और बहुमूल्य वस्तुएँ राजपूतो के प्राचीन राजवशो, पठान बादशाहो और अमीरो से लूटी तथा एक लम्बी मुद्दत मे इकट्ठी की हुई हैं। प्रत्येक बादशाह के समय राज्य के अमीरो की मामूली वार्षिक नजरो के रुपये, जो उनको अवश्य ही देने पडते हैं, उसकी भी सख्या बढती गई है। यह सब खजाना तख्त का माल समझा जाता है, और इनको उपयोग मे लाना अनुचित है। यहाँ तक कि स्वय बादशाह भी—चाहे कैसी ही आवश्यकता क्यो न हो—इसमे से थोडा-सा रुपया भी बडी कठिनता से प्राप्त कर पाता है।

यद्यपि चाँदी-सोना और देशो से घूम घामकर अन्त मे भारतवर्ष मे ही आजाता है, तो भी और देशो की अपेक्षा यहाँ अधिक दिखाई नही देता, और भारतवासी, दूसरे देशो के निवासियो के समान सन्तुष्ट प्रतीत नही होते। इसका कारण यह है, कि प्रथम तो बहुत-सा माल बार-बार लगाये जाने, जैसे औरतो के हाथो की चूडिया, कडा, कानो की वालिया, नाक की नथा, हाथ की अँगूठियो आदि के बनाने मे, छीज जाता है। इससे भी अधिकाश जरदोज़ी, कारचोबी के काम के कपडा—इलायचो, पगडिया के तुर्रो, सुनहरे रुपहरे कपडा, ओढनिया, पक्टो, मन्दीलो और कमख्वावा के बनाने मे खर्च हो जाता है, जिस पर सुननेवालो को विश्वास नही होता। सेनाओ मे अमीरो से लेकर सिपाहियो तक, कुछ-न-कुछ मुलम्मेदार और, सुनहरी-रुपहरी चीजें तडक-भडक के लिये पहनते ह। एक अदना सिपाही चाहे कुटुम्ब भूखो मरता रहे—जो एक साधारण बात है—अपनी स्त्रियो के लिये गहने अवश्य गढवाएगा।

जागीरदारो, प्रान्तीय अधिकारियो और तहसीलदारो का घोर अत्याचार—जिसे, यदि बादशाह भी रोकना चाहे तो रोक नही सकता—विशेषत उन प्रान्ता मे जो राजधानी के निकट नहीं हैं, इतना बढा हुआ है कि खेतिहर और कारीगरो के पास—उनके जीवन-निर्वाह के लिये कुछ भी नही छोडता, और वे दीनता तथा दरिद्रता मे मरा करते है। इसके अतिरिक्त इन्ही अत्याचारो के फल-स्वरूप उन बेचारो के कोई सन्तान नही

होती। यदि, हुई भी तो असमय-ही क्षुदा से पीडित हो, ससार से चल वसती है। सक्षेप मे यह कि इन उपद्रवो और अत्याचारो के कारण कृषक अपनी जन्म-भूमि छोडकर, कुछ सुख मिलने की आशा से किसी पडौसी-राज्य मे चले जाते हैं—या सेना मे जाकर किसी के पास नौकर हो जाते हैं। कारण कि, भूमि-सम्बन्धी काय वडी कठिनता से होता है, और कोई भी व्यक्ति इसके योग्य नही पाया जाता, जो अपनी इच्छा से उन नहरो और उन नालियो की मरम्मत करे—जो सिचाई के लिये बनी हुई है। भूमि का वडा भाग सूखा और खाली पडा रहता है। बात भूमि तक ही नही है। वहुत-से घरो की भी ऐसी-ही दशा है। बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो नये मकान बनवाते या मकानो की मरम्मत करवाते हैं। एक ओर तो तो कृषक अपने मन मे यह सोचते है कि क्या हम इस वास्ते परिश्रम करें कि कोई अत्याचारी आवे, और हमारा सव-कुछ छीन ले जावे, और हमारे निर्वाह को भी एक दाना न छोडे। दूसरी ओर जागीरदार सूबेदार और तहसीलदार यह सोचते हैं कि, हम क्यो सूखी और उजाड भूमि की चिता करें? अपना रुपया और समय क्यो इसके उपयोगी वनाने मे व्यय करें,—न मालूम, किस वक्त वह हमारे हाथ से निकल जाय, और हमारे उद्योग तथा श्रम का फल न हमे मिले, न हमारे वशजो को,—अतएव भूमि से जो कुछ मिल सके, ले लें, और जो न मिले, न सही। खेतिहर भूखो मरें या उजड जाएँ—हमे क्या? जब हमको भूमि छोड देने की आज्ञा होगी, इसे ऊजड छोडकर चल देंगे।

हिंदुस्तान का कला कौशल या यहाँ की अत्यन्त सुदर कारीगरी—कभी के नष्ट हो लिये होते, यदि वादशाह से अमीरो के यहा वहुत-से कारीगर नौकर न होते, जो स्वय उनके घरो मे और वादशाही कार्यालयो मे बैठकर खुद करते तथा अपने शिष्या और लडको को सिखलाया करते है। इनाम की आशा और कोडो का भय, उन्हे कलापूण उन्नति के माग मे लगाये रहता है। यह भी कारण है कि कुछ धनी व्यापारी ऐसे भी हैं, जिनका वडे-वडे उमराओ से सम्बन्ध तथा व्यवहार है, अथवा जो कारीगरो को मामूली से कुछ अधिक मजदूरी देकर काम लेते हैं। मैंने कुछ अधिक मजदूरी इसलिये कहा है—कि, यह तो समझना ही चाहिये, अच्छी चीजें

बनाने से कारीगर का कुछ आदर किया जाता है, या उसे स्वतन्त्रता दी जाती है। कारण, जो भी कुछ वह करता है—आवश्यकता और कोड़ा के डर से करता है। उसके मन मे सन्तोष और सुख की आशा नही होती। इसलिये यदि रूखा टुकडा खाने को और मोटा-झोटा कपडा पहनने को मिल जाय, तो इसी को वह बहुत समझता है। रुपया भी मिले, तो उसे क्या—वह तो उस व्यापारी का माल है जो सदैव इसी की चिन्ता मे लीन रहा करता है, कि—यदि कोई बलवान अत्याचार या जबर्दस्ती करना चाहे तो उससे मैं कैसे बचूंगा ?

व्यापार की गिरी अवस्था —जिस देश मे इस प्रकार का शासन हो, वहां उन्नति और सफलता के साथ व्यापार भी नही हो सकता, जसे यूरोप मे होता है, क्योकि ऐसे लोग बहुत कम हैं, जो अपनी इच्छा से परिश्रम करना, और दूसरो के लाभ के लिये कष्ट उठाना अथवा अपनी जान-जोखो मे डालना पसन्द करें। किसी दूसरे व्यक्ति से—मेरा प्रयोजन ऐसे शासक से है, जो लोगों की कमाई छीन लेने मे नही हिचकता, चाहे कितना ही लाभ क्यो न हो, कमाने वाले को दरिद्री का सा वस्त्र पहनना, और निधन पडोसियों से बढ़कर खाने-पीने मे कजूसी करना आवश्यक है। परन्तु हां, जब किसी सैनिक सरदार से किसी व्यापारी का सम्बध होजाता है, तब, अवश्य ही वह बडे-बडे व्यापारिक काय करने लगता है। तोभी उसे अपने सरक्षक की गुलामी मे रहना आवश्यक है, जो उसकी रक्षा के बदले, जिस प्रकार की प्रतिज्ञा चाहे, उससे करा लेता है।

सूबेदार-आदि वास्तव मे नीच, ऋणी और गुलाम होते हैं, तथा कुछ भी सम्पत्ति उनके पास नही होती। किन्तु शासन-काय मिलते ही वे बडे बुद्धिमान और सन्तुष्ट अमीर बन जाते हैं। इस प्रकार समग्र देश मे दुदशा और तबाही फैली हुई है। जसाकि मैं पहले कह चुका हूं, ये सब सूबेदार अपने-अपने स्थानो मे छोटे-मोटे बादशाह बने हुए है। इनके अधिकार असीम हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नही है, जिसके पास पीडित प्रजा जाकर पुकार सुना सके। कोई भी कैसा ही भयानक अत्याचार बारम्बार क्यो न मचावे, परन्तु किसी प्रकार की सुनवाई की आशा नही है।

यदि किसी प्रकार कोई शिकायत करनेवाला बादशाह के पास पहुंच

भी जाता है, तो सूबेदार के पक्षपाती असल बात को छिपाकर कुछ और-का-और ही मामला बादशाह को सुना देते हैं। तात्पर्य यह कि सूबेदारो को उनके प्रातो का सम्पूर्ण रूप से मालिक और स्वत्वाधिकारी समझना चाहिये। वे आप ही जज (विचारक), आप ही पार्लियामेट और आप ही प्रेसिडेंशल कर्टो (मुख्य विचारालय) है। आप ही अपराध का निर्णय करनेवाले और आप ही राज्य-कर के वसूल करनेवाले होते हैं। एक ईरानी ने इन अत्याचारी, लोभी सरदारो, और तहसीलदारो के विषय मे क्या ही अच्छा कहा है कि—'यह बालू में से तेल निकालते हैं।' पर सच तो यह है कि इनकी स्त्रिया, बच्चो, सेवको और लुटेरे साथियो के खच के लिये भी आमदनी काफी नही होती।

शिक्षा के विषय मे वह लिखता है —

"सारे देश मे शिक्षा का बिलकुल अभाव है। लोग अपढ और मूख हैं, और यह वहा सम्भव ही वही है, कि ऐसे शिक्षालय और कालेज खुल सकें —जिनके खच के लिए, यथेष्ट-धन राजकोष मे मौजूद हो। यहा ऐसे लोग कहा जो आर्थिक सहायता देकर कालेज खुलवावे। मानलिया जाय, कि ऐसे लोग मिल भी जायें—तो पढानेवाले कहा? लोगो मे इतनी शक्ति कहा, कि अपने-अपने बच्चो को कालेज मे भेजकर उनके खर्च का प्रबध कर सकें? यदि इस योग्य धनवान् लोग हैं भी, तो यह साहस कौन कर सकता है, कि इस प्रकार खुले-आम अपनी समृद्धता प्रकट कर सकें?"

१९

द्विराष्ट्रवाद का कुचक्र

सन् ५७ के विद्रोह मे अंग्रेजो ने मुगल साम्राज्य के अन्तिम-बादशाह जफरशाह को कैद करके और उसके शाहजादा और दूसरे मुगल सर्दारो को कत्ल करके न केवल मुगल साम्राज्य की जड खोद कर फेंक दी प्रत्युत् मुस्लिम सभ्यता का भी गला दबोच दिया गया। यह वह समय था जब कि पहली बार हिन्दू और मुसलमान पारस्परिक और धार्मिक भेद-भावो को भूलकर एक दूसरे के साथ बन्धु-भावना से एकत्रित हुए। उस जमाने मे चुन-चुन के मुसलमान नवाबो, शाहजादो और अमीरो का वंश नाश करके हिन्दुओ को उठाया गया और अपनाया गया और उनकी सहायता से नई अगरेजी अमलदारी की जड मजबूत की गई। परन्तु बहुत जल्दी ही कठिनाइयाँ सामने आने लगी। यहाँ हम हिन्दू-मुस्लिम समस्या को जरा और गहराई से देखना चाहते हैं।

लगभग ७०० वर्षों तक जब से ७ वी शताब्दी के मध्य मे अरब के युवक विजेता कासिम ने भारत मे पैर रखा तब से १६ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक जबकि महान अकबर ने अपनी नई नीति का विस्तार किया, लगभग ८०० वर्ष तक इस्लाम ने भारत मे दुमुखी लडाई जारी रखी। यह लडाई एक तरफ राजसत्तात्मक थी और दूसरी तरफ धर्मसत्तात्मक। इस इस सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य यह है कि राज सत्तात्मक लडाई मे हिन्दू हारते गये। अपने राज्यो और देशो को छिपाते गये और मुसलमानो की आधीनता स्वीकार करते गये। परन्तु धर्म सत्तात्मक लडाई मे निरन्तर सात सौ वर्षों तक युद्ध करते हुए भी हिन्दुओ मे अपनी पराजय

स्वीकार न की। अन्तत पराजय स्वीकार की सम्राट् अकबर ने जब कि उसने धर्म युद्ध एक दम रोक दिया और हिंदू धम और हिन्दू सस्कृति के सामने मित्रता के हाथ फैलाये और हिंदू राजपूतो, हिंदू राजनीतिज्ञो, हिन्दू कलाकारो और गुणियो की सलाह से उसने एक व्यवस्थित और शात साम्राज्य की नीव डाली। जिस पर उसकी तीन पीढ़ियो ने ऐश्वर्य और विलास के भोग भोगे। दुर्भाग्य से औरगजेब ने फिर से धम-युद्ध की तलवार सी तीखी कि, परन्तु उसे शिवाजी, रामसिंह और छत्रसाल के हाथो अत्यधिक दुदशाग्रस्त होना पडा। और यो कहना चाहिये कि अपने राज्य के पचास वप मे से पूरे दस वप भी तख्त ताऊस पर बैठकर आराम से न गुजार सका और चालीस वप तक निरन्तर युद्ध-यात्रायें करता फिरा। अन्त मे उसकी नीति का यह परिणाम हुआ कि उसके मरने के बाद केवल २५ ही वर्षा मे मुगल साम्राज्य का सारा ही ढाचा ध्वस्त हो गया।

इसके बाद सन् ५७ के विदोह तक मुगल साम्राज्य एक मुर्दार वस्तु की तरह अपना अस्तित्व रखता रहा। और सन् ५७ मे उसने न अपना ही विनाश किया, प्रत्युत इस्लामी सभ्यता और सस्कृति की भी बडी भारी हानि की।

विद्रोह के बाद फिर से जमकर जब अगरेजो ने हिंदुस्तान पर हुकूमत करनी शुरु की तो वे इस बात को कभी न भूले कि मुसलमान जिनकी नजर लालकिले के कगूरे पर है और जिन्होने अभी-अभी अपनी प्रभुता खोई है अपने खून मे एक रियासती बू भरे हुए थे जिसको जड-मूल से नष्ट कर देना अगरेजो के लिए जरूरी था। और हिंदुओ से जो कि अगरेजो के उसी प्रकार के गुलाम थे जैसे कि मुसलमानो के- जिनकी चरित्रहीनता और लालची स्वभाव को उन्होंने ठीक-ठीक परख लिया था, उतने भयभीत न थे।

अगरेजा ने मुसलमानो को जेर करने के लिये जो पहला कदम उठाया वह लाड मैकाले का वह चाटर था कि जिसके द्वारा लाड मैकाले ने भारत के हिंदू-मुसलमान युवको को अगरेजी शिक्षा देकर अगरेजी भाषा के माध्यम से अगरेजी सस्कृति की हिन्दू और मुस्लिम दोनो ही सस्कृतियो पर विजय प्राप्त कराना था। लाड मैकाले का यह उद्देश्य पूरा हुआ और देखते ही देखते भारतीय युवक अगरेजी पढ़कर न केवल अगरेजो के ही

गुलाम होगये बल्कि अगरेजी सभ्यता के भी। और ज्यो ज्यो उनकी यह गुलामी सास्कृतिक प्रभाव मे आती गई यह नवयुवक हिन्दू और मुसलमान दोनो ही सस्कृतियो को सन्देह और घणा की दृष्टि से देखने लगे।

ऐसे ही समय मे मुसलमानो मे सर सैयद अहमद और हिदुओ मे राजा राममोहनराय और स्वामी दयानन्द ने आख फाडकर अपने युवको की इस सास्कृतिक अधोगति को देखा और उनकी रक्षा करने की तत्परता दिखाई। सर सैय्यद अहमद ने अलीगढ मे मुस्लिम सस्कृति का एक केन्द्र स्थापित किया और उदू के माध्यम से नवीन मुस्लिम राष्ट्र का सगठन आरम्भ किया। राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मसमाज और आय समाज की स्थापना करके हिन्दू नवयुवको मे जो नवचेतना का बीज बोया, उसे हिदुओ ने अपनाया तो, परन्तु सन्देह की दृष्टि से देखा। जो सहयोग सर सैयद को नये मुस्लिम राष्ट्र के सगठन मे मिला वह सहयोग राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द को नही मिला। फलत जहाँ मुस्लिम राष्ट एकीभूत होकर समुन्नत होने लगा वहाँ हिदू-राष्ट्र मे साम्प्रदायिकता की बू उत्पन्न होगई और उसकी बहुत-सी शक्ति आपस के सघप मे खच होने लगी। परन्तु, इसी समय मे काग्रेस के नाम से एक तीसरी सस्था विशुद्ध राजनतिक भावनाओ से खडी होगई। एक प्रकार से यह भी एक हिन्दू सस्था थी। नाम मात्र के एक दो मुसलमान इसमे सम्मिलित हुए। यद्यपि इस सस्था मे कोई दम न था और प्रारम्भ मे यह फैशनेबुल पढे लिखे लोगो का वार्षिक राजनैतिक मनोविनोद था। परन्तु धीरे-धीरे कुछ चुने हुए महावारणी पुरुष काग्रेस मे एकत्रित हुए और वह राजनैतिक चर्चा का प्रमुख विषय बनती गई। और साथ ही साथ उसमे हिन्दू और मुस्लिम दोनो ही विद्वान् अगरेजी के माध्यम से अगरेजी शासन और सभ्यता के विपरीत अपने भावो का प्रदशन करने लगे। चतुर अगरेजो ने तुरत ही भाप लिया कि लाड मैकाले ने जिस भावना से अगरेजी का माध्यम भारत मे प्रचलित किया था वह अब दूसरे रूप मे एक राष्ट्रीयता के रूप मे उदय होता चला जा रहा है और अगरेजो के लिये सबसे बडा खतरा बन रहा है।

लाड कजन जो कि अपने युग के बडे भारी राजनीतिज्ञ थे उन्होने

बडी बारीकी से यह सब देखा और तत्काल उन्होने एक नई योजना को जन्म दिया उनमे एक य थी कि भारत मे द्विराष्ट्र का सिद्धान्त स्थापित हो जाय। मताधिकार १ सरकारी नौकरिया मे, और अन्य विषयो मे भी अब सरकार बात-बात हिन्दू और मुस्लिम का पक्ष लगाने लगी।

बगालियो की एता को भग करने के लिये बगाल के भी दो टुकडे कर दिये गये। मुस्लिम हु बगाल को हिन्दु-बहु बगाल से पृथक् कर दिया गया, परन्तु यह काय स्य से पूव हुआ। इस समय तक हिन्दू और मुस्लिम द्विराष्ट्र भावना अच्छीरह पकने पाई थी। सभी लोग अपने को बगाली समझते थे, और सब मिलकर बगभग का विरोध किया। बगाल को उस समय एक कर दिया T, परन्तु अगरेजी राजनीति का यह द्विराष्ट्रवाद प्रधान यन्त्र बन गया र छोटी नौकरी से लेकर बडे से बडे महत्वपूण कार्या के लिये हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न आम विवाद का प्रश्न बन गया, जिसे अगरेज बडे चाव से देखते रहयोकि उनके जीवन का वही एक सहारा था।

इसी समय प्र योरोप का युद्ध हुआ और उसमे पहली बार एशियाई जनो ने निभय र योरोपियन जातियो के साथ युद्ध किया। योरोपियन जनो को विवस्था मे भागते हुए देखा। इस युद्ध की समाप्ति एशिया मे साहस औआशा का प्रकाश लेकर आई। विज्ञान ने भी युग-परिवतन मे सहाय दी। साम्राज्यवाद की रूप रेखाये बदलने लगी और अब उसका अ सेनायें और युद्ध न रह गये। बल्कि अथ-साम्राज्य का एक नया रुप मय प्रकट हुआ जबकि योरोप की सब शक्तियो ने जीवन रक्षा केवलने आर्थिक बल के आधार पर की। परन्तु इसी समय रूस का श्र उसके सम्मुख आकर खडा हो गया। यह श्रम और पूँजी का सघ्र ही सारे विश्व मे ऐसा फैला कि इसने सहस्राब्दी के जमे हुए साम्रा की भावनाओ को छिन्न-भिन्न कर डाला। दूसरा विश्व युद्ध होना र हुआ। और उसमे रक्त की शुद्धता का दम्भ और राष्ट्रीयता का दलकर खाक हो गया। और उसके साथ ही योरोप के प्रभुत्व का सूय

परन्तु अब न केवल एशिया भर के लिये प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व के लिये एक म स्थल बन गया था। योरोप की कोई शक्ति अब

एशिया के साम्राज्य का बोझ सहन नहीं कर सकती थी। परन्तु टूटता हुआ अगरेजी साम्राज्यवाद भारतवर्ष को छोडकर आत्मघात भी कैसे कर सकता था। उसने भारतवर्ष को जहर की एक वह डोज़ दी जिससे योरोप का सर्वनाश हुआ। दुर्भाग्य से भारत ने राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को अपना लिया और अगरेज़ो के गुरगो को ऐसे अवसर मिल गये कि वे मुसलमानो को उत्तेजित करें कि वे हिन्दुस्तान के राष्ट्र मे सम्मलित न हो और वे अपना पृथक् एक राष्ट्र निर्माण करें।

मुहम्मद अली जिन्ना एक महा मेधावी और तेजस्वी मुसलमान था। यह दूसरा मुसलमान था जो सर सैय्यद के बाद पैदा हुआ। उसकी आत्मनिष्ठा और दृढता का अन्त न था। उसने स्पष्ट घोषणा की कि मुसलमान अल्पसंख्यक नही हैं। उनका पृथक् राष्ट्र है। उसकी पृथक् सभ्यता है, पृथक् संस्कृति है। उसमे हिन्दुओ का कोई हित नही है। हिन्दुओ से उनका कोई मेल, साम्या या समझौता नही हो सकता। और उन्हे पृथक देश पाकिस्तान चाहिये। मुस्लिम-बहु प्रदेश पाकिस्तान को दे जाने चाहिये। हिन्दुओ को जिन्ना की यह माग पसन्द न होना स्वाभाविक था। परन्तु जिन्ना एक इंच भर भी अपने स्थान से टस से मस न हुआ। और यह अगरेज़ो के कौशल और कूटनीति का चरम विकास कि उसने कांग्रेस के द्वारा जो राजनैतिक आधारो पर और सांस्कृतिक आधारो पर भी हिन्दू मुस्लिम एकता की प्रचारक और समर्थक थी, हिन्दू मुस्लिम द्विराष्ट्र सिद्धान्त स्वीकार करा लिया। कांग्रेस के द्वारा विभाजन स्वीकार करा लेने के बाद तत्काल ही अगरेज़ो ने भारत को छोड दिया और दुनिया ने देख लिया कि मानव के इतिहास मे अनहोनी घटना हुई। साठ लाख स्त्री-पुरुषो का अयाचित, अकल्पित अतर्कित महानिष्क्रमण हुआ। और लगभग एक करोड प्राणियो के रक्त से पृथ्वी ने स्नान किया। बडे से बडे भयानक महायुद्ध भी ऐसे भयानक परिणाम नही लाये।

आज भी भारत और इस्लाम यह प्रश्न वैसा ही महत्वपूर्ण और उलझन से भरा हुआ है जैसा कि उस समय था जब अंग्रेज़ भारत को छोड गये थे। लाखो आदमियो के खून, कत्ल, अग्नि और ध्वंस का उस पर कोई असर नही पडा है।
